

साहित्य-रत्नाकर.

(साहित्य-संग्रह)

अर्थात्

प्राचीन-अर्वाचीन हिंदी कवीभरोंकी रसालकार-
युक्त प्रासादिक पद्य रचना.

प्रथम भाग

संगेधनपूर्वक प्रमिष्टकर्ता
कहानजी धर्मसिंह

राजकोट-फाटियावाड

“सगीतमपि साहित्य सरस्वत्या स्तनद्वयम् ।
एकमापातमधुरमन्यदा लेचनोद्भूतम्” ॥१॥

(तृतीयावृत्ति)

वि म १९१२

ई म १९२६

(सर्व सत्ता स्वाधीन.)

मुख्य रू ४॥

बेहेस्तनशीन श्रीमान्
बेहेरामजी मेहेरवानजी मलवारी,—

उन्होंका

बंबई “सेवासदन” और धर्मपुर “क्षयरोग निवारण आश्रम”
स्थापनेका स्तुत्य परिश्रम, “इंडियन स्पेक्टेटर” और “इस्ट एन्ड
वेस्टा”दि पत्रोंका स्वतंत्र आधिपत्य; “नीति-विनोद”-
“अनुभविका”-“संसारिका”दि सद्ग्रंथो द्वारा सुमधुर
कवित्व, और समाजसेवाकी विविध प्रवृत्तिओंके
चिर स्मरणार्थ, यह पुस्तक, उन्होंका स्वर्गस्थ
सूक्ष्मात्माको सप्रेम समर्पण.

प्रस्तावना

साहित्य —सहितस्यभावो साहित्यं मेलने तुलनायाम् ॥

परस्पर अपेक्षा रखनेवाले जो रूप उन्होंने एक दूसरेके साथ मिलाया उसको साहित्य कहते हैं कोमल मतिवाले लोगका आनन्द उत्पन्न करके सरस रीतिसँ कार्याकार्यका उपदेश करना यह साहित्यशास्त्रका प्रयोजन है उपमा देनेके योग्य वस्तुको उपमेय कहते हैं, और जिसकी उपमा दी जावे उसको उपमान कहते हैं, और उपमेय तथा उपमानके मध्यमें मिलते हुए न्यूनाधिक गुणोंका बताना उसको उपमा कहते हैं, जैसेकि मुख ये उपमेय पदार्थ है, चंद्र ये उपमान है और गोल्डत्व, प्रकाशत्व तथा आह्लादकत्वादि ये गुण हैं, तिसँ “उसका मुख चंद्र समान है” ये उपमा है ऐसे अनेक अलंकारोंसे देदीप्यमान और रस प्रवाहोंसे रसिकोंके मनकों प्रसन्न करनेवाली हजारों कवितार्थ कवियोंका यशस्वरूप शरीरसे भारतवर्षमें प्रकाशित हो रही है कवी-श्रोंने स्वप्रज्ञानुसार धर्म शास्त्रोंके पद्धतिसँ ऐतिहासिक किंवा पौराणिक आख्यानोंको रससँ सजीव बनाकर अलंकारोंसे अलौकिक शोभायुक्त किये हैं, जिसमें अपनी तर्कशक्तिके प्रभावसे देवी-देवता-वन-पर्वत-मनुष्य-पशु-नायक नायिका-पशु-वृक्ष, तिसँही अथ प्राणि पदार्थोंके मिलते हुए गुणोंको शोध, उनका सादृश्य भाव बताकर अपनी सुंदर वाणीके विलासोंसे सप्रसन्न किये हैं

नवा वाणी मुखे मुखे । मुख मुख प्रति वाणी नवनवीन रीतिसँ बसती है, तिसको मनोहारिणी करनेके लिये प्राचीन तथा आधुनिक कवीश्रोंने बहुत धर्म उठाया है, परंतु तिनमें विशेष माननीय प्राचीन कवीश्र हैं, क्योंकि भिन्न भिन्न विषयोंको भिन्न भिन्न चित्ताकर्षक उपमा देनेसँ प्राचीन कवीश्रोंकी बुद्धिकी विलक्षणता उन्हींके कार्यही चोतन करते हैं उस लिये उन्हींका गुणानुवाद करनेकी आवश्यकता नहि है प्रकाशका ऐसा एकही भाग नहि कि जो कवीश्रोंकी दृष्टिसँ बाहर रहा होवे जहां सूर्यभी प्रकाश करनेको समर्थ नहि तहांभी

कवीश्वरकी गति है, तिससें ऐसी सामान्य लोकोक्ति है.--“ जहा न पहुंचे रवि, तहां पहुंचे कवि.” और रसविज्ञान भी उन्होंने सपूर्ण री-
तिसें संपादन किया होगा ऐसा अनुभव होता है. क्योंकि प्रासंगिक स्थलोंमें रसोंके असली स्वरूपको प्रगट करनेमें वे चूके नहि; वास्तवमें रसोद्भव करनेकी उनकी रीति अति प्रशंसनीय है. प्रासंगिक शब्दोंकी तरङ्गे उहकी निर्मल प्रज्ञामेंसे ऐसी प्रासादिक रीतिसें उठी हुई हे, कै जिस रचनाको देखते, वाचते तथा सुनतेही अंतःकरण पर एक तर-
हका विलक्षण असर हुये बिना नहि रहता, और कवीश्वरोंकी कृति-
नेही ब्रह्माकी कृतिको उज्ज्वल की है ब्रह्माकी कृतिभी कवीश्वरोंकी कृति बिना विरस दिखाइ देती है. वास्तवमें कवीश्वरोंने रससें आप्लावित कर, ब्रह्माकी कृतिको विशेष प्रकाशित की है. तिनोंने अपनी मनोमय सृष्टिसें जो ब्रह्माकी सृष्टिका चमत्कारिक रीतिसें वर्णन नहि किया होता, तो ब्रह्माकी सृष्टिकी चमत्कृतिभी प्रकाशको नहि प्राप्त होती. ब्रह्मा जैसे नवीन नवीन सृष्टिकी रचना करनेमें समर्थ है. तैसें कवीश्वरभी नवीन नवीन सृष्टि करनेमें समर्थ है. कविकी सृष्टिसें ब्रह्माकी सृष्टि न्यून है, क्योंकि ब्रह्माकी सृष्टि नियत नियमके आधीन है, सुख दुःख मिश्र भावयुक्त है, परमाणु आदि कारणके आधीन है. और षट्‌रस (आम्ल-मधुर-कषाय-लवण-कटु-तिक्त) युक्त ह, परन्तु अरुचि उत्पादक रसवाली है. और कविकी सृष्टि तिससें विशेष उत्तम है; क्योंकि वह नियत नियमके आधीन नहि-स्वतन्त्र है. नव रससें मनोहर है, और सर्व प्रकार आनन्दमयी है इस लिये ब्रह्माकी सृष्टिसें अधिक गिनी जाती है, जो कवि नवीन नवीन काल्पनिक सृष्टिकी रचना करनेमें समर्थ नहि है. अर्थात् न्यून होनेसें जनहित करनेमें कवी कोईभी शक्तिमान् नहि है. कवीश्वरोंका आंतरिक उद्देश मात्र विविध प्रकारकी उपमा देनी, रसालङ्कारोंको द्योतन करनां, सुंदर वाक्यरचना करनी, मनोहर प्रासानुप्रासके साथ नवीन नवीन छन्दोंकी रचना और अनेक तरहकी कल्पनाओं प्रगट करनी तथा नवीन रचना

रचनी, इतनाही महि, किन्तु उन्नोंका मुख्य उद्देशतो कीसी तरहसे जनसमुदायको बोधदायक वचन कहना तथा उन्नोंके आत्मिकी उन्नति होनेका पूर्ण प्रयत्न करना यही है कवीश्वर फिर जगतको नीतिकी शिक्षा देनेवाले, हृदयका आनन्द देनेवाले, तथा मनकी शुद्धि करनेवाले क्यों नहि है ।

नीतिज्ञान आत्मज्ञानका सहायक है व्यवहारकी विना कुशलता पारमार्थिक कुशलता असमव है, जगतके सम्यक् प्रकारसे शुभचिन्तक है और सबसे विशेष मानसिक शक्ति धारण करनेवाला है सामान्य विषयकोभी नीतिपूर्वक वर्णन कर देना यह कवीश्वरोंका मुख्य प्रयोजन है, परन्तु इन कार्योंमें मानसिक शक्तिकी बहुतही आवश्यकता है मानसिक शक्ति जितनी ज्यादा हो उतनीही कविकी कवितामें प्रधानता मानी जाती है पृथक् पृथक् प्राचीन कवीश्वरोंके पाण्डित्यको देखनेवाले तिनोंके औपदेशिक-चिन्तार्थक वचनोंका संग्रह, जोकि साहित्य भावसे भरा हुआ है, उसमेंसे मनोरंजक संक्षिप्त संग्रह इस ग्रंथमें किया है साहित्य ज्ञानसे पुरुष दूरदर्शी होता है और समया-नुसार औपदेशिक वचन बोलनेकी सक्तिभी आति है सभासादक बोलनाभी एक मुख्य गुण है, परन्तु वे सदसाहित्यशास्त्रके अवलोकन किये विना आ शक्ते नहि वाक्चातुर्य यदि साहित्यसे मृपित हो सो फिर उसकी शोभा भी अलीकिक होती है

साहित्यशास्त्रके ज्ञानरहित पुरुषको सिंग पूछाहिन् पशु तुल्य कहा है साहित्य संगीत कला विहिन्ः साक्षात्पथुः पुच्छविज्ञाणहीन तिससे इस शास्त्रका ज्ञान अवश्य संपादनीय है मनुष्यको अबतक साहित्यशास्त्रका ज्ञान न होय तबतक वह प्रकाशित नहि होता व्यवहार वशमें रहनेवाले राजासे रंक पर्यंतको इस शास्त्रका यथामति विचार अवश्य करना चाहिये, क्योंकि इस शास्त्रका विचार किये विना नीतिज्ञ होता नहि, नीतिज्ञ हुये विना यथार्थ न्यायी हो सक्ता नहि, यथार्थ न्यायी हुये विना समदृष्टि होता नहि, समदर्शी हुये विना ज्ञानवान् होता नहि और ज्ञानवान् हुये विना मोक्ष होत

नहि इससे सिद्ध हुआ कि व्यवहारिक कुशलता, पारमार्थिक कुशलता-प्रति कारण है और व्यवहारिक कुशलतामें साहित्यशास्त्र कागण है; अतः साहित्यको भी मोक्षके प्रति कागणता प्राप्त हुई उक्त कथनानुसार मोक्षमार्गके प्रति अनुसरण करनेवालेका प्रथम सोपान जो साहित्य-ज्ञान, उसका अवगम्य अवलम्बन लेना चाहिये. मेरी न्यून दृष्टिमें ऐसा विचार आनेसे यथा प्राप्त साहित्य विषयका इस प्रथम संग्रह कर, जनसमूहके हितार्थ प्रसिद्ध करता हूं, और आशा करता हूं कि वाचकवर्ग प्रीतिपूर्वक अवलोकन कर मेरे श्रमको सफल करेंगे.

बचड गायवाड़ा
रामनवमी स १९५३.

}

कहानजी धर्मसिंह.

(प्रस्तावना द्वितीयावृत्तिकी.)

समग्र आर्यावृत्तिकी एक प्रचलित-हिंदी भाषाके इस उपयुक्त काव्य ग्रंथकी बारह वर्षके अनंतर दूसरी आवृत्ति करनेका सुअवसर प्राप्त हुआ है इसका कारण केवल अपने काव्यप्रेमीओंकी न्यूनता तथा काव्यमें प्रीतिका न होनाही कारणीभूत है; तथापि मैं साहित्य-सेवामें तत्पर होकर, यथामति शोषित वर्धित पुनरावृत्ति प्रमिद्ध करनेके लिये यह प्रयत्न किया है.

बैचड: ताडदेव, जुविलीबाग, रंगपंचमी, सं. १९६४.

(प्रस्तावना तृतीयावृत्तिकी.)

संसार विषवृक्षस्य द्वे फले अमृतोपमे ।

काव्यामृत रसास्वाद सगति सज्जन सह ॥

संसाररूपी विष-वृक्षमें दो अमृत-फल फले हैं. एक काव्यामृत रसास्वादन और दूसरा सत्संग इस विचारमें भी काव्य-साहित्यका स्थान प्रथम होनेसे कुछ विवेचन उपरोक्त प्रस्तावनामें निवेदित किया गया है.

प्रस्तुत आवृत्तिके संशोधन कार्यमें, नवनूतन पद्यरचनाओंकी पूर्ति करनेमें और कविपरिचय विषयमें कुंतलपुरनिवासी श्रीयुत्त

नरसिंहदास भाणजीभाई प्रसन्नभट्टने अमूल्य सहाय की है, और गणोदरवार श्रीमान् गोपालसिंहजी रामसिंहजी आदि साहित्यरसिक सज्जनोनेभी उच्च श्रेणीके काव्य भेजनेका श्रम लिया है अतः में उन्होकी सहर्ष कृतज्ञता प्रकट करता हु इस ग्रंथमें कुछ आनन्दप्रद हिस्सा होवे सो उन्हीका समजनां और दोष रह गया होवे सो मेरी अल्पज्ञताका है क्योंकि —

शास्त्रज्ञतां भवदुष्प्राप्तो लेखको गणनायकः ।

तथाथ चलिता बुद्धिमनुष्याणां तु को यथा ॥

वेद व्यास सदृश महान् ग्रंथ लिखानेवाले और विनायक सदृश महान् सुचतुर लेखक, उसकी मतिमें भी भ्रम हो गया तो में कौन गिनतीमें ?

इस ग्रंथकी द्वितीयावृत्ति बहुत वर्षोंसे बिक चुकी है और तृतीयावृत्ति शीघ्र प्रकाशित करनेका प्रयत्नमें था, परंतु कितनेका अनिवार्य कारणोंसे बहुत समय व्यतीत हो चुका है, तदपि हर्षका विषय यह है कि वर्तमान समयका ग्रंथ पहिले सप्रहसें विस्तृत और उत्कृष्ट हुआ है, इस बातको पाठकवृद्ध देखतेही समझ सकते हैं, और मुझेभी इस विषयमें सतोष है कि, अब काव्य-काननमें रसिक भ्रमरोंको एकही स्थानपर सब प्रकारके परिमलपूर्ण प्रसून प्राप्त हो सकेंगे, क्योंकि भाषा-साहित्य-वाटिकाके चुने हुए पुष्पोंसे यह लटित फलित “आकर” भरा गया है

सप्रह ग्रंथमें बहुत ख्याल रखते हुएभी सहज दोष रह जाते हैं और उसमेंभी मेरी परतंत्र स्थितिके लिये कुछ विशेष दोष रह गये होंगे, परंतु मुझ पाठक वसवृत्तियों (नीर-शीर न्यायसें) देखेंगे और मुझे सूचना धरेंगे जासों आगामी आवृत्तिमें सुधार लिया जाय

प्रस्तुत ग्रंथका दुसरा भाग तैयार करनेका प्रयास चालु है और इच्छेच्छा तो बन सकेगा तैसें शीघ्रही वाचकोकी सेवामें निवेदित किया जायगा

राज्यदुर्ग (राजकोट) विजयादशमी, वि स १९८२

कहानजी धर्मसिंह

❖ कवि-नामानुक्रम. ❖

अंक.	नाम.	छंदसख्या.	पृष्ठ.	अंक.	नाम.	छंदसख्या.	पृष्ठ.
१	अकबर.	६	१	२९	करसनदास.	२	३०
२	अनन्य.	७	२	३०	कल्याण.	३	३०
३	अजान	६	३	३१	कविन्द्र.	९	३१
४	अनंत.	२	५	३२	कविराज.	१	३३
५	अयोध्या. (औध)	५	५	३३	कादर.	२	३४
६	अहमद.	१६	७	३४	कालिदास.	५	३४
७	आलम.	८	८	३५	काशीराम.	५	३५
८	इंदु-बालमुकुंद.	३	१०	३६	किसन.	५२	३७
९	उद्धव-ओघड.	२	११	३७	किसोर.	२	५१
१०	उदयभाण.	४	१२	३८	कुवेर.	१८	५१
११	ऊमरदान.	२	१३	३९	कुंदन.	२	५४
१२	एदिल-येदिल	८	१४	४०	केवल.	४	५५
१३	ओंकार.	१	१६	४१	केशव.	१००	५५
१४	अंबिकादत्त.	२	१७	४२	केशवलाल.	८	६८
१५	अंबुज.	१	१७	४३	केशोदास.	५	६९
१६	करनेश.	१	१८	४४	केशोराम.	१	७१
१७	कहान (पहिला).	८	१८	४५	केसरी.	२	७१
१८	कहान (दुसरा).	३	२०	४६	केसरीसिंह.	४	७२
१९	कनीलाल.	१	२०	४७	कृष्ण.	१०	७३
२०	कनैयालाल.	२	२१	४८	कृष्णदास.	२१	७५
२१	कबीर.	५९	२१	४९	कृष्णलाल.	५	७७
२२	कमनीय.	१	२६	५०	खूबचंद.	१	७८
२३	कमलापति.	१	२६	५१	खेमकरण.	१	७९
२४	कमलाकान्त.	३	२७	५२	गजानन.	१	७९
२५	कमाल (पहिला).	५	२७	५३	गजेंद्रशाही.	५	८०
२६	कमाल (दुसरा).	४	२८	५४	गह.	७	८१
२७	करण.	२	२९	५५	गदाधर.	१	८३
२८	करणसिंहजी.	१	२९	५६	गिरिधर (पहिला).	४४	८३

अंक	नाम	छंदसंख्या	पृष्ठ	अंक	नाम	छंदसंख्या	पृष्ठ
५७	गिरिधर (दुसरा).	७७	९३	९०	घासीराम	७	१७३
५८	गिरिधर (तिसरा).	११	१०९	९१	षट्ठर	२	१७५
५९	गिरिधारी	७	११०	९२	चतुरसिंह	१	१७६
६०	गोध	१	११४	९३	चिमनेश	२	१७६
६१	गुणदेव	२	११५	९४	घौरामल्ल	३	१७७
६२	गुणदेव	१	११५	९५	चंद	६५	१७८
६३	गुणाकर	१	११६	९६	चंदन	२	१८५
६४	गुमान (पहिला)	२	११६	९७	चम्रकला	६	१८५
६५	गुमान (दुसरा)	२	१५६	९८	छितिपाल	३	१८७
६६	गुरुदेव	२	११७	९९	जगलाल	४	१८८
६७	गुरुदीन	१	११७	१००	जटमल्ल	३	१८९
६८	गुलाब	९	११८	१०१	जमाल	४०	१९०
६९	गुलामी	१	१२०	१०२	जयकृष्ण	४	१९३
७०	गुलाल	२	१२०	१०३	जयकर्ण	१	१९३
७१	गोकुल	३	१२१	१०४	जसुराम	९९	१९४
७२	गोख	१	१२१	१०५	जशयत	८	२१५
७३	गोप (पहिला).	३३	१२२	१०६	जीवन	६	२१७
७४	गोप (दुसरा).	११	१२८	१०७	जुगलकिसोर	४	२१८
७५	गोपाल	१	१३१	१०८	जेष्ठलाल	६	२१९
७६	गोपाललाल	१	१३२	१०९	जेमल्ल	१	२२१
७७	गोपालानंद	३	१३२	११०	डांडरमल्ल	४	२२१
७८	गोपीनाथ	२	१३२	१११	ठाकुर	११	२२२
७९	गोविंद (पहिला)	१	१३३	११२	बुगरसिंह	४	२२४
८०	गोविंद (दुसरा)	१	१३३	११३	तामसेन	४	२२५
८१	गोविंद (तिसरा)	१६	१३३	११४	मुलसी	४९	२२६
८२	गोविंदचंद्र	७	१३७	११५	तेही	१	२३४
८३	गंग	५१	१३८	११६	तोप (पहिला).	३३	२३५
८४	गंगाराम	२९	१४९	११७	तोप (दुसरा)	४	२४०
८५	गोपालशरण	२	१५५	११८	त्रिकम	८	२४२
८६	गंगादेव	१	१५५	११९	दयाराम	५	२४३
८७	ग्याल	४०	१५६	१२०	दाबु	२५	२४३
८८	घनार्जुन	३	१७२	१२१	दीहल	२	२४५
८९	घनःश्याम	२	१७३	१२२	दीनानाथ	३	२४६

अंक.	नाम.	छंदसंख्या.	पृष्ठ.	अंक.	नाम.	छंदसंख्या.	पृष्ठ.
१२३	दीनदरवेश.	११	२४६	१५६	पद्माकर.	३१	३१३
१२४	दीनदयालगिरि.	५३	२४९	१५७	प्रधान.	२	३२१
१२५	दुर्गादत्त.	१५	२५५	१५८	प्रविनराय.	४	३२१
१२६	दूलह.	५	२५८	१५९	प्राग.	८	३२२
१२७	देवकीनंदन.	३	२५९	१६०	पिंगलसिंह.	३	३२४
१२८	देवदत्त.	१७	२६०	१६१	प्रियादास.	३	३२४
१२९	देवीदत्त.	२	२६३	१६२	प्रेम.	३	३२५
१३०	देवीदास.	७५	२६४	१६३	पृथ्वीदास	४	३२६
१३१	देवीसहाय.	२	२८४	१६४	फकीरुद्दिन.	१	३२६
१३२	द्विजराम.	३	२८५	१६५	फेरन.	१	३२६
१३३	द्रोण	२	२८६	१६६	वनवारी.	१	३२७
१३४	धनोराम.	२	२८६	१६७	बनारसी.	९	३२७
१३५	धर्मधुरंधर.	१	२८७	१६८	बलदेव.	१७	३२९
१३६	धर्मसिंह.	१	२८७	१६९	बलभद्र.	६	३३३
१३७	धुरंधर.	१	२८७	१७०	बलभ.	३	३३५
१३८	ध्रुवदास.	८	२८७	१७१	बालकृष्ण.	१	३३६
१३९	नथुराम.	७	२९०	१७२	बालचंद.	२	३३६
१४०	नरहर.	५	२२१	१७३	बार्जिद.	२७	३३७
१४१	नरराय.	१	२९३	१७४	बिहारी पहिला.	५३	३४०
१४२	नरसिंगदास	८	२९३	१७५	बिहारी दुसरा.	४	३४४
१४३	नरोत्तम.	८	२९५	१७६	बीरवल. (ब्रह्म)	११	३४५
१४४	नवनीत	६	२९७	१७७	बेनी.	५	३४७
१४५	नागर.	७	२९८	१७८	बैताल	२४	३४९
१४६	नाथ.	५३	३००	१७९	बोधा (बुद्धसेन).	२०	३५४
१४७	नायक.	१	३०५	१८०	वंशगोपाल.	१	३५६
१४८	निपटनिरंजन.	९	३०५	१८१	ब्रह्मानंद	४९	३५७
१४९	नीलकंठ.	५	३०७	१८२	भगवंत पहिला.	२	३६४
१५०	नंद.	१	३०८	१८३	भगवंत दुसरा.	२	३६५
१५१	नंददास.	४	३०९	१८४	भगवंत तिसरा.	२	३६५
१५२	नेवाज.	२	३०९	१८५	भगवतसिंह.	१	३६५
१५३	पजनेश.	८	३१०	१८६	भरमि.	१०	३६६
१५४	परमेश.	२	३१२	१८७	भाण.	२	३६८
१५५	पहार.	१	३१२	१८८	भारत.	१	३६९

अंक.	नाम	छंदसंख्या	पृष्ठ	अंक	नाम	छंदसंख्या	पृष्ठ
१८९	भावनादास	२	३६९	२२२	रसरास	२	४३५
१९०	भावनाप्रसाद	४	३७०	२२३	रससिंधु	७	४३६
१९१	भिखारी	२	३७०	२२४	रसलीन	८	४३८
१९२	भिखारीदास	३	३७१	२२५	रूपिकेश	२	४३९
१९३	मूधर	१९	३७२	२२६	रूपिनाथ	२	४३९
१९४	भूपण (भूखण)	९६	३७६	२२७	रणछोडजी	११	४३९
१९५	भैया (भगवदी)	३	४००	२२८	रणमल्लजी	५	४४१
१९६	भोजराज	३	४०१	२२९	रविराज	५	४४२
१९७	भौम	५	४०२	२३०	रविराम (आ)	२४	४४३
१९८	मतिराम	१८	४०३	२३१	रविदत्त	४	४४९
१९९	मधुसूदन	१	४०६	२३२	रहीम-खानखाना	२९	४५१
२००	मनि-चिंतामणी	४	४०६	२३३	राज	३	४५३
२०१	मनियार	१२	४०७	२३४	रामकिंकर	३	४५४
२०२	मनोहर	३	४१०	२३५	रामध्वज	१२	४५५
२०३	मयाराम	२	४१०	२३६	रामनाथ	१	४५८
२०४	महेशदत्त	५	४११	२३७	गजाराम	२	४५८
२०५	महमद	४	४११	२३८	रूपनारायण	३	४५९
२०६	मार्कंड	२	४१२	२३९	लच्छीराम	२	४६०
२०७	मान (खुमान)	६	४१२	२४०	लाल (पहिला)	२	४६०
२०८	मानसिंहजी	८	४१४	२४१	लाल (दुसरा)	९	४६१
२०९	मीरन	४	४१६	२४२	लाल (सदगमल)	२	४६२
२१०	मीरांयाई	३	४१७	२४३	लाघन	१	४६३
२११	मुबारक	१२	४१८	२४४	विश्वनाथ	३	४६३
२१२	मुकानंद	९	४१९	२४५	वैजनाथ	८	४६४
२१३	मुरारिदास	२०	४२०	२४६	वज्रराज	२	४६६
२१४	मेरामण	३८	४२३	२४७	बुद्ध	३१	४६७
२१५	मोतीराम	०	४२८	२४८	शालिग्राम	१२	४७०
२१६	मोडजी	३	४२९	२४९	शिवकुमार	२	४७२
२१७	मदन	२	४३०	२५०	शिवसिंह (पहिला)	५	४७२
२१८	रघुराज	१२	४३०	२५१	शिवसिंह (दुसरा)	३	५००
२१९	रघुनंदन	६	४३०	२५२	शिवनाथ	२	४७४
२२०	रसखान	८	४३३	२५३	शिवदासराय	५	४७४
२२१	रसनिधि	७	४३५	२५४	शिवप्रसन्न	१	४७५

अंक.	नाम.	छंदसख्या.	पृष्ठ.	अंक.	नाम.	छंदसख्या.	पृष्ठ.
२५५	शिवप्रसाद.	३	४७५	२७८	श्रीपति.	६	५०१
२५६	शीतल.	२	४७६	२७९	हनुमान.	४	५०३
२५७	शेखसादी.	४	४७६	२८०	हमीर.	२	५०४
२५८	शेहेरियार.	१	४७७	२८१	दृग्जीवन.	३	५०५
२५९	शेष.	५	४७७	२८२	हरदास.	१	५०५
२६०	श्यामदास.	१३	४७९	२८३	हरदान.	३	५०६
२६१	श्यामसुंदर.	२	४८०	२८४	हरिकेश.	१	५०७
२६२	श्यामलाल.	१	४८०	२८५	हरिचरणदास.	७	५०७
२६३	सकल.	२	४८१	२८६	हरिचंद.	१	५०९
२६४	सन्नम.	४	४८१	२८७	हरिदत्त.	२	५०९
२६५	सीखी.	१	४८२	२८८	हरिदास पहिला	४	५०९
२६६	सीताराम.	१	४८२	२८९	हरिदास दुसरा.	११	५१०
२६७	सूरदास.	५	४८३	२९०	हरिसिंह.	४	५१२
२६८	सेन.	१	४८३	२९१	हरिश्चंद्र.	६	५१३
२६९	सेनापति.	१२	४८४	२९२	हरिराम.	१	५१५
२७०	सोहन.	६	४८७	२९३	हरिलाल.	१	५१५
२७१	सुंदर(पहिला).	२३	४८९	२९४	हाफिज.	५	५१५
२७२	सुंदर (दुसरा).	१६	४९४	२९५	हिरालाल.	२	५१६
२७३	संग.	१	४९७	२९६	हेमनाथ.	१०	५१६
२७४	संगमदास.	१	४९८	२९७	क्षेम.	४	५१७
२७५	संतदास.	३	४९८	२९८	(प्रकीर्ण)	७१	५२१
२७६	स्वरूपदास.	१०	४९९	२९९	(मुकरियां).	२७	५२६
२७७	शिरताज.	१	५००	३००	(पहेलियां).	१४	५२८



सक्षिप्त विषयदर्शन.

विषय

पृष्ठ

आत्मज्ञान मयोध.

हंकार सार	४८९
जीव शिष्य अमेध	९३-४७९
ब्रह्मदर्शन	७४-२४३
ज्ञानदीप दर्शन	४८०
शब्द नाद ब्रह्म	२-२३-४४३
ज्ञानकटारी	५१२
जीव औ यमयातना	४१०
असार ससार, क्षणिकता	३७४
सर्वभ्यापकता	१७-४११-४५३
चतुर्विध निगुण भक्ति	२-१५-४८४-५०९
भक्ति महिमा-स्वरूप	४१९-४४९
गुणतरण महत्त्व	२१७-२४२-४००
वैराग्य त्रिवेक	७१-२६०-३७१
देहपिण्डर स्वरूप	१३-३०७-५१०
विराग चेतावनी	३०-३७-४५१
चित्त चाँवस्यशुद्धि	२० २१७-४०६-४१२
मन-स्वरूप	२४-३१३-३७५
मन औ आफु	४७३
नाम विचार-पञ्च विकार	२३-१३२-४४०-४८८
काया माया कर्मगति	४८०-४८७
स्वाध, ब्रह्म, दोष	२८५
मोक्ष-भक्ति	३०५-४१४-४९८
अनुमध उपदेश	८१-३१६-४७९
दृष्टांतिक	२४९-३३७, ४६७

विषय

पृष्ठ

प्रभुभक्ति

ईश महिमा, अनुमध-२१-२३५	२४६-२९३-४४१
सर्वदेव माहात्म्य	४८२
हरिनाम महिमा	५०९-५११
प्रभुसहाय याचना-२३४-४३०,	५६-२९२
वीनामाय आधार	१२८
रणछोडयाचना	८३
नाम स्मरण	२३२-४३४
दशावतार महिमा	२४५
गभषासका कोल	२०-२३३,
तोर्यदेव महिमा	३३६
वेपगुरु स्वरूप	५००
ताजकी हिंदुत्व भक्ति	

श्रीशिवशक्तिकी भक्ति.

सदाशिव महिम्न	४०८-४४०
शिवकथा प्रभाव	४३९
शक्तिमहिमा	७६-२९०
भषानी प्रभाव	३१०
शिवकाशी माहात्म्य	२८४
तुर्गा, अंधिका, शारदा स्मृति	२८४-८०-४२५-६८
गंगालहरी	३१५-४३९
गणेश स्तवन	५६

श्रीराममहिमा

रघुराज गुणगान	८०-३१६-४६४
---------------	------------

विषय.	पृष्ठ.
श्रीराम स्तुति	५०८.
रामनाम प्रताप ३५-३६५-३१३.	
रामनाम तीर्थ	४५८.
श्रीराम बालस्वरूप	२२६.
सीताराम वर्णमहिमा	२३३.
सीतास्वयंवर	२२७.
धनुष भंग	२२८.
अवधेश स्वारी	४६२.
केकयीकलंक-दशरथवचन ८८	
लंकादहन	२२८.
रावण परिस्थिति	२३०.
हनुमंत पराक्रम	२३०
वजरग वीरश्री	४०७-४१२.

श्रीराधाकृष्ण भक्ति-शृंगार.

आध्यात्मिक राधाकृष्ण इ.	२१५-४८२.
श्रीकृष्ण स्तवन, विलास. ५६-	८१-४२०.
श्री कृष्ण-ब्रजवाला विरह ११२	१२१-४५४-४८३.
राधा-कृष्ण भक्ति... ३२४-३४०,	३४७-४३९-५०७
राधा-शृंगार छवि १८६-२८७,	४२१-४३८-५००.
राधायाचना ३-१८७-२५७-२६०	
कहान-रुक्मिणी, गोपी विरह,	३५-२३६-४४१.
कहान-प्रानकी पकता ... ५१३.	
गोप, गोपी, मनमोहन शृंगार,	३०९-३१८-४१८.
सुदामादि प्रसंग २९५-२९६,	३४५-४८१.

विषय.	पृष्ठ.
मुरली बांसुरी वर्णन ... ११६-	
१३३-१६१ १८७-२३७-३०९.	
मुरारिकी सहायता ... ४२१.	

सृष्टि सौंदर्य-ऋतुवर्णन.

वसंत ... २६-२८-७२-७३-१०९-	
१३१-१६२-२५९-५१२-५१८.	
होगे ... २७-१७१-३०८-४५९.	
ग्रीष्म २९-११२-१६४.	
वर्षा ... २६-३३-११०-११७-	
१६६-१८६	
वर्षा विरह ... २९-४११-४२०.	
शरद वर्णन .. ७१-१६८-१८८.	
हेमंत-हिंडोर. १११-१६९-३५७	
शिशिर १११-१७१-३१२-५०२.	

सदुपदेश-सदाचार.

यश-कीर्ति महिमा ... १-५१७.	
संगीतध्वनि उपदेश ... ३७२.	
परोपकार प्रशंसा... १७६-२३१.	
सुबोध रासरस ... ४३५-४६०.	
संग-कुसंग ७९-२०१-३४४-४३९	
दुर्मिल विचित्र प्रसंग २२४-२४३.	
काम जागृति ... १७३-४५८.	
शील-सत्य-स्वधर्म. ३२७-३४५.	
पानीकी प्रबलता इ. ८६-३६९-	४७२.
जाति स्वभाव... ८५-१३३-१३७	-४७६.
नीतिकी वरकती ५१९	
हिंमत, संप, व्यवहार इ. १६-	२९४-१०४-२४६.
वर्णाश्रम धर्म-तीर्थ इ. १००-	५१६-१२-२२१-२८७.
गोप्रार्थना, गोरक्षा. १३२-१९५.	
दाम-पैसा प्रशंसा. २१-३५-५१७	

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
नवाकु-भाग १५५-४७१-४७६		मिक्षु-फकीर ९६	
दारु-पूत-आमिष १३-३७५		वगमक्त पाखंड १०७-३५७-३६६	
अफीम-अमलीपत्ति ३०-४२९		सूमस्वरूप २१९-२२०-२२३-२४५	
कर्तव्यकर्म २७-५९-३४७		सूम सरदार कथन ५४-५८४	
स्वार्थ औ कृतघ्नता ८६-९१		सूम कुगुरु-सूम सेवा २७०-४८५	
प्रकीर्ण सुबोध २५-६५-४४०-४७७-४९५-५०१		कधिकी कवर-निरंकुशता ३१-७८-२२२	
प्रस्ताविक प्रबोध १५६-१८०-२७८-३५६-३७०-५२४		पिता-पुत्र क्लेश ६८-३३२	
समय-भावि प्रवृत्तता.		बंधु औ सुवर्ण ८९-४६३	
अस्तोदय ७९-३४७-४७५		खल-सज्जन भेद १४८-२२५-३६१-३६४	
होनहार ४७७-५११		सुमित्र-सज्जन १४-११५-२७४	
समय परिचल ८५-८६-११३-३०५		शुभाशुभ मित्र ३२९	
भावि प्रायस्य ३०-३२४-३२६-४७४-५०५		शुभाशुभ क्षत्रिय १७९-२२६-३३०	
प्रारब्धकर्म ३-२४-१०२-३२४-४०१-५०९		शुभाशुभ वैश्य ९०-३३०	
कलिचर्णन ३१-३४-१७७-३२१-४७१		शुभाशुभ शैव ३३१	
कलि विडंबन ६९-८६		शुभाशुभ वकील ३३१	
विधिखेल-दोष १७-१४२-२२२-३२६-४२७		दमी सिपाई ७३-९२-३२६	
विधिकी विचित्रता २८३-३७३		क्षत्रिय यशस्व ७७	
भूख बुद्धि-वारिष्ठ १४१-३०५		शेठ सेवक विचार २६८	
पेट प्रपञ्च ४९६		चारणज्ञाति विचार ४४३	
सज्जन-दुर्जन विचार		आर्य-अनार्य विचार ३३६	
महज्जन-सत लच्छन ३५६-३६०-३६३-४३९		नारी विचार.	
संत-भक्त लच्छन २३-२६३		पतिव्रता प्रशंसा ४९४-५२१	
सत समागम २१-१७६		पतिभक्ति-स्त्रीभूषण १४-२३८	
साधु-असाधु ३६१-३६२		परस्त्री सग निषेध ३०७-५२४	
		व्यभिचार दोष ४२७	
		शुभाशुभ स्त्री लच्छन ३३३-३६९	
		छिनाल लच्छन १८०-१८८-२२४-४९९	
		नारीयारी खुबारी १८-२८-२९६	

विषय.	पृष्ठ.
स्त्रीचरित्र. ८४-४३७, ४९८-५१४	
कर्कशा औं कुपात्र कथ... ३२१.	
राजनीति चातुरी.	
विक्रमरायको उपदेश .. ३४९.	
अकबरको नीतिशिक्षा १३८-३४५	
अकबरको अरज २९१.	
राजबोध ... २६४-३५६-३९८.	
राजभूषण ४९८	
राजरिति चातुरी... ४५१-४६१	
चतुर लज्जान्याग... .. ४२७	
चाणाक्य-चौद विधा ८९-२०१.	
वात चातुरी.. ... २७२-४३२	
याचना विचार ५१५.	
राजव्यवहार... ५९-७२-१२९.	
संधि-विग्रह... .. ५१५	
राय-राणी अंग १९४-१९८-१५६	
संधी, वजीर अंग... .. २०२	
मुसाहिव अंग २०५	
राजकुमार अंग २००	
रावत-पटावत अंग ... २०८.	
कवि-रैयत अंग ... २११-२१४.	
राजमित्र, संग-कुसंग २७१-२१८	
पात्र कुपात्र... .. ५१६	
प्रेम-प्रीति-मैत्रि-विरह.	
प्रवीण प्रेम... २००-४२३-४३३.	
प्रेमवाण विवरण ... १७२-२८७	
प्रेमरंग प्रभाव ... २९८-५२२.	
प्रेम-प्रेमिक महत्व ५-८३-११८	
प्रेमपंथ विरलता... २२१-३५४.	
प्रियाविरह... २५५-४१६-५१६	
दंपती विरह-शृंगार ... १५९-	
३४१-४८६-४२८.	

विषय.	पृष्ठ.
विरह व्यथा व्याकलता ३-८-	
११७-१२०-१२५-१८५-	
४०२-४८१-५१५-५१६.	
विरह-शृंगार ११६-१९१-२५९.	
मनमिलाप-शृङ्ग-प्रस ७५-३७६	
नेह निभावन... ७१-२५४-३९८.	
प्रीतिमहिमा २९७-४३६-४१७	

नायिका वर्णन.

प्रथमदर्शन नायिकावृत्ति... २२९	
त्रिविध चतुर्विध नायिका ६५	
अष्टाभिधान नायिका ४९२-४९३	
चंद्राभिन्नारिका नायिका... ४९२	
लज्जित नवपणिता ... ५१४.	
स्वकिया-लच्छन... .. ४८९	
उत्तम लच्छन ४९३.	
नवींठा सुरतांत लच्छन... ४८९.	
विभ्रम-ललितहाव लच्छन ४९०	
चतुर्विध नारी लच्छन .. ४९१.	
वध्यासुरतांत लच्छन . ४९३.	
पद्मिनी उर्ध्वशीस्वरूप १८९-५०८	
सान्त्विकभाव उदाहरण.. ४९२	
नायक-नायिका पत्रिका. १३६.	

चित्र-विचित्र अन्योक्तियां.

लेखिनी आदि उक्ति ... १८५.	
पुष्पहारान्योक्ति १३१	
शंख-कुरंगान्योक्ति ५४-११५.	
मयूर-सिंहान्योक्ति... ३०८-१३०.	
हंस-सरितान्योक्ति .. ३६-४१५.	
गागर-सागरोक्ति ... ३०-२८७.	
मेघ-मार्तंडतापोक्ति १९६-४६२.	
राधा, सखि उक्ति. ३७१-४१२	

विषय	पृष्ठ.
चंद्रोक्तिका	४१२-४६२
सूत्र-कपूत इत्यादि	३२५-३४२
मृदग औ गणिकान्योक्ति	५०५
गांय नांय रचना	२१८-४१०

काव्य चमत्कृति-संगीतसार.

विविध ज्ञाति संकर छंद	१९३
शब्दचमत्कृति, शृंगार	३२७
सुयोध वर्णमैत्रि	६३-३०१
स्वानुभय संगति	१७५
सापेक्षिक दर्शन, त्रिअर्थी	३२२-३७१-४६९

सापेक्षिक प्रबंध	१२९
दोरंग मोती, युक्ति निरूपण	११५-३६५

विधिउपालभ कटाक्ष	११४-४६३
चंद्रप्रदण प्रतिकार	११५
रमा-उमा संवाद	५०६-५०९
दत्त-जिह्वा सवाद	१२१
पावस अपमृत्ति विरोधामास,	११९-३८७

समस्या प्रश्नोत्तर	५-१७-३४
६९-१२२-१२६-१३२-१४३ १४४	
१८०-१९०-३४६-३५२-४१४	
४३७-४७०-५२८	

उत्प्रेक्षा पादपूर्ति इ०	२९४-४७२
गूढ काव्य	११-५१
रागमालिका	६२-४५४
सप्तस्वर उत्पत्ति	१४९

मैरव मालकोशादि रागिनी	१५१-१५२-१५३
मधुमाधवी वनारसी	१५२

विषय	पृष्ठ
खटमल्ल मच्छर	५०८
लकडी-कमरी-चेचक	९२-१५९
शृंगार सौंदर्य, हास्यरस,	
श्रीसौंदर्य	५१-१०९-१२३-१४४
	२५८-४३०
सोलह शंगार	१९९-३६५
सयोग शृंगार	४९३-४९०
शृंगार-विराग	३७० ४०३-५१२
सुंदरी तनयनन	३३३-३६७-५०३
नागरी स्वरूप	४५४
प्रिया स्वरूप	५०२-५०७
रूपकार्लकार, हंसमार	८२
अप्सरा उपमा	११९-४६६
प्रिया कटाक्ष	२९-३०१
चनिता यिनोद	४०६ ४१८
भामिनी भोजनतारतम्य	१०
वीर-शृंगार	२४०-३६६-४७७
हास्यरस, मुकरिया	२८६ ४१६
	४६६-४७६-५२६

कविकुल गौरव

तुलसी स्तुति	१७-१२०
तुलसी चिन्मय	२३२
चंद प्रतिज्ञा	१७८
गंग-धीरधल भेट	५२१
पद्माकर, जगतसिंह	३२०
ब्रह्मानंद (श्रीरंग)	३६४
मणियार	४०९
हरिश्चंद्र वृद्धता	५१३
धनीराम	२८६
केवल (मिज परिचय)	५५
गोप कनोजिया	१२५

विषय.	पृष्ठ
वैष्णव दुर्गादत्त	२५७
शिवभक्त नथुराम	२९१
सुंदर, गंग, तानसेन,	४८३
वाल्मिक, कबीर, नानक	४८३
दुर्गादत्त वैष्णव	२५७
कविका श्राप	१८
कवि परिचय	५२९

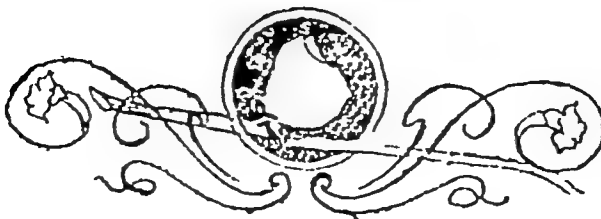
ग्रंथ गौरव.

भागवत	११२
रामायण माहात्म्य ..	२३३-३४७
विहारी शतसाई... ..	२९३-३४३
हरिप्रिया विलास ..	२५७
सूरदास पद	२२६.
संस्कृत भाषा महत्व	५२१
स्वभाषा प्रशंसा १०३-३३२-४२२	
जैन भाषा प्रशंसा	३७५.
काव्य-महाकाव्य... ..	४५५-४७५.
काव्यप्रसाद परीक्षा २४१-२६३	
कविता, कान्ता... ..	१७३.
कवित्व महत्व	२२४-४८६

विषय.	पृष्ठ.
कवि, कविता विचार	६४,
	३३२-३७३ -४५९

महज्जन महिमा.

परदु गभंजन वीर विक्रम. ३७१	
अकबरका समय	५२१.
छत्रपति शिवाजीमहाराज ३८०	
शिवाजीकी समशेर.	३९३.
कुमाउनरेशके हस्ति	३७९
सुरत, विजापुर विजय ३९४.	
छत्रशाल हाडा	४६०.
वालागव वीरता ..	४५९
धर्मरक्षक जयशाह	३४३.
पद्मसेन प्रशंसा	१८१.
भंजयराय औदार्य	१८५.
रीमा औ सोलंकी नरेश. ३७६.	
केसरीराज उदारता	४४२.
रामसिंह, जयसिंह, शाहु. ३७९.	
शाहजहां वंशवर्णन	४८९.
औरंगजेब अपयश	३७६.
वीरवल, दयानंदविरह. १-१९३	



INSCRIBED TO
THE SACRED MEMORY OF
BEHRAMJI MERWANJI MALABARI,-
POET, JOURNALIST,
REFORMER and PHILANTHROPIST,



A Worthy Son
of
India
Our Motherland.



साहित्य-रत्नाकर.

(साहित्य-संग्रह)

अकबर

(पञ्चमहिमा दोहा)

जाकी कीरति जगतमें, जगत सरहै जाहि,
ताको जीवन सफल है, कहत अकबरशाहि १

(विविध शृंगार-सचैया)

शाह अकबर बालकी बाह, अर्चित गही चह मीतर भीने,
सुन्दरि द्वारहि छटि छगायके, भागिबेको भ्रम पावत गौने,
चौकतसी सब ओर विलोकित, शक्ति सकोच रही मुख माने,
यों छवि नैन छरीलेकी छाजत, मानो बिद्योह परे मृगछौने १

शाह अकबर एक समै चले, बान्ह विनोद विलोकन बालहि,
आहतें अबल निरस्यो चाफि, चौकि चटी कर आतुर चालहि,
त्यों बटि बेनी सुधारि धरीसु, भई छवि यों छलना अरु लालहि,
चपक चारु कमान चढ़ावत, काम ज्यै हाथ जिये अहि बालहि २

कलि करै विपरीति रमैसु, अकबर क्यों न इतो सुख पावै,
कामिनीकी कटि किंकिनि कान, किधौं गन प्रीतमके गुण गावै,
चिंदु छुटि नमें सु छिल्लटतें, यों छटमें छटको छगि आवै,
शाहि मनोज मनो चितमें छनि, चद लये चकडोरि खिलवै ३

(बीरबल थिरह-मोरठा)

दिन जानि सब दीन, एक न दिन्हो दुसह दुस,
सो अब मोको दिन्ह, कछु न राख्यो बीरबर १

(दोहा)

पीमलसो मिजलस लई, तानसेनसो तान,
हसबो रमबो खेळबो, गयो बीरबल मान १

अनन्य.

(चतुर्विध ज्ञान-सवैया.)

विधि भेद निषेध न जाने कछु, मतिके अनुसार लही सो लही,
 नहि रीत है वेद पुराननकी, अन रीतसुं टेक गही सो गही;
 समुझाय नही समुझे गुरुके, उरके अनुमान कही सो कही,
 यह तामसि ज्ञान अनन्य कहे, हठि मूरख गांठ गही सो गही. १
 जिहि काम करे सुविचार करे, फल चार विपै हित राजत है,
 व्रत संयम नेमसों कर्मक्रिया करे, भाक्ति भली विधि द्याजत है,
 करि सेवहि देव मनाय भली, धर पाय धरापर गाजत है,
 यह राजस ज्ञान अनन्य कहै, जनु धर्म सरूप विराजत है. २
 शील सुशील सुबुद्ध सुलच्छन, धीर गंभीर मिले जग न्यारे,
 धर्म दया निरलोभ निरंतर, निर्भय भाक्ति आराधनहारे,
 धर्म करे सो करे प्रभु अर्पन, चाहत नाहि जु बुद्धि उजारे,
 सात्विक ज्ञान अनन्य कहै, सोइ भक्त सदा भगवंतहि प्यारे. ३
 हर्ष न शोक न राग न रोष हु, बंध न मोक्षकि आस नहीं है,
 वैर न प्रीत न हार न जीत न, गार न गीत सो रीत ग्रही है,
 ऊंच न नीच न जात न पात, न दोस न रात सुदृष्टि भही है,
 निर्गुन ज्ञान अनन्य कहै, अवधूत अतीतकि रीत यही है. ४

(भवसिंधु और परब्रह्म-कवित्त.)

करमकी नदी जामें भरमके भौर परे,
 लहरै मनोरथकी कोटिन गरत है,
 काम शोक मद महा मोह सो मगर तामें,
 क्रोधसो फनिंद जाको देवता डरत है;
 लोभ जल पूरन अखंडित अनन्य भनै,
 देखौ वार पार ऐसो धीर ना धरत है,
 ज्ञान ब्रह्म सत्य जाके ज्ञानको जहाज साजि,
 ऐसे भवसागरको विरले तरत है.

वैष्णव कहत विष्णु वसत वैकुण्ठ धाम,
 शैव कहे शिवजू कैलास सुख भरे है,
 कहें राधावल्लभी विहारी वृन्दावनहीमें,
 रामानन्दी कहे राम अवधसें न टरे है,
 पतो सब देव एकदेसिक अनन्य भनै,
 हम तुम सब आप ठौर न ज्यों घरे है,
 चेतन अखंड जासैं कोटिन ब्रह्मांड उदै,
 ऐसो परब्रह्म कहा पुरिनमें परै है
 जेहि सरित्तान अरु सागरान नीर शोष्यो,
 सोइ सरित्तान सागरान नीर मरि है,
 जेहि तरुवरनको पत्रन विहिन कियो,
 सोइ तरुवर मांस फेर पत्र करि है,
 जेहि राजा बलिनको उंचेसे पताल भेज्यो,
 सोई राय बलिनको फेर इद्र करि है,
 घरे रहो धीरवीर अक्षर अनन्य भजे,
 जोइ उपजाइ पीर सोइ पीर हरि है

२

३

अज्ञान.

(पारम्य-कर्ममहिमा-सबैया)

विमोहित सत पठे द्विज मत, महा सुख तंत हैं शोम अपार,
 सिवारको राम पुरैन विलास, सरोज विकास सुगंध अगार,
 मधूवत पेसो सरोवर वासतें, जो न गयो मन तैसे विकार,
 अज्ञान यही मति किन्हु बिचार कि, माल लिखी लिपि को शकें टार १

(राधाकृष्ण विनोद-कवित्त)

मान करि बेठी वृषभानकी लहैती हूँ,
 उत्तको ह्वाल देखे मेरो हियो डरपै,
 पानी पान मूषन वसन तजि दीनो जाको,
 थायो है विषाद सारे नंदके नगरपै,

कांपे जात वाततें लहकि जात चांदनीतें,
तारन कतार ताकि तारापति तरपै;
मान शिख ऐरी अवे दीजियें दरस नेक,
धीरज धन्यो न जात लाल गिरधरपै.

१

महल उशीरके चंदोया चिकै चांदनीकी,
फरस चमेलीकी अनोली छटा छहरै,
छुटत फुहारे चहुंओरन गुलाबवारे,
नहरै भरी है घनसार वारी गहरै,
संदली बहारदार व्यंजन हुल्यवै सखी,
करत बिहार तामें दंपति दुपहरै,
प्रेमकी लगनमें सु आनद मगन लेत,
शीतल सुगंध मंद मारुतकी लहरै.

२

अतर गुलाब सो सुवासित पहिरि सारी,
चौपसा चुपरि चोथी चंदन चहलमें,
भूखन अदुखन सकल वेला चादनीके,
गजरा चमेली को न आवत कहलमें,
सग ना सखिन घनसारकी गलिन बीच,
वहै कर अलिन चंद चापति सहलमें,
धीर धरो सावरे हियेको करो सार चली,
आवति समीरपै उशीरके महलमें.

३

संग सखियानके नहानमें सरोवरपै,
कौतुक भयो है सो न कहति वनायके,
चंद्रमुखी देखत कमल सकुचाने भौर,
सकल उडाने परे क्यारिनमें जायकै,
ता समै निकुंजतें, निकरि सुख पुंज लाल,
गजरा गुलाबको, दिखायो कछु गायकै,
कंचुकी कसति हासि एडिन घसति कंज,
कालिका दिखाय चली मुरि मुसकायकै.

४

(दोहा.)

सम्बत शशियुग अंकमंहि, फागुन मास हुलास;
वीरोल्लास प्रकाश किय, कवि अजान सविलास.

५

अनंत

(समझ्यापूर्ति-विषिघ-शृंगार सधैया)

कहौं इक घात बुरो जिनि मानहु, कन्हहि देखि कहा मुसकानी
 मैघौ फचे चित यों इहि औरपै, दाऊकी सौं तुम और गुमानी,
 आपनो सो जिय जानती औरको, तातें अनत यह जिय जानी,
 कहौ जू कहौ अलि जो फखो चाहती, दूधको दूध सो पानीको पानी १
 मनमोहन हैं जिन वे सुख दीने, इतै चितवौ चित भूलि न जैयें,
 और सुनौ सखी मीत मिताइकी, मीत जो वेचै तौ वेचे विकैयें,
 अनत हसेतें हसैं बिच चखन, रूसैं हसेतें गवारि कहैयें,
 मान करौ तो करौ घरी आपलौं, प्यारि बलाय ल्यों सौंह न सैय २

अयोध्याप्रसाद-औध

(ऋतुषण्णन कथित)

वाटिका विहगनपैं वारिगा तरंगनपैं,
 वायु धेग गगनपैं बसुधा बगार है,
 बाफी बेनु ताननपैं, भगले विताननपै
 घेस औध पाननपै, मिथिन बजार है,
 बुंदावन बेलिनपै, वनिता नवेलिनपै,
 ब्रजचव केटिनपै, बशीबट मार है,
 वारिके फना फनपै, बदलके बाफनपैं,
 बिजुली बलाकनपैं बरपा बहार है
 हरपे हरौठ छै अमरपैं अनग हेत,
 फरपे फलापि चोपि चातक चमूपिली,
 उमडे घटा है मानी करने छटा है छटा,
 फेरत पटा है ठटा शुरकी हटाफिली,
 धैरिके अडे है बिन बुदन छडे है औध,
 आनद खडे है देखि दादुर बडेदिली,

कादर वियोगी हारी चादर बलाक फेरी,
बादर बहादुरकों नादिर फते मिली. २

मंजन अथाह नीर वास है विसाल जहा,
झार है अढार भार विध्याचल पारके;
मेवा अहार काज भले भांत भांतिनके,
करिनीके यूथ मध्य करनो विहारके,
वेतो सुख गये अब रहे मार अंकुशके,
जंजिर जरे है लोह पायमें पसारके,
डारत है शीसपें उठाय गजराज रज,
झूरत है वार वार वै दिन संभारके. ३

सेवती निवार सेत हीरनकी हार जूही,
यूथ औ अनार मोती विद्रुम लसंत भो,
पन्ना पुखराज पत्र चंपक समाज फाल,
मानिक गुलाब नील इदीवर गंत भो,
माधवी नमूनो गउमेद कल सूनो दूनो,
औध बाटिका बजार पूनो विलसत भो,
यतन जल्लस जोर रतन रसाल रंग,
अतन अनंद हेत जौहरी वसंत भो. ४

भूली किधौ ह्यांकी पीर बाढी हे उहांकि झरे,
नेन झरनांकि सुधि आये उर बाकी है,
चंचल चलाकी करे नटकी कलाकी तेसी,
दोर बदराकी औ धुकार धुर वाकी है,
है न कछु बाकी औधि आशरा निशाकी तामें,
आह परे डाकिये झकोर पुर वाकी है;
टेर पपिहाकी करे सेल समताकी डरे,
करे उर झांकी ये पुकार मुरवाकी है. ५

अहमद.

(प्रेम-धियोग-बोधा)

- मनमें राखों मन जरै, कहीं तो मुख जरि जाय,
अहमद घात न चिरहकी, कठिन परी बहु भाय १
- विद्युरे मानस फिर मिलै, यहै जान अवतार २
- प्रीतम नही बजारमें, वहै बजार उजार,
प्रीतम मिलै उजारमें, वहै उजार बजार ३
- कहा करौ बैकुण्ठ है, कल्पवृक्षकी छाह,
अहमद दाक मुहावने, जह प्रीतम गलवाह ४
- गमन समय पटुका गझो, छाडहु कसो सुजान,
प्राणपियारे प्रथमही, पटुका तजौ कि प्राण ५
- अहमद या मन सदनमें, हरि आवैं कहि घाट,
बिफट जु रजौ लैं निपट, खुलै न कपट कपाट ६
- कहि आवत सोई यथा, चुभि जो हित चितमांहि,
अहमद धायल नरनकों, बेफलार फल नाहि ७
- अहमद अपने चोरकों, सब कोउ कहे हनेउ,
मो मन हरन जु मौ मिलै, वारफेर जिव देउ ८
- प्रेम जुवाके खेलमें, अहमद उलटी रीत,
जीतेहीको हारिवो, हारेहीकी जीत ९
- कहि अहमद कैसें बने, अन भावतको सग,
दीपकके मनमें नही, जरि जरि मेरे पतग १०
- अहमद नग नहि खोलियें, या फलि खोटे हाट,
चुपकि मुटरियां बाधिये, गहियें अपनी घाट. ११
- प्रेमपथ दुरिगम विषम, अहमद चले न कोय,
टोहर या मग सो चले, जाको शुद्धि न होय १२
- अहमद मारग प्रेमके, भूलि परे जनि पाय,
धिन मारे छाबि नहिं, इनके ओर सुभाय १३

अहमद मारग प्रेमको, सब को पेडे धाय;
 जो पोंहचे सो ना फिरे, कुशल रहेकोउ खाय. १४
 नेन श्रवन मुख नासिका, अधर सधर कच भीर;
 उहां पर्यो मन अहमदा, जेसैं समा बहीर. १५

(सोमटो.)

हाड चाम रग मास, सौ तौ विगहा नै गयो,
 अहमद गयो जु सास, ताहिकौ सासो पर्यो. १६

आलम.

(कवित्त.)

(शृंगाग्रस-वियोग वर्णन.)

प्रेम रगमगे जगमगे जागे जामिनीके,
 यौवनकी ज्योति जगि जोर उगमत है,
 मदनके माते मतवारे ऐसे भ्रमत है,
 भ्रमत है झुकि झुकि झंपि उधरत है;
 कहे कवि आलम निकाई इन नैननकी,
 पांखरी पदममें भंवर थिरकत है,
 चाहत है उडिवेकों देखत मयक मुख,
 जानत हैं रौनि तातें, ताहिमें रहत है. १
 प्यारी तन भूमि तामें, रूप जलसागर है,
 यौवन गभीर भौर शोभाकों धरत है,
 दीपत तरंग नैन वारिजसैं डोले तहां,
 उरगसी वेनी जिय देखत डरत है;
 आलम कहत, मुख कहर गहर राजै,
 तामें मन मेरो, यह दौरिक परत है,
 बेसारिको मोती मानो, करहै सिकंदरको,
 वार वार झूमि झूमि, मनै सौ करत है. २
 खरो कइ हुतो सुतो तों खरी ए विकल कीनी,
 मन हरी लीनो हरि, अति तनतें गयो,

देखे न अघाह नेना रोइ करि लइ रही,
बिरह बढाइ आइ जानो बिखुमे गयो,
सांवरैसे गात कवि आलम सरोज पख,
अचानक आइ अब आंगनमें बहे गयो,
मुरि करि मोरि मोहें मेरी याही खोरि सखी,
नेकु मुख मोरिख खरोई जिय ले गयो

३

हसैं हसि घेत बोले बोल आनि खेले गेह,
तार्त पहिचानी कछु पीरी पीरी सी मई,
आलम कहे हो वाकी दियेका पुढाई देखो,
फेसैं के दुराई माई प्रीति कान्हकी नई,
आजु अनमनी हुती असुवा भरत ठाढ़ी,
पौछैं ते अलीन आनि मुज भरि हे लही,
मेरी कसो असुवा कहारी कैसे असुवा हैं,
पलकें पसारिही पूतरी न पी गई

४

जानत हे जीउ जसैं अनदेखे दुख होत,
जमुनातें आवतही जात देखे अनत,
भौनन सुहात हे उसासन बिहात दिन,
रतिपति अगनि दहत तन तबतें,
आलम कहे हो प्यारे काहूकी तो पीरो धूसै,
हरिहृतें बदन दिग्वेबो क्रीजे अनर्त,
ऊंचे चितवत नाही नीचें मुसिक्यात जात,
पती निदुराइ कान्ह कोने बदी कचतें
ओरे ठोर कान देती मनही बेराई छेती,
मुरलीकी धुनि सुनि चितहि न आनती,
कान्ह चित पैंते होतें, चितें मुसिक्यानी कत,
भूली तब रुखी व्हेंके त्योही त्योरी तानती,
आलम कहे हो कहु एसेई बिसासी हेरी,
आनि बस भई बात काहूकी न मानती,

५

मोसों मुख मोरि जेह औरनसों जोरि रेहें,
काहेको हों जोरों नेंनां जों हों एसों जानती.

६

केधों मोर शोर तजि गयेरी अनंत भजि,
केधों उन दादुरन बोलत हैए दर्ई;
केधों पिक चातक महीप काहु मारि कारे,
केधों बक पांति उत अंत गति न्है गर्ई;
आलम कहति आली अजहुं न आये पिय,
केधों उत्तरात विपरीत विविने दर्ई,

मदन महीपकी दुहाइ फिरिवेते रही,
केधों मेघ जुझे केधों विजुरी सती भई.

७

चंदही चकोर देखे दिन गने रेन लिखे,
चंद विन एक दिन लगत अंध्यारी है,
कारो कारो कान्ह कहे लगत गमार जैसो,
मोहि बाकी श्यामताई लगत उज्यारी है;
आलम कहेरी आली कुलई चढत फूल,
कंटक डरात नाहि एसी प्रीति प्यारी है;
मनकी लगन तिहा रूपको विचार कैसो,
रिझिवेको और पैहै बूझ कछु न्यारी है.

८

इंदु-बालमुकुंद.

(भामिनी भोजन तारतम्य.)

जे ते पकवान है सुजाननके जानवेको,
ते ते तुं निदान कर करिवे कुशल है;
तो ते मधुराई चिकनाई औ सुवासताई,
पाई हे पियूष प्रेम मालती सबल है;
इंदु सुकुमार है निहोरके निहारहारी,
बार बार फूंक देत होत न अमल है;
तेरे मुख सरस सरोजकी पराग भरी,
पीवत अनिल यातें मधुमत अनल है.

१

सुखद सुदार घरी पापरसु राख तहा,
 चायर सजुत बेस व्यंजन सजाईमें;
 चद्रफटा फटित औ छटित रसाल मन,
 मोदक मनोहरकी जुगत समोईमें,
 विविध विधान पाक रजत जलेच जाकी,
 मधुर सलोनी जेव जाहर न कोईमें,
 शीतल न होने दीजे लीजे रुचि होय ज्यों ज्यों,
 जोई जोई चाहो सोई सोई हे रसोईमें २
 गोमावान सरस सरोवर सुवास पूर,
 सुखको समूर सदा गोमे गोम भारीमें,
 मृदु फल कमल कुमोद कुल काम भरे,
 फूले अमिराम चहू और चित्त चारीमें,
 तामें इदु फज दल मांस सांस हीते बंक,
 हँकें जडरूप लसे एसन निहारीमें,
 शुक्त है के मुक्त है के उक्त यी समाजे राजे,
 कबु कमनीय इदु नीलमनि थारीमें ३

उद्भव-ओषध

(गूढार्थ-घोटा)

में जान्यो अधशेर हो, तुमतो पूरे शेर,
 हीममुता पतिवाहना, तामें फार न फेर १

(कथित)

सोहे सीस सारी रग दोयलीकी जाकू चारु,
 खेलत हे कान्ह दोय चार लीसा देखिये,
 किन्हे आठ दूने औ छ दूने लसे अंगनमें,
 तेरहके दूने छहि सहित विशेखिये,
 जातकी तौ गुजरी हे चालीस औ चाली शली,
 दूनेके छयाली सली ऐसी अवरेखिये,

दूनेके छयाली सली एनने उमेनवारि,
पांच वीश दूमें एक ताको करि लेखिये.

१

उदयभाण.

(विविध विषय)

दिव्य गतिहूतें हीरा कीरनिके चढ्यो कर,
मढ्यो गुजमाल तोपें वढत मयूख है,
भाइ भई ताकी द्युति भानके समान जान,
जिय ऐसें जान्यो वाके नयन उद्धक है;
काल पाथ वेस्याके करैयातें जु आय मिल्यो,
राख्यो तव किंमतमें वरन कछूक है,
अहो नाथ जौहरीहू जानत करी न जान,
तव तो करे जो फय्यो भयो शत दूक है.

१

चशम चढाय चख भूल मत भाविहुतें,
अवसर चूके यहा फेर नहि आवेंगे,
वढेवो घटेवो मेरो पारख करैया हात,
दोष ना पिछाने तव कहां हम जावेंगे,
भान कवि जौहरीसों हीरा कहे वार वार,
विरद विचार वात आनपें न भावेंगे;
तेरे सो मिलेगो कौऊ करेगो खरीद तव,
कनुका भयेहु नेक सत्य मोल पावेंगे.

२

मात है कुशल्या तात दशरथ बिल्यात विश्व,
भरतसो भ्रात भानुवंश मोदभर है;
भान कवि शासन कबूले जाके तीन भौन,
भक्तकाज भूले फेर फूले बेफिकर है,
पथरपें प्रीत आई मर्कटादितें मिलाई,
शत्रु भ्रातके सहाई जाहिको जिकर है;

देत रीझ डर है न वैभव विगर है न,
कान कौउ फर है न सोवत असर है ३

(वेदपिंजर-सचैया)

जों छों निचिंत रह्यो निशि घोस तु, तों छों मिल्यो नहि धैरि तिहारो,
मान फहै सुन रोर लया, अव पख सन्हारकें वेग पधारो,
मान सियानके पान परानतें, आन न प्रान बचाखनवारो,
चाहत हो जियबो चितमे, तो उमेद है पिंजर तोहि निहारो १

ऊमरदान.

(दारु दोषदर्शन-कवित्त)

रोगको भवन लौ कुजोग तोष मन जानों,
दयाको दमन है गवन गरवाईको,
बिधाको विनाराकारी तत्पुधाको त्रासकारी,
हिंमतको दासकारी भेरु भरवाईको,
ऊमर विचार शीख पाप रिसि श्रापनको,
विषय विष व्यापनको पौन पुरवाईको,
मातनिको माइ औ क्रमाइ निज कामनिको,
शत्रु सुखदाइ सुरा हेतु हरवाईको १
पीथलको^१ खेत पार्या महमदको^२ मान मार्यो,
बुद्ध^३ सिंहको बिगार्यो नीके निरघारो मैं,
खून बिन जैत^४ खोयो हुंगरसिंहको^५ डयोयो,
ओरको^६ मरन जोयो हिये मांस हारो मैं,
तखतको^७ फिन्डो संग सज्जनको^८ मृत्यु सग,

१

१ पृथिराज बोहान. २ अमदावादको मुल्तान महमद बेगडो
३ बुद्धसिंह दांडो बुद्धपति ४ जैतसिंहजी जोधपुरका उमराव आत्मा
छकुर ५ हुंगरसिंहजी जोधपुरका उमराव दोखावत, पटोटाका छकुर
६ जोरावरसिंहजी जोधपुरका उमराव पापावत, खादका छकुर
समत् १९३० का माघ शुद्ध ११ के रोज दगासँ मारे गये कहत है
७ जोधपुरका महाराजा तखतसिंहजी ८ उदेपुरका महाराणा मन्जनसिंहजी

कोटापतिको^९ अपंग ऊमर उचरोमै;
तोप पोश ओश मारु काहे अपसोस कोस,
हाय दारु तेरे दोष कहालो पोकारो मे.

एदिल-येदिल.

(सज्जन सनेह-पतिभक्ति.)

अग्निनी कनक जारे चंदन खंडितआरै,
शिला घसे शीतलता वासना घटात है;
क्षीर मथे माखन बहुरि आवे एदिल व्हे,
मुकर मलीन माजे मूरति दिखात है,
तोरे है सरस अरु मोरेहू सरस ऊख,
झीले छाटै काटे ओटे अधिक मिठात है,
रचिवेकी कहा कहों विरचे सहस गुनी,
सज्जन सनेह कहू बातें न सिहात है. १
नरक जो देहि तो न निदरी विमुख हूजें,
स्वरग जो देहि तो न हरखि सराहियें;
रह करि डारे तो न कीजियें कलेश जिय,
करे जो कबूल तो न फूलिके उमहियें,
जिहि अंग रंग होई तिहि अंग रंगहूजें,
एदिल सनेही नेही नीकेकै निवाहियें;
चित्त क्यों न चाह मरों आपु चाह चूल्हे परो,
प्रीतम जो चाहे चाह सोइ चाह चाहियं. २

(सवैया.)

आंखिन आंखि लखी जबतें, अखियांनलों आंखि रहे अनुरागें;
एदिल वा अखियानके ध्यानमें, आंखिनिकों निशि जातहें जागें.

आंसिये आंसि हँ आखिनकी, आखियानको आंसि न सूजत आँग,
आंसिनके बस आंसि परी धिन, आंसि छो नहि आंसिके छो १

(निगुणमत्ति-कथित)

कंदरने बसे कहा कंदमूल भले कहा,
एतो आप कैसे कहा, साधत ज्यों पौन हे,
मुढन फराय कहा, जटन बढ़ाय कहा,
तीरथही नाहे कहा, प्रीतिहीई जो न हे,
तेरे दोँको उही मांसि, तेरोही सरूप लिये,
एदिल विचारि देख, भीतरि ज्यों भौन हे,
फाया कोट मांसि पेठि त्रिकुटी कपाट वेठि,
नेनके झरोखे चीच आखता सो कोन हे १

आखता सो नेन कोन, सुनता श्रवन कोन,
नासिका निवास कोन, भोग विषे कोन हे,
तनमे रहे हे कोन, दुःख सुख सहे कोन,
ताहिको सरूप कोन, वेन विषे कोन हे,
ढँच कोन नीच कोन, पाप पुन्य विधि कोन,
चेतन अचेत कोन, सोवे बगे कोन हे,
निपटमें समे कोन, भ्रम भूल्या भ्रमे कोन,
रोम रोम रमे कोन आपहीमें कोन हे २

कर्त्ताको रूप कौन इडको स्वरूप कौन,
इडमाहि बसे कौन इड पार कौन है,
नात्र धूँद जोग कौन, जीव ईश भोग कौन,
मूमिको अवतार कौन निराकार कौन है,
पाप पुन्य करे कौन अवागमन पडे कौन
पंडित पुरान कौन, वेदवाक्य कौन है,

पचमें प्रपच कौन ओमति ओंकार कौन,
मुफिको द्वार कौन स्वर्ग नरक कौन है ३

पिडसो ब्रह्मांड कौन, जरा मरण काल कौन,
 वाचा औ अवाचा कौन, चिदाभास कौन है;
 गुरु शिष्यको बोध कौन, सद्गुरुको देह कौन,
 पार उतारन कौन कहो ए ते कौन है;
 कर्त्ता हे अक्षर ब्रह्म, तार्ते भया सुवर्ण इंड,
 सुरति बनि इंडमाहि, इंड पार आनंद हे,
 नाद बुंद जोग स्वप्न, जीव ईश भोग स्वप्न,
 भूमिको अवतार स्वप्न, निराकार स्वप्न हे.

४

पाप पुण्य करे स्वप्न, आवागमन पडे स्वप्न,
 पंडित पुराण स्वप्न, वेदवाद स्वप्न हे;
 पंचमे प्रपंच स्वप्न, ओमती ओंकार स्वप्न,
 मुक्तिको द्वार स्वप्न, स्वर्ग नरक स्वप्न हे;
 पिडसो ब्रह्मांड स्वप्न, जरा मरण काल स्वप्न,
 वाचा अवाचा स्वप्न, चिदाभास स्वप्न हे;
 गुरु शिष्यको बोध स्वप्न, सद्गुरुको देशपार,
 पार उतारन स्वप्न, मिथ्या जग स्वप्न हे;

५

ओंकार

(हिंमतकी किंमत—सचैया.)

निशि वासर प्रेमके पंथ चले, हृदये हरिनाम बिसारे नहीं,
 घटि वृद्धिय देखके एक घरी, धिरता दिलपे कछु धारे नहीं,
 बिधिको बिसवास ओंकार कहे, अपनो बलबुद्धि बिसारे नहीं,
 वहि मानस जातकि किंमत हे, जु समेपे हिंमत हारे नहीं. १

अंघ

(कृष्णगुण-काव्यलच्छन-कविस)

सुचरन अरधमै मनोहर अलंकार,
 सयद मधुर ताकी धुनि मनमार्ह है,
 सहज सुभाव नीकी पदवी घरनि जाकी,
 सरल सुगतिहीति सरस सोहार्ह है,
 मानत निगम जे बखानत विदुष अन,
 तेरे पद वंदनकी विदित निहार्ह है,
 जैसी छवि चढ़े चित्त चरनारविंदनकी,
 तैसी ये कविंदनकी बड़े कविताई है १
 जलक प्रमुख तेरे पदके सिंगार ध्याये,
 सरस सिंगारमई बानी उमडति है,
 भावना फियेतें सुचरन अलंकारनकी,
 नीकी अलंकारनकी उपमा कठति है,
 गूढी तरवानकी उजाली नख इंदुकी,
 अंघ जो कविंदनके चित्तमें चढति है,
 जागत प्रताप बरननको प्रताप जग,
 कीरति बरनिवेकी कीरति बढति है २
 शांत नख रुचिमें सिंगार है सिंगारनमें,
 धुषुख मुखन मृदु हास रस बरसै,
 करुना मरें हैं प्रभु अदभुत एक जिनै,
 बैरी बीर निराखि मयानकसैं तरसैं,
 जामे जानि परत विमत्सको अभाव जाको,
 रुद्रचख रसिक सुभावनिमें परसैं,
 अघ तेरे चरनारविंदन कविंदनको,
 शुद्ध नवो रसके उदाहरन दरसैं ३
 झानतें न गेय उपमेय उपमानितें न,
 ध्यानतें न घेय अप्रमेय अनुमाने हैं,

ज्ञाताको कहावै को प्रमाता ताहि पावै कौन,
 ध्याता ताहि ध्यावै जे विधाताऊ न जाने है;
 अव्यय अखड कोटि कोटि ब्रह्मंड जामे,
 मंडल मयूखके पियूख सरसाने है,
 ब्रह्मानंदमयते अनामय अभय अंब,
 तेरे पद मेरे अवलंब ठहराने है.

४

कहान-कान. (पहिला.)

(सटुपदेश-कुंडलिया.)

म्होवत कीजे मर्दसु, कबहू आवत काम,
 शिर साटे शिर देत है, दुखियनको विश्राम,
 दुखियनको विश्राम, दुःख अपने तन झीले,
 मटे न जब लग माहि, तहां अपनो कर हीले.

कथे सु कविया कान, सत्यसें साची सोवत,
 कबहू आवत काम, मर्दसें साची म्होवत.

१

मेरी झपटत मर्दकुं, मर्द रह्या गम खाय,
 पानो पड्यो कुनारसें, राव कहां ले जाय;
 राव कहां ले जाय, मदत तो एसी मंडी,
 कहां बदलाने जाय, नही कुंभारकी हंडी.

कथे सु कविया कान, मेरी मनकी हे बेरी.

मतीहीन है नार, मर्दकुं झपटत मेरी.

२

मेरी आशक मर्दकुं, बांधत मलक मजूर,
 जागेके मुख चूरमा, (ओर) ऊंघतके मुख धूर;
 ऊंघतके मुख धूर, डालके चली वजारा,
 ओर शूरमें रंग, पियकुं मारे पैजारा.

कथे सु कवियां कान, अकलकी हए अनेरी,

बांधा मलक मजूर, मर्दपर आशक मेरी.

३

मिशरी घेरे झूठकी, ऐसे होय हजार,

जहर पिवाये साचका, सो विरला ससार,
 सो विरला ससार, पटतर उनको ऐसा,
 मिशरी जहर समान, जहर है मिशरी जैसा
 कथे सु कवियां कान, भूल मत जैयो भोरे,
 जिनके शिर पेंजार, झूठकी मिशरी घेरे
 स्वरको तुरग न नीपजे, सजे अतिसैं साज,
 फूवड होय न पभिनी, कगवा बने न वाज,
 कगवा बने न बाज, काच कचन नहि हवे,
 मर्कट गलेमें हार, जाय जगलमें खोवे

४

कथे सु कवियां कान, स्वभाव न पलटे नरको,
 सजे अतिसैं साज, तुरग नां निपजे स्वरको
 भीड़ो भादू मासको, बढकु कहे जरूर,
 मो तन इत मावे नहीं, जगा करो तुम दूर,
 जगा करो तुम दूर, बडे जब अरजी कीनी,
 बरसावतु है माम, आश बसवेकु दीनी
 कथे सु कविया कान, मूल कछु नहि है ऊडो,

५

आया आसो मास, मूल दुख सूखयो भीड़ो
 बचन सुनेरी जालरी, बेहद गडी सुनार,
 ठेर ठेर चित्त राखके, मत पानीमें डार,
 मत पानीमें डार, गइ सो हाथ न आवै,
 पडी खलकके पास, आपको मान गुमावै
 कथे सु कविया कान, अबै नहि लाज हुनेरी,
 मत पानीमें डार, जालरी बचन सुनेरी

६

७

रंढी मित्र न कीजिये, अकल भए हो जाय,
 माकि गुमाये झूठकी, जीवत नरकु साय
 जीवत नरकु साय, जहा छा होय असंगा,
 वां तक नरका नेह, पल्लापर करे प्रसंगा
 कथे सु कवियां कान, रहे संतोंसैं भंडी,
 अकल भए हो जाय, मित्र नहि करना रंढी

८

कहान-कान्ह (दुसरा.)

(गुरुस्तुति-सवैया.)

योग जपादिक को करिवो अरु, भोंवरी तीरथके भरवेको,
 सन्तत संत समागमको, अरु ब्रह्म विचार विचार करेको;
 कान्ह भने गुने औ मन शासन, मास समेतहु दान कियेको;
 सो गुरु अंगि सरोरुह सेवत, है फल ये जग देह धरेको. १

(ऋतुवर्णन-कवित्त.)

सीतल सुगंध मन्द मारुत स्वनित रुरे,
 पूरे धूरि धूसरित रोदसी विहारेरी;
 कुंजन पलाश फूले डारन अगार पुंज,
 गुंज मधुपाली मन मुदित प्रसारेरी;
 कान्ह फूकि कवेलियान, फूकि फूकि वरवस,
 बिरहा अनल हिय प्रवल प्रजारेरी;
 हारे करि यतन अतन सो सहायक लै,
 कन्त बिन सजनी वसन्त तन जारेरी. १
 मंद मुसकयानि चंद ज्योतिमें उदोति होति,
 कुंदमें दिखावे बुति, दशन रसालकी;
 खंजन लखावै कान्ह, नैन मन रंजनसें,
 पानिलौ सुहावे कला, कंजन बिसालसी;
 भौरनकी गुंजपुंज, मंजुल मंजीरनसी,
 हंसनि चलावै गति, श्यामके सुचालकी,
 आयोरी शरद काल, दरद बढावनको,
 जरद करै है हमै शोभा धरि लालकी.

कनीलाल.

(चित्त चंचलता—सवैया.)

कबहुं मन तेज तुरंग चढे, कबहुं मन सोचत है धनकुं,
 कबहुं परनारपै चित्त चले, कबहुं तपसी होता बनकुं;
 कबहुं संतानको सोच करै, कबहुं सुख चाहत है तनकुं,
 यों कनीलाल बिचार करे, कैसे समझावे कपटी मनकुं. १

कनैयालाल

(वामप्रशंसा-कविस)

पैसेके काज आज देखो या जमाने बीच,
 पापी जन छेग धर्म कर्महुं गमावत हैं,
 पैसाके तह्नी गवाही जा अदालतमे,
 शीरा घरे हाथ गंगा झूठीही उठावत है,
 पैसेके काज आस औलाद सब त्याग बैठ,
 बीच इज्जतस कसम बेटाकी खावत है,
 पैसेके ताई रंडी नाच करै महफल्में,
 कैसे भले आदमी सो भड्डा कहावत है १
 दुनियामें आमें जोनि मानसकी यामे भले,
 आदमी कहवैं घात अपनी बनाते हैं,
 भले आदमीकी तरह चलते झुठी न कस-
 खाते समझे न परम (मगर) बचन ना गमाते है,
 नेकी करनबारे कहें मुहसें न विचारे देंय,
 हारेनको सहारे सगको कसम खाते है,
 भलोंकी भलाइ बुरोंकी बुराई कहैंया-
 लाल कहे नई पुस्तिक हम बनाते है २

कबीर

(दोहा-साखी)

[संतसभागम-ईश्वरमहिमा]

कबीर वाणी पाणी भरे, चार वेद भये मजूर,
 आधी साखी कबीरकी, वाम साहेब हजूर १
 तीरथमें फल एक है, सत मिले फल चार,
 सद्गुरु मिले अनेक फल, कहे कबीर विचार २
 साई मेरा बानिया, करे मनज बेपार,
 विन दांडी विन ताखरी, तोले सब ससार ३

साध मिले साहिब मिले, अंतर रही न रेख;	
ननसा-वाचा-कर्मणा, साधू साहिब एक.	४
गुरु गोविंद दोनुं खडे, किनकुं लागुं पाय;	
बलिहारी गुरुकी जिने, गोविंद दियो बताय.	५
पशुकी तो पनियां भई, नरका कछू न होय;	
जो उत्तम करणी करे, तो नारायण होय.	६
ऐसा कोई ना मिला, घटमें अलख लखाय,	
बिन बत्ती बिन तेल ज्युं, जलती ज्योत दिखाय.	७
ब्राह्मन गुरु यह जगतके, संतनके गुरु नांहि,	
उलट पुलट कर डूबया, चार वेदके मांहि.	८
सत्गुरु हमसों रीझकर, एक कह्या परसंग,	
वरस्या वादल प्रेमका, भीज गया सब अंग.	९
चोपड मांडी चोवटे, सारी काया शरीर;	
सत्गुरु दाव बताविया, खेले दास कबीर.	१०
बूढेथे पन ऊगरे, गुरुकी लहिर चमंक,	
भर्या देख्या जाजरा, ऊतर पडे फरंक.	११
रामनामके पटंतरे, देवेकुं कछु नांहि,	
क्या ले गुरु संतोषिये, सोच रही मनमांहि.	१२
मन दिया तन सब दिया, मनकी गहिल शरीर;	
अब देवकुं क्या रह्या, युं कहे दास कबीर.	१३
सत्गुरु साचा सूरमा, शब्दज बाहिर एक;	
लागतही भ्रम मिट गया, पड्या कलेजे छेक.	१४
हंस न बोले उनमने, चंचल महिमा मार,	
कबिरा भीतर भेदिया, सत्गुरुके हाथियार.	१५
गुंगा हूआ के बाउरा, बहिरा हूआ के कान,	
पांउसैं पिगला भया, सत्गुरु मार्या बाण.	१६
दारकमें पावक बसे, धनका जल क्युं जोय,	
हरिसंगी उर गुरुमुखी, काल गरांसो खोय.	१७

सतगुरु मेरा सूरमा, शोच्या सकल शरीर,	
वाण द्वादश फूटिया, क्युं जीवे दास कबीर	१८
सतगुरु साचा सूरमा, नखशीख मार्या पूर,	
बाहिर घा दीसे नहिं, भीतर चूरमचूर	१९

(शब्दग्रन्थ-नामविचार)

शब्दे मार्या मर गया, शब्दे छोछा राज,	
जे नर शब्द पिछानिया, ताका सरिया काज	२०
कबीर उन देश वसत है, जात वरण कुल नाय,	
शब्द मिछावो हो रबो, देह मिछावो नाय	२१
तनका बेरी को नहिं, जो मन शीतल होय,	
तु आपहिकों डार दे, दया करे सब कोय	२२
मन मथुरा दिल द्वारका, कारी काया जान,	
दशमे द्वारे देहरा, तामें जोत पिधान	२३
नाम लिया तेने सब लिया, सकल वेदका भेद,	
बिना नाम नरके पड़े, पदतें चारों वेद	२४
नाम विसारे देहकु, जीय वशा सब जाय,	
जबही छाड़े नामकु, तबही लागे आय	२५

(सत्य साधुस्य उपदेश)

शूराके मैदानमें, नहिं कायरका काम,	
आठ प्रहरका जुझना, बिन खडि सप्राम	२६
शूरा तेज घटे नहिं, जुघ रण जुड़े गम्हाड़,	
सच वचन पलटे नहिं, उलट जाय ब्रह्मांड	२७
शूरा सती तो खेल है, घड़ी एक घमसाण,	
साधू जले न जल बुजै, धुक्ता रहे मसाण	२८
हृद हृद सब कोई चले, बेहद चले न कोय,	
बेहदके चवटे मही, रक्षा कबीरा सोय.	२९
पारस साढे तीन है, दीपक मृगी साध,	
अरधो पारस पारसी, कहत कबीर विसाध	३०

फीकर सबकों खा गई, फीकर सबका पीर;	
फीकरकी फाकी करे, उसका नाम फकीर.	३१
निदा हमारी जो करे, मित्र हमारा सोय,	
बिन सावू बिन पानीसें, मेल हमारा ब्योय.	३२
ज्यों तिरिया पीहर बसे, सुरति रहे पियमांहि,	
एसे जन जगमें रहे, हरिको भूले नाहि.	३३
चारों वेद पढया करे, हरिसो नांहि हेत,	
माल कबीरा ले गया, पडित दूढ़े खेत.	३४
पढी गुनी पाठक भये, समजाया संसार,	
आंपहि तो समज्या नहि, वृथा गया अवतार.	३५
पढी गुनी ब्राह्मण भये, कीरत भइ संसार,	
वस्तुकी तो समज नहि, ज्युं खर चंदन भार.	३६
जप तप तीरथ सब करे, घडी न छडे ध्यान;	
कहे कविर भक्ति विना, कबु न होय कल्यान.	३७
साध सती औ सूरमा, ज्ञानी औ गजदंत,	
एते निकसि न बहुरें, जो जुग जाहि अनत.	३८
साधु भया तो क्या भया, बोले नहिं विचार,	
हने पराइ आतमा, जीभ बाधि तलवार.	३९
मधुर वचन हे औषधी, कटुक वचन हे तीर;	
श्रवणद्वार वहै संचरे, साले सकल शरीर	४०
कबीर तेही पीर हे, जे जाने पर पीर;	
जे पर पीर न जानही, ते काफर बेपीर.	४१

(मन.स्वरूप.)

मन मेरा पंखी भया, जहां तहां उड जाय,	
जहां जेसी संगत करे, तहां तैसा फल खाय.	४२
मनको कह्यो न कीजिये, जहां तहां ले जाय;	
मनकूं ऐसा मारिये, टूक टूक हो जाय.	४३
मन गया तो जान दे, तूं मत जाय शरीर,	
बिना चढाई कामठी, क्यों लगैगा तीर	४४

माया मुई न मन मुवा, मर मर गये शरीर,
आशा तृष्णा ना मरी, कह गये वास कबीर ४५
फाया देवल मन धजा, छहरी विषय फिराय,
मनके चलते जो चले, ताको सरबस जाय ४६

(प्रस्ताविक प्रबोध)

कबीर जख न जखिये, तेरो कर्मा न होय,
करम करिम जो कर रहे, भेट शके नहि कोय ४७
जाफी जितनी बुद्धि हे, इतनो देत वताय,
वाको बुरो न मानिये, ओर कहाँसें लाय ४८
नारी निंदा मत करो, नारी नरकी खान,
नारीसें उत्पन भये, धु प्रन्हल समान ४९
स्ती साधक ओर सूपडा, सत्ते सत भाखत,
कास कूसकुं काढके, कणे कण राखत ५०
पत्थर भीतर अगनि है, चाटे पीसे कोइ,
लाख यतन करि काढती, आगि न परगट होइ ५१
आप छके नयना छके, छके अघर मुसकाय,
छफी दृष्टि जापर पेर, रोम रोम छफि जाय ५२
कबीर गर्व न कीजिये, रंक न हसिये कोय,
तेरी नाव समुद्रमें, को जाने क्या होय ५३
कहेते सो करते नहीं, मूके थडे लबाड,
फाला मूं छे जायगे, साहिवके दरबार ५४
तु जाणे हर दूर हे, पण हर हिरदमाहि,
भीतर छाटी कपटकी, तासें मुजत नाहि ५५
नारी पूछत सूमकुं, (तुम) कहाँसे बदन मलीन,
कहा गांठसें गिर पडो, कहा कीसीकुं दीन ५६
नहिं गांठसें गिर पडो, नहिं फीसीकुं दीन,
देता देख्यो ओरकुं, धासे बदन मलीन ५७

(कवित्त)

रे जिया जो चाहे तो, जीवनकी रक्षा कर,
धनीहंको चाहे तो, धरमजूको ग्रहरे,

जसहूको चाहे तो तुं दान कछु देता रहे,
नीकीको जो चाहे तो तुं, बदी मत लहरे,
जोबनको चाहे तो तुं काहूसों न जोर कर;
गरीबीकों चाहे तो तुं सबनकी सहरे;
कहत कबीर बंदे काहूसों न रोष कर,
साहेबकों चाहे तो तुं सांचहीमें रहरे.

१

(झुलणा—कर्मकी रेख.)

भक्त भगवंतके शेष महिमा करे, भीखके शीशमें ध्यान धारे,
कमलको छेदके ब्रह्मको भेदके, कामको जीतके क्रोध मारे;
मुक्तिकी पीठपें कर्म असवार न्हे, गगन चढ साधके काल टारे,
कहत कबीरपें नाहिं कोई लख्यो, कर्मकी रेखमें मेख मारे.

१

कमनीय.

(वसंत—कवित्त.)

माघ शुदि पंचमीके दोस जे अबाल खेलै,
लाल भये धारिके गुलाल बरवेशको;
कहै कमनीय कवि जोहिकै युगत ऐसी,
मणिदेव विमल बिलोकि बुधिदेशको;
आगिमें अधूम भुंजै तिनको ते हाय भरी,
कीबे फिरियाद माहा पायकै ललेशको,
प्रबल पलाश गनै अमित असंग जानि,
खोजी रहे बिरहीं वसंत वसुधेशको.

१

कमलापति.

(वर्षा—कवित्त.)

घेरि घेरि घहरि घहरि घन आये घोर,
तापै महा मारुत झकोरत झरपसो,
सुनि सुनि कूकनि मयूरनकी वीर मैतो,
राख्यो निज प्राण यमराजहि अरपसो;

भीत भरी भौनतें फठीन कमलापतिमें,
तउ बेधे ढरै हियो तडिता सरपसो,
गावन मलारको सुहावन लौ न भयो,
भावन विनारी मोहि सावन सरपसों १

कमलाकान्त.

(होरीवर्णन-सूचिका)

हेरि अहीरको साँवरो छैल छवी यहि मारग चै निकसोरी,
सोरि गयो यहि मारग चै करि सांस पखावजकी घनघोरी;
घोरि अबीर गुलाळ गुलाबमें बाँह गहे औ किये घरजोरी,
जोरि निहारत वारत प्राण सुढारत रंग पुकारत होरी १

(दोहा)

जिह्मनपति गोरक्षपुर, जानत सकल जहान,
बसत रापती तट निकट, कुँवर मती सुखखान १
शरद शुक्ल तिथि पंचमी, सुकृत शरद बुधवार,
अष्टादश रात धानवे, मयो ग्रथ सुखसार २

कमाल (पहिला.)

(धर्मकर्मचिन्तार-ब्रह्मणा)

जिफर कर जिफर कर फिकरकू दूर कर, बैठ चोगान बिच बांध साटी,
बलकनै बलक कुल जोकि पैदा किया, अत हो नायगी खास माटी,
भीर उमराव घडि चारके पहरमें, ऊठ कर चले दरबार हाथी,
कहत कम्माल कबीरका बालका, करम अरु धरम दो सग साथी १
रामके नामसों काम पूरन भयो, लक्ष्मन नामतें लखि पायो,
कृष्णके नामसों वारिसें पार भो, विष्णुके नाम विश्राम आयो,
आइ अग बीच भगवतकी भक्ति कर, और सब छाडि जजार छायो,
कहत कम्माल कबीरका बालका, निराखि नरसिंह प्रह्लाद गायो २

ग्यान कर ग्यान कर सुरतका दंड कर, खेठ चौगान भेद्वान जाई,
जगतकी भरमना छोडदे बालके, आ जा भेख भगवान मांही;
भेख भगवानकी शेष भेला करे, शेषके शीप पर ग्यान धारी,
कहे कम्माळ कवीरका बालका, करमकी रेखपर भेख मार्ग. ३

(दोहा.)

भावतीकी लात भट्टि, अनभावतको नेह,
कौने काम कमालिया, फागुन बरस्यो मेह. १
कौडीसे हीरा बने, हीरामेंसे लाल;
आधा भगत कवीर रु, पूरा भगत कमाल. २

कमाल (दुसरा.)

(वीरवलविरह-दोहा.)

शोभा सवे दरवारकी, जहां राजत बलवीर;
गोकुलमेंसे कान्ह गये, पाव्ये रहे अहीर. १
इहां हकीम बहूत है, वक्षी मीर बजीर.
काम पट्या किरतारको, तहां गया बलवीर. २
मोतीको पानी गयो, रहग्यो माल कंगाल,
वीरवल सो तो चल गया, रही खालकी खाल. ३

(वसंतवर्णन-कवित्त.)

आयो है वसंत कंत वास कियो अंत लाग्यो,
मैनशर तंत मुधिनेकी नहीं अंगकी;
गावत धमारतै अधिक उपचारै आई,
कोकिल पुकारै मनो नैनभर गंजकी;
होलीके जरत धीर कैस्यो न धरत बनै,
ताहीमें परत है व्यथा मनोसंगकी;
और नहिं चार सब थाकीकै कमाल बाल,
लीन तेहि काल्याति पंजर पतंगकी. १

करण

(ग्रीष्म-पावस-कवित्त)

चह कर झारन झफोरत सरोप पौन,
तोरत तमाल गण मत् दिन भारोसो,
धर्मके धरणि गिरि तमकै प्रताप जागै,
देखत मजेज रेज जगत निहारोसो,
तरु क्षीण छाया सर सखत समुद्र वन,
करण विचारी देखो आतप अगारोसो,
छावत गगन धूर छावत घघात आवै,
चाप चढो ग्रीष्म मयठ मतवारोसो
कंट कित होत गात बिपिन समाज देखो,
हरी हरी भूमि हेरि हियो छरजतु है,
निपट चवाई भाई बंधु जे बसत गाठ,
दाउ परै जानिकै न कोऊ बरजतु है,
एतेपै करण ध्वनि परसत मयूरनकी,
चतक पुकारि तेह ताप सरजतु है,
झरजो न मानी तू नगरजो चलति बेर,
येरे धन वैरी अब काहे गरजतु है

१

२

करणसिंहजी.

(शृंगार-कवित्त)

झ्यामरी सलेनी गजगौनी मृगछोनी नैन,
कोकिल कल बेनी यौं रिसोनी रास राचेकी,
ज्या दिनसैं उदव में न कही धात माधवकी,
ता दिनते सुघो मोपें सुनतीं न सांचेकी,
कहे करनेश बेश थोरीपें न मोरी लेश,
गजवी गुजारो बेश ता समे तमासेकी,
करो जो करार सो सुनिये मुरार मेरी,
जो में सुनार तो सुनार लउं सांचेकी

१

करसनदास.

(भाविप्रावलय और अफीम-कुंडलिया.)

तूटे तूदनहार तरु, वायुहि दीजे दोष;
 त्यों अब हरके धनुषको, हमसों कीजत रोष.
 हमसों कीजत रोष, काल गति जानि न जाई,
 होनहार हो रहे, मिटै मेटी न मिटाई.
 कहते करसनदास, मोह मद सबसैं छूटे,
 होय तिनूका वज्र, वज्र तिनूकापे तूटे. १
 साचो जैर अफीम हे, खरच रुपैयो खाय;
 सूँघेसुं कडवो लगे, खाधे अंग सुकाय.
 खाधे अंग सुकाय, मित्रसैं बांधे दावो,
 घरमें संपत घटे, मांगतो फिरे जु मावो.
 कहते करसनदास, अफीमसैं कबू न राचो,
 अवगुन करे अपार, जैर अफीम है साचो. २

कल्याण.

(विरागविचार-कुंडलिया.)

पाजी बाजी झूठ तज, लोलप लोल स्वभाव;
 हिंदुपति सो मर गये, नाना माधवराव.
 नाना माधवराव, मुवे जयसिंह सवाई,
 मिरजां मुनि व नवाव, मौत तिनकूं वी आई.
 कहत दास कल्याण, भयो कायामें राजी;
 भज भज श्रीभगवान्, झूठ तज पाजी बाजी. १

(सागरान्योक्ति-कवित्त.)

जीवन अपार जाकी जातको न आवै थाह,
 किये कोश भांति भांति रतनोंकी ढेरी है;
 संपतिके सागर जगतमें कल्याण कहे,
 औरनकों द्विजीये बडाई सब तेरी है;

अग अग पूरन तरंगनतै छाग्य रखो,
सोहे चद तात एक बात घट घेरी है,
घाटके बटाउ प्यासे पूछे तीर कूप कहा,
अहो क्षारसागर बड़ाई धिक तेरी है

२

(सुकविमहिमा-छप्पय)

दरस्थ बलि हरिचंद, युधिष्ठिर धर्म सुहाये,
चक्रवर्ति सतवृत्त, कविनके कहे कहाये,
भूप विक्रमाजीत, भोज पृथुराज प्रवीने,
इंद्रजीत शिवराज, पाय कवि पूजन कीने,
जिहि करनी करी नरेंद्र रन, कही कविंदनकी कही,
कन्यानदेव कविराज बिन, यशदाता दूजा नहीं

३

कविन्द्र.

(कलिस्वरूप-कवित्त)

सुरतिमें सूरति नहायबेम नेम रखो,
नेह रखो तियमें रजाव रखो रुक्मों,
शूद्रमें मुचाल औ कुचाल रखो प्राक्षनमें,
चेरिनमें प्रीति बढी मार रही मुक्कामें,
भनत कविंद्र अरु मंत्र टोना टाम रखो,
राग रखो कहरन राव रग बुक्कामें,
प्रीति औ प्रतीतिचार चुगलके बीच रही,
दान रखो पातुरमें शान रखो हुक्कामें

४

(अस्तुवर्णन)

तारे जहां सुमट नगारे पीक नाद जहा,
पैदल चकोर कोर बांधे बंदबेशकी,
गुंजरत भौर पुज कुंजरत मोर जहां,
पौन छु छुकोर घोर धमक हमेशकी,
भनत कविंद्र शर फोज है बसंत आली,
मिलै तंत कंतसो मनोज मानयेशकी,

मानवारी गढीपै गुमान ढाड़वेको आज,
 चढी है सवारियां निशाकर नरेशकी. २
 पौनके झकोरन कदंब झहरान लागे,
 तुंग फहरान लागे मेघमंडलीनके;
 भनत कविंद्र धरा सारन भरन लागे,
 कोश होन लागे विकसित कदलीनके;
 उटज निवासिनको त्रास उपजन लागे,
 संपुट खुलन लागे कुटज कलीनके;
 नाचे विरहीनके अहीन स्वर झिल्लिनके,
 दीन भये वदन मलीन विरहीनके. ३
 राजे रसमैरी तैसी वरपा समैरी चढी,
 चंचलान चैरी चक चौधा कौधा वारैरी;
 पतिव्रत हारै हिये परत फुहारे कछु,
 छोरै कछु धारै जलधर जलधारैरी,
 भनत कविंद्र कुज भौन कौन सौरभसों,
 कौनको कंपायके न पर हथ पारैरी,
 काम केतु कासे फुलि डोलि डोलि डारै मन,
 और किये डारैयै कदवकी डारैरी. ४
 तडिता तरर ल्यों इरंमद अरर घन,—
 घोरकी घरर झनकारै शींगुरनकी,
 पौनकी लहक ल्यों कदंबकी महक लागी,
 दाहक दहन लै लै सीमा उरगनकी;
 भनत कविंद्र बिन नाह ये सनाह साजें,
 पटाझर घटा फेरै क्योंहू ना मुरनकी;
 पेरै भट्ट मनको अरैरै करै आठौ याम,
 टेरे बरहीनकी देरै दादुरनकी. ५
 लाग्यो मास सावन विदेशी ठाव ठावनसौ,
 आवन लगे है कैधौ उन्हें सुध री नहीं,
 कैधौ वह गावनमें जावन कहत कोउ,
 कैतो गुन गावनकी रीझ अगरी नहीं;

मनत कविंद्र मनभावन तिहारे हम,
 पावनको सैव तफसीरह परी नहीं,
 हसे तो हितावनन सावन एगोही देह,—
 दावन एगे ही कि बिदावन करी नहीं ६
 लाग्यो यह सावन सनेह सरसावन,
 सलिय बरसावन पटाधर टटानको,
 गोरी गाय गावन लगी है गीत गावन,
 हिंदोरो छुमनवन उग्रन ध्वं अटानको,
 मनत कविंद्र पिरहीजन सतावनसो,
 देखो चमकावनरी बिजुल छटानको,
 प्यारे पगै पावन ललाको लीजै नावनसो,
 देखो आजु आवन मुहावन घटावनको ७
 गगन गर्यदपर चण्यो करि हंका चंका,
 पिक नाद आगे होत तेसे मन भायो है,
 मनत कविंद्र तारे सुभट अमोर जोर,
 पैटर चकोर मोर शोर सरसायो है,
 तोर तम अग्न स्वग्न ऐकर उदग्न घर,
 मदन हरीउ मान गद पर धायो है,
 चमू चंद्रिकानके पसारे अवलेश नख,
 तेश आज नवतम नरेश धनि आयो है ८

कविराज.

(पाचस-सयैया)

भूमि हरी चहुओर भरे जल है सुभरी ऋतु आइ अपाढी,
 मीठि महा धुनि मोरनकी, कविराज सुने सबकी रुचि बाढी,
 मूल्य गोपि गोपाल मिले, धृपभानके आगन भीर है गाढी,
 हेरे हरि मिस चाकि घटा, भरि फेरि घटामें अटापर ठाढी ९

कादर.

(कलि-कुटिलाइ.)

गुनको न पूछे कोऊ औगुनको वात पूछे,
 कहा भयो दर्ई कलियुग यो खरानो है;
 पोथी औ पुरान ज्ञान ठइनमै डारि देत,
 चुगल चवाइनको मान ठहिरानो है;
 कादर कहत जासो कछु कहिवेकी नाहिं,
 जगतकी रीति देखि चूप मनमानो है,
 खोलि देखो हियो सब भातिनसो भाति भाति,
 गुन ना हिरानो गुनगाहक हिरानो है. १
 देखतके नीके परिणाम बहु आदरको,
 देखत भलाई सदा जीवमें जरे रहै;
 भेद भेद पूछे पूछे टेव तन आव लाज,
 पापके समूह सिंधु आंखिन अरे रहै;
 कादर कहत जे नटीनके तलासिवेको,
 हाट बाटहमें दरबारमें खडे रहै;
 निंदाको जु नेम जिन्हे चुगली अधार पर—
 स्वारथ मिटाइवेको खोजही परे रहै. २

कालिदास.

(समस्या-छप्पय.)

अष्ट रेस इक मास, मास वारामें पके,
 पावक मुख भयो जंन, लोक सब नजरों देखे,
 अखर लखे लेलार, मार धतिअनको मारे,
 चंद्रबदनि चित्त चोर, ध्यान मुनिजनको टारे,
 ये सिद्ध नहीं योगी नहीं, ये बिन पांऊ पृथ्वी धुनी,
 कालिदास कवि उच्चरे, अर्थ करो पंडित गुनी. १
 जगमें प्यारे कोन, कोन है जगत सुधारन,
 जगमें लेवो कहा, कैसो रखियै हथियारन;

रजनीपति है कोन, कोन है शोभा घरकी,
 पंथे चख्यो कहा, बहुत भोजन कहा खरकी,
 गद वंको गोपन सरस कौन, कौन सरस हय काज है,
 आगम कौनसें चेतवो, लज्ज शशीषा राज है २

कोकिल करि हरि कमल, वीप मृग शशियर विपधर,
 श्याम शरद वन रैनि, अश्विन सिंह सरोवर,
 रतमद भूख रसाळ, तरुन ऋठ राकानोकुल,
 जीनत मध लघु तिमिर, बसत जुव बिनकुंश कोयल,
 चाल कटि स्वर नासिका, नयन भाल वेणी धणी,
 कर सिंगार मिष्कसुता, मिले कान अरु रुक्मिणी ३

(समझ्या—बोझा)

बार मासमें खट ऋतु, शरद शिशिर बसत,
 या तिन ऋतुमें तीन दिन, प्रिया न चाहत कत १
 दपति रति उछासमें, गई रीस भई रीस,
 ताहि समै त्रेसठ हते, दिनमें मये छतीस २

काशीराम.

(विविध-कवित)

रहेगो न राज राजधानीपें न पानी पुनी,
 कहे बाक बानी जिमी आसमान जायगो,
 सातही पताळ अरु सात द्विप भासियत,
 एक बेर चांद सूर तेजही बिलायगो,
 जोइ कछु सृष्टि रची करताकी वृष्टिहीसों,
 एक बेर सृष्टिहीको करता समायगो,
 कहे काशीराम कवि और कछु थिर नाही,
 रहिबेको एक राम नाम रही जायगो १
 पैसे बिन बाप कहे पूत तो कपूत भयो,
 पैसे बिन भाई कहे मोर्को दुखवाई है,

पैसे बिन काका कहे कौनको भतिजा लागे,
 पैसे बिन सासु कहे कौनको जमाई है;
 पैसे बिन पंचनमें बैठेवेको ठौर नाहि,
 पैसे बिन आई घर रोइ रोटी खाई है;
 कहे कवि काशीराम सुनो नर श्याने सबे,
 आजुके जमानेमांहि पैसेकी बडाई है.

२

देखादेखी भई त्यों सकृच सब छूटि गई,
 मिटी कुलकानि कैसो घंघटको करिवो;
 लगी टकटकी उर उठी धकधकी गति,
 थकी मति छकी ऐसो नेहको उघरिवो;
 चित्र कैसें काढे दोउ ठाढे कहि काशीराम,
 नाहि परवाह लाख लोग कसे लरिवो;
 वंसिको बजैवो नटनागर बिसरि गयो,
 नागारि बिसरि गई गागरिको भरिवो.

३

कर खिले मानसन दीनो हे विवेक विधि,
 काशीराम कहे सब जग आहियत है;
 जो न मिल दौरि पैरि तार्की फेरि जाय सोई,
 जाको हियो काहु न कुबोल दाहियत है;
 सुनिहो प्रवीन नर दीनता न भाखि जाने,
 याको तौ विदेश परदेश गाहियत है,
 खान चाहिये न एतो पान चाहिये न एतो,
 दान चाहिये न जेतो मान चाहियत है.

४

(हंसान्योक्ति.)

कांकरसे मुक्ता मुकंज जहां कुंदनके,
 पन्नाहीकी पौरि परि जाके चहुधा करी,
 बिहरत सुर मुनि उचरत वेद धुनि,
 सुखकी समेटि राशि विध ना तहां करी,
 चासी एसें सरको उदासी भये बिलुखेतें,
 काशीराम तऊ कहूं ऐसी आशा ना करी,
 पर्यो कोऊ काल ताते तक्यो तुच्छ ताल लघु,
 लख्यो जो मराल तौ चुनेगो कहूं कांकरी.

५

किसन.

(चैराग्योपदेश-कवित्त, धमाक्षरी)

धंधहीमें धायो पै न धायो है धरम रुख,
 पायो दुख द्वंद्व पै न पायो सुख पाययो,
 गायो ज्ञान आन पै न गायो भगवान भान,
 आयो जो न ज्ञान कहा नरयोनि आयवो,
 मनमें न मायो अंध काहू न नमायो कध,
 किसन परैगो खरे ताहि पछितायवो,
 आपहिफो भायो भायो पापको उपायो पायो,
 बांधि मूठी आयो पै पसारै हाथ जायवो १
 अरथ न आवै रथ अरथ गरथ पथ,
 रखत तखत राज साज बाज शासना,
 काहू योनि जैयो पूंजी पाखे कहा खैयो तातें,
 तैसो तैसो छैयो जातें छै न तोहि शासना,
 आजळो अनेत रक्षो किसन न हेत लब्धो,
 मान अजो कसो कर सुगुरु उपासना,
 छिन छिन छीजें आई देह कछु देह पाइ,
 घासना बिलाइ जाइ रहे जाइ घासना २
 आलम यहै अयान मालम न है पयान,
 आलम रहे न जुलमानो मान रहैगो,
 अत बार ख्वारी परिवारहू न वेत यारी,
 गहे भार भारी यार सोहि भार बहैगो,
 काया अरु माया कैसी बादलकी छाया जैसी,
 किसन जू पेसी को अदेशो दिल बहैगो,
 जीछीं जीये येह देह तौछीं नि सदेह वेह,
 न्हैगी देह खेह तब कौन वेह कहैगो ३
 इत उत ढोले कहा वीन बोले बोले रहा,
 पेटहीके मोले वेह लग्यो महा प्रेत है,

गरभमें दे दे ग्रास पाल्यो दस मास आश,
वाहिकी किसनदास आन आन देत है;
चांच दइ सोइ नित घूनकी करेंगो चित्त,
चित्तही हरैगो ऐसो साहिब सचेत है;
जानको अजानको जिहानको विहान हीतें,
देत सुविहान कहा तोहि कौं न देत है.

४

ईहै प्रभु ताको जो किसन प्रभुताकों त्याग,
छांडी ना विभूति तौ विभूति कहा धारी है;
जौलैं भग तजी नांहीं तौलैं भगतजी नांहि,
काहेकों गुसाई जो गुसाईसों न यारी है.
काहेको विराहमन जा रहै विराह मन,
कहा पीर जोपै पर पीर न विचारी है;
कैसो वह योगी जन जाको न वियोगी मन,
आसनहि मारी जान्यो आश नहि मारी है.

५

उकति उपाइ एती उम्मर गुमाई कछु,
कीनी न कमाइ काम भयो न भलाइको;
औधी जब आइ तब कौन है सहाइ भाई,
राईभर कछु न वसाइ ठकुराइको;

आइ पहुंचाइ पछताइ माइ बाइ जाइ,
छूटयो नातों दूट्यो तांतो किसन सगाइको;
इहांतो सदाइ धाम धूमही चलाई पर,
उहां तो नहि है भाइ राज पोपाबाइको.

६

उखरमें मेह ऐसो पोषवो अकाज देह,
आग ज्यों अछेह याके सबही समेटवो;
सदा दुरमंध क्योंहु देत न सुगंध अंध,
तातें तैसो धंध यातें सोंधातें लपेटवो;
काया तो असार यार मायाहून चलै लार,
किसन विचार यमलोक नेट भेटवो;
काको अभिमान यह भूल्यो भगवान जान,
छांड दे गुमान अंत छारहीमें लेटवो.

७

रिद्धितें न सिद्धि करी जो तें जीय केंसी जरी,
 तहा ले घरी जहा प्रवेश न समीरको,
 स्वरूप्यो न स्वायो योही नरक जनम आयो,
 जा दिनतें जायो सुख पायो न शरीरको,
 पियो जल छान्यो पै न छोह अनछान्यो जान्यो,
 किसन कहू न छान्यो श्रास पर पीरको,
 घोखेहीमें जीव दयो भयो न सुस्त ल्यो,
 गयो भव सोय भयो नीरको न तीरको ८
 रूतो डौल नाहि करै काहू पै बढाइ साच,
 समरै न साई कब साई भव सोइ है,
 जेती तें बुराइ ठाइ तेती बनि आइ परि,
 एती चतुराइ दुखवाइ अत होइ है,
 किसन सुमावै सगा कौन न कहावे छाल,
 काछतें छुडावे आडो आवै ऐसो फोइ है,
 अरे अविवेक भेक कापैं गहि गाढी टेक,
 लेबेकों न एक कलु देवेको न दोइ है ९
 लिखो जु छलाट लेख तामें कहा मीन मेख,
 करमकी रेख देख टारीह न टरे है,
 चोंप करी काहू चूहे सापको पियरो काथ्यो,
 सो तो अनजाने पाने पनगके पारै है,
 किसन अनुधमहि चल्यो अहि पेट भरि,
 उधमहि करत तुरत चूहा मरे है,
 देखो क्यों न करी काहू हुअर हजार नर,
 ब्रै है कलु सोइ जो बिधाता नाथ करै है १०
 लीलाकी छान माहि ज्ञानकी जगन नाहि,
 जग न रंहाहि नर तोहि न रहायबो,
 चलै जर कौन बट क्यों इहां करत हठ,
 नदी सट तरु कौन भांति ठहिरायबो,
 सुपना जहान तामें अपना निवान कौन,
 जपना किसन जाप जातें दुख जायबो,

मोहमें मगन शगवग न धरे है पग,
नग न चलेंगे संग नगन चलायवो. ११

एक उगे सुर करै भोजन कपुर पुर,
एककुं तो पेट पुर भाजीहु न ताजी है,
एक नर गज चढे चढत चपल वाजी,
एक पाजी आगे दौरं दौरिवेमें राजी है;
एककी किसन लच्छ देखि लच्छमीहु लाजी,
एक धनहीन मिसकीन दीन माजी है;
कहीं न परत कुदरत ऐसी कारसाजी,
अपने अपने यारो बखतकी वाजी है. १२

ऐरावत कैसे अंग उद्धत अभंग जंग,
धूमत मतंग लिये शोभा मेघ श्यामकी;
उत्तम उत्तंग तर तरल तुरग चंग,
सहज सुरग ओष पशम तमामकी,
मुजरो न पावत है रावतके ठाठ ठाढे,
आवत किसन पेशकरी गाम गामकी;
भरे अभिराम धाम दाम ठाम ठाम पर,
बिना प्रभुनाम प्रभुताई कौन कामकी. १३

ओसकी कनीसी जैसी दर्भकी अनीपे बनी,
लेखियें न वार घनी देखियें झलामली,
जगतकी बाजी ताजीपै न तातें हुजें राजी,
देखी जाकी बाजी नटबाजी ज्यों चलाचली;
महके किसन जाकी महिमा मुलक मांझ,
कहावै मुलक मीर मालिक महा बली;
कालकी अकल बात यातें कब होय घात,
आजकी न जानी जात कालकी कहा चली. १४

औषध अनेक एक मौत अतिरेक छेक,
नेक टेक धरिकें विवेक घर आइयें;
मोसम ससै किसन कीजियें असम श्रम,
बैठे क्रम क्रम पुंजी गांठकी न खाइये;

काल काल करत परत आन काल पारा,
कालकी न आश कछु आजही बनाइये,
कायामें न आइ काह तौलों करिले कमाइ,
आग ल्यो मेरे भाइ मेह कहां पाइये

१५

अजलिके जल ज्यों घटत पल पल आयु,
विपसैं विषम व्यवसाय विष रसके,
पंथको मुकाम फछु बापको न गाम यह,
जैसो निज धाम तातैं कीजैं काम यशके,
खान सुल्तान ऊमराव राव रान आन,
किसन अजान जान फोऊ न रही शके,
सांझ रु बिहान चल्थो जात है जिहान तातैं,
हमहु निदान मेहमान दिन दशके

१६

अरब खरब महा दरब भयो सो कहा,
गरब न कीजैं खेल सरब मुपनको;
ठर कोसो देह येह दिनमे दिखावे धेह,
रद ज्यों शरद मेह नेह पर अनको;
जौवन झलक चपलाकीसी चमक चल,
विषे सुख किसन धनुष जैसो घनको,
जैसैं काच भाजनको भाजनको जोखो तैसे,
तनक सरोसो न भरोसो इन तनको

१७

कोरी कोरी कर कोरी छानन करोरी जोरी,
तोड़ माने थोरी जाने छीजे जग छटकैं,
मायामें अरुख्यो पर स्वारथ न सुज्यो,
परमारथ न बुझ्यो भ्रम भारथतैं छूटकैं,
जगतकों देत दगे आन जमदुत ल्यो,
किसन जो सगे वेउ ल्यो न्यारे फूटकैं,
हंस अश ऐच लियो अंग रग भग भयो,
जैसैं धीन मजत गयो है तार तूटकैं
खेत हेत एक यामें उत्तम अधम कहा,
भये पैदा भयो जब जोग मात तातको,

१८

कढे सब योनि द्वार मढे सब चामहीतें,
गढे सब माटिके गढाव एक गातको;
कीडे सब नाजके रुधिर मास सबनिके,
भर्या मल मूत धर्यो पिंड सात धातको;
लायक गुमानके किसन भगवान जान,
कोउ नाहिं करो अभिमान काहु वातको.

१९

गंदगीसी खानि खरे बंदगीकी हानि करै,
रिंदगीसी आनि धरे एसि खोटि खासियत,
रेतकी गढीसी गढी प्रेतकी मढीसी मढी,
चामते चढीसी चित नैक नीकी भासियत;
जाके संग सैली मैली फैली बदफैली ऐसे,
मैलहीकी थैली कैसे किसन उजासियत;
केसुकी कलीसी लगे तनक भलीसी तन,
कहा गुन फुलन तिलीसी फुनि वासियत.

२०

घरी पल पाऊं न रहत ठहराउ करी,
आवै के न आवे फिर लेह केसो ताउरे;
सांस तौलै आश ताहि गौनको अभ्यास ऐसे,
सहज उदास कित रहे कर भाऊरे,
ज्यों ज्यों भीजे कामली विशेष त्यों त्यों भारी होत,
आगेही किसन यातें कीजिये ऊपाउरे;
सांस सो तो वाऊं ताके लेखे तेरो आऊ अरे,
राउ अरु वाउको विसास कहा बाउरे.

२१

नायकानि राशी यह वागुरिन भासी खासी,
लिये हाँसी फासी ताके पाशमें न परना;
पारधी अनग फिरै भौहन धनुष धरे,
पैन नैन बान खरै तातें तोहि डरना,
कुच है पहार हार नदी रोमराइ तृन,
किसन अमृत एन बैन मुख झरना;
अहो मेरे मन मृग खोलि देख ज्ञान द्रग,
यह बन छोरि कहुं और ठौर चरना.

२२

नाहिनीसी घैनी कारी बागुरासी पाटी पारी,
 माग जु सम्हारी चोर गली तोहि टरना,
 तन सर जामें जल यौवनसु मख चख,
 ग्रीव कबु भुजासु मृनाल मन हरना,
 नाशा शुफ दत दाया नाभि कूप फटि सिंह,
 किसन सुफयि अघ रम खम भरना,
 अहो मेरे मन मृग खोली देखे ज्ञान दग,
 यह वन छोरि कहू और छेर चरना
 चले रह राह खरे शाह पतराह धरे,
 धरोहि रहे परे मेरे मडार दामके,
 छेपे दल बादलसें रहे दल घावलह,
 डूबे मनसूबे मनसूबे कौन कामके,
 तेरी कहा चली भौरे किसन शयाना हो रे,
 रहिचोरी चाकी धोरे बासर मुकामके,
 देखे तौरै तोरे जोरे कोरेह तमाम अब,
 का तक चलायगो तमाम दाम चामके
 धारहीमें फवार खर न्हात जाति बलचर,
 धरत जटासु भर धरत पतंग है,
 ध्यान भग धरत रटत राम राम शुक्र,
 गाडर मुढायै पशु सब सु निहग है,
 सहै तरु ताप घर करिकें न रहे साप,
 किसन दुराय आप अंग भो अनग है,
 रग वह रग कछु मोक्षनको अग पर,
 ब्रह्मै मन चग तौ फठैतहीमें गग है
 जीयत जरासा दुख जनम जरासा तापें,
 ढर है खरासा काल शिरपैं खरासा है,
 कोठ बिरलासा जोपैं जीवे है पचासा अंत,
 मन बिच वासा यह नातका खुलासा है,
 सप्याकासा धान करिवरकासा कान चल,
 दलकासा पान चपलाकासा उजाला है,

२३

२४

२५

ऐसासा रहासा तापै किसन अनंत आशा,
पानीमें बतासा तैसा तनका तमासा है. २६

जानी भूखा प्यासा जान दीजें न निराशा कीजें,
सबका दिलासा सब जीव अपनासा है,
खान धान खासा कहा पहिरे भलासा तड,
लोभ अधिकासा एती प्राणीकों पियासा है;
दगाकासा पासा कीजें वासा जलधरकासा,
आवे देखि हासा छिन तोला छिन मासा है;

ऐसासा रहासा तापै किसन अनंत आशा,
पानीमें बतासा तैसा तनका तमासा है. २७

झूठी काया मायाके भरोसें भरमाया लाया,
मायाहू गुमाया पर मूरखता पाया है;
ज्यों ज्यों समझाया त्यों त्यों जात मुरझाया,
सुरझे न सुरझाया ऐसा आप उरझाया है;
काचा पाया पाया तातें कौन चैन पाया पर,
साचा सोइ सांया जो किसन गुन गाया है;
दगा दिया काया जानि जमको बुलाया आनि,

काल बाज खाया तब याद प्रभु जाया है. २८

नीके मधु पीकें मत्त मधुप सरोजहीमें,
रुकी रह्यो जब छुकि गयो दिनमनि है;
जानी जै हे रात न्है हे प्रात दरसै हे रवि,
विकसे है कंज तब जात निकसनि है,
ऐते गजराज आयो पंकज उखारी खायो,
भयो भायो विधिको किसन धन धनि है;
तैस बहुतेरी तुं तो चाहत धनाइ भाइ,
तेरी न बनाइ बने बनि है सु बनि है.

टरि है न मरन जो परि है चरन चाहि,
करि है शरन जो तुं अमर अमीरको,
ताको तो डर न लग्यो लोकसों लरन पग्यो,
पापही करन बेठो न्हैकें नेजो पीरको,

त्रि जगको ताज है किसन महाराज तासों,
अरे विन छाज फरै फाज तकसीरको,
तातो होइ धीरतैं शिराइ हीकैं पजिं धीर,
कीजैं धीर लीजेंगो निवेरो धीर नीरको

३०

ठानत अफाज जय जानत कुटुष फाज,
आनत न छाज मन मानत मरदमें,
कुटुष विटय शूर मूरख न धूसे मूर,
सुखमें हजूर दूर दारुन दरदमें,
किसन बिसन त्यागी बिसनके राग पागी,
जागि जांसों बाकी दे हयातिके फरदमें,
फेती देह रद करी सिंधु सरहद घरी,
आखर मरद बेहि मिलेंग गरदमें

३१

दयो न करम कर भयो हे भरम भूरि,
धयो न धरम धुरि घोखे धन धामके;
ठयो लोक ठाम ठाम लयो लोभ आठो याम,
दयो काम कामनामें जग्यो बेध वामके,
बक्यो परनिंदा तक्यो पर रामा एती सब,
धक्यो पून्य सेती पैं न छक्यो राम नामके,
में पतित तैं पतित पावन किसन प्रभु,
भयोहू तो पतित भरोसैं नाथ नामके

३२

दोयो नीच पर हरिचंद बर धीर नीर,
हौले रघुवीरसैं ससीत गीत धाममें,
भयो दुखभागी नल संग लगी त्यागी तिय,
मुंजसैं सुभागी भीख मांगी रिपु गाममें,
ऐसैं ऐसैं किसन अनेक नेक नरनको,
गयो है सो बनम तमाम इतमाममें,
गोते खात गज तहां गाढरको कौन गजो,
अरे नर बीरे तुं तो कूचके मुकाममें
निशिके परत दिशि दिशितैं परित पुज,
जैसैं फाह कुंज मुनि वास छेत छै है,

३३

होतही सकोर जात जात न्यारे न्यारे अरु,
 प्यारेहु किसन याहि रीति रंग रसै है;
 ओयेही कहीतैं दाना पानीके सवव सव,
 जाइगे कहांही योहि प्रेम फंद फसै है;
 योग रु वियोगको न कीजिय हरख सोग,
 पाहुनेतैं घर वसै काके घर वसै है.

३४

तरु ले कमान लोधी रखो ताकि तान वान,
 देखत सिंचान उडे जात आसमानजू;
 दुखित कपोत पोत जानी दुख ओतप्रोत,
 समयो किसन श्याम करुनानिधानजू;
 व्याधकों डस्यो अचान व्याल विकराल आन,
 लग्यो छूटी वान छूटे वाजहूके प्रानजू;
 कहा करै हाल क्रम काल जम जाल व्याल,
 जोपै रच्छपाल प्रतिपाल भगवानजू.

३५

थाटको महीश चल भोगल कपाटको कि,
 हाटको खटाउ कि बटाउ कोउ बाटको;
 देत पर पीरा प्रेत जानै न जनम हीरा,
 घातक अधीरा खटकीरा मानो खाटको,
 किसन सुहात कुराफात करै जीव घात,
 आपै उर झात ऐसैं जैसैं कीट पाटको;
 सुखतैं न सूतो हा हा हूतो व्है विगूतो धूतो,
 घोवी केसो कूतो तुं तो घरको न घाटको.

३६

दियो भोग भारीपै अघात नांहि पापकारी,
 यातैं इच्छाचारी पेट चेटकी करारी है;
 यामैं चीज डारी तेती कामहीतैं टारी ऐसी,
 किसन निहारी यह कोठरी अंधारी है,
 कहा नर नारी सिद्ध साधक धरम धारी,
 पेटके भिखारी प्रथि पेटहीतैं हारी है,
 पिटवारी थारी न्यारी न्यारी है गुनहगारी,
 पेटही बिगारी सारी पेटही बिगारी है.

३७

धायो धाम धामपें न पायो विशराम अब,
 आयो मन ठाम ठायो नामहीसु नेहरो,
 आप न विशेष्यो तौलौ आपको न देख्यो जब,
 आपमें गवेख्यो तब पेख्यो सुर रोहरो,
 वरखे अमृत नैन हरखे निरख नैन,
 परखे किसन ऐन पें न छवि छेहरो,
 कहू जलमेव कहूं उपलकी सेव पर,
 देही सब देव की न देवकीन देहरो
 नदी नावकीसो जोग तामें मिळे लाख लोग,
 फाफों फाफों कीजें सोग फाफों फाफों रोइयें,
 कहे फाफों मित्त परी फाफों फाफी चित्त यत्तें,
 सीतापति चित्तव नचित्त न्है न सोइयें,
 घ्याइयें न विमुख उपाइयें न काहु दुख,
 पाइयें न आम जोपें आफ वीज नोइयें,
 स्वारथ तजीजें परमारथ किसन कीजें,
 जनम पदारथ अकारथ न खोइयें
 नरको जनम बार बार न गमार अरे,
 अजहू सन्हार अवतार न बिगोइयें,
 छीजेंगो हिसाब तहां दीजेंगो जवाब कहा,
 फीजें जो संताप तो सताव शुद्ध होइयें,
 पाप करिक अग्यानी सुखकी कहा कहानी,
 घृतकी निसानी फित्त पानी जो मिलोइयें,
 स्वारथ तजीजें परमारथ किसन कीजें,
 जनम पदारथ अकारथ न खोइयें
 धापको समाज साज करत न लाज आज,
 पून्य काज परत करत काल परसों,
 जाहि तूतो जानै मेरो तामें को हे प्यारो तेरो,
 दिन दै बसेरो देरो कैसी प्रीति परसों,
 एतो कारबार भार लेंके कैसे पावे पार,
 किसन उतार डार भार शिर परसों,

३८

३९

४०

कालतें अभीत माया जालतें अतीत गीत,
जानियें सो परम पुनीत नीत परसों. ४१

फूटयो फाटयो ख्वार जाके खुले खट चार द्वार,
पिंजरो असार यार तामें पखी पौनसो;
आवत पिछानियें न जाहि जात जानियें न,
बोले तातें मानियें मुडौलै रुचि रौनसो;
करमको पेर्यो दानापानीके सबव घेर्यो,
रौनक किसन जानि भूल्यो मान भौनसों;
पावे औधिहून तौलों करिह कहुं न गौन,
करै गौन पौन तो तमासो तामें कौनसो. ४२

यम जैसे शीश परि ठाढे निशदिन अरि,
तासों बिसे वीसा ढेरि ऐसी कर आंधरे;
छाडदे हेरामखोरी वृझी अब वृज तोरी,
जगतसैं तोरी जगदीशसैं तूं सांधरे;
चलाचल साथ न विसारियें किसन नाथ,
जैवो है दिखाते हाथ चढे चहू कांध रे;
केती जिंदगानी जापै ऐती तें अनीति ठानी,
अजो पानी पहिले गुमानी पारि बांध रे. ४३

रूठा जमराना भाना काया कमठाना तव,
उठे ह्यांते थाना कहूं करना पयाना है;
आगें जो ठिकाना सो तो मुलक विराना तहां,
गांठहीका खाना दाना बैठे नित खाना है;
तातें मन माना पूर करले खजाना अब,
किसन शयाना जो तुं दाना मरदाना है;
परे मरिआना मरे चूहा व्है दिवाना जैसें,
ऐसे अनजाना नाच नाच मर जाना है. ४४

लशुनके लिये न्यारी खात कसतूरी डारी,
अंबरकी क्यारी वारी चंदन करेवेकी;
हरख भरांनी भरि कंचन कलश रानी,
सिंच्यो इद सानी पानी गंगाहिकों देवेकी;

वह खुशबोहें त्यों त्यों चन्चो बढवोह होह,
 मूढेह न फरे फोह इच्छा वोह छेवेफी,
 सहस उपाय करो किमन उपाय दाय,
 प्रान क्यों न जाय पर प्रवृत्ति न जैवेफी. ४५
 बार बार फरत पुकार धडिमार बार,
 होउ हुसियार बिसियार मुख पायगो,
 गइ है बहुत आइ रहि है बहुत आइ,
 गाफिल गमाइ है गमार मार स्वायगो,
 खाक हिये खाक होइ रहि है किसन खाक,
 खाकफो स्वमीर भत खाकमें समायगो,
 आपफों हसायगो हसायगो कहाके जाय,
 जगल बसायगो न यममें बसायगो ४६
 राखी मधुमाखी लें न चाखी अमिलखी राखी,
 फहालों पताल नाखी राखी घन धानकी,
 खावे पोगव पावे प्राणी देवे जम होत जानी,
 जान दे हिवानी जें न खानकी न पानकी,
 फाके सग गई बह कौनकी किसन भई,
 रहे फर वई फर वई है निदानकी,
 आनत न बार भात छोड़े दिन मात जान,
 माया बदलात जैसे धाया बदलानकी ४७
 म्वर ज्यों अयान इनसानकी न सान बान,
 फहा मसतान महा खान मद पानमें,
 मूढ खूताने आपें आपही बखाने आपें,
 गानमें न काहू आने जाने ज्ञान ध्यानमें
 चलो अनमान भलो नाहि न वृथा गुमान,
 किसन निधान दिख देहु दया दानमें,
 मान सीख मेरी नहैगी ऐसी गति तेरी येह,
 जैसी मूठी ठरी हेरी राखकी मसानमें ४८
 खासी चीजे खाते खासे भूपन बनाते जीव,
 जानतें न दिन रातें राते मान तानमें,

सूरत सुहाते रन सुभट कहाते तातें,
 पौरुषके माते न समाते मद मानमें;
 किसन जु ऐसे भये वेड भीच मीच लिये,
 जस लें गये सो नित नयेही जहानमें;
 मान सीख मेरी व्हेगी ऐसी गति तेरी येह,
 जैसी मृठी ढेरी हेरी राखकी मसानमें. ४९
 हंस रहै रैन न्यारे काच सौध पर हारे,
 तारे प्रतिविम्बके निहारे जैसैं लीजियें,
 मान मोती गोती साच चूगे तव तूटी चांच,
 लागी आंच सोचे अव काहू न पतीजियें,
 किसन गये सु थाने मानसर केलि ठाने,
 मुकता छुयेतें जाने काहु छुये दीजियें,
 पिशुनतें दगो पाइ भलेको भरोसों जाइ,
 दूधके जरेकी नाई छाल्य फूंकि पीजियें. ५०
 लंकाको अधीश दश शीश भुज वीश जाके,
 दयो वर ईश अवनीश ता सराहिबी,
 सागरकी खाइ कुभकरणसैं भाइ जाकी,
 दुसह दुहाइ ठकुराइ अवगाहिबी,
 ऐसो राज साज गयो भयो जो अकाज एतो,
 हाथ प्रभुहिके लाज किसन निवाहिबी,
 झूठहीमें झूले नित लता अन मूले फूले,
 साहिबको भूले डूले क्यों न ऐसी साहिबी. ५१
 भीन भये अंगपै अनगके तरंग नये,
 न गये दुरित रग कहा सतसंग है,
 क्रोधहीमें काम अभिमान मान आठौ जाम,
 मायामें मुकाम गहे लोभके उमंग है,
 निंबकी निबोरी दीठी पक्के तव होत मीठी,
 किसन तिहारे तो निहारे तेइ ढंग है;
 बूझी तन लेश देश देख कैसैं भये केश,
 काग रगहूते सोइ कागदके रंग है. ५२

किसोर.

(शृंगाररस-कवित्त)

माग छीनो मधवाने राज साज पेरावत,
 कमला स्वगेश हरी माग छीनी देतमें,
 सारधी समेत रय बाजी ले गयो दिनेश,
 चार मुख ले गयो मराळ देत छेतमें,
 मुकवि किसोर मनि माग छीनी नागराज,
 दियोहि छटाइ सय सुरमोग हेतमें,
 देत देत सबे वृषकेतुके समाज राज,
 रे' गई विमृति मृत बेलही निकेतमें
 कदी जल केछितें नवेली अलबेली तीय,
 अंग अंग मूपन उमंग कर कसतें,
 कहत किसोर मुख घोय पोंछि अंचलसो,
 ठाडि भई तीरमें छपिली छवि छसतें,
 कर उलटाय कर कंधापर आगी बध,
 गही रही गई बाल छाज छखि बसतें,
 सनमुख सबल विलोकी रनधीर मानो,
 खंचत सुभट भीर तीर तरफसतें

१

२

कुचेर

(गूढ-बोद्धा)

हिमाचल पावती शफर, मय जहर,
 गिर धी कक्षा आभरण, धाके मुखमें होय,
 सो याके नेना बसे, (धाको) सग न करनां कोय
 समुद्र कमल प्रज्ञा सरस्वती इस मुष्ठा
 अधिसुत ता सुत ता सुता, ता वाहन भख होय,
 सीप सखी भगवान्
 ता माता भगनी पती, निश दिन भजिले सोय

१

२

गाय. बैल. मिह. मंजार. मृषक. गणपति.

अंवा मुत रिपु तास गुरु, ता भगवको असवार;

पार्वती. अंकर. नाप. वायु. रनुमान. रामनं.

ता जननी पिय आभरण, ता भगव मुत प्रभु ज्वार. ३

समुद्र. ब्रह्मा. कमल. गुन. समुद्र नद्र. गृन.

दधिमुत वाहन वटन दधि, दधि—मुत वाहन नैन,

समुद्र. वन्वन्तरी. गुवा. कोयल.

दधि—मुत वाहन नासिका, दधिमुत वाहन धैन. ४

पृथ्वी. शेष. गरुड. कृष्ण. लक्ष्मी.

अवनी—यंभन तास रिपु, ता स्वामी अर्धग;

समुद्र. मुक्ता.

तास पितामै नीपजे, वासौ लाग्यो रंग. ५

द्वादश मुख भुज अष्टदश, द्वा पचीस पग वीश,

सो तुमको रक्षा करे, खग नगपति जगदीश. ६

समुद्र. लक्ष्मी. जेर. वन्वन्तरी.

दधी मुता दधि—मुत भस्त्रो, दधिसुत वेग बोलाय;

समुद्र. अमृत. समुद्र. मोती. हंस अर्थात् जीव.

जो दधि—मुत आवे नहि, (तौ) दधि—मुत रिपु उड जाय. ७

जिभ. हाथ. तीन.

रसना एक रु कर दुई, मुरलोचन खट पाय,

ईग गूढारो अर्थ के', सो मोटो कविराय. ८

१ नमन. २ अंकर. पार्वती. नंदी. विष्णु. लक्ष्मी. गरुड. ब्रह्मा. सावित्री. हंस.

मुख... १ १ १ १ १ १ ४ १ १=१२

भुज... ४ २ ० ४ २ ० ४ २ ०=१८

द्वा... ३ २ २ २ २ २ ८ २ २=२५

पग... २ २ ४ २ २ २ २ २ २=२०

३ वाहन सहित शुक्राचार्य. शुक्राचार्यका वाहन मंडुक हैं और मंडुकको जिह्वा नहि होती है; और हाथभी नहि है. तस्मात् शुक्राचार्यजीके दो हाथ और एक जिह्वा कही है औ वामनावतार प्रसंगमें शुक्राचार्यजीका एक नेत्र फूट गया है, शेष एक नेत्र और मंडुकके दो नेत्र मिलके हुवे तिन, और वाहन मंडुकके साथ आपके मिलके हुवे छे पाद.

लखन टकनखर घनुप् गुण
 राम सहोवर कनकरिपु, कोदडाको सार,
 ए तीनों तोमैं नहिं, तो छाडी भरतार^१ ९
 मडुक मृत्तिका सांघ ऊरु शिवजी क्रम मन
 दादुर—भोजन आहि घसण, हर-रिपु वाहन सोय,
 ये तीनों में आर्पिया, तोउ अपनो नव होय^२ १०

(चोपाइ)

मेडी भतार. हेछ फरो मेडा रुधिर
 सारंग चढी मोहि सारंग कोकि, सारंग जावत सारंग रोकी,
 भतार. सताबी (२७) अर्थात् शीघ्र
 उठो सखी सारंग समुझावो, तीसां मोहे तीन घटावो^३ १

(दोहा)

अग्नि दीपक

फरि शृंगार प्रिया चली, सारंग—सुत छे हय्य,
 पाणी जलो रुधिर
 जल-सुत मख्य बेरी भयो, सब सिणगार अकथ्य^४ १
 हस्ति मुह ऊस आकारकी जलो
 इंद्रवाहनकी नासिका, तासतणे अणुहार,
 रुधिर
 उणरो भस्ममो प्राहुणो, (पियु) आवागानन निवार २
 पीठ नोर.
 सारंग सोता निस मरी, सारंग ठेढा वा'र,

१ टकनखरको सोहागा कहेंदे हैं और घनुप्की प्रतेचाको गुण कहेंते हैं, तस्मात् तेरेमें लखन, मुमाग्य और गुण ये तीनोंका अभाव होनेसे पतिने तेरेको त्याग दिया है

२ दादुरका भोजन मृत्तिका अर्थात् बेह, हृदय और मन ये तीनों मेने खरनमें अर्पण कीया तो भी मेरे न हुए

३ रजस्वला धमकी प्राप्त हुई पतिसमीप आनेमें असमय होती हुई नायिका—स्वामीको सत्वर समझानेके लिये सखीको प्राथना कर रही है.

४ मावाय उपरोक्त चोपाइ अनुसारही है

पिया. कमान. तस्कर. तीर.

उठ सारंग सारंग ग्रहो, सारंग सारंग मार. ३

मनुष्य. वरसाद.

सारंग टालण पशु भखण, सारंग हूतें होय;
जो तुम सुंदर सुघड है, मदिर हूतें द्योय. ४

मेघ. मंडुक. मंडुक साप.

हरि गरज्यो हरि उपज्यो, हरि आयो हरिपास;
मंडुक. जल. साप.

जब हरि हरीमें गयो, तब हरि भयो उदास. ५

शृंगार. लखन. यौवन १३ नरमकी.

. सोल सिंग वत्तीस खुरी, नवथन तेरे कान;
अकवर देखी वाकरी, शिखर चरती पान. ६

(चोपाइ.)

अंगुठे अंगुलिया. अंगुली. अंगुष्ठ.
चार पुरुष औ सोलज सती, चार चार अकेकसों रती,
चार पुरुषका एकहि नाम, कहो अर्थ वा छाडो गाम. १

कुंदन.

(सूमकथन-कवित्त.)

सूम कहै पतनीसों सुपनेकी वात सुन,
अकथ कहानी एक वर-वस हार्यो तो,
चादीको धर्यो तो जोर जोरके कर्यो तो गाड,
जमीनमें भर्यो तो फेर हाथमें निकार्यो तो;
कुंदन कहत कवि आयो एक ताहि समै,
कविता पढेतै वाको देवो अनुसार्यो तो,
होत कुल दाग बडो सुतको अभाग जो मै,
जागन परों तो ये रुपैयो देइ डार्यो तो. १

(शंखान्योक्ति.)

दाता सुन्यो लोकों जब विक्रमसो जान्यो दिल,
बात दुःख दर्दहूकी कहिके वताई में;

तब तो न दिन्हो जब भोजसो सुभाव चिन्हो,
 निविध प्रकार तेरी बहु कीर्त गाई में,
 गुनतैं भयो न प्रभ तबतो जान्यो में शृण्व,
 तीजी घेर तदुल ज्यौ कबल दिखाई में,
 खुद है उधार खाता देखा शून्य शस्त्र वाता,
 मेरी चीज दे दे तेरी रीस भरपाईमें

२

केवल.

(कमाल जवांमर्द कीरता)

गजन कमाल गढ़ भजन कमाल धारि,
 सुरत रसाल मन रजन कमाल है,
 प्रीतिमें कमाल, रन जीतमें कमाल राज,
 रीतिमें कमाल देख्यौ प्रजाप्रतिपाल है,
 राजमें कमाल, सब काजमें कमाल दिल,
 साजमें कमाल, सदा बैरी सिर साल है,
 स्वागमें कमाल, अरु त्यागमें कमाल देख्यौ,
 खानहू कमाल, सब बातमें कमाल है

१

गजबी गम्हर गाज, विछीतें दलन साज,
 छटवेकें काज पथ गुज्जरको छीनो हे,
 बुदीकों बिहारी मारी हाडा गाढा जोरनके,
 और राव राना ताके बाह बल छीनो है,
 प्रबल पठननसों भीर्यों अंग जीतवेको,
 भारतसो कीनो जुद्ध वीररस भीनो है,
 नवल नवाब जुवां मर्दखा बहादुरने,
 फकर नवाबकों फकीर कर दीनो है

२

(कविपरिचय-बोधा)

अहमदगढ़पे राजपुर, तुलसीकी यह पौल,
 केशवसुत केवल बसै, नागर विप्र अमोल
 केवल केशव कृष्णको, उल्लाहि नाम संभार,
 सेवक शोभा रख सदा, आदित उदय निहार

१

२

केशव.

(स्तवन-छप्पय.)

एक रदन गज वदन, सदन बुध मदन कदन सुत,
गौरिनंद आनंद, कंद जगवंद चंद युत;
सुखदायक दायक, मुकृत गननायक नायक,
खल घायक घायक, दारिद्र्य सब लायक लायक;
गुनगन अनंत भगवंत भव, भक्तिवंत भवभयहरन,
जय केशवदास निवास निधि, लबोदर अशरनशरन. १

तिलक भाल वनमाल, अधिक राजत रसाल द्यवि,
मोरमुकुटकी लटक, छटक वग्नत अटकत कवि;
पीतावर फहराय, मधुर मुग्ग्यान कपोलन,
रच्यो रुचिर मुख पान, तान गावत मृदु बोलन;
रति कोटि काम अभिराम अति, दुष्ट निकंदन गिरिधरन
आनंदकद व्रजचंद प्रभु, जय जय जय असरनमरन. २

मोरमुकुट नग जटित, कर्ण कुंडल मणि झलकै,
मृगमद तिलक ललाट, कमल लेचन दल पलकै;
बुंधर वाली अलक, कंठ कौस्तूभ विराजै,
पीत वसन वनमाल, मधुर मुरली धुन बाजै;
करत कोटि शुभ आभरन, चंद मूर्य देखत लजत,
ते बलदेव दे भक्तजन, श्यामरूप प्रीतम सजत. ३

चतुरानन सम बुद्धि, विदित ज्यौ होय कोटि धर,
एक एक धर प्रतिनि, सीस ज्यौ होय कोटि वर;
सीस सीस प्रति वदन, कोटि करतार वनाधै,
एक एक मुखमांहि, रसन फिर कोटि लगावै:
रसन रसन प्रति सारदा, कोटि बैठि बानी कहही,
महि जन अनाथके नाथकी, महिमा तबहु न कहि सकही. ४

(संसार शिक्षा.)

विमल चित्त करि मित्र, शत्रु छल बल बस कीजै,
प्रभु सेवा बस करिय, लोभवंताहि धन दीजै,

- युवति प्रेम बस करिय, साध आदर बस कीजें,
महाराज गुनकथन, बंधु सम आदर दीजें,
गुरु नमित सीस रससों रसिक, विद्याबल बुध मन हरो,
मूरख विनोद मुकथा वचन, सुम सुमाय जग बस करो ५
- जाचक लघुपद लहै, असन छालची गई गद,
छोभी दुर्जय लहै, धामिजन लहै कलक पद,
मूरख अवगुन लहै, लहै पदि पदि गुन पंडित,
शूद्र सुयग जब लहै, रहै रनमें महि मंडित,
निर्वान सुपद जोगी लहै, जो न गहै भमता सुमति,
सुख भगत जगतजन लहत है, करेजु ता विघ भकि अति ६
- धिक भगन गुन भिनहि, गुन सु धिक सुनत न रीझी,
रीझ सु धि फ विन मौज, मौज धिक देतसु खीझै,
देवो धिक विन साच, साच धिक धर्म न भावे,
धर्म सु धिक विन दया, दया धिक अरि कहैं आवैं,
अरि धिक चित्त न साउढ़, चित्त धिक जहैं न उदार मती,
मति धिक केशव ज्ञान विन, ज्ञान सु धिक हरिभाकि विन ७
- तजहु जगत विन भवन, भवन तज तिय विन कीनो,
तिय तज जु न सुख देख, सु सुख तज सपति हीनो,
सपति तज विन धान, दान तज जहैं न विप्रमति,
विप्र तजहिं विन धर्म, धर्म तजिये विन भूपति,
तज भूप भूमि विन भूमि तज, देह दुर्ग विन जो बसै,
तज दुर्ग सु केशवदास कवि, जहा न पूरन जल छसै ८
- मूढ तपी सम कृती, दुष्ट मानी गृहस्थ नर,
नरनायक आलसी, विपुल धनवत कृपण कर,
धर्मी दुष्ट स्वभाव, वेदपाठी अधरमरत,
पराधीन सुचिबत, भूमिपालक निवेह सत,
रोगी दरिद्र पीडित पुरुष, वृद्ध नारिस गृद्धचित्त,
एते विडव ससारमें इन ममकों धिकार नित ९
- तियबल जोवन समय, साधबल शिवपद समर,
चपयल तेज प्रताप, दुष्टबल वचन अहंभर,

निर्धन बल सुमिलाप, दानसेवा जाचक बल,
 वानिज बल व्यापार, ज्ञानबल बर विवेकदल;
 इम विद्या विनय उदार बल, गुन समूह प्रभुबल दरब.
 परिवार सुबल सुविचार कर, हौहि एक संमत्त सरब. १०

नरपति मंडन नीति, पुरुष मंडन मन धीरज,
 पंडित मंडन विनय, तालरस मंडन नीरज;
 कुलतिय मंडन लाज, वचन मंडन प्रसन्न मुख,
 माति मंडन कवि कर्म, साध मंडन समाध सुख;
 नित भुजबल मंडन है क्षमा, गृहपति मंडन विपुल धन,
 मंडन सिद्ध रुचि संत कहि, काया मंडन बल न धन. ११

ज्ञानवंत हठ गहै, निधन परिवार बढ़ावै,
 बंधुआ करै गुमान, धनी सेवक ब्रह्म धावै;
 पंडित सुक्रिया हीन, रांड दुर्वृद्धि प्रमाने,
 वृद्ध न समझे धर्म, नारि भर्ता रिपु माने;
 कुलवंत पुरुष कुलविधि तजै, बंधु न माने बंधुहित,
 संन्यास धार धन संग्रहे, जे जगमें मूरख विदित. १२

गई भूमि फिर मिले, बेलि फिर जमे जरे ते,
 फल फूलनतें फले, फूल फूलंत झरे ते,
 केशव विद्या निकट, विकट विसरी फिर आवे,
 बहुरि होय धन धर्म, गई संपत फिर पावे,
 होई जो शील सुशील मति, जगत् हेतु इम गाइये,
 प्रान गयो फिर मिलत पै, पत गइ फिर नहि पाइये. १३

रूप रंभ विधु बदन, वचन अमृत विष चितवत,
 भौह धनुष ग्रिव शख, जलज सम जहं पातिव्रत,
 हय घुंघुट गज चाल, कामतरु लाज नयन भर,
 मणि सु पक्त हृद उदित, शील छवि लाज धेनुधर,
 सुरा कपट सुर बैद सुयश, केशव दुखेके जान तन;
 सुरगण सर मत्थ्यो वृथा, तिय तनमें चौदह रतन. १४

(नीतिव्यवहार-सवैया)

सोमति सो न समा जहँ धृष्ट, न धृष्ट न तेजु पढे फल्यु नही,
 ते न पढे जि न साधु न साधित, दीह दया न विसै जिन माही
 सो न दया जु न धर्म धरै घर, धर्म न सो जहँ दान वृथाही,
 दान न सो जहँ साच न केशव, साच न सो जु वसै छल्लाही १
 दूषण दूषणके जस भूषण, भूषण अगनिके सब सोहै,
 ज्ञान संपूरण पूरणके, परिपूरण भाव निपूरण जोहै
 श्री परमानंदकी परमा, परमानंदकी परमा कही को है,
 पातुरसि दुर्गति मतिको, अत्रातरसि तुलसी पति मोहै २
 पापकी सिद्धि सदा ऋणवृद्धि सु, कीरति आपनी आप कहीकी,
 दुखको दान जु सूत कहान औ, दासीकी सतति सतत फीकी,
 घेरीको भोजन भूषण ढांडकों, केशव प्रीति सदा पर तीकी,
 युद्धमें लाज दया आरिफे अह, ब्राह्मण जातितें जीति न नीकी ३
 पातक हानि पितासग हागिबो, गर्भके शून्तते डरियेंजू,
 तालनको बध बध धरोरको, नाथके साथ चिता जरियेंजू,
 पत्र फटे औ करै ऋण केशव, कैसेह तीरथमें मरियेंजू,
 नीकि सदा समुरारिकी गारि सु, दढ भले जु गया मरियेंजू ४
 एककु तो सुख होत सदा, इकको जिय पावत दुख अलेखा,
 एकहि मस्तक छत्र धरावत, एकहि स्त्रीगमतदारक देखा,
 एकको कूट कपूर न भावत, एकको छनकि चिन गिसेखा,
 ओरकी आश करो किमि केशव, टारि टरे नहिं कर्मकि रेखा ५
 अच्छर भेद न जानिउ केशव, बालपसों सो निपावट सोई,
 देव कथा सुनवे तरस, हरसैं मुद देखे जेब फोई,
 हींग बराबर बावन चवन, मास दसे उनमाह बिगोइ,
 बाल न जानत है परमाच्छर मूरखके शिर सिंग न होई ६
 पावक पक्षि पशू नग नाग, नदी नद लोग रष्यो दशचारी,
 केशव देव अदेव रष्या, नरदेव रष्यो रचना न निवारी,
 रात्रिके नरनाह बलबीर भयो, भयो कृत कृत महाव्रतधारी,
 दे करतापन आपन ताहि, वियो करतार दोउ "कर" तारी ७

पापि वधेलको राज सुखी गो, पोखरि . पठान अठानी,
 केशव ताल तरंगिनि तूवर, सूखि गइ सिगरी बहु बानी;
 शाहि अकब्बर अर्क उदय,—मिठी मेघ महीपनकी रजधानी,
 उजागर सागरसी मधुशाहिकी, तेग चख्यो दिनही दिनपानी. ८
 क्रोधित लागत डगसो दीसत, पीसत दंत सदा खुर पासे,
 भूपति काह करे भरणी जस, मंगल काह लहे उन पासे;
 सूरज चौथो कहा करे आठसो, बारमो ऊठ नहि उस रासे,
 ठीगच डींग अडे जिनके घर, आइ पनोति वडे पग नासे. ९
 आंगन आवत हे कोउ मागन, होय न होय तऊ कछु दीजे,
 आस निरास न कीजिये बल्लभ, दुर्लभ होयके कामउ कीजे;
 जोवनमें उपकार करो नर, जोवन गो तब हाथ बसीजें,
 मानवको भव पायके केशव, जो कछु गम दिलवे सो दीजें. १०
 चाह करे जनके तनमें सब, आयके पाय नमे भल भैया,
 मातकों तातकों लागत बल्लभ, भामिनी में नर लेत बलैया,
 बात जुठी सब शांत समो, नित लोक गुनि सब बात कहैया,
 केशवदास तो साच कहावत, सोई वडो जाकी गाठ रुपैया. ११
 ऊझा जोर करे कर जोरके, पेटके काज महा दुख माचे,
 बात विचारत नाहि भलि बुरी, पेटके काज अहोनिष पाचे;
 कोटि कलक सहे अपमान जु, पेटकी वेद कथा हस बाचे,
 केशवदास तो सांच कह्यो भैया, पेट नचावत ल्यों जग नाचे. १२
 ऋतुराज गये घनकी बरखा, तनकी सब पीर गई छिनमें,
 भर पावस मास उल्हास भयो पिक मोर झकोर करे वनमें;
 पिउ पीउ पपीह करे बरही, कुल गाजत बीज बिषे घनमें,
 उस मास विलास न हो तबही, विरही जन आग ल्यो तनमें. १३
 कृत्य तजी सब धर्मके मूरख, पापहिमें जिय पाच रह्यो हे,
 भेदहि जानत रूढही तानत, अंगके संगसैं राच रह्यो हे;
 क्रूर कपड़ कर जनसों धन, पुत्र कलत्र सों माच रह्यो हे,
 मानवको भव हारी चूक्यो अब, केशवदास तो साच कह्यो हे. १४
 लीक न लांघत हेह जु सायर, वायर सत्त धरेह जु काई;
 सूरको तेजह जु धरणीधर, मातरकां हेह जु बरदाई;

- मंत्र मइ अरु जंत्र मइह जु सिद्धकी सेव करो चित्त लाई,
केशवदास कहे सब आसत, सत्त धरो भेरे वल्लभ माई १५
- उत्तर बोल न बोलिउ केशव, रीसमें बैर न चालिउ तासों,
क्रीस्तेको हास गयो भैया ऊडके, टेरत पानी तबैं सब फासो,
गो मुम शूक गये छोर बल्लभ, बहुअर मेल विदेश गयासों,
औसर चूक गयो जब मेह विना, प्रसताव घुठो सब फासों १६
- स्वाय शके नहि पीय शके नहि, देनकी बात नहीं करले,
ए सब मालकी छूब न लागत, चोर जुवारी राजा हरले,
फूटत शीप जवैं फोह छूटत, फूटतही खुरल खुरले,
केशवदास कहे मुन सज्जन, पापीको घन हुवो परले १७
- मल्ल लल्लट लिह्यो जोइ केशव, टार शके कहो कोन हे ऐसो,
राम रु मुज जोरावर रावन, भाविसों जोर कियो कहो कैसो,
कृष्ण विदेश फिरे पंच पाडव, राजनकोंसु लक्षो फल तैसो,
बार अनेक भयो अस केशव, काहेको जीवन कीजे अदिसो १८
- उद्यमसैं जु सब दु ख जावत, नावत दारिद उद्यम पासै,
जाप जपो भगवत सुधे मन, सकट आपद पाय पनासे,
वेद दहो दसी आप ल्यी तय, मान किये कलहादिक नासे,
जागत सोयत हैं भय जावत, केशवदास कहे सुविलासे १९
- एकनको करिये उपकार जु, एकनको धुर वीजिये लरैं,
को गुन पावत सापकों दूधही, को गुन कागकों नीरज डारैं,
को गुन नीचकों सींचत अमृत, को गुन छारमें होम विडारैं,
को गुन नीच मलाइ करो फिन, को गुन सिंहकी आख उघारै २०
- ऊट्टि बात गुरु कह छोडदे, धर्मकि बात कुरो मल भावैं,
तोल वनाम कहो मनसों, हम बालक धर्म कहो किमि आवैं,
सोवन देह मई भर यौवन, धर्मकि बात बुढी कुम्हलवैं,
केशव धर्मको जो नहि मानत, सो नर हाथ घसी पछितावैं २१
- गांवर गोठ कबू नहि जावत, स्वाय बगासे सदा दिन डेरै,
नां घर खाट न पाट उमाटि, उचाट सदा परको घन हेरै,
पैसे मजूरकों आसिस देवत, आचक हाथ चहूँ दिस फेरै,
चोर कहा करिहैं उनके घर, लीजत हे नव बीजत तेरै २२

जोग पको करामातकी मारत, मानत लोक सुने सहरो,
गल्ल पुराण सुनी हरखें, सब धर्म कथा सुनवे बहरो;
कूर कपटके हाथही आवत, साधुकों देख हरो चहरो,
केशवदास इसो जग लोग हे, आज लवारनको पहरो. २३

(रागमालादि विविध कवित.)

सात स्वर छौ राग रागिनी समेत गाय,
तीन ग्राम घोर छाया वाइस रसाला है;
भैरे मालकोस अलापत हिंदोल धुनि,
दीपक श्री और मेघहू श्रुति विशाला है;
न्यारी न्यारी नायिका रूपके सागर भरी,
बीच बीच भार जामें एक एक आला है,
गुणनकी माला सुनि रीझि ब्रजमाला आज,
बासुरीमें लालने बजाइ रागमाला है. १

शीखे रस रीति शीखे प्रीतिके प्रकार सबै,
शीखे केशवराइ मन मनको मिलाइवो;
शीखे सोहै खान नटतान मुसक्यानि शीखे,
शीखे सैन बैननिमें हंसिवो हंसाइवो;

शीखे चाह चाह सो जु चाह उपजाइवेकी,
जैसी कोउ चाहै चाह तैसी वाही चाहिवो;
जहां तहां शीखे ऐसी बातें धातैं ताते सब,
तहां क्यों न शीखे नेक नेहको निभाइवो. २

खरो तो खजान जाने पातसाह मुख जाने,
दुजा सब आय माने धोरी जाकी धात हे,
चाकरको चित्त चोरे चंदहू चकोर जैसे,
कामिनीको मन हरे गोरो जाको गात हे;
तुं तो कवि बहोरो निपट निडावरो बडो,
लेवेकों ललचावे कहो कहों ऐसी बात हे;
यातो मोरी मैया हैं या कोप कर दैया हमें,
रुपाको रुपैया भैया दिया कैसो जात हे. ३

जूठ हे चतुनी नेन नेननकी न्ह भरी,
जूठ हे बेन बेन कही नट जातु हे,
जाकी हे करनी जूठ हिलनी मिलनी जूठ,
चलनी हे जूठ सच जग सरसातु हे,
नेन जूठ मन जूठ रोम रोम रमे जूठ,
जगतको जूठ जाका जूठमें समातु हे,
कहे कधि केसोदास कहा छें भखान करु,
जाको जम बार बार जूठहीमें जातु हे

४

(चतुराक्षर)

सीतानाथ सेतुनाथ सत्तनाथ रघुनाथ,
यदुनाथ अजनाथ दीनानाथ देवगति,
देवदेव यक्षदेव विश्वदेव वामुदेव,
व्यासदेव दीनदेव देवीदेव दीनरति,
नरवीर रघुवीर यदुवीर अजवीर,
बलीवीर वीरवीर रामचन्द्र चारुमति,
रागपति रमापति रामपति राधापति,
रसपति रासपति रसापति राजपति

१

(दोहा)

(तिन अक्षर)

श्रीधर भूधर केसिहा, केशव जगत प्रमाण,
माधव राधव कसहा, पूरन पुरुष प्रमाण

१

(द्वि अक्षर)

रमा उमा बानी सदा, हरि हर विधि सग वाम,
क्षमा दया सीता सती, बाकी रामा राम

१

(पंकाक्षर)

गौ गो गं गो गि अ आ, श्री धी ह्री मी भानु,
१० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३
मू वि प स्व आ इ हि हा, नौ ना स म मानु १

१ धेनु, जठ, गंगाजी गीत, कल्पवृक्ष, किरन २ बानी ३ बामुदेव
४ प्रज्ञा ५ सक्षमी ६ बुद्धि ७ सज्जा ८ भय ९ मानु-सूर्य
१० पृथ्वी ११ पक्षि १२ प-स-आकाश १३ अनुप, गुण स्वयं.
१४ उवासा १५ दिवस १६ हिरण्यगर्भ, निधय १७ शंभु १८ गीनती
१९ माटय २० सकृपण २१ तारा. २२ मृत्य २३ प्रस्तुत

(कवि-कवितादि विचार.)

- विप्र न नेगी कीजिये, मुढ न कीजिये मित्त;
 प्रभु न कृतघ्नी सेइये, दूषण सहित कवित्त. १
- अंध बधिर अरु पंगु तजि, नगन मृतक मति शुद्ध;
 अंध विराधी पंथको, बधिरति शब्द विरुद्ध. २
- छंद विरोधी पंगु गण, नग्न जो भूषण हीन;
 मृतक कहावे अर्थ विन, केशव सुनहु प्रवीन. ३
- तौलत तूल रहै नहि, कनक तुल्य तिल आधु,
 ल्योंहीं छन्दोभंगको, सहि न शकै श्रुति साधु. ४
- अगण न कीजे हीनरस, अरु केशव जतिभंग;
 व्यर्थ अपारथ हीन क्रम, इनके तजो प्रसंग. ५
- वर्ण प्रयोगी कर्णकटु, सुनहु सकल कविराज;
 सबै अर्थ पुनरुक्तिके, छांडहु सिंगरे साज. ६
- देश विरोध न वरणिये, काल विरोध निहारि;
 लोक न्याय आगमनके, तजो विरोध विचारि. ७
- मगन नगन भन भगन अरु, यगन सदा शुभ जानि;
 जगन रगन अरु सगन पुनि, तगनहि अशुभ बखानि. ८
- मगन त्रिगुरु युत त्रिलघुमें, कशव नगन प्रमान,
 भगन आदि गुरु आदि लघु, यगन वखाणि सुजान. ९
- जगन मध्य गुरु जानिये, रगन मध्य लघु होइ;
 सगन अंत गुरु अंत लघु, तगन कहत सब कोइ. १०
- एक कवित्त प्रबन्धमें, अर्थ विरोध जु होई;
 पूरबपर अनमिल सदा, व्यर्थ कहें कवि लोई. ११
- एकवार कहीए कछु, बहुरिजु कहिये सोइ;
 अर्थ होय कै शब्द पुन, सो पुनरुक्ति सु होइ. १२
- दोष नहि पुनरुक्तिको, एक कहत कविराज;
 छोड अर्थ पुनरुक्तिको, शब्द कहै यहि साज. १३
- उत्तम मध्यम अधम कवि, उत्तम हरिस लीन;
 मध्यम मानत मानुषन, दोषन अधम अधीन. १४

यदपि मुजाति मुल्लाणी, सुसरस सुश्रुत,
भूषण बिन न बिराजई, कविनेता मित १५
(त्रिविध नाट्य)

दिव्य अदिव्य कहे सु कवि, दिव्य बिचारि,
त्रिविध नायिका जगतमें, प्रथम बेहारी १
दिव्य देवतिय बर्निये, नारि अदिस्त्रानि,
अमर नारि सुव अवतरी, दिव्यादिबिज्ञानि २
नस्तैं दिव्य त्रिया बरन, सिखतैं विबुधदिव्य,
नस्तैं सिखतैं बर्निये, सो तिय दिव्यादि ३

(विविध भक्तिबोध)

रा मुन संकट अघ विकल, भगे खुले मुल्य,
मुल मकार पटकत मिलो, बीच भस्म हो १
रा कहतैं छोडावियो, भ पहिलो गजराज,
पहिले गोली लगत हैं, पीछ होत अवाज २
बरणी बरणी जात क्यों, सुनि बरणीके ईश, ॥
रामदेव नरदेव मणि, देव देव जगदीश ३
राज राज संग ईश द्विज, राज राज मन मान,
विष विषहर अरु मुरसरी, विष विष मन उर आन ४
कुम्बदिहारी सहारि हठ, हितहारिनि प्रहारि,
कहा रिसात विहारि बन, हरिमन हारि निहारि ५
शूरनके तन सूम मन, काठक मठकी पीठ,
केशव सुखो चर्म अरु, गठ हठ दुर्जन धीठ ६
मती समर भट सत मन, धर्म अधर्म निमित्त,
जहां तहा ये बरणिमे, केशव नि चल चित्त ७
तरल तुरग कुरंगगण, वानर चलदल पान,
लोभिनके मन स्यात जन, बालक काल विधान ८
कुलटा कुटिल कटाक्ष मन, सपनो यौवन मीन,
खजन अलि गज श्रवण श्री, दामिनि पवन प्रवीन ९

दान मान धन योग जप, भाग गृहरूप;	
मुक्त सौम सर्वज्ञता, ये न अनूप.	१०
पाप पराजय झूठ हठ, मूरख मित्त,	
ब्राह्मण नेगी रूप विन, इन शील चरित्त.	११
कुजन कुस्वामि कुगति, कुपुर निवास कुनारि;	
परवश दारिद्र आदि दुख दान विचारि.	१२
रिपु प्रताप दुर्वचन वचन संताप,	
सुरज आगि बडवडख, तृष्णा पाप विलाप.	१३
झीगुर साप उल्लूख, महिपी कोल वखान;	
काल काक वृक म खर, श्वान क्रूर स्वर जान.	१४
कलरव केकी कोला, शुक सारोकल हंस,	
तंत्री कंठनि लं दै, शुभ मुर दुंदुभिवस.	१५
मधुर प्रियाघोमेकर, माखन दाख समान;	
बालक बातौतरी, कविकुल उवित प्रमान.	१६
महुवा मिश्र दूध घृत, अति शृंगार रस मिष्ट;	
केशव ऊ मयूखगन, केवल सांचे इष्ट.	१७
पंगु गुंरोगी वणिक, मीत मूरख युत जानि,	
अंध अगध अजादि शिशु, अवला अवल वखानि.	१८
तुंग तग गंभीरता, रतन जलज बहु जंत;	
गंगा गगन देव त्रिय, यान विमान अनंत.	१९
पवन पवनको पुत्र अरु, परमेश्वर सुरपाल,	
काम भीम वाली हली, बलिराजा पृथुकाल.	२०
सिंह बराह गयन्द गुरु, शेष सती सब नारि,	
गरुड वेद माता पिता, बली अदृष्ट विचारि.	२१
रघु उदयते अरुणता, पय पावनता होइ;	
शंख वेद ध्वनि मुनि करै, पंथ चलै सब कोइ.	२२
कोक कौक नद विरह तम, मानिनी कुलटनि दुःख;	
चंद्रोदयते कुवलयनि, जलधि चकोरनि सूख.	२३
प्रजा प्रतिज्ञा पुण्यपन, परम प्रताप प्रसिद्ध;	
शासन नाशन शत्रुके, बल विवेककी वृद्ध.	२४

दंड अनुग्रह धीरता, सत्य शूरता दान,	
कोश देशयुत वरणिये, उपम क्षमानिधान	२५
सुंदरि सुखद पतिव्रता, शुचि रुचि शीठ समान,	
यहि विधि रानी वरणिय, सलज सुबुद्धि निधान	२६
विद्या विविधि विनोदयुत, शील सहित आचार,	
सुंदर शूर उदार विभु, वरणिय राजकुमार	२७
राजनीतिरत राजरत, शुचि सर्वज्ञ कुटीन,	
क्षमी शूरयश शील्युत, मन्त्री मन्त्र प्रवीन	२८
प्रोहित नृपहित वेदविद, सत्यशील शुचि अंग,	
उपकारी भाद्रण रिजु, जीयो जगत अनग	२९
स्वामिभक्त जित श्रम सु धी, सेनापति अभीत,	
अनालसी जनप्रिय अशी, सुख संग्राम अजीत	३०
तेज बदे निज राजको, अरि उर उपजे क्षोभ,	
इगित जर्नहि समय गुण, धरणबु दूत अटोम	३१
पंच भूत पातक प्रकट, पंच यज्ञ निय जानि,	
पंच गन्ध माता पिता, पंचामृत वस्त्रानि	३२
पाच अंग गुणसंग पद, विद्या दशयुत चारि,	
आप्तम सगम निगममति, ऐसे मन्त्र विचारि	३३
आयु घटे आशा बदे, मनहू बढ घट जाय,	
प्राप्ति बदे ना तिळ घट, फहे फवि केशवराय	३४
जिन बोले जिनही हसौ, जिन रुठौ जिन जाहु,	
पेसेंही धेठे रहो, पेसेंही मुसफाहु	३५
मान पूछकी वक्रता, अरु प्रह्लादको भाव,	
कोटि जतन करि करि थके, नेक न तजत सुभाव	३६
केशव फेसन अस करी, जस सत अरि न कराहि,	
चंद्रबदनि भृगलोचनी, बाबा कहि कहि जाइ	३७

केशवलाल.

(शारदास्तुति ३०—कवित्त.)

मानवमें मंजु त्योंजु देव अरु दानवमें,
 गान किन्नरीकेमें अखिन जस जाकों है;
 माननीय महिपें महान कविराजनको,
 राजत अनूप एसो रूप न रमाको है;
 केशव निवासी मानसरको हुलासप्रद,
 हंस अवतंस जाको वाहन सदाको है;
 जानत हों जो में कछु रीत कविताकी तात,
 सो सब प्रताप वह मात शारदाको है.

१

अति अभिराम धाम कामकी अचल ताकी,
 छांड खोटी आश कोटी दामकी बदामकी;
 संत औ महंत सब जानत हे अंतमांहि,
 दशा नाशवंत रसा आदि ले तमामकी;
 सार ये असार जगमांहि यार जीवनको,
 करिक बिचार जपमाला हरिनामकी;
 मोक्षपद दायक त्यों नायक सुकर्मकी सो,
 केशव हे सेवा सियारामकी न रामकी.

२

आदर मिले हें जहां अबुध नरोंकों नित,
 तहां जायवेकी कहो पंडितको कामका;
 स्वामीकों सतावे वह सेवकको काम कहा,
 सोई दुःख पावे माल खावे जो हरामका;
 केशव कहत चूथे चर्म क्रूर कर्म करे,
 धावे नहि धर्मपथ सोहे नर नामका;
 कामका न दामका न घटी पल जामका न,
 हमारे भरोसा एक साचा सिय रामका.

३

राम गुन गाई भये तुलसी सवाई जग,
 जसकी कमाई जिने जबर जमाई है;
 जाकी कविताईकी मिठाई मजेदार जामें,
 सुधाकी समानताकी संपति समाई है;

फेसोदास आदि कवि राम गुन गाई मये,
 नामसों अमर आज ताम ना नवाई है,
 जानी चित्त प्यो निज श्रेय हित केशोलाल,
 ताको शिर नई हम करत बडाई है ४
 एन कैसे नेनवारी कोकिलसे बेनवारी,
 बेनवारी त्यों न रेन निंदनी ल्हा करे,
 वाको कहा करे कहो दान मरवाने नर,
 आनद अथाह जाके बदन बहा करे,
 देखि द्रगहासों ध्यामसुंदर ग्मापतिको,
 केशव रतिको नित चित्तमें चहा करे,
 प्रेम बिरहा करे न त्योंजु तिरहा करे न,
 मुखसों न हा करे न दिलको दहा करे ५

(समझापूर्ति-संघेया)

चित मो चमकावति हे चपला, यह हे तुव सोतिनके बस क्यों
 अलि साजि सिंगार सयें इतही, खडि हो इतनी धरि आलस क्यों,
 कवि केशव रोचत नाहि कछु, अति आकुल आव न्यून क्यों,
 हम सोचत हे अब आइ यह, सखि कतु बसतने यत्न क्यों १
 गरजे हैं गुमान मरी गरजें, सरमे हैं मुदामिनिने
 करवेको इयन्तमें केलि कियों, तमको जु बडावति हे
 कवि केशव या अनुमान कियो, अबलोकि हने रसा,
 यह हे अति आशक आव मनो, सति कतु बसतने बसा २
 भरनेकु चली जमुना तटपें जल, बाहि न्यून लोचने,
 जलसंग परी शफरी घटमें, पर लोचने लोचने टापें,
 मनमोहन बसुरि मोहनकी, मुनि केशव लोचने लोचने,
 अति बिहल हे नव गोपमुता, लोचने लोचने चरी नये ३

केशोलाल.

(कटि निर्वन-वर्णित)

सहथी हृष्या कने हे ननेद काम,
 राहतें तनि लज कन लोचनिये,

चोट न बचत ओट कीनेहू कपाट कोट,
 भौन भोहरेहू भारे भय अवरेखिये;
 केशोदास मत्र तत्र जंत्रहून प्रतिपच्छ,
 रच्छ लच्छ लच्छ त्रजरच्छक न लेखिये;
 भेदियत मर्म वर्म ऊपर कसेई रहै,
 पीर घनी घायल न घाव अवरेखिये.

१

सीता जैसी सती पति जाको रामचंद्र जैसो,
 ताकी तिया दशकद रावन क्यों हर है;
 नल राजा दमंतीकी जल मीन जैसी प्रीति,
 ऐसैं कौन जानते बिछोह बीच पर है;
 भाविक जे कर्मरेखा टारी नहि टरे नेक,
 सोनेहीकी लंक कभी आगी लागी जर है;
 मानसके हाथ कछु वात नहि केशोदास,
 लिखि हे विधाता सो विधातानाथ कर है.

२

वाहन कुचाल चोर चाकर चपल चित्त,
 मित्त पतिहीन सूम स्वामी उर आनिये;
 परवस भोजन निवास वास कुपुरन,
 वरखा प्रवास केशोदास दुख दानिये;
 पापिनके अंग संग अंगना अनग वश,
 नीत अपयशजुत चित्त हित हानिये;
 मूढता बुढाइ व्याध दारिद झुडाइ आवि,
 यहही नरक नरलोकन बखानिये.

३

चूक जात जौहरी जवाहिर परख जाने,
 चूक जात पंडित पढ़ैया बेद चारिक,
 चूक जात घोडेहीका चढ़ैया सवार पूरे,
 चूक जात रागी राग गावे सुरधारी के;
 चूक जात चितेरोही चित्र शुभ चित्रवेमें,
 चूक जात लेखो यों लिखैया लेखधारीके;
 कहे केशोदास शूर रनहीमें चूक जात,
 एक नांहि चूके है जुगल मति मारीके.

४

(शरद शोभा-कवित्त)

शोभाको सदन शशि बदन मदनकर,
 बँदै नरदेव कुवलय मलदाई है,
 पावन पद उदार लसत हस कमाल,
 दीपती जलजहार दिशि दिशि घाई है,
 तिलक चिलक चारु लेचन कमल रुचि,
 चतुर चतुर मुख जगजिय भाई है,
 अमल अंबर चीचि नील पीन पयोधर,
 केशोदास शरदाकी शरद सुहाई है

५

केशोराम.

(नेह निमायन-कवित्त)

शीखे रस रीति और प्रीतिके प्रकार शीखे,
 शीखे केशोराम मन मनको मिलायबो,
 शीखे सौहे खान नटिजान मुसक्यान शीखे,
 शीखे सैन बैननमें कहिबो कहायबो,
 शीखे चाह चाहिनेकों बैसैं उपजायनेको,
 जैसे कोह चाहे बाको तैसेही चहायबो,
 जहा जहा शीखे ऐसी वातनकी घातनको,
 तहा क्यों न शीखे एक नेहको निमायबो

१

केसरी.

(वैराग्य बोध १०)

आवत हे काम चाम पशुके अनेक ठाँव,
 हस्तिनके अस्ति वेश दामतें बिकावे है,
 गहरीके बारकों सुधारिकें दूराले रचे,
 कुल्लिगके पंखनकी कलगी बनावे है,
 छीपनके पेटनमें मुक्का अमूल्य होत,
 मोरनके पीछनको कृष्णको चढावे है,

केसरी करत ऐसे जानीके सकल चेतो,
 मरे हुये मानसको कुकर न खावे है. १
 आवत न संग कलु वारन तुरग आदि,
 आवत न संग बडी दोलत जमावे है;
 गाम धाम वाम बंधु मात तात पुत्र प्यारे,
 संगही न आवे सब स्वारथी कहावे है;
 अंग न चलत संग प्रानके चलन समे,
 औरही उठाय जाय आगमें जरावे है;
 केसरी कहत तातें ऊरमें विचार देखो,
 जो जो किये कर्म सोंइ आप संग आवे है. २

केसरीसिंह.

(नीति-न्याय द्रष्टांत.)

कीर औ कपोत जैसें, आइके विहग केते,
 मुखकों न पावे तो वे कहा तरुवर है;
 मृगराज मृग आदि पशुनके वृद्ध केते,
 वासि कष्ट पावे तो वे कहा गहवर है,
 मच्छ कच्छ हंस वग दादुरसे आदि केत,
 पावे नाहि सुख तो वे कहा सरवर है;
 केसरी कहत तैसें लोक निज देश बसी,
 न्यायकों न पावे तो वे कहा नरवर है. १

(कामरूप वसंत.)

चंपक चमेली अरु केतकी कनैर जुई,
 ताके बान साजिके उमंग सरसायो है;
 दाउदीके तुरा अरु मुकुट हजारा किये,
 हे गल हेमल इष्क पेचा मन भायो है;
 केसरी कहत सबे फूलके सिगार साज,
 मकरको ध्वज सौ तो केवरा बनायो है;

शैलके फरन काज साजिके समाज एसे,
मानो ऋतुराज रतिराज बनि आयौ ह १
(कविराजरूप बसंत)

मनहर मोगरा रु सोसनी सवैया कहे,
कवित्त गुलाब दोहा चपक सुहायो है,
मधुमार मालती रु मोतीदाम मोतिया हे,
सोरठा सुवास जाई सुघर बनायो है,
बेली सो समार अरु गेंदको भुजंगी कहे,
गुलबुरा गीत चित उमग बढायो है,
अरु सुवास अरु बंद फूलबध रनि,
मानौ ऋतुराज कविराज बनि आयो है १
(मदाभिमानि शूरनिदा)

पेटें पेटें फिरते मरेठ पेटें स्थाय स्थाय,
घाय घाय हाय हाय जाय पेटें वाढामें,
सेनापति सैनकों न सैनतें सम्हार शक्यो,
धक्यो सोई रघो मव मैनहीके गाढामें,
झूठे सरदार यार दारके बडाइखोर,
ताँकी जश होत कैसें प्रगट पवाढामें,
वाडा ढिग होतो रजपूत बर छाहाको तौ,
खाडा खडकाय खेल करत अस्वाढामें १

कृष्ण.

(भाषाकाव्य प्रशंसा)

वृज भाषा भाखत सकल, सुखखानी सम तूल,
ताहि बखानत सकल कवि, जानि महा रस मूल १
वृज भाषा बरनी कविन, बहु विधि बुद्धि बिलास,
सबको भूखन सतसया, फरी बिहारीदास २
जे कोऊ रस रीतिको, समजौ चाहे सार,
पदे बिहारी सतसया, कविताको शृंगार ३

भाति भांतिके अर्थ बहु, यामें गूढ अगूढ,
वाहि सुने रस रीतिको, मग समुजे अति मूढ. ४

.....

सबल छमी निःगर्व धनी, कोमल विधावंत;
भू भूखन यह तीन है, उपजत खपत अनंत. १

(परस्परकी शोभा, भक्ति.)

भूपति प्रधान विना, गुनिजन ज्युं ज्ञान विना,
वासर ज्युं भान विना जंखो दरसावे है;
दुल्हा ज्युं जान विना गाना ज्युं तान विना,
सुंदरता सान विना चातुर न चाहे है,
दोलत ज्युं दान विना दफतर दिवान विना,
त्रिया प्रिय मान विना कान्ति घट जावे है;
पडित पुरान विना काजी कुरान विना,
कृष्ण कवि कहे एते शोभा नहि पावे है. १

ऐहो शठ धरी निज माया मांस जात टरी,
पीछे पछतै हे अव समझ ले नरकी,
सोयो क्यों अचेत चेत ल्हाव हरिहीसों हेत,
जीवनकी आश नाहीं पल बिन भरकी;
कंचन समान देह सोई मिलि जैहे खेह,
करिले सनेह एक आश रघुवरकी;
कृष्णही कहत रहे देहको सो नेम कर,
चार घरी घरकी तो एक घरी हरकी. २

(सवैया.)

औसर आपनो हेरे रहे सब, घात लो चहे दाव चलायो,
यातें हे भागकों पूरो भरोस, वृथा करि लालच नाहक धायो;
कृष्ण भई यह सांचि कहावत, कीनो मुजावरो नेम न भायो,
मागन पूत गई तो मदारसों, भो यों कुतार भ्रतार गँमायो. १

(औरगझेब प्रशंसा)

कंपत अमर खलभल मचे ध्रुवलोके,
उडगनपति अति नेक न सकात है,

देशके दिनेशके गनेश सब कांपत है,
 शेषके सहस फन फैलि फैलि जात है,
 आसन ढिगात पाकशासन सु कृष्ण कवि,
 हाल उठे दुग्ग बड़े गदफत्तों खात है,
 चढतें तुरंग नवरंग शाह नादशाह,
 जिमी आसमान थर थर थहरात है

१

(परस्पर मन मिलाप-सचैया)

बैदको बैद गुणीको गुणी, ठाको ठा ठूमक ठूमक मोवे,
 कागको काग मराल मरालको, काघ गधाको गधा खजुलावे,
 कृष्ण भनै बुधको बुध त्यों अरु रागिको रागि मिले सुर गावै,
 शानिसो ज्ञानि करै चरचा, लबराके दिगा लबरा सुर पावै

१

कृष्णदास.

(ब्रह्मदर्शन-ज्ञानप्रकाश)

परब्रह्म गुरु देवजू, चिदानंद अविनाश,

ताके पद धंदन करी, धरनों ज्ञानप्रकाश

१

वीन वचन हुइ शिष्यने, नमस्कार किय आय,

बन्धो मन संसारमें, छूटे कोन उपाय

२

दुतियो प्रश्न कहत हों, नीके कहिये मोय,

पंच कोश वपु तीनकी, उत्पति कैसे होय

३

सुन शिष्य उत्तर कहत हों, निश्चय कर उरमांहि,

छूटे एक विचारतें, दूजो साधन नाहि

४

एकहिसें त्रिविधा भयो, दृष्टा सत्ता पाय,

पंच कोश करि रचि रखो, कहों तोहि समुजाय

५

ईश्वर तुम त्रिविधा कह्यो, चेतन सत्ता पाय,

अब इनकुं भिन भिन करी, कहो मोहि समुजाय

६

आनंद कोश अनादि है, तार्क्य कारन जान,

मन बुद्धि इंद्रिय प्राण लें, सूक्ष्म लिंग प्रमान

७

सत्तर तत्त्वको लिंग यह, तीन कोशमय जान,

पंच प्राण इंद्रिय दशो, मन बुधिसों पहिचान

८

पंच ज्ञान इंद्रिय बुधि, सोइ कोश विज्ञान;	
पंच कर्म इंद्रिय रु मन, सोइ मनोमय जान.	९
पंच प्रानको प्रानमय, कोश कहावे सोय;	
प्रान अपान उदानकूं, व्यान समानहि जोय.	१०
कारन सूक्ष्म देह हुइ, नीके कहे जनाय;	
अब जो स्थूल शरीरहू, दीजें मोहि बताय.	११
अन्न रचित हे अन्नमय, सो तन प्रगटहि देख;	
पंच कोश तोसूं कहे, लच्छन रूप विशेष.	१२
कारन लिंग रु स्थूल तन, नीके कहे बनाय,	
जीव शब्द कासों कह्यो, दीजें मोहि जनाय.	१३
मिल्यो अविद्याके विषे, आपो मान्यो आय;	
भूल्यो अपने रूपकुं, जीव मान तूं ताय.	१४
पुनि गुरुसों शिष्य प्रश्न करि, वाको कहो निरूप;	
कहो जीव कैसें भयो, कैसें आहि स्वरूप.	१५
चेतनको प्रतिबिंब है, पड्यो अविद्यामांहि;	
तद्आत्मक होई रह्यो, आपो जानत नांहि.	१६
कर्त्ता भोक्ता देह हूं, यही जीवको रूप;	
जब कर्त्ता आपे नहीं, केवल शुद्ध स्वरूप.	१७
चिदानंद अनुसूत है, कहो जीव क्यूं दोय;	
चेतनको क्यूं भास हुइ, निर्विकल्प है सोय.	१८
निर अवयव आकाश है, घट करि भासत रूप;	
आत्म जोग अज्ञानतै, दीसे जीव स्वरूप.	१९
कृष्णदास कहे मनन करि, जो धारै उरमांहि;	
ज्ञानप्रकाश प्रकाशतें, रहै तिमिर कछु नांहि.	२०

(शक्तिमहिमा-कवित्त.)

प्रथम गनेश ताकों, धावत सुरेश आदि,
 विघन हनेश जाके मूषक सोहात है;
 मौर है षडाननके, बैल है महेशजूके,
 पंखी हरि बिधि केसो सृष्टि गुन गात है;

मूपक मयूर बेल पंखिन बढाइ कहा,
इनकी तौ जात कौन बातमा निकात है,
अरे भट कृष्णदास राख मातहकी आश,
सिंहपें नदी है सो तो कछु करमात है

१

कृष्णलाल

(क्षत्रिय पञ्चषल)

विक्रमते भोजते अकसरते धीर नर,
दाता स्नानस्नाना बहु भांतिन मनाये हैं,
यत्रसे दरत परतंत्रसे कवत मुख—
मत्रसे कहत जनु कामरू पढि आये हैं,
कृष्णलाल चाहें सोइ करें समरथ रथ,
हाथी बिना अकुशके बिधिने बनाये हैं,
क्षत्रिनके पविनके रविनके कविनके,
ओरहिते पेंडे वेंडे पेंडे चलि आये हैं

१

(आरु वर्णन)

आगे आगे दोरत बकील गघ वाह एसे,
पाछे पाछे भौरनकी भीर भड भीम है,
बाजे राजे किंकिणी मजीठ कल गाजे जवे,
घुघट प्वजामें मैन सीम छुज सीम है,
कृष्णलाल सौरमपै चदनपै जाकी जीत,
पेसो कोन मूललमें गहर गनीम है,
मदन महीपबाज सदन शिरिरताज,
मदन महादुरकी कापर मुह्नीम है
उमटी किशोरी नूपमानकी हरष होरी,
सोहे संग गोरी घोरी केसर मई मई,
पिचकी जराव जरी भरी लाल रगनते,
मोहनके मुख वई छबिसों छई छई,

१

कृष्णलाल ग्वालपै गुलालकी चलाइ मूठि,
 ताते नभ लाली भई चंचल नई नई;
 बादलके चूर परिपूर हैल सत मानो,
 रवि चंद्र जीत करि डायो है रई रई. २
 खासे खस खाने खास खाने तहखाने तल,
 छूटत सरोजकी सुगंध खटी रहै;
 अत्तर अरगजैसों केसरी गुलाव नीर,
 छिरके किवार द्वार झार झपटी रहै;
 कृष्णलाल जेठमें गमन कैसे कीजे प्यारे,
 चंदन मलयके पक अंक दपटी रहै;
 ज्वाल उदरबटी कुच बटी काम गटी तटी,
 हटी मरहटी नटी लटी लपटी रहै ३
 चातक चिहुक मत मुरवा कुहुंक मत,
 झिगुर किहुक मत भेकी मननाय मत;
 चकवा चिकार मत पपीहा पुकार मत,
 बुंदे झर धार मत धार धहराय मत,
 कृष्णलाल गाय मत पीरे उपजाय मत,
 बालम बिदेश पाय, मैन तन ताय मत;
 पौन फहराय मत चपला चवाय मत,
 धाय मत धुरवा ओ घन घहराय मत. ४

खूबचंद.

(कविकी कदर-कवित्त.)

मान दश लाख दियो दोहा हरिनाथकैपै
 हरिनाथ कोटि दै कलंक कवि कैहैको;
 बीरबर दश कोटि केशव कवितनमें,
 शिवराज हाथी दियो भूषणते पैहैको;

छप्पयमें छतीस लाख गौ खानखाना दियो,
याते दीन दूनौ दान ईवरमें पहुँको,
राजाश्री गम्भीरसिंह छन्द खूबचन्दकेमें,
विदामें दगा दर्शन दीन कोउ बेहँको

१

स्वेमकरण.

(अस्तोदय-छप्पय)

कबहुक घरपर महल, महल नहि कबहुक घरपर,
कबहुक सरवर नीर, नीर नहि कबहुक सरवर,
कबहुक तरवर पत्र, पत्र नहि कबहुक तरवर,
कबहुक नरघर लच्छि, लच्छि नहि कबहुक नरघर
कहि स्वेमकरन चेतो सुघढ, नरपति निज यह निराखि कर,
अचल कहे सो नहि अचल है, अचल एक हरिनाम थिर.

१

गजानन्द.

(संगद्योप-कवित्त)

बैसिय तो अब पीठ पाईये तो फल मीठ,
घूरके पहार बेठ आपही घटाइये,
लेलिये तो रग ख्याल ख्यालें हुये खुशाल,
बाख्तें विनोद करी मोद ना घटाइये,
कांकरी उढाय जैसें डारिये पुरीपमाही,
उठत कुवास पुनि आपही घटाइये,
गजानन्द कहे तैसें छोटिके शयान संग,
मोले अकुलीनसें कुलीनता घटाइये

१

गजेन्द्रशाही.

(दुर्गास्तुति इत्यादि.)

सुखद हुलासिनी प्रकाशिनि अखिल लोक,
 दास दुख दूरि करि विरदहि धारि है;
 प्रबल प्रचंड भुज दंड बश शस्त्रधारि,
 मारि दुराचारी दुष्ट क्षणमें संहारि है;
 श्रीगजेन्द्रशाही अम्बे निजजन हेतु जानी,
 कैए बार दैत्यदल दंगल बिडारि है;
 सर्वरूप धारि हरिहरहू सहायकारी,
 मातु दुर्गा मेरी सदा शरण तिहारी है. १
 एरे मेरे मन धारू सिख मेरे हिय बीच,
 त्यागी माया फन्दे भजु दशरथ नन्देरे;
 श्रीगजेन्द्रशाही जेते नभमें न तारे ते ते,
 तारे अधवारेते भये हैं निरद्वन्देरे;
 श्रीमन महाराज कौशलेश राघवेन्द्र,
 ऐसो जपि नाम जन काटे यमफन्देरे;
 छांडि छलछन्दे सब आनंदके कन्दे,
 मन एक बार सीता रामचन्दे क्यों न बन्देरे. २
 सुन्दर सुहावन सरूप मन भावन,
 दनुजको सतावन हरन दुःख द्वंदके;
 जग आदि कारन संहारन असुर मद,
 तारन सुजन कोटि दायक अनन्दके;
 श्रीगजेन्द्रशाहि सुखदायक सुरनि सदा,
 लायक सब निके सहायक सुरेन्दके;
 छांडि छलछन्द सब आनंदको कन्द,
 भजु दारिदहरन है शरन रामचन्दके. ३
 पाल्यो देश देशको भुआवल नरेश भले,
 यशको प्रसार्यो जग नभ पूर्ण चन्दसे;

अन्त रटि राम दशरथ सम गंगा तट,
चढिफे विमान सुरधाम गौ अनन्दसे,
भरतसे बलशाहि शोभनाथ शत्रुहन,
लखन अहलसिंह उदित अमन्दसे,
बलिया बखानी औधि राजे राजधानी भये,
ईश्वरनकश देवराजा रामचन्दसे

४

(सवैया)

राधिका संग सखीन को छै, बहु फाग रची प्रजमें करि घूमहि,
दै चिटकी करताछहि नाचहि, गावती प्रीव कपोतसे दूमहि,
शाहि गजेन्द्र तहाँ मँदलालको, गाल नचावति ताल्दै घूमहि,
गाल गुलाल छाय मले मुख, गोपबधु प्रजलालके घूमहि

१

गद्य.

(विविध अनुभव उपदेश-छप्पय)

जरो रूप गुन पखे, जरो बिन तेज तुरंगम,
जरो मित्रसों कपट, जरो दुरिजनसों सगम,
जरो अर्थ बिन बात, जरो भावत बिन हांसो,
दुख बिन दारू जरो, जरो एकलहो घासो
पात फूल फल बिन जरो, (सो) सोमलरूप अकज फल,
कवि गद्य कहेरे गुनिजनो, जस बिन सपत जाओ जल
जरो अदल बिन शाह, जरो इह जुद्ध शूर बिन,
जरो वूज बिन हुनर, जरो मेहबूब नूर बिन,
जरो फय बिन बाग, जरो कूयन जो जल बिन,
जरो तीन*बिन पान, जरो रुपवन्ती नर बिन
छाजा बिन जीवन जरो, समज छाल इह शम्द फल,
मन मोर जरो बिन भजनके, भजे नही भगवन्त पल
तरुनिकाज रघुबीर, बिकट बन बन बन रोए,
तरुनिकाज लफेर, सीस दश अपने खोए,

१

२

* कम्पा, पूना और छुपारी

तरुनिकाज कैकच, निकंदन कुलको कीनो,
तरुनिकाज सुरपती, शाप सिर अपने लीनो.

चतुरानन भये ए तरुनिसें, मदनकांडे शंकर दंही,
कवि गद कहेरे तरुनिसें, कोनहिकी पत ना गई. ३

चंद न कियो निकलंक, कायातें अमर न कीनी,
लक्ष्मी लई दातार, कृपन करमें दई दीनी;
सोन न कियो सुगंध, करी कस्तूरी कारी,
निष्फल नागरवेल, बोत फल लग्गा ताडी.

चकवा रेन बिछबो कियो, सागर जल खारो कियो,
कवि गद कहेरे ठाकुरा, तुं ठैर ठैर भूली गियो. ४

बुरो प्रीतको पंथ, बुरो जगलको बासो,
बुरो नारको नेह, बुरो मूरखसें हासो;
बुरी सूमकी सेव, बुरो भगिनी घर भाई,
बूरी नार कलच्छ, सास घर बुरो जमाइ.

बुरो पेट पंपाल अरु, बुरो सुरनमें भागनो,
कवि गद कहेरे ठकरो, सबसें बूरो मांगनो. ५

कहा सूमको दाम, कहा फागुनको वूठो,
कहा मूर्खको मान, कहा निर्धनको तूठो;
कहा नीचको संग, कहा कोहूको खौनो,
कहा कीडिकी लात, कहा गाडर दूझौनो;

अवगुनी गुन कहा जानही, उस कूटन कहा सेविये;
कवि गद कहेरे ठकरो, फूट नाव कहा खेलिये. ६

(स्त्रीरूपक-हंसभार.)

हंस गयंदपर चढ्यो, गेंद पर सिंह बिराजे,
सिंह सागर सिर धर्यो, ताथें दो गिरिवर गाजे;
गिरिवर पर एक कमल, कमल बिच कोयल बोले,
कोयलपर एक कीर, कीरपैं मृगहु डोले,

मृगे शशिहर सिर धर्यो, शेषनाग तापर रहे,
कवि गद कहेरे ठकरो, हंस भार कितनो सहे. १

गदाधर.

(नामस्मरण कवित्त)

राम कहो रमैया कहो कृष्ण कहो कन्हैया कहो,
 मुरली मनोहरकी आश चरण गहु रे,
 चिंतामणि चूडामणि केशव मनवारी कहो,
 वृंदावन कुंजनमें सदा सग रहु रे,
 अमृत घचन घोखो सतनके संग डोखो,
 काम मोघ लोभ मोह इनको मति गहु रे,
 भक्त गदाधर कहे पुकार तीन बार बार,
 गुधाकृष्ण राधाकृष्ण राधाकृष्ण कहु रे

१

गिरिधर (पहिला.)

(कृष्णिया)

(प्रेम-प्रेमिक महसूस)

लेले ओ मजनू कहाँ, कहा प्रीतकी रीत,
 प्रान माधवानलहुतें, कामकुंडला दीन
 कामकुंडला दीन, माधवानल तन त्यागें,
 मली निमाही प्रीत, रीतकूं दोष न लागे
 कहे गिरिधर कविराय, प्रीत कहि यही हे गेले,
 चली जायगी घात, कहाँ मजनू ओ लेले
 मद हरिया प्रजरायके, कापें मागन जाहि,
 पतिव्रता पियने तजी, पीय परहरे नाहि
 पीय परहरे नाहि, छांड प्रीतमकी बाही,
 प्रीतमकी रुचि ओर, तो तठ नेह निचाही
 कहै गिरिधर कविराय, रूप गुन आगर दरिमा,
 सात साख है साख, सदा मतके मद हरिया
 मित्र विशोहा अति कठिन, मत दीजे फरतार,
 बाके गुन जब चित चढ़ै, बर्षत नयन अपार
 बर्षत नयन अपार, मेघ सावन छुरि लाई,
 अब विछुरे कव मिलौ, कहा कैसी घनि आई

१

२

कहै गिरिधर कविराय, सुनो हो विनति एह,
 हे किरतार दयाल, देहुजनि मित्र विछोहा. ३
 नयनां लगन अपार है, पटा अपट है जाय;
 गुन गौरव अरु शीलता, धीरज धर्म नसाय.
 धीरज धर्म नसाय, फेर वाही संग छूटे,
 छिनक बुद्धि हो जाय, फेर वाही संग जूटे.
 कहै गिरिधर कविराय, सुनो हो मोर सयना,
 कठिन प्रीतिकी रीति, जहां लागे दुइ नयना. ४
 नयनाकी नोकैं बुरी, निकस जात जस तीर;
 हेरे घाव न पाईये, वेधे सकल शरीर.
 वेधे सकल शरीर, बैद का करे बैदाई,
 करिहौ कोटि उपाय, घाव नहि देत दिखाई.
 कहै गिरिधर कविराय, विराहिनी हेत है चोकै,
 समुझि वृझिके चलो, बुरी नयननकी नोकै. ५
 प्रीति किजिये बडेनसों, समया लावै पार;
 कायर कूर कपूत है, बोरि देत मझुधार.
 बोरि देत मझुधार, प्रीतकी कवन बडाई,
 पछिताने फिरि देहिं, जगत्में अपयश पाई.
 कहै गिरिधर कविराय, प्रीति सांची सिखि लीजै,
 व्यवहारी जो होय, तऊ तन मन धन कीजै. ६

(नारीदोष दर्शन.)

नारी परघर जाइ जो, अरे भलो नहि मान;
 जो घर रहै निदानसों, चाल ढाल पहिचान.
 चाल ढाल पहिचान, बहुरि उत्पात न होई,
 जो कुछ लागै दोष, अरे सुन आवै रोई.
 कहै गिरिधर कविराय, समय पर देत है गारी,
 मरौ पुरुष जिय जान, जबै परघर गइ नारी. १
 नयना रोटी कुचकुची, परती माखी बार,
 फूहर वही सराहियै, परसत टपकै लार.

परसत टपकै लार, झपटि छरिकासौं चाबे,
झूठा पौछे हाय, दोउ कर सिर खजुवाबै
कह गिरिधर कविराय, फुहरके याही धयना,
कजरौटा नहि होइ, छुमाठै आंजै नयना

(जातिस्वभाव)

करै कियारी कपूरकी, भृगमद बरहा बंध,
सीचे नीर गुलाबसैं, लहसुन तजे न गध
लहसुन तजे न गध, रुद्र जे अगर सजुता,
कबहु होहि गजराज, कबहु शूकरके पूता
कहै गिरिधर कविराय, बेद भाषै यह सारी,
बीज बोयो सो होय, कहा करै उत्तम क्यारी

(समय परिचल)

साई अवसरके पडे, कौन सहै दुख द्वंद,
जाय बिकाने डोमघर, वै राजा हरिचंद.
वै राजा हरिचंद, करै मर्घट रस्वारी,
फिरे तपस्वी वेप, फिरे अजुन बलधारी.
कहै गिरिधर कविराय, बनाइ भीम रसोई,
कौन करै घटि काम, परै अवसरके साई
सिंहिनि शिखरत सिंह कह, बेढा परै संमार,
जे हाये कुंजर हन्यो, तेहि मेढक जनि मार
तेहि मेढक जनि मार, कुल्हि जनि दोष छावै,
बरु फाका करि मरे, जगतमें शोभा पावै.

कहै गिरिधर कविराय, हस जंबुक औदिगिनि,
समय परेकी बात, सिंहको शिखरे सिंहिनि

हरना बिरभेठ सिंहसैं औधुर खुरी चलाय;
भार खरु भीना पर्या, सिंहा चले पराय.
सिंहा चले पराय, समय सामर्थ बिचारी;
कुल्हि फालिमा लाय, हसे हसिके पग धारी.
कहै गिरिधर कविराय, सुनो हो मेरे अरना,
आजु गइ करि जाय, फाउ हों होंकि हरना.

(धोखेसे धास्ती.)

धोखे दाडिमके सुआ, गयो नारियर खान;
खम खाई पाई सजा, फिर लागो पछितान.
फिर लागो पछितान, बुद्धि अपनीको रोयो,
निर्गुणियनके पास, बैठ गुन अपनो खोयो.
कहै गिरिधर कविराय, सुनो हो मेरे नोखे,
गयो फटकही टूटि, चोंच दाडिमके धोखे.

१

(कलि विडंबन.)

हंसा उपवासी रहे, कौवा चूगे कपूर;
राज गयो सतजुगको, कलजुग आयो पूर.
कलजुग आयो पूर, ऊंचकूं नीच नमावे;
मूरख पामे मान, पडितकुं दूर पठावे.
कहै गिरिधर कविराय, मेरे मनमेंही शंसा,
कौवा चूगे कपूर, रहै उपवासी हंसा

१

हीरा अपनी खानिको, बार बार पछिताय;
गुण किंमत जाने नही, तहां बिकानो आय.
तहा बिकानो आय, छेद करि कटिमें बाध्यो,
बिन हरदी बिन लोन, शाक ज्यों फूहर राध्यो.
कहै गिरिधर कविराय, कहां लगि धरिये धीरा,
गुण किंमत घटि गई, यहै कहि रोयो हीरा.
सांई तहा न जाइये, जहां न आप सोहाय;
बरन विवेक जाने नहीं, गदहा दाखे खाय.
गदहा दाखे खाय, गऊ पर दृष्टि लावै;
सभा बैठि मुसक्याय, यही सब नृपको भावै.
कहै गिरिधर कविराय, सुनोरे मेरे भाई,
तहां न करिये वास, प्रातही चलियै साई.

२

३

(बड़ोंकी बड़ाई)

साई एकै गिरि धर्या, गिरिधर गिरिधर होय;
हनूमान बहु गिरि धरे, गिरिधर कहै न कोय.

गिरिधर कहै न कोय, हनू द्रोणागिरि लयो,
 ताको तनको तूट, पर्यो सो कृष्ण उठया
 कहै गिरिधर कविराय, बढेनकी बढी बहाई, १
 येरेमें यश होय, यशो पुरुषनको सार्ई
 गुनके गाहक सहस नर, बिनु गुन लहे न कोय,
 जैसे कागा कोकिला, शब्द सुनै सब कोय
 शब्द सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन,
 दोऊको इक रग, काग सब भये अपावन
 कहै गिरिधर कविराय, सुनो हो ठाकुर मनके,
 बिन गुन लहै न कोइ, महस नर गाहक गुनके २
 रहिये छटपट काटि दिन, बरु घामें मा सोय,
 छाह न बाकी बैठियै, जो तरु पतरो होय
 जो तरु पतरो होय, एक दिन घोस्ता ठेहै,
 जा दिन बहै बयारि, टूटि तब जरसैं जैहै
 कहै गिरिधर कविराय, छाह मोटेकी गहिये,
 पाती जो झरी जाय, तक छहैमा रहियै ३
 पीवे नीर न सरवरौ, वृंद स्वातिफि आश,
 केहरि वृण नहि चरि शके, जो व्रत करै पचास
 जो व्रत करै पचास, विपुल गजयूथ विवारै,
 सुपुरुष तजै न धीर, जीव बरु कोऊ मरि
 कहै गिरिधर कविराय, जीव जोषक मरि जीवै,
 चातिक धरु मरि जाय, नीर सरवर नहि पीवै

(द्वैधाधीनता)

जिमबो मरिबो भोगनो, यह नहि अपने हाथ,
 जानत हैं यह नदसुत, विहसत बध्दरुन साथ
 विहसत बध्दरुन साथ, चारि जुगके रखवारे,
 इंद्रमान जिन, हर्यो, विपतिके काटनहारे , , ,
 कहै गिरिधर कविराय, आब शाहनसें करिबो,
 आहत सीताराम, उमिरि अपनी भरी जीवो ७

(दशम वचन.)

पुत्र प्राणतें अधिक है, नागिठ युग परिमान;
 सो दशरथ नृप परिहरे, वचन न दीहों जान.
 वचन न दीनों जान, बडनर्ही नहि बडाई;
 बात रहे सो काज, और वन सम्बस जाई.
 कहै गिरिधर कविराय, भये नृप दशरथ ऐसे;
 पुत्र प्राण परिहरे, वचन परिहरे न ऐसे.

(केकयी कलंक.)

रही न रानी केकयी, अमर भई या वान;
 कवन पुत्रवदे पापतें, वन पठयो जगतान.
 वन पठयो जगतान, कन्न मुरगैक सिधायी;
 जेहि नून काजे गर्यो, राव नहि बडन नितायी.
 कहै गिरिधर कविराय, भई यह अकथ कदानी;
 यश अपयश रहि गयो, रही नहि केकयि रानी.
 वेन खट्के मरदकुं, काट कट्टेजा कोर;
 मूरखकुं संशा नही, जेसा खंडा ढोर.
 जेसा खंडा ढोर, विचारा जह तह भटके,
 स्वअभिमानि सोय, मेरे निज शीर पडके.
 कहै गिरिधर कविराय, देहिमें दु ख चट्टके,
 मुवा न दोरे रीस, मरदकुं वेन खट्टके.

(वापसें झगरत घेटा.)

साईं घेटा वापके, विगरे भयो अकाज,
 हरणाकश्यप कंसको, गयो दुहुनको राज.
 गयो दुहुनको राज, वाप घेटामें विगरे,
 दुश्मन दावागीर, भये महिमडल सिगरे.
 कहै गिरिधर कविराय, युगन याही चलि आई,
 पिता पुत्रके बैर, लाभ ऐकौ नाह साई.
 घेटा विगरो वापसों, करी त्रियनको नेहु;
 लटापटी होने लगी, मोहि जुदा करि देहु.

मोहि जुदा करि देहु, धरी मा माया मेरी,
 छेहौ घर अरु बार, यरौ भैं फजियत तेरी,
 कहै गिरिधर कविराय, सुनो गदहाके छेटा,
 समय पयो है आय, नापसैं मगरत बेटा २

साई एसे पुत्रसैं, बास रहै बरु नारि,
 बिगरी धेरे बापसैं, आय रहै ससुरारि
 जाय रहै ससुरारि, नारिक नाम बिकानो,
 कुल्लके धर्म नसाय, और परिवार नसानो
 कहै गिरिधर कविराय, मातु मूसै वहि ठाई,
 अस कपूत क्यों भयां, बास रहतिऊ बरु साई- ३

(बंधु प्रेम)

साई अपने भ्रातको, कबहु न दीजै भ्रास,
 पलक दूर नहि कीजिये, सदा राखिये पास.
 सदा राखिये पास, भ्रास कबहु नहि दीजै,
 भ्रास दियो लंकेरा, ताहिही गति सुनि लीजै
 कहै गिरिधर कविराय, रामसों मिलियो जाई,
 पाय विभिषण राज, लक्ष्मण बाभ्यो साई १

(चाणाक्य राजनीति)

जाकी धन घरती लई, ताहि न लीजे संग,
 जो संग राखैही धनै, तो करि राख अर्पण
 तो करि राख अर्पण, फेरफर कैसो न कीजे,
 कपट रूप बतराय, ताहिही मन हर लीजे
 कहै गिरिधर कविराय, खुटक जैहै नहि बाकी,
 कोटि दिलासा देउ, लई धन घरती जाकी १
 बिना बिचारे जो करे, सो पाछे पश्चिन्ताय,
 काम बिगारे आपनो, जगमें होत हसाय
 जगमें होत हसाय, चित्तमें चैन न पावै,
 खान पान सन्मान, राग रंग मनहि न भावै
 कहै गिरिधर कविराय, दुख कछु टरत न टारे,
 खटकत है जिय माहि, कियो जो बिना बिचारे

- साई समय न चूकिये, यथाशक्ति सन्मान;
 का जानै को आइ है, तेरी पौरि प्रमान.
 तेरी पौरि प्रमान, समय असमय तकि आवै,
 ताको तूं मन खोलि, अंक भरि कंठ लगावै.
 कहै गिरिधर कविराय, सबै यामें सुधि आई,
 शीतल जल फल फल, समय जनि चूको साई. ३
- राजाके दरबारमें, जैये समया पाय;
 स.ई तहां न बैठिये, जहा कोउ देय उठाय
 जहा कोउ देय उठाय, बोल अनबोले रहिये,
 हासिये नाहि हसाय, बात पूछे ते कहिये.
 कहै गिरिधर कविराय, समय सां कीजै काजा,
 अति आतुर नहि होय, बहुरि अनखै हे राजा. ४
- बीती ताहि विसारि दे, आगेकी सुधि लेइ;
 जो बनि आवै सहजमें, ताहींमें चित देइ.
 ताहींमें चित देई, बात जोई बनि आवै,
 दुर्जन हसै न कोय, चित्तमें खेद न पावै.
 कहै गिरिधर कविराय, यहै करु मन परतीती; ५
- आगेको सुख होय, समुझ बीतीसो बीती.
 गढपतियनको धर्म है, करै दोउनको ध्यान;
 जिमी दोज रैनी करै, मनका राखो जान.
 मनका राखो जान, किलेपर तोप चढावो,
 कोस कोसको गिरद, कटि मैदान करावो.
 कहै गिरिधर कविराय, राज राजनके सथियन;
 जंग भंग नहि होय, होय जौ अस गढपातियन. ६

(ठग वणिक.)

- बनियां अपने वापको, ठगत न लवे वार;
 निशि वासर जननी ठगै, जहां लेत अवतार.
 जहां लेत अवतार, मास दश उदरै राखै,
 गुरुसँ करे विवाद, आप पंडित है भाखै.
 कहै गिरिधर कविराय, बेंचे हरदी औ धनियां,
 मित्र जानि ठगि लेहि, जहां बग भक्ता बनियां. १

आटा में आटा घटै, घटै धाल में धार;
 कबहुक घटि है धीवमहें, तो है है पुनि रार
 तो है हे पुनि रार, मारि जूतिन जी लेहीं,
 जाने सकल जहान, दाम एकौ ना बेहौ
 कहै गिरिधर कविराय, बैठि हैं जुम्हरे घाटा,
 पनुहिन मूढ ठठाह, कबहुक जो घटि है आटा २
 झूठे मीठे बचन कहि, ऋण उधार ले जाय,
 लेत परम सुख उपजै, ले कै दियो न जाय
 ले कै दियो न जाय, ऊंच अरु नीच बतावै,
 ऋण उधारकै रीति, मागते मारन धवि
 कहै गिरिधर कविराय, जानि रहे मनमें रूझ,
 बहुत दिना है जाय, कहै तेरो कामज झूझ ३
 बनिया बेस्या एकसैं, तामें फेर न जान;
 रसहैं रस बतरात हैं, तन मन धनसों आन
 तन मन धनसों आन, बात हितहीकी माखे,
 निर्धनियन पहेचान, धरी एको नहि रखे
 कहै गिरिधर कविराय, सुनो रे सबेर दुनिया,
 मतलबहीके यार, होत बेस्या ओर धनियां ४

(स्वार्थ और कृतघ्नता)

साह सब संसारमें, मतलबका व्यवहार,
 जबलगी पैसा गाठमें, तबलगा ताको यार
 तबलगा ताको यार, संगही सगमें डोले,
 पैसा रहा न पास, यार मुखसैं नहि बोले
 कहै गिरिधर कविराय, जगत यहि लेखा माई,
 विनु मतलब व्यवहार, यार बिरला को साई १
 कृतघन कबहुं न मानही, कोटि करे जो कोय,
 सर्वस आगे राखिये, तरु न अपनो होय
 तरु न अपनो होय, मलेकी भली न माने,
 काम काढि चुप रहै, फेरि तिहि नहि पहिचाने
 कहै गिरिधर कविराय, रहत नितही निर्भय मन,
 मित्र शत्रु ना पंक, दामके लालच कृतघन २

साईं सन औ दुष्ट जन, इनको यहै सुभाव;
 खाल खिचावै आपनी, परबन्धनके दाव.
 परबन्धनके दाव, खाल अपनी खींचवावे,
 मूंड काटि कूटिये, तऊ वह वाज न आवै.
 कहै गिरिधर कविराय, जरै अपनी कटवाई,
 जलमें परि सर गये, खुटाई तजी न साईं.
 चुगुल न चूके कवहु को, अरु चूकै सब कोइ;
 गोलनूदाज कमानिया, चूक उनहुसैं होइ.
 चूक उनहुसैं होइ, जे बांधे बरछी गुला,
 चूक उनहुसैं होइ, पढ़ै जे पडित मुला.
 कहै गिरिधर कविराय, कलाहते नट चूकै,
 चुगुल चौकसीदार, ससुर कवहुं नहि चूकै.

३

४

(लकड़ी और कमरी.)

लाठीमें गुण बहुत हैं, सदा राखिये संग;
 गहिरी नदि नारा जहां, तहा बचावै अंग.
 तहां बचावै अंग, झपटि कुत्ता कह मारै,
 दुश्मन दावागीर, होय तिनहूको झारै.
 कहै गिरिधर कविराय, सुनो हो धुरके बाठी,
 सब हथियारन छाड, हाथमह लीजै लाठी.
 कमरी थोरे दामकी, आवै बहुतै काम;
 खासा मलमल वाफता, उन कर राखै मान.
 उन कर राखै मान, बूंद जह आडे आवै,
 बकुचा बांधे मोट, रातको झारि विछावै.
 कहै गिरिधर कविराय, मिलति है थोरे दमरी,
 सब दिन राखै साथ, बडी मर्यादा कमरी.

१

२

(दभी सिपाही.)

पगडी सूही बांधिके, भयो सिपाही लोग;
 घास बेंचिके खात है, भयो गांवमें रोग.
 भयो गांवमें रोग, पूछ निवरी देखावहु,
 मनमें बडे हौ छैल, राग पनघटपर गावहु.
 कहै गिरिधर कविराय, मरि न तुममें है चूही,
 भये सिपाही आनि, बांधिके पगडी सूही.

१

गिरिधर दुसरा.

(निबन्ध-शिव अभेदादि विचार)

गिरिधर सो जो गिरि धरे, यतन मुन्य निन खेद,
 कारन सूक्ष्म स्थूल तन, गिरिधर प्रत्येक वेद
 गिरिधर प्रत्येक वेद, जौव है नितही पापत,
 बिना सोत धुन मुने, वाक निन शब्द अलापत
 कहै गिरिधर कविराय, जासमे नहि मित्र अर,
 सबको आपन मान, आत्मा सो तुं गिरिधर १
 राम तुंही तुहि कृष्ण है, तुंही देवनको देव,
 तुंही भक्ता शिवराजि तूं, तुंही सेवक तुंही सेव
 तुहि सेवक तुंही सेव, तुंही इंदर तुहि सेपजु,
 तुंही होय सब रूप, कियो सबमें परवेसजु
 कहै गिरिधर कविराय, पुरुष तुंही तुहि वामा,
 तुंही लक्ष्मन तुंही भरत, शत्रुघन सीता रामा २
 बेढा तूं दरियाव तूं, तुंही वार तुंही पार,
 तुंही तरावे तूं तरे, तुंही मध ह्वनहार
 तुंही मध ह्वनहार, सर्व छीला है तेरी,
 तुंही घंटा तुंही संख, तुंही रनसिंगा भेरि
 कहै गिरिधर कविराय, तुंही बस्ती तुंही खेडा,
 तुंही नावक तुंही नीर, तुंही पतवारी बेडा ३
 भूल्यो जब तूं जापकूं, तबही भयो खराब,
 ररेका अस्पद भयो, उतर गइ सब आब
 उतर गइ सब आब, दरोदर खावै धक्के,
 घावै फनी केदार, खंड पुन जावै मक्के
 कहै गिरिधर कविराय, कुफरके पलने झूल्यो,
 बकने ल्यो मुफान, जमा सब अपनी भूल्यो ४
 अमर नाथ हूँ आत्मा, सब देवनको देव,
 कोटिक मध्ये संत जन, जानत है कोउ भव

जानत है कोउ भेव, विवेकी पुरुष अकामी,
अनुगत अंतर बाज, व्योमवत् अंतरजामी.
कहै गिरिधर कविराय, बिना अवयव जू भंमर;

इंद्रिय गणको नाथ, आतमा सो तूं अंमर.
नारायन यह आप है, स्वप्रकाश विज्ञान;
निज स्वरूपको भूलवो, ह कल्पित अज्ञान.
है कल्पित अज्ञान, नानाविध नाच नचावै,
घटी जंत्रको उर्ध, अर्ध इत उत भरमावै.

कहै गिरिधर कविराय, पीवै जव ज्ञान रसायन;
स्वप्रकाश विज्ञान, आपको विपे नरायन.

साई लोक पुकार दे, रे मन हो तुं रीद;
यह यकीन दिलमें धरो, मै सबको खाविंद.
मै सबको खाविंद, एक खालक हकताला,
खलकतकी फनाहिं, रहो हरसैं परवाला.

कहै गिरिधर कविराय, आप ना दुखी दुखाई;
मन खुदाइ खुदाइ वांग हरदम दे साई.

मन रे मदी वात छड, गद्दा तज हंकार;
ज्ञान धनुष उरमें ग्रहौ, करहं ब्रह्म टंकार.
करहं ब्रह्म टंकार, जरा तूं पग धर आगे;
भर्म जो पंच प्रकार, हृदसो ततछन भागै.
कहै गिरिधर कविराय, मूल संसारका खन रे,
नष्ट होय अज्ञान, द्वैत फिर रहै न मन रे.

देही सदा अरोगं हे, देह रोगमय चीन,
यैह निश्चय परिपक जिसू, सोई चतुर प्रवीन.
सोई चतुर प्रवीन, विवेकी सो है पडित;
करे अत्यंत न रसन, आतमा लखे अखंडित.
कहै गिरिधर कविराय, आपणा आप सनेही;
परमानंद स्वरूप, और नहि एहै देही.

अतंत मलिन यह देह है, देहि अतिशैं शुद्ध;
उभय सुअंतर जानिये, कस सौच करे की बुद्ध.

- कस सौच करे की बुद्ध, मेव निश्चय किम जेबहीं,
विमल फाटते विमल, मलिन शुध होय न कबहीं
कहै गिरिधर कविराय, जहा लगी शाख संता,
सबका यहि सिद्धात, शरीर असार अतता १०
- शरीरी सकल शरीरमें, व्यापत नमवत् एक,
स्थावर 'जगम' तनजते, है परिधिन्न अनेक
है परिधिन्न अनेक, दृश्य बडरूप विकारी,
दृष्टा चेतन नित्य, आतमा अव्यभिचारी
कहै गिरिधर कविराय, मिटे तब सब दिलीरी,
जब निश्चय साक्षात, होत अपरोक्ष शरीरी ११
- बानी मात्र जगत सब, चिद बितरेक न रंच,
ज्यों मृद सत घट मिथ्यता, ल्यों कल्पत परपंच
ल्यों कल्पत परपंच, ततुमें जैसे वस्तर,
कनकमाहि आभरन, लोहमें जैसे सस्तर
कहै गिरिधर कविराय, द्वैतकी घूरि उडानी,
मनकी जहां न गम्य, विषय करि सकै न बानी १२
- बानी विषय न करि शकै, मनकी जहां न मरम्म,
सो परमेश्वर ब्रह्म है, ऐसो लियो मरम्म,
ऐसो लियो मरम्म, अपनपो आप निहाल्यो,
मोह संशय विपरीत, भ्रांतिको मूल उस्वार्यो
कहै गिरिधर कविराय, विलोखों काहे पानी,
मनकी जहां न गम्य, विषय करि सकै न बानी १३
- आत्म भिन्न जो जो क्रिया, सो सो अमको मूल,
कायक बाचक मानसी, सबी आपनी मूल
सबी आपनी मूल, मोक्ष हित करै जु करनी,
ज्यों रवि चाहै तेज, जाय स्वप्नोत्तकि सरनी
कहै गिरिधर कवि पुरुष, साध्य तो सबी अनात्म,
स्वत सिद्ध अपवर्ग, रूप चिदघन तू आत्म १४
- हाइ हाइ तबलग रहै, जबलग बाबा हु दष्ट,
अतरमुख जब घी भई, सब मिट जाइ अनिष्ट

सब मिट जाइ अनिष्ट, रहौ उत्तर वा बागड;
जहां जाइ तहां आनंद, जब मन भयो इकागर.
कहै गिरिधर कविराय, चारि फिर आवै धाई;
जीव ब्रह्म इक ज्ञान, बिना ना मिट है हाई.

१५

दसमा ग्रह अध्यास है, नव ग्रहका जो मूल;
जबलग देहाभिमान है, तबलग मिटे न शूल.
तबलग मिटै न शूल, करै केती चतुराई;
देव जजै जप जजै, न सुरको होत सहाई.
कहै गिरिधर कविराय, ज्ञान दढ देवै चसमा;
मल अविद्या नास, होइ न ग्रह रहै न दसमा.

१६

मौला लोक पुकार दे, रे मन मत हो तंग;
पुना किसोंकों मत करो, ग्रहमें लगै रंग.
ग्रहमें लगै रंग, अविद्यक बंधन दूटै;
मिलै विवेकी संत, कपूतोंका संग छूटे.
कहै गिरिधर कविराय, त्याग कर मारग खौला;
जौन तान परकार, आपकों लख ले मौला.

१७

(भिक्षु-फकीरी धर्म-कर्म विचार.)

फकीरी करनी कठिन है, छडणी सवी प्रवृत्त;
जीवत मरणा जगत्में, बाजांतर होणां निवृत्त.
बाजांतर होणां निवृत्त, न रखणी रंचक मोताजी;
जो जेसी जाइ बने, तिसीमें रहणां राजी.
कहै गिरिधर कविराय, भ्रांतिकी फारे चीरी;
एक आत्ममें मगन, तिसीका नाम फकीरी.
भिक्षा खावै मागके, रहे जहां तह सोय;
काम न राखे किसीसों, जो होवै सो होय.
जो होवै सो होय, विरक्तकी यही निशानी;
ब्रह्मविद्याके बिना, अवर बोलै नहि बानी.
कहै गिरिधर कविराय, ज्ञानकी देवै शिक्षा;
क्षुधा निवृत्ति अर्थ, मागके खावे भिक्षा.

१८

२

लियो ठीकरो हाथमें, दसही दिशा जगीर,
ऐसो जगमें फोन हैं, जो कर सके तगीर
जो कर सके तगीर, सो तो जन्म्यो नहि मानव,
देव जक्ष गधर्व, न उत्पत्त हूओ धानव
कहै गिरिधर कविराय, नास जिन धर्मको कीयो,
लोक लाज सब त्याग, ठीकरो हाथमें दीयो

३

भिक्षू बालक मारजा, पुन भूपति यह चार,
न जाने अस्ति नास्ति फलु, देही देहि पुकार
देही देहि पुकार, निसि वासर आठो जामू,
जाप्रत सुपनेमाहि, पूरना दूसर कामू
कहै गिरिधर कविराय, जगत्में कोइ तितिषू,
जिनको वृष्णा नांहि, सो ऐसो विरलो भिक्षू
रहणौ सदा इकातको, पुन भजणौ भगवंत,
कथन श्रवण अद्वैतको, यही मतो है संत

४

यही मतो है संत, तत्त्वको चिंतन करणौ,
प्रत्यक मद्र अभिन, सदा डर अतर धरणौ
कहै गिरिधर कविराय, वचन दुरिजनको सहणौ,
तबके जन समुदाय, देश निरजनमें रहणौ

५

बहता पाणी निर्मला, पहा गध सो होय,
सो साधू रमता भला, दाग न लागे कोय
दाग न लागे कोय, जगत्में रहै अलेपा,
राग द्वेष जुग पेट, न चितकों करे बिक्षपा
कहै गिरिधर कविराय, शीत उष्णादिक सहता,
होइ न कहु आसक्त, यथा गंधा जल बहता

६

एका एकी सिद्ध पुनि, सिद्ध साधक दोह मुनीस,
तीन चार फठटम सम, छ्शकर है दश बीश
छ्शकर है दश बीश, तहां नाना विधि जगदो,
सदा रहे विक्षेप, जु मेरी तेरी रगदो।

कहै गिरिधर कविराय, पुरुष जो परम विवेकी,
करके सबको त्याग, सु विचरे एकाएकी

७

मनकी भेटे दीनता, करै वासना नाश;
 प्रत्यक्ष ब्रह्म अभिन्नका, पुनि पुनि बोध प्रकाश
 पुनि पुनि बोध प्रकाश, विषयकी ममता जाँरे,
 लोक ईषणा आदि, कामना सकल निवारै.
 कहै गिरिधर कविराय, त्याग सब अहंता तनकी,
 तत्त्वज्ञान उपदेश, दुष्टता हरही मनकी.

८

एक फकीरी लभे जब, दूसर ज्ञान अथाह;
 उभै रतन ढिग जिनहिके, तिनकों क्या परवाह.
 तिनकों क्या परवाह, वस्तु जिस पास अमोलक,
 कोन तीनकों कमी, अटूट धन जिन घर गोलक.
 कहै गिरिधर कविराय, भ्राति जिन दीनी देखे,
 सो क्यों होवै दीन, ब्रह्मव्रत जिनके एक.

९

लोड रही ना अर्थकी, नहि परमारथ भ्रांत;
 कोन वस्तुके वासते, फिर निकासत दात.
 फिर निकासत दात, तबी जब होइ अपेक्षा,
 विना प्रयोजन कोइ, प्रवृत्त ना काहुं देख्या.
 कहै गिरिधर कविराय, फकीरी अपनी वारे,
 प्रमादी ढिग तब जावै, जब कछु हंवै खेरे.

१०

आवे तो अटकाउ नहि, जातेकौ नहि रोक;
 इस लौकिक व्यवहारमें, हर्ष शोक नहि टोक.
 हर्ष शोक नहि टोक, नहि खाइस एक मासा,
 फकीरी करनी लगी, जवै फिर किसकी आशा.
 कहै गिरिधर कविराय, कोइ रोवै कोइ गावै,
 नहिं कीसीको काम, भावै आवै जि न आवै.

११

जंगलमें मंगल तुजै, जो तूं होवै फकर,
 खिजतम तेरी सब करे, दिलके छाड मकर.
 दिजके छांड मकर, फकीरीका रंग लगै,
 मूल सहित संसार, रोग सगरो भ्रम भागे.
 कहै गिरिधर कविराय, कुफरकी तोरो संगल,
 जह इच्छा तह रहो, नगरवा अथवा जंगल.

१२

- मड़ी बाध बैठत नहीं, नहीं प्रबोधत सती,
 करन ग्रामकों वश करै, वीत राग नर यती
 वीत राग नर यती, न भिक्षा करे सथूला,
 विविक्त देशमें रहे, मिटाय आविषा मूला
 कहै गिरिधर कविराय, आतंकी तोरी तगड़ी,
 अन्न प्रान मन बुद्धि, कोश आनद जो मड़ी १३
 चेला उनकूं चाहिये, जिनके धन वा धाम,
 इन बिन चेला जो करै, सो है पुरुष सकाम
 सो है पुरुष सकाम, कामनावान अजारी,
 वीत रागको स्वाग, बनायौ महा बजारी
 कहै गिरिधर कविराय, विरक्त जन रहै अकेलो,
 जिनकों तृष्णा रोग, ल्ययो सो मूढो चेले १४
 आश्रय आशा उमय तजि, स्वावै दुकड़ा मांग,
 कहू किनारे पड रहे, राख टांग पर टांग
 राख टांग पर टांग, चाह चिंता सब सोवै,
 भावै जागै निसि भर, अथवा दिन भर सोवै
 कहै गिरिधर कवि महिपत ठाकर द्वार उपासरे,
 धर्मसाल पुन छाह, रहे मिश्रुक बिन आशरे १५
 तृषावंतकों पतित नर, पुना तपामो गाम
 सो नहि जावै गंग दिग, गंगासों उपराम
 गंगासों उपराम, सुरसुरी तीन न जावै,
 सुरध्वनिकों क्या काम, जु ताके दिग चलि आवै
 कहै गिरिधर कविराय, [स्यों] नख शिख प्रास्यो मृषा,
 सो सत्संग न करै, संतकों है क्या तृषा १६
 चार प्रहर दिन हर बखत, चार पहर पुनि रात,
 आतम चिंतन कीजिये, त्याग अनातम बात
 त्याग अनातम बात, प्रसंग न कबहु चछवै,
 अद्वय अखंड अपार, आतमा तिसर्म छावै
 कहै गिरिधर कविराय, आपको चीनैं सार,
 देह-मन-इदिय-प्रान, यह मि-या जानै चार १७

काल काम करना जोड़, सो तो कीजै आज;
मूल अविद्या निंदते, शीघ्रहि तूं अब जाग.
शीघ्रहि तूं अब जाग, अपना करले कारज,
ऐसो मानव देह, फेर कब मिलहीं आरज.
कहै गिरिधर कविराय, काट कर भ्रमके जाल.
लखो आपको ब्रह्म, काल जों जो है काल.

१८

(वर्णाश्रम धर्म-तीर्थादि भेद.)

जो सग आश्रम वरनके, ना जा तिनके कोल,
जावे तो मत बैठ तिह, बैठे तो मत बोल.
बैठे तो मत बोल, बोलहि तो छोर बिखेरो,
वहि पूछै व्यवहार, थोरमै करो निवेरो.
कहै गिरिधर कविराय, कहै मत तिनके लग जो,
ना जा तिनके कोल, वरनआश्रमके सग जो.

१

कूकर पागल काटतहि, वह पागल होय तात;
त्यों नर मजवी संगतै, नर मजवी हो जात.
नर मजवी हो जात, वात हिरदे धरि लीजै,
प्राण जाय तो जाय, मजवीका संग न कीजै.
कहै गिरिधर कविराय, अधम है सबसै सूकर,
तातैं बीसो अधम, मजवका जो जो कूकर.

२

पासी जबलग मजवकी, तबलग होत न ज्ञान;
मजव पासि टूटै जबै, पावे पद निर्बान.
पावे पद निर्बान, निरंजनमाहि समावै,
जनम मरन भव चक्र-विषै फिर जोनि न आवै
कहै गिरिधर कविराय, बोध बिन भ्रमै चोरासी,
तबलग होत न ज्ञान, मजवकी जबलग पासी.

३

मेरी तेरी छोडकै, पक्षापक्षहि नाख;
राग द्वेषको दूर कर, निजानंद रस चाख.
निजानंद रस चाख, और रस लागै फीके,
एक ज्ञानके भये, दुःख मिट जावै जीके.

- ११ कहे गिरिधर कविराय, राग जो पेरै गेरी,
तब यह होवै सफल, तजे जब मेरी तेरी ४
- देह दुःखकी खान है, ग्रह सत सोककि खान,
अविद्या जो है आपनी, जमाकर पहिचान
जन्माकर पहिचान, समज जो सुखकी खानी,
जामैं वेद प्रमान, पुना आपतकी बानी
कहे गिरिधर कविराय, निरंकुश तृप्ति एही,
छूटे तन अभिमान, दृष्टि फिर रहै न वेही ५
- आत्म रथी शरीर रथ, बुद्धि सारथी जान,
मन दोरी इंदिय हय, मारग विषय पिछान
मारग विषय पिछान, वेह इंदिय मन योगा,
दुख सुख भोगै भोग, तत्त्ववित कहे प्रयोगा
कहे गिरिधर कविराय, है एही परमात्म,
बुद्धि सारथी जान, वेह रथ रथी जु आत्म ६
- माया मोह मद राग पुनि, ममता धम रु काम,
यह जामैं नहि पाइये, सो परमेश्वर राम
सो परमेश्वर राम, सर्वका जाननहारा,
और सबे अप्यस्त, आपधिष्ठान अपारा
कहे गिरिधर कविराय, ध्यान घर सुन रे माया,
आश्रय आशा तजि, अरोपित जिसमें माया ७
- भोग परम सुख आशका, दिल्लीरी कर दूर,
मावें वेच करोच फल, मावें कुछ कपूर
मावें कुछ कपूर, पहिर कंबल वा स्वासा,
मावें धरियै ध्यान, मावें नित देख तमासा
कहे गिरिधर कविराय, करो मावें हठ जोग,
अथवा ज्ञान समाधि, करो ब्रह्मानंद भोग ८
- सुनियत है भागीरथी, पातक हरन अपार,
पुना पाप निर्मूलकों, गंगा ब्रह्म विचार
गंगा ब्रह्म विचार, कर्म छेदनकों छैनी,
अविद्या उखर बिदार, नकों जम वाढी पैनी

कहै गिरिधर कविराय, जु चितियत कथियत गुनियत,
सो सब जान अनामत, जो जो श्रवनें सुनिमत. ९

(प्रारब्ध-कर्ममहिमा.)

अवसमेव भुक्तव्य हे, कर्म सुभासुभ जोय;
ज्ञानी हस करि भोग व्है, मूरख भोगै रोय.
मूरख भोगै रोय, पुनः पुन मस्तक कूटै,
प्रारब्धहि जो होय, विना भोगै नहि छूटै.
कहै गिरिधर कविराय, दैव अनुसार दिवसही,
जैसें जैसें भाग, पुरुषके फलै अवसही. १

भाग फलत सर्वत्र है, नच विद्या पौरष सरल;
हरि हर मिल सागर मथ्यो, हरकूं मिल्यो गरल.
हरकूं मिल्यो गरल, हरीने लच्छमी पाई,
षट भग दो संपन्न, भागकी कही न जाई.
कहै गिरिधर कविराय, कोउ मिल खेले फाग,
कोउ हमेशां रोत है, आपो अपने भाग. २

दैव नाम है भागका, सो है जिसका सूर;
ताकी हानी करनकूं, है किसका मगदूर.
है किसका मगदूर, आप विधि विष्णु महेसू,
वाकी रच्छा करै, भवानी सहित गनेसू.
कहै गिरिधर कविराय, भैरवी शकती सैवजु,
इक मन सकै उखार, दाहने जब तक दैवजु. ३

दैव अधिन व्यवहार सब, अन्य अधीन न वीर;
अन्य अधीन जु होय कोइ, पीवन देत न नीर.
पीवन देत न नीर, तोयमें देत न न्हावन,
पावक देत न तपन, पवन पुन देत न स्वावन.
कहे गिरिधर कविराय, आतमा इक निरवैवजु,
उभय अविद्या सहित, अरोपत जिसमें दैवजु. ४

कीयो चाहै कामकों, परे तासमें देर;
पुनः विपर्यय होइ सो, यहि अदृष्टको फेर.

यहि अदृष्टको फेर, कर्म ग्रह टरे न टायों,
 बिन भोगे प्रारम्भ, और बिब मरे न मायों
 कहे गिरिधर कविराय, जु पुरव दीयो लीयो,
 सो सो भोगत पुरुष, दु ख सुख अपनौ कीयो ५
 खीर पिबैया सकस जो, सो नहि खावत घास,
 दुग्ध मिले तो तृप्त हुइ, नहि तो रहै उपास
 नहि तो रहे उपास, और उपाव ना तीसर,
 अदृष्टके अनुसार, आप रच दीनो ईसर
 कहे गिरिधर कविराय, है जिनका भोजन नीर,
 तिनकों नित जल मिले, खीर खोरैकों खीर ६
 भोजन छाजन नीरकी, करै सुचिंता मूढ,
 ज्ञानी चिंता ना करै, निज पदमाहि अरूढ
 निज पदमाहि अरूढ, तिनोंकों चिंता कैसी,
 तिसहीमें आनंद, अवस्था प्राप्त जैसी
 कहै गिरिधर कविराय, अवर ना रखै प्रयोजन,
 आत्म चिंतन करै, अदृष्ट पहुचावत भोजन ७
 होनी हुइ सो ना मिटे, अनहोनी ना होइ,
 ऐसो निश्चय जिनहिंकों, मानव कहिये सोइ
 मानव कहिये सोइ, और तो सबहिं पाये,
 अल्प बातकों समजत, नहि निज गुरुके साथे
 कहै गिरिधर कवि जान्यो, बीसने एक अजोनी,
 तिसकी है सब ढीला, जो अनहानी होनी ८
 खानो अपनो प्रारम्भ, फिर क्यों होना दीन,
 रहनौ जगत सराइमें, दावा कहा प्रवीन
 दावा कहा प्रवीन, जु कीनौ अपनो पहर्ये,
 बुरे कामका नाम, भूल कर कबहु न छह्ये
 कहै गिरिधर कविराय, जु तिल इक सग न जानो,
 तो समग्र नहि बने, बने देनो वा खानो ९

(मायाभिमान विचार)

गपौटा मायाका कोइ, ससकृत्तका कोय,
 कोइ गपौटा पारसी, अंग्रेजी पुन होय

- अंग्रेजी पुन होय, गपौडा कोइ अरब्बी,
 ब्रह्मज्ञान विन विद्या, सब ज्यों पाकमें दरब्बी.
 कहै गिरिधर कविराय, वेग समझो कोइ मौटा,
 जा करि आतम लभै, भया है सोइ गपौडा. १
- पोथी पाना फेंकके, विचरो न्है निहकाम;
 आतम अनुसंधान कर, दिलमें रहे अराम.
 दिलमें रहे अराम, ओर कछु फुरे न शंका,
 अहं ब्रह्म परिपूर्ण, निसि दिन वाजै डका.
 कहै गिरिधर कविराय, दृश्य तुज विन सब थोथी,
 तुं सबको धिष्टान, अरोपित जिसमें पोथी. २
- भापा भूसा फेंकके, सडी संस्कृत डार;
 उभय अरोपत जिस विषे, सोहं चिद निरधार.
 सोह चिद निरधार, त्याग सगरी सिर दरदी,
 परको किस्सो छोर, खबर ले अपने घरदी.
 कहै गिरिधर कविराय, वेदको समझो आशा,
 तुझमें युग अध्यस्त, देववानी नरभापा. ३

(व्यवहार चिन्तेकचिचार.)

- अंधा पीसे पीसना, कूकर धस धस खात;
 तैसै मूरख जनोंका, धन अहमक ले जात.
 धन अहमक ले जात, संच करि वहवी मरि है,
 ताकें पावै ओर, कुबुद्धी दावा करि है.
 कहै गिरिधर कविराय, भई इस बंधकि गंधरी,
 लग्यो स्वानके दाव, पीसनां पीसै अंधरी. १
- खायो जायजो खा हरे, दिया जायसो देह;
 इस दोनूंसें जो बचे, सो तुम जानो खेह.
 सो तुम जानो खेह, किसे पुन काम न आवै,
 सर्व सोसको बीज, पुनः पुन तुझे रु आवै.
 कहै गिरिधर कविराय, जरन त्रैधनकै गायो,
 दान भोग विन नास, होत जो दियो न खायो. २

तप करवेक नरमदा मरवेक सुरधुनी,
 मजन करनेकूं हस्तिर, भाखे रिपिवर मुनी
 भाखे रिपिवर मुनी, वसिष्ठ परासर व्यासा,
 दान करै कुरुक्षेत्र, ज्ञान साधन संन्यासा
 कहै गिरिधर कविराय, शिवोहं शिवोह जप,
 करन ग्रामकुं रोक, न या सम है कोई तप ३
 कोप करै जिस सफस पर, परमेश्वर जब आप,
 लोकन साथ मिलाय पुन, चाहै दिन अरु रात
 चाहै दिन अरु रात, वासना उपजै खोटी,
 कृपनताइके लिये, बुद्धि हो जावै मोटी
 कहै गिरिधर कविराय, आपनो करि कै छोप,
 अनामत चितन करै, यहि ईश्वरको कोप ४
 करे कृपा जिस पुरुष पर, अतिसे करिकै राम,
 ताकू कोई ना फुरे, लौकिक वैदिक काम
 लौकिक वैदिक काम, रहै नहि करनो बाकी,
 हर जगा हर बखत, ब्रह्मकी होवै साकी
 कहै गिरिधर कविराय, अविद्या जिसकी मरै,
 सर्व क्रियाके माहि, एक खुद दरसन करै ५
 खटकेवाली वस्तुको, दीनी जिसनें डार,
 भावै रहै बजारमें, भावै बीच उजार
 भावै बीच उजार परो रह मुखें न बोले,
 अथवा बात अनेक, करै निति वासर होले
 कहै गिरिधर कविराय, चीज जो चारो पटके,
 सुत दारा धन धाम, गये तिनके सब खटके ६
 परम प्रेमको विषय जो, सो है अपनो इष्ट,
 ता बिन और जु जगतमें, सा सब जान अनिष्ट
 सो सब जान अनिष्ट, दृष्टि यह बिनको जामी,
 सो पुमान उच्छृष्ट, श्रेष्ठ अतिसे बड भागी

कहै गिरिधर कविराय, अलौकिक पायौ मरम,
यातैं परे न और, कोउ पुरुषारथ परम. ७

आदर था अनादरे, वचन बुरे त्यों भले;
अप्रभु प्रभुता जगत्की, धर जूतेके तले.

धर जूतेके तले, राग पुन द्वेष विदारे,
महा सिंधुको तरे, डुबै क्यों शुष्क किनारे.

कहै गिरिधर कविराय, पहिर समताकी चादर,
हर्ष शोक करे दूर, तथा दुनियाके आदर. ८

रोड़ रोड़के पाइये, रुपया जिसका नाम;

जब जाय फिर रोड़ये, इह मुख जिसको काम.

इह मुख जिसको काम, इस मति काहै रूपी,
जिसके हेत मजूरि, करें उडावै कूपी.

कहै गिरिधर कविराय, कई खोजे गर्दम धोई,
पुना वनज नौकरी, कृपि करें रोई रोई. ९

गई गई पुन गई रे, करके निशिदिन सोर;

घडियाल पुकारै और कछु, तैं समजी कछु ओर.

तैं समजी कछु ओर, यथारथ नाहन भाखी,

तापर एक दृष्टत, सुनो वदरनकी साखी.

कहै गिरिधर कविगाय, समज जब उलटी भई,
घटका घटका करके, सगरी आयु गई. १०

बोवे पेड बबूलके, खाई लोडै द्राख;

धनी वननकी कामना, करे संगरे राख.

करे संगरे राख, पहयों चाहै क्रमची,

रंगे रंग चमरुया, रंग मजीठहि रमची.

कहै गिरिधर कविराय, सुखी सो कैसें होवै,

तृष्णा राग रु द्वेष, ईर्षा मत्सर बोंवै. ११

देणी दमरी एक ना, लेणे कौन छि दाम;

गांठ बांध नहि चालते, फूटी एक बदाम.

फूटी एक बदाम, न राखै धूसर दिनको,

विना आपणें आप, भरोसा और न जिनको.

कहै गिरिधर कविराय, रही ना बाकी लेणी,
क्रीनी बबी हिसाब, न निकसी कोडी देणी १२

बैल मूल विधि नर रचे, लादे दाँडी मूख,
अकल नही हैथानकी, बिना रीग दिन पूछ
बिना रीग बिन पूछ, और तो पशुकी रहनी,
मय मैथुन आहार, निद्रा पुनि सुननी कहनी
कहै गिरिधर कविराय, चले ना सूधी गैल,
खाल आदमी दिले, पहरी है ता बैल १३

बाहर जो अतरसुही, आगे पीछे एक,
जो ना समजे बात यह, ताके पिता अनेक
ताके पिता अनेक, तथा जानो तिस माता,
जहां जहा वह जाइ, तहां तह एहै असाता
कहै गिरिधर कविराय, एक चिद बात न जाहर,
सोइ उर घसो अरध, सोइ पुनि अतर बाहर १४

यारी ता संग कीजिये, गई हाथसों हाथ,
दुख सुख संपत विपतमें, दिनभर तजै न साथ
दिनभर तजै न साथ, महत दृष्टात बखानो,
ज्यों अकाज संग पोल, और इक सुनो बखानी
कहै गिरिधर कविराय, निमकमें ज्यों रस खागि,
या प्रकार जो व्यापक, ता संग लाइये यारी १५

(बगमक-कविस)

रामायण भागवत भारत पुरान सुनि,
छूटी नहीं अहता, न मिटी माझ ममता,
झाझकुं भजाये रहे, उंचे स्वर गाये रहे,
शिखा ले रिझाये रहे, नाशी नहि तमसा,
प्राणायाम साध रहे, अजपा आराध रहे,
अनहद सुन रहे, आई नहि समता,
बिना ईक्षणा न मारे, त्रिधा वासनाके टारे,
राग द्वेप बिना जारे (केसे) पावे राम रमता १

विप्र आदि वर्ण जे ते, संन्यासिलो आश्रम ते,
 तुसनकूं कूटे सो तो, नीरकूं विलोवते;
 बूझवे हे जोग सो तौ, बूझवे न महा शोक,
 भूत भर्म रोग लयो स्थूल दृष्टि जोवते;
 कोन नाम कोन धाम, कोन मढी कोन मठ,
 ऐसो बूझे अटपट, आयुकों विगोवते;
 देखवेकूं नर एतो पशु महा स्वर मेष,
 तंतूनीमें बांध्यो यार या गतिही सोवते. २
 चित्तके उदार, राजनीतिमें खबरदार,
 समे अनुसार बाणी बोलत लपेटकी;
 करे पावक आहार, खूरे नखसुं पहार,
 जलकी धहावे धार, जगमें वे चेटकी;
 योगहूमै परिपक्व, यामै नहि कछु शक्क,
 सिद्ध वर हक्क, जान लेत पर पेटकी;
 ऐसे तो प्रतापी, ब्रह्मबोध बिना पापी,
 ताकी जावत हे कथा (सो तो) सबी अलशेठकी. ३
 उलुककी सभामांह, रविको अभाव कहे,
 न्यायके जो बूझे चाम गादुर बतावते;
 त्युंही मूढ बुद्ध कहे अहंब्रह्म नां त्रिकाळ,
 विषे पतनीके वाक्य समता लियावते;
 जेसे नर स्वप्नेमे उंची गोल करे मम-
 शीश काट ले गयो कोउ ऐसे बूब आवते;
 त्युंही आप अज्ञानबश करे परलोप अहं-
 पाप पाप कर्म पाप आत्मा अपापतें. ४
 ठाकुर कहावे जो हजाम गाम लोकनमें,
 राज्यद्वार जावे तब नाउके बुलाइये;
 पंडित कहावे जो कुंभार निज जातिमांहि,
 ब्राह्मणोकी पातीमांही कुलालही अलाइये;
 तेसे परपथीओने मोक्ष जो जो थापा सोतो,
 बंधनके कीजे, जो विवेकी आम जाइये;

बिना तत्वबोध शराय शोकफो न हो विरोध,
 दीनता न छूटे विष्णुलोकसें गिराइये ५
 परचे कीहे सीखो पुन दमकी हे पूजा
 छटो पत्ताफी मित्राद सरुखा पहेचानफी,
 जकमें घेवार एते देखिये प्रसिद्ध ज्यामें,
 इती करामत खान पान पहेरानफी,
 चारे नहि ज्याहा अन्न तोए पट मिळे तहा,
 साते ए तजो बात सगरे तोफानफी,
 एकोहं-अद्वयहं-शिषोहं-परिश्रम,
 दृढ निश्चे धार वृत्ति पही ज्ञानवानफी ६

गिरिधर. (तिसरा.)

(शृंगार-छप्पय)

झुकुटी नैनफो धान, कामफो फटक चदावन,
 धुंधट पटफी ढाल, चाल गजगती सुहावन,
 फचुकी कवच पेनाय, किये कुच पेदल भागे,
 बिलुवा बजत निगान, सुनत रतिपति सुर जगो,
 होंकार करत नृपुर नवल, रणखेत कुसुम सप्या भली,
 (कवि) गिरिधर फहे एहि साज सज, पिया पास झंझन चली १

(यस्ततश्चसु)

सुनत निदेशसो अरोप वनिता सुमेय,
 चली एफ एफ गहें गरब अकरिकै,
 कवरी समेटी बांधी सवरी हृमग शुचि,
 लहगो जवर कस्यो लकमें अकरिकै,
 गिरिधरदास हाथ फूलफी छरी छै धाई,
 छविसों अतूल होरी होरी शोर करिकै,
 चपलासी चमकि चहूँघा सो चपल चोर,
 चदमुखी लिन्हा मजर्चद कोप करिकै १

(वर्षाक्रतु.)

करत अकाश बारी बाहक बिलास तैसे,
 बुंद पर बसन कुसुंभी रंग बोरपै;
 क्षण छबी छटा तैसी घटा घन घहराय,
 हीरनके भूषण त्यों सोहे तन गोरेपै;
 गिरिधरदास लिये गिरिधर लाल रंग,
 झुकती झपति जाति थोरेहू झकोरेपै;
 झूलती है शूल सुख सौति उन झूलती है,
 फूलती है झूलती है हेमके हिंडोरेपै.

२

उमडि उमडि नदी नद कूल बोरत है,
 जोरे जलधारनसों सूझत कहूंना है;
 परम प्रचंड पौन धावनि त्यों धुरवाकी,
 झिल्लिनको शोर सुने होत कान सूना है;
 गिरिधरदास महा बिज्जुको प्रकाश सोई,
 लगै दोह दुसह दवानलसों दूना है;
 एरी बाल जोइ श्याम बिन सुख खोइ यह,
 पावसन होय प्रलय कालको नमूना है.
 श्याम असमानो श्याम भयो असमानो तैसो,
 लखि असमानो सुख सजि अस मानोरी;
 सब अहिरानो दुख सहि अहिरानो फूले,
 फिरै अहिरानो संग हरि अहिरानोरी;
 गिरिधरदास ताय मिथ्यो धुरवानो खंड,
 ऊडे धुर मानो किये धीर धुरवानोरी;
 सुख बरसानो रीझि लियो सरसानोरी त्यों,
 यह बरसानो रीति रस बरसानोरी.

३

४

भूमि नाचै ना किसे मोर एरी चहूं ओर,
 चंचला अकाश देव नारिसी नचति है;
 गायकस गान करै चातक बिपिन घन,
 गंधर्व गावै गीत आनंद रचति है;
 गिरिधरदास देव फूल बरसावै जल,
 सुमन छटावै तरु बुद्धियो जचति है;

भावससो जनम भयोरी यासो सुखमासों,
अवनि अकारमें बंधाईसी मचति है

५

(हेमन्तश्रुत)

कंजन सुखाये मे सुखाये रज मनहीके,
शीत ना बढाई नीत प्रकटी समत है,
रात ना अधिक करी रति अधिकार्द भाई,
दिन ना घटायो कर्म भासना तुरग है,
गिरिधरदास पौन शीतल असह है न,
प्रेमके प्रवाह जग चलन टरत है,
साधिकाके कंतको भगत मतिमंद है कि,
मज शीतवंत श्रुत प्रकट हिमत है

६

अतिही अराम दे न ऐनको अराम अमि,
राम आठो ओर ओर्यों एस अवलनमें,
आसन अनूप आय ईश है अनीश जापै,
अक्षि अवलोकि है उदासी अंबजनमें;
गिरिधरदास एको उपमा न आवत है,
इंगुरसी आधी अरुणाइ अधरनमें,
अगधर इंदुमुखी ओजसों अमल ऐसैं,
लसे अनगनसैं अजब अगहनमें

७

सूर ऐसे शूरको गरुर रूरो दूर कियो,
पावक स्त्रिलीना कर दियो है सबनको,
भातनकी मारहीते गातकी मुलात सुधि,
कापत जगत जाकी भय आनमानको,
गिरिधरदास रात लागै काल्यात कीसी,
नाहिंसो लगत माम राखत चरनको,
आयो है हिमंत भूमि कत तेजवत दीह,
वतन पिसावतो दिगंतके नरनको

८

(शिशिरश्रुत]

विष ना कपावत है कांपति घनीसी आय,
सीसीन फ्रावती करत अति घीना है,

रदना बुलावत है रदनिज पीसे सोई,
 चंदना सवत मुखचंदको पसीना है;
 गिरिधरदास पीरो खेत न शरीर यह,
 कंज मुरझाये न निगाह भूमि लीना है;
 लुत सीरी सासै कर श्यामसों प्रथम रति;
 शिशिरन एरी यह नागरी नवीना है.

९

(ग्रीष्मऋतु)

तपत प्रचंड मारतंड महिमंडलमें,
 ग्रीष्मका तीक्ष्ण तपन आरपार है;
 गिरिधर कहे काय कीचसो वहन लाग्यो,
 भयो नद नदी नीर अदहन धार है;
 झपट चहूंहनते लपट लपेटी लट,
 शेष कैसी फुंक पौन झकनकी झार है;
 तावासी अटारी तपी आवासी अवनि महा,
 दावासे महल औ पजावासे पहार है.

१०

गिरिधारी.

(श्रीमद्भागवत वर्णन.)

वेदनके थाल्हा बीच ऊपज्यो है पोधा एक,
 बारा है सुडार जाकी ओमकार जर है;
 तिनिसें पेंतीस शाखा दशहू दिशामें फेली,
 ज्ञान औ विराग तोष खग निको घर है;
 पात जे अठारह हजार छवि छाड़ रहे,
 जाकी छांह बैठि यमदूतनको डर है;
 येहो बनमाली गिरिधारी कहै बार बार,
 भागवतरूपी सो कल्प तरुवर है.

११

(श्रीकृष्णविरह.)

अक्रूर गोहन चलत मनमोहनके,
 बसुधा बिबोहनके बीजनको बोवती;

कहैं गिरिधारी धीर धारिनना धारी धीर,
 करुण गंभीर प्रज महल विगोषती;
 नंदकी यशोमतीकी गोपनकी गोपिनकी,
 विपति बखानै कौन आसुनसैं धोषती,
 चोखती न हैया चारा चरती न गया मिलि,
 जलकी गिरैया औचिरैया बन रोषती १
 कदमकी छाली चढि कूद औष वनमाली,
 फोविकाती भीतर बियोग बीज ध्वंगयो,
 कहैं गिरिधारी धाये नगरके नारी नर,
 भइ भीर भारी नीर नैनते ध्वंगयो,
 नन्द नंदरानी अररानीपरैं पानी पीव,
 ओक ओक अररस शोक पीज हैगयो,
 यमुना समानो आजु प्रजको सतन हाय,
 यशुमति सून बिन सून प्रज है गयो २
 कामरो परोहे कहैं लकुटी डरीहैं कहैं,
 बासुरी धरीहैं अब इन्हैं कौन धरिहैं,
 कहैं गिरिधारी को रचैगो रस रास कौन,
 मिरचि बिलास वृन्दावनमें विहरिहैं,
 यशुमति रानी दीन बानीसों कहत आजु,
 गोरसके काज कौन मोसो आनि अरिहैं,
 सग ग्वाळ बालनके खेळि है को ख्यालनको,
 लालन बिनारी गोपालन को करिहैं ३
 उठै कोपि फले प्रल्य कालवाले धाराधर,
 शुराहा दराढ धारे धरि चहु और पर,
 कहैं गिरिधारी अकलाने प्रजवासी सब,
 पाहि पाहि आरत पुकारते निहोरपर,
 मोर पंखवारे रखवारे प्रज गाइनके,
 सो बिना न कोऊ रखवारो यहि ठौरपर,
 छोम करि छोहनीते उठाय भीन्हों छोनीधर,
 छाव दीन्हों छत्रसों छगुनियाँके छोरपर ४

गोवै ग्वाल बाल अहिगालमें समाने जाय,
 जान तनहुते ख्याल खलबल जूटको;
 कहै गिरिधारी पीछे रहिगे अकेले कान्ह,
 करुणानिधान धरे करुणा त्रिकूटको;
 देवकीनंदन चलि बदन अघासुरके,
 पैठे आय पैठतही कीन्हों यह ऊटको;
 शैलके समान बढे फैलमें फुलायो तन,
 फूलिकै पानीको फन फाटि गयो फूटको. ५
 जानि परो आनिकै अवाज कान्हजूके कान,
 जानि जन जापनो अनाथकी पुकारथी;
 छोड्यो सिंहासन औ छाड्यो पन्नगासन औ,
 छोड्यो गरुडासनसो धायो परमारथी,
 नन्दनसों कविप्यारी कमला अकेली छांडि,
 हाथन हथ्यार छोडो छोडा रथ सारथी;
 धाये ब्रजराज गजराजकी अरज जानि,
 आये चलि वाहीके मनोरथ महारथी. ६

गीध.

(विधि उपालभ-छप्पय.)

शशि कलंक रावन विरोध, हनुमतसो बनचर,
 कामधेनु सो पशू, जाय चिंतामनि पथ्थर;
 अति रुपा तिय बांझ, गुनीको निर्धन कहियें,
 अति समुद्र सो खार, कमल बिच कंटक लहिये.
 ये जु व्यास खेवहिनी, दुर्वासा आसन डिग्यो,
 वि गीध कहे सुनरे गुणी, कोउ न विधि निर्मल गढयो. १

गुणदेव

(दोरग मोती) *

नखत स्वांत ऋतु सरव, सुमट भट छरत महामल,
उदधि दूर अविदूर, शर भरपूर उभेदल,
गीघ छाल अतराल, आल ग्रहि चढेहुं अंबर
तेहि फाल ततफाल, होइ नम मया मधंवर,
शोणीत प्रसा बिंदु मिले, शीप मूल भीतर गयो,
यहि आन जान राजान पति, मोतिनको दुइ रंग भयो

१

(चंद्रग्रहण प्रतिकार-कवित्त +)

एक समै पूरन उघोत जोत ससि भयो,
मुनिके ग्रहन देखें लोक सब धाईके,
ज्योतिषीसी ज्वाल बाल इंदुसी मुखारीविंद,
कहे गुनदेव म्हेछ ठाडी भई आईके,
चंद और चंदमुखी याही प्रसु एही प्रसु,
एसेही निचार नीरि सारीही बिताईके,
चंद भयो अस्त चंदमुखी निज ग्रह आई,
राहु गयो गेह निज हिये पिछताईके

१

गुणवंत,

(सज्जन छक्षण-छप्पय)

अगर अगन पर धरत, जरत शुभ भास प्रकारे,
लसत कसत फल धौत, छढाय तंदूल उजासे,

*किसी राजाके पास एक मोती था, उसका रंग आधा छाल और आधा सुपेत था. इस दो रंग होने कारण राजा सबसे पूछता था पर किसीसे उत्तर न दिया गया; फिर भगव नाम कविने उसका उत्तर इस छप्पयमें दिया जिससे राजा प्रसन्न हुवा भगवकों किंतनेक गुनदेव कहते हैं,

+ किसी राजाको एक बखत जोतिपियोने कहाकि इस पूर्णिमाको चंद्रग्रहण होगा; जब पूर्णिमाके दिन देखा तो ग्रहण हुवा नाही राजाने इसका कारण जोतिपियोसे पूछा तब उनोंने कहाकि ग्रन्थमें ग्रहण होनेका पूरा पूरा भोग था पर देवेछ बसमान् है इस उत्तरसे राजाके मन सतोष न हुवा इसलिये सब विद्वानोंसे पूछता रहता फिर गुनदेव कविने इसका उत्तर कवित्तमें दिया जिससे राजा प्रसन्न हुवा

दुग्ध तपत दधि मथत, पगाहि बंधत पय धेने,
 तिलें तैल रस ईक्ष, धिसत चंदन मृग वेने.
 फल देत अंब पथ्थर हने, यों गनपत कवि उच्चरे,
 कुलवंत संत सज्जन पुरुष, गिन न औगुन गुन करे. १

गुणाकर.

(घसंतघिरद-कवित्त.)

फूले है रसाल नवपल्लव विशाल बन,
 जूही औ पलास मल्ली आदि बहूं को गने;
 कूजन बिहंग पिक कोकिलादि एक संग,
 कुंजत मालिंद बन विधिकानिमें धने;
 बहत समीर मंद शीतल सुरभि धीर,
 रहत न योगयुत मुनिगनकें मने,
 एरे ब्रजरंग एसें समे देहुं संगन तुं,
 दहन अनंग मिसु गोपिकानके तने. १

गुमान.

(वंसी महिमा.)

खग मोहे मृग मोहे नग मोहे नाग मोहे,
 पन्नग पताल मोहे धुनि सुनि जासुरी;
 सुर मोहे नर मोहे सुरन सुरेश मोहे,
 मोहि रहे सुनिकै असुर अरु आसुरी;
 भणत गुमान कहौ मोहिबेकी कहा बाणि,
 चर औ अचर मोहे उमंगी हुलासरी;
 गोपिनके वृन्द मोहे आनंद मुनिन्द मोहे,
 चन्द मोह चन्दके कुरंग मोहे बासुरी. १
 ताछिन भनक बीर काननमें धरी आय,
 ऊँठ तन पीर और रुक जात सांसुरी;

मोहन मतपारे पेन भैन बैन जाग ऊँ,
सा दिनते प्यारी यह फराफत है पांगुरी,
ईत है हमारे पिय प्याफो अपररस,
ओरु म्दफाज गुम्माज कीन्दो नामुरी,
जत्र है कि तत्र है कि मोहिनीफो मत्र है कि,
सौत है कि साह है कि बैरन है पांगुरी

२

गुरुदत्त.

(वर्णावर्जन)

रही रनि दुरगु दरी दरी गुमिपर,
दोके दोके दामिनी हमारि ये अरज है,
बोहि बोहि पपिदा मयूरगनि नानि नानि,
बकि बकि रादुरन फाहफी मरज है,
साजि गाजि पायस तू सायस है गुरुदत्त,
फरि फरि मार अति दतियां दरज है,
येरे बर बरसा तू परजो न मानत है,
गरज गरज तोहि आपनी गरज है

१

(मर्षणा)

पीव कहां कहि देव तो सायस, पावसमें रम धीन कहां है,
जीवननायके साथ बिना, गुरुदत्त फरें तन जीव कहा है,
मानि मुनी जयते तब में, यह जानि न जातसो पीव कहां है,
पवि कहां कहिके पपिदा, केहि सों शुभ पुष्टत पीव कहां है,

१

गुरुदीन.

(धर्मत-विरह)

फउ गुजत कुजन पुंज मडिंद, पिये मकरंद अनंद भरे,
फुम बीरत फेडिया गूफे करे, यह सौरभ सीरि समीर हरे,
वहि संत बसंतफो भावे नहि, गुरुदीन जऊ लसे फत गरे,
निरि वासर निंद औ भूल हरी, मुख पीरि परी दलदीरे परे

१

गुलाव.

सवेया.

(प्रेम-प्रेमिक महत्त्व.)

मीन पतंग करें तन त्याग, तऊ जल दीप न जानत जोऊ,
 चातक और चकोरिनकी औ, चितौत न भेष निशाकर दोऊ;
 दानव देव कहा नर नाग, गुलाव चराचर हे जग सोऊ,
 जानत है करिवो सब नेह, निवाहिवो नेह न जानत कोऊ. १

मीन मेरे जल जीन धरै, गति खीन करै अगिनी परदीकी,
 जानत नांहि कुरंग चकोरहि, नाद निशाकरजी गरदीकी;
 कंज गुलाव तचै अतिही, विपदा न हरै रविहू शरदीकी,
 बेदरदी दरदी न लखै गति, जानत है दरदी दरदीकी. २

(चतुर्विध नायका भेद.)

अति चाहभरी जमुनां जलकों, वरजेंहु खिजे नित ऐवों करै,
 सखियानकी सीख सुने न कछू, अपनी कहिकै मुसकैवो करै;
 द्युति दूनि बढाय गुलाव कहे, गुरु लोगनतें न सकैवो करै,
 नव नागारि रूप उजागरिसो, भरि गागरि क्यों ढरकैवो करै. १

गाथ अकाथ कथै नर नारि, बिना पथ सौति बतात डरै नां,
 नाथ हलावत माथ गुलाव, भरे वर बाथ विथा उचरै नां;
 पाथरसों वच सास कहे, ननदी परिपाथ सुतान टरे नां,
 साथ तजै सब साथनिपै पर, हाथ पर्यो मन हाथ परै नां. २

कीचभरी कल क्यारिनमें, शुक सारिकाते न कछू मय मानौ,
 कंटक बैलि विशालनसौ, तरु जाल बितान तहां उर जानौ,
 संग न कोऊ सहेली गुलाव, स्वहाथनतें चुनि नेम निभानौ,
 हेत महेशके पात प्रसूनकों, आज भट्ट मुहि बागलों जानौ. ३

अति शीतल मंद सुगंध समीर, हरै विरहीजन दागनकों,
 सरसंत वसंत गुलाव कहे, ऊपजावत हे अनुरागनकौ;
 सुख होत महा सबहीके हिये, लखि नीरजवंत तडागनकौ,
 सखि एरि खरो दुख एक अरे, पत झार करे बन बागनकौ. ४

(कविता)

(अप्सरा उपमा)

बानीके मवानी केन रानीके सुरेशहंकी,
आसुरी सुरी केहेन फनी मामनीके है;
रमा केन केसी केन किमरी नरीन हूके,
मेनका तिळोत्तमा न प्रहारमनीके है,
सुकव्य गुलाब मजुघोषाके धृताची केन,
और उरषसी केन ससी भानीके है,
मेन घरुनीके ऐसे हेन हरनीके हर,
नीके जैसे ब्रह्मभान नव नवनीके है

१

(पावस और मपगुहति)

जोरि जोरि जुगनु जमात किरे चारी और,
घोरि घोरि घरपे घनेरे घन छावैरी,
दौरि दौरि दरमै दरेरा देव दामिनिहू,
फोरि फोरि शिरकों मयूर सरसावैरी,
सुकवि गुलाब डोलै ठौर ठौर धीरवधू,
और और दादुर पुकारि तन तावैरी,
मोरि मोरि मनको मरोरें बकमाल हाय,
ऐसेमें दयाल नै न छाल घर आवैरी
घन न गजाली है बकाली नां रमाली फिरें,
जुगनु जमाति सों बिराली भटमालकी,
धुरबा न दौरे ये चलाचल सुरंगनकी,
मुरवा न सोप पाति तीखे सुरसालकी,
सुकवि गुलाब मोनि चातक नफीन जाल,
दादुर पुकारे ना दुहाइ जेनप्रालकी,
मान गढ मोरिबेको काज बाज साज साजि,
पावस न आई फोज मेन महिपालकी

१

२

गुलामी.

(तुलसीस्तुति.)

अष्टादश पुराण चारि वेद मत शास्त्रनको,
ग्रंथनि सहस्रमत रामवश वै गये;
पापको समूह कोटि कोटिन सिराने धर्म,
राजस महानके कपाट द्वार दै गये;
भणत गुलामी धन्य तुलसी तिहारी वानी,
प्रेमसानी भक्ति मुक्ति जीवन सुकहि गये;
योग सुख, ब्रह्म सुख, सुरलोक सुख भोग,
सुख एते सुकृत गोसाईं छटि लै गये.

१

गुलाल.

(विरह-व्यथा.)

गौन हृद हौ न लागे, सुखद सु भौ न लागे,
पौन लागे विषद, वियोगिनके हियरान;
सुभग सवादिले सुभोजन लगन लागे,
जगन मनोज लागे योगिनके जियरान;
कहत गुलाल बन फुलन पलास लागे,
सकल विलासनके समय सुनि हियरान;
दिन अधिकान लागे ऋतु पतियान लागे,
भान लागे तपन सुपान लागे पियरान.
कैसी अलि राजे अलि अवलि अवाजे,
आजु सुमन सुमन राजे छिन छिन छुकेयै;
कहत गुलाल औ रसालपै न सुख जाल,
बोलत विशालतेन भोगत मरुकेयै,
धीरको धराती छाती कौन अबलाकी अब,
करिके कलाकी कोकिलासो निफुकेयै;
जलथल गंजन सरस रस भंजन,
सुमानकी प्रभजन भंजनकी झूकेयै.

१

२

गोकुल.

(श्रीम भौर दार्तिका संवाद-कुंडलिया)

- रसना नोकरकु कहे, सुनियो दरन मुँजान,
मन मगरुबी छोडके, रखो हमारा ध्यान
रखो हमारा ध्यान, नहिं तो दूर करावुं,
मुजकुं केती बेर, उलटकी मुलट फिरावुं
कहे गोकुल करजोर, बैठके नाहीं स्वसनां,
सुनिये दरन दिवान, नोकरकु कहेवे रसना १
रसना हसता छोडवे, कहेवे दीनदयाल,
फोज पढी तुज घेरके, बेठी बढी शियाल
बेठी बढी शियाल, जानजी उलटी ठेकु,
मत मूले मनमाहि, काटके दूरहि फेंकु
कहे गोकुल करजोर, बैठके नाहिं स्वसना,
कहेवे दीनदयाल, छोडदो हसना रसना २
बहेकी बकवा क्या करे, तुजमें एब अनेक,
भागो तूटे खिर पडे, रहे जबछे एक
रहे जबछे एक, नोकरी करे हमारी,
जाना जीकी संग, प्रीति नहिं खरी तुमारी
कहे गोकुल करजोर, अरे प्रिय मित्र विवेकी,
तुजमें एब अनेक, कहा करे बकवा बहेकी ३

गोख.

(श्रीकृष्णविरह-कवित्त)

बेठे दिग आइ जदुराइ मुसिकारि बात,
मेवकी चलाइके अनाइ मोसों रति हे,
हाथ गहि लीनो हठ कीनो उर लागिबेकों,
मेन रूख दीनों वे अधीनो आली अति हे,

गोख कवि काहूं कही रसकी पेहली तब,
 सोहे मोहि तेरी मेरी भई ऐसी गति हे;
 मन कहे मान दाह तन कहे भैटिवाहि;
 नेन कहे सोहें चाहि लाज कहे मति हे.

१

गोप (पहिला.)

(समश्यापूर्ति.)

लोल कर मच्छ कच्छ गहिकें न छांडे चित्त,
 हीधर वराह बौध बैरी श्रुति धामके;
 नेही रिपुगंजन नरसिंह छलन छली,
 बलि भृगु राम मदनाशक तमामके,
 ब्रूमत झुकत बलराम राम व्रत्तधारी,
 कल्किसे करैया प्राण पाम परभामके;
 गोप कवि धर्मनतें एते अवतार पेखे,
 व्रषभान नंदनीके नेननमें श्यामके.

१

मनको हरत रंमा थहरत हय होत,
 एंड मान ढावे गज जोती मणि गाइयै;
 वृंद सुखदानी पारजात सील सुरभीतें,
 सीतल प्रकाश इंदु लोलमां भमाइयै;
 ब्रूमे मद दर्द जानि वैद मारे गरल ज्यों,
 वसुधा सुपेत कंबुकोण धुनि ठाइयै;
 गोप कहे काहे कृष्ण सिंधु मथ किन्हो श्रम,
 चौदेहु रतन राधा नेननमें पाइयै.

२

असुर समूह सेना व्यूहपद चूर चूर,
 सुरन कर सूर छाव खेलत अनंदमां;
 अंग अंग भूखा सब जंग भवि धार धार,
 अम्र करी अंव कवि गोप ज्युं भनंदमां;
 रक्त वीज धोखे नैन रक्त ताकों चाट चाट,
 जीभ फटकारे चारे तिहूं लोक द्वंदमां;

कालीजूके कज्जलकी ललित ललाई सोम,
छाई नम मंडलमें भारगव चंदमां
कोकनकी कूके मुनि चौकत चकोरी चित्त,
अलज सिराने लाल सोवत अनवमां,
इंदीवर इंदसों निकास मधू तस कर,
औ लखकर कर गोप कजनके इंदमां,
आई दग अजनकों आजि काहे दुख देन—

३

एन अब नाम्बन सयोगनिन फंदमां,
कालिकाके कज्जलकी ललित ललाई सोम,
छाई नम मंडलमें भारगव चंदमां
ताल औ तमाल बाल फूल गिर शृंगनपै,
मलिकत है आतप अनूप अति मोरको,
सीतल सुगंध मंद मंद मारुत प्रवाह,
मेनको रिसैया धौ छकैया मधु चोरकों,
करि है बिहाल हाल कुंजकी लता न श्यामा,
श्याम सग छट मुख हंसनके सोरको,
गोप कहै फूलत सित कज गुल दखन,
प्रभाकर पेख चित्त हरल्यो चकोरको

४

कोकनकी कूक मुनि कोक मुरझाने लखि,
फंदमें फस्योरि पूर इंदीवर मोरको,
सीतल सुगंध मंद मारुत प्रवाहि कर,
कज यहरानो जान संवर कुजोरको,
बेन रस पीवन बरून दिस भानु होत,
गोप मोर धर्या हेरी ध्यान चोर चोरको,
तालके तमालनमें निशाकर प्रमामधि,
प्रभाकर पेख चित्त हरल्यो चकोरको

५

६

(विविध शृंगारवर्णन)

मृदुल मनोहरसें नवल अनूप आली,
पाय मुकि छेत करे नितही नवीने हे,
नेह वारि सींच सींच हारी हिम भान डर,
करि करि यत्न राखे अलीन अचीने हे,

होत हे अचंभा अति गोप खट ऋतुमांहि,
 आगे इन कवहू न ऐसे रंग कीने हे;
 नितप्रति देखतही मुधा होत इंदीवर,
 आज ये कसूंभि कंज कोने रग दीने हे. ७
 ललित लतानके पतानको वितान तन्यो,
 तालके तमालनमें नीको दरसात हे;
 धेरे धेरे घनश्याम घनश्याम तहां मेन,
 सेन मोर पीक हरी सोर सरसात हे;
 चपला चपल होय चमकत चहुं और,
 छूटत छटा गोप ललिता ललचात हे;
 तातें कहों बार बार सौतें वतरात प्यारी,
 तू तो इतरात इत रात वित जात हे. ८
 सरद जुन्हैयामाहि बैठे ब्रजचंद तहा,
 सीतल सुगंध मंद वात सरसात हे;
 कल्लिंद गिरनंदनी किलौल लोल फूलन,
 निहार नेह पीर ऊर्में उमगात हे;
 एरी ब्रजरानी मुखचंदको अमंद कर,
 कीजियै गवन मन माखन जनात हे;
 वे तौ तुतरात प्यारी वतरात वतरात,
 तू तो इतरात इत रात वित जात हे. ९
 जानत सुजान मन नांही न कहा जीवन,
 अजान जग जानो न दूसर सहाहि हों;
 येहि हिय सोच छिन छिन छवि छीजत औ,
 छूटत विरहानल झारन दहाहि हों;
 करि करि गुन गान मनहि मन मनन,
 बांधी विध रंच रंच स्वासाकों बहाहि हों;
 जोपें कहूं बीच गाहिक गहि लहि हे गोप,
 रावरो कहाहि पर रावरो कहाहि हों. १०
 चकोरिन काम कूटी गहि कोकन बधूटी,
 चोरनकी चाह टूटी वाम कमनीनकी;

मधू छक मन हूटी फर चलत चमूटी,
जलजन धमि छूटी पंकि अलीनीनकी,
मृग हेरत हे धूटी क्षस चाहत हे उटी,
वन मन फयनूटी घज नटनीनकी,
गोप स्यामा सब खूटी नभ छाली रव फूटी,
लाउन बहार छटी बाळ कंगनीनकी

११

नेननकी* सेननसों मैनको जगायो पुनि,
बेननसों चेन कर छीनो मन गसके,
असित भुजगनीसी छोर बैनी मृगनैनी,
झुकि झुकि कुच कचुकीके कसकसके;
चोरि चोरि चित मेरी हरि बुद्धि ठाडी भई,
सेजके समीप आय मंद मद हसके,
ता दिनहि तान चूही बेननसों नैन खुले,
गोप कहे छे तो गई नागनसी ढखके

१२

अवर मणि धंवरमें अवर न दिखात,
जलजन छै जलजल हुति धोरियै,
जलजमधि कोट कुल सारन सरिन न्है,
अन्न रसाळ रस नेननमें धोरियै,
बाचे बिधि बेद देव हरि देखत तमासा,
गोप गिर रानी दोष कौनपर दोरियै,
अवर अपर ना बधवर दिगंबरें,
पद्मगफी पृथ छै सुगांठ गठ जोरियै

१३

(कविकुल गौरव)

छाडयो खुबंश मणी तात सूर सुत जान,
स्थनठके चक्रकर नात हनो जिया,
सोहू मव मुन्यौ परबलके घमझीसों,
गोप निज गुन सरसावन सनाहिया,
सबही समान जान रे रे निपट निछज,
फान तोर फेर हजु कीनी तें पनातिया,

*नग्नसदृश गृह रीतिसें मात्र 'ह छ' व्यञ्जन है। उसमें स्वर मिलानेमें पद करना और पिछेमें मयोजना करणी इस प्रमाणसेही यह पद बनाया हुआ है।

काहे मतिमंद वरवंड खल जाने न तु,
मीनको शनीचर हों ब्राह्मण कनोजिया.

१४

(सम्मदयापुर्ति-सर्वया.)

चंपक कानन मध्य हरी पटमें शिशु देख विरंचहु भूल्यो,
औ छवि छांहि वखाननकों लखि शेषहुनै मनमांहि न हूल्यो;
सो कवि गोप कहै कसि जो, अनिलालन होय रह्यो अनकूल्यो,
भोर समै मृदु बल्लभको, मुख पावक पूज सुपंकज फूल्यो. १

कातिक कृष्ण महानिसिमें गहि, मौन अंकोललता झटकारे,
जो फल भूम परै तिनकों रवि, पुष्प मिले तब नेह निकारे;
नेह बिना जव शिशु कहै, छिनिमें जसही वह काज सिकारे,
तो कवि गोप कहै सिर चोलत, मुंडत संत जटा फटकारे. २

कानन कुक्कट कोक मराल रु, कूक तजे खग भोरमुखी है,
सीतल मंद समीर वहै, मकरंदहि चोर सुमेन रुखी है;
कुंजनमें जु गुलावनके, चटका सुनि दंपति होत मुखी है,
गोप कहै करि लक्ष सुपूरन. चंदहि देख चकोर दुखी है. ३

भोर चकोरनकी धुनि मार, मरोरत भोर दिखावत भैसे,
कोकिल कूकन हूक उठे हिय, गंजन खंजन खंजर जैसे;
गोप बिना ललना कलिना, रितुराज दिखावत है सुख ऐसे,
किसुक फूल बिना ढल कानन, श्रोन भरे नख नाहर कैसे. ४

चंद्रक चर्चित चंद्रमुखी, विंव जात जटी वन पूज निहारन,
गोप कहै फल अक्षत चदन, गंध सुदीपक लै कर थारन;
बंधुक फूलन लेन कियो कर, एक न एक लगी जु पुकारन,
ऐ चलि है चुरियां चलिआवरी, आंगुरियां जिन लाव अगारन. ५

शशि मंद समीर चकोर पिकी, मधु बैनन मैन जगावत है,
सुरभान उकेर सखी अहि फंद, सुकाग जटी दिखरावत है; है,
कवि गोप कहै पियको हित तोलन, कों तिय युक्ति चलावत
करि लै सुथरी पुतरी उतरी, चुचिकारि चुरी चटकावत है. ६

पल्लव लाल महा द्रुम डारन, सीतल मद समीर सुझूल्यो,
भ्रंगनकी अवली लखि गुंजत, औ मधु वर्ष तपे सुख भूल्यो;

माधव ताप तप्यो जब माधव, ता फल दर्श शरी अनकून्यो,
 गोप बहावतरी रुज देख, तुपार समूह सुपकज फूल्यो ७
 जलिता तन सेज समाज सजे, मधु छेलपि कजनमें जु रुदै,
 जलिजा जलि भूपित होत चकोरिनिके चित चेत सुसूर मुदै,
 रजनी रस मस्त भई छखि गोप, कर्षिदनमें ध्रुव पैज बुदै,
 पिय संग अहेरन पिंजरमें, चकवी नित चाहत चंद उदै ८
 सफरी बिच धारिन चाहतरी, मधु चोर चहे सुख रंच मुदै,
 सुकमारुत बिचन चाहतरी, जगमें कहि को मन छोन जुदै,
 मकरद गुलाल चहे निचुरे, यह गोप कहै हम पैज बुदै,
 सजनी तुम जानत हो जियमें, चकवी नित चाहत चंद उदै ९
 गर्मित जान पयोध अचें, वनको घटनद महामुनि ज्ञानी,
 रोस सग्यो विसराय सुबोधन, कों उरछें भरि अजुलि आनी,
 फोटिक भात करी विनती, पन मानत नाहि न रंचहु यानी,
 काहे बिलख करे मति फेरन, घूडत है करिरी कर पानी १०
 काहि तपौ वनमें मनरंजन, बैननको सुनके किम पूजौ,
 जो मन मानत होय न तौ कवि, पंडित हेर कहूं किन बूजौ,
 तापसके मतसों न मृपा, भव गोप गिरा करिकें नहि दूजौ,
 दोष नहीं वरपायतमें, घर नाहिन तौ तिय पीपर पूजौ ११
 मनमोहनकी मुरली धुनि श्रोनन, आवतही जमुना तटपै,
 कवि गोप कहै चित रच कहू न, दियो उरके उधरे पटपै,
 गहि द्वार दुहु करमों धरिकें, पगकंज सहेलिनकी कटिपै,
 ब्रजबाल उमग भट्ट घटमें, मधुली जल छाड चढी बटपै १२
 चरि ना युधि बैननसों मन मोद, भरी छव जान रही रतिया,
 जलिजा छवि छूटति गोप कहै, उठ आन गही पियकी छतिया,
 सरिता रस पूरनको दुख खोवन, फर्स खरी रतिकी बतिया,
 सित कंज खुले छखि ता क्षनम, अरुनोदय रोवत कोक तिया १३
 गति जान अहेरिनकी दबके, तरु पातनमांहि चकोर जुदै,
 जलिजा छवि छीन भई निकरे, मधुलोछिप कजनमें जु रुदै,
 पिय संग मनोहर पिंजरमें, छखि गोप सुमंचक कज मुदै,
 मनमै न उमंग निसा सुख सोचति, कोकिन रोवति सूर उदै १४

भोर समै मृगलोचनके, उर नाह सुलोचन विंव जु सालै,
 स्यों मनरंजन सूरतकी प्रति, मूरत मंजुल दर्पन झालै;
 गोप कहे निसमें जु कलाधर, विंव सरोवरमें जस चालै,
 ज्यौ जलजान चढे जन जानत, गोड चले परपात न हालै. १५
 गग तरंगनमें शिव वीर, जवैहि तज्यौ मुखमें न निभातौ,
 जातहि कृल भयौ सुतसो, ससि नारननै लखिके सुठमांतौ,
 गोप कहै गहिके निज लोक, चली मगमें करती सुत नातौ,
 वाझ मुनंद लख्यो नभ मध्य, पियेक छवी तनसों पय तातौ. १६
 निदित कोन तिया तियको, जगमें कुल लाज सुमान विशेषे,
 का विन जीवन जीव वृथा, कवि दुःख जु होय चकोरन लेखे.
 कामिनके मन काम बढे, निसमें कवि उत्तर गोप सुरेखे,
 वांझ सपूत विना अखियांन, कुहु निसिमें रवि मंडल पेखे. १७
 का जन ज्ञान विना रंगके, परिभाम कहो कव आनंद लेखे,
 गोप भयो गिरिजासुत सीस, कहां कटिके सु कहो कवि रेखे;
 कोकिनके हिये शोक मिटे, कव ईश ऋषीन अधर्म विशेषे,
 अवकुहू अधिरात समे, शशिमंडलमें रविमंडल पेखे. १८

(छप्पय.)

धर धुक्कत धुंव धार, जसत डंबर घन अंबर,
 सघन बिपन डुंगरन, दरिन्दर रहत दिगंबर;
 धरहु धीर जिन चढे, चढे दल दुरह पुरंदर,
 वक बिपक शित दत, धुंध मद अंध धुरंधर;
 कवि गोप भनत वन बेलिदुम, सरिता सिंधु घावत मिलन,
 चक चक्रवाक चक्रत चितेहु, अक ढक तकन चलन. १

गोप (दुसरा.)

(रनछोर याचना-कवित्त.)

चाहे श्याम चौदशिकों जांचे भूत भूतलके,
 चाहे नरनाहनकों जांचि घर आहे है;
 चाहे करि यत्न कोऊ सकल जहांन जांचो,
 चाहे पातशाह जांचि कोऊ कछु पावे है;

चाहे रतनाकरकों जांचे कवि गोप कोऊ,
 चाहे नागपुज जांचि कोउ धन लावै है,
 जाचे जो न जोलों महाराज रनछोर जूकों,
 तोलों मन धँखित पदारथ ना पावे है १
 कैयो नर नाह औ सुराह पादशाह कैयो,
 अमित अथाह रत्नसिंधु जग भ्वासा है,
 शेषतें दिनेश छगि चौदह भुवनपति,
 सिद्धि न समेत सिद्ध कैयक निवासा है,
 सयेंत विशेष हे सुरेश निधिनेश वृद्धि,
 देम्यो कवि गोप एक अजब तमासा है,
 ये हो बिम्बनाथ महाराज रनछोगग्य,
 राखरे विहीन कोऊ पूरत न आरा है २

(नोति-सचैया)

चारहु वेद पुरान अठारह, औ पटशास्त्र पदयो कबिताको,
 संगित आठि चतुरदश विषाह, होय पदयो पुनि सर्व कलाको,
 औरहु इल्म अनेक पदयो पर, यों कवि गोप वृत्तात हैं ताको,
 जो न पदयो नृप नीति नृपालतों, न्है नट ताल समग्र प्रजाकों १
 होय कहा कवि गोप कला पढैं, जो न कत्र करि जान्यों सहा,
 होय पुरान पढेतें कहा लख्यो, जो न पुरान वृत्तांत महा,
 जीतें कहा रन शास्त्र पढे पट, जो वर शास्त्र न्है न गहा,
 चेन्हे भेत्कों मर्म न जान्यों सों, वेद पत्रे सिधि होत कहा २

(सापेक्षिक आश्चर्यक प्रबंध)

होत जो न कृष्ण पक्ष मासके दु पक्षमें तौ,
 आवति सुषि न शुक्ल पक्ष सुखदानकी,
 होते जो न दूषण पदारथ प्रपचकेमें,
 होती तो न मान्य धर्मि भूषण विधानकी,
 होते कवि गोप जो न सूम सग्वार तोपें,
 होती जग कीरति न दानी नृप दानकी,
 होतो ना हलाहल जो प्रगट समुद्रतें जु,
 होती तों न महिमा सुषाके अवसानकी १

धर जो न होती तो सुमेरुको धरत कौन,
 शेष जो न होतो तो, धरा कौन धरतो;
 इन्द्र जो न होतो तो, समुद्रको भरत कौन,
 समुद्र जो न होतो तो, जल कौन भरतो;
 रावन जो न होतो तो, सीताको हरत कौन,
 राम जो न होतो तो रावन क्यों मरतो,
 दाता जो न होतो तो कवि ताको देतो कौन,
 कवि जो न होतो तो किरत कौन करतो.

२

ये हो कवि गोप मित्र दोष गुनवारी यह,
 रचना यथार्थ हे विधिके विधानकी;
 रहत विशेष बन्यो उसके कुजस एक,
 होत आई नेकी वदी समय प्रमानकी;
 जान्यो दुःसख औ सुगंधको विभेद ताहु,
 रिझ रिझ किनो कहा मान अपमानकी,
 देखो या जहां वीच होत जो न कपटी तौ,
 कैसे पहिचान होती सज्जन सुजानकी.

३

ये तो हेमरूप सुखदायक ल्गाय अंग,
 कंदुके सुजावे तन कौचिलो घनेरेये;
 ये तो कवि गोप रहे शीतल सघन छांह,
 छायाहू कियेपे खल छांह बिन हेरेये;
 येतो फल देत सदा दीनो फल लेत नाहि,
 फलहू दियेपै रहै निष्फल अंधेरेये,
 ये हो नरनाह दुहुं राखिये विवेक करि,
 कामतरु रैयत निकाम तरु चरे ये.

४

(सिंहान्योक्ति.)

ए हो उग्र नाद वीर सागर पराक्रमके,
 टेक नेक न्यायी. राजनीति उर धारिये;
 धर्म अवतंश निज वंश मृगराजके को,
 हंसलो प्रशंसनीय बिरद बिचारिये;

स्वादिक न व्ही हे कह दादमें तिहारी यह,
 याँत कवि गोप भ्रम दुसह निधारिये,
 जो सु करपल्लव बिहारे गजराज मुह,
 धेई कर पल्लवसों मेंढकी न मारिय ५
 पेरे मित्र मेरे तुम रहियो सदाइ स्वच्छ,
 कीज्यो ना अदेशो चित्त काह दुख दैमाको,
 कोऊ खल मलीन स्वभावके प्रभाव करि,
 अघम करे जो पूत बैसिक दुलहैयाको,
 तोपे मन भायो करो ऊषम घनेरे वह,
 सर्वसही टीजें छे प्रमान धर्म नैयाको,
 न्यायक मुसरी जन पेहे न्याय गरीपर,
 व्हीहे मद रही तय बदीके करैयाको ६

(पुष्पद्वाराभ्योक्ति)

सर धन बागान मृनाल तरु बेलिनतें,
 जनित कली सु रहे प्रथम मुदे मुदे,
 पाइके पराग श्री मुर्गच फूलिषके समें,
 राखे निज मध्य रस चोरह रुदे रुदे,
 गोप कवि माळिनके हस्त गुणवंत व्हेक,
 आये नरनाह ऊर मालामें मुदे मुदे,
 व्ही हो जो मलीन रे प्रसून तौ गलीन बीच,
 पथी पग छतनतें फिरि हो खुदे खुदे ७

गोपाल.

(वसंत दर्शन)

तरुपत झारनमें फिगलित झारनमें,
 रचित पहारनमें दुनिमें दिगंत है,
 त्रिनिध समीरनमें यमुनाके तीरनमें,
 उदित अभीरनमें झुल झुलकंत है,

छाय रखो गुंजनमें अलिपुंज कुंजनमें,
गानमें गोपाल पेसो रूप दरशंत है;
फूलमें दृकृदमें तडागनमें वागनमें
उगरमें वगरमें वगरो वसत है.

१

गोपाललाल.

(पंच विकार विचार.)

प्रेमकी दुकानमें विचारी मैं पैंठिय तु,
कामकी दुकानसों सयान सब हारा है;
क्रोध कोतवाल जिन प्यादेको पकरि पाया,
दायाको दिवान जिन माया फांस डारा है;
मोहको गुमाशता जे मिले भले आदरसों,
मोह छवि गाहक जो वांचिके विचारा है;
ऐसे ऐसे वाणिजको लादि है गोपाललाल,
कंचन शहर पर पंचन विगारा है.

१

गोपालानंद.

(गोरक्षा-दोहा.)

भारत राखन जो चहो, चाहो निज प्रतिपाल;
तो तन मन धन दै अहो, रक्षो गाय गोपाल. १
आवत है लज्जा नहीं, तुम्है देखिये हाल;
बाधिक बधे नित गाय कह, तेरे सिंह गोपाल. २
क्या करनी निज आर्यकी, गयो भूली यहि काल;
जिन गैयन हित आपनो, दीन्ह प्राण गोपाल. ३

गोपीनाथ.

(समझ्यापूर्ति-सवैया.)

कृष्ण रिक्षावन एक समै, साजि साज चली वृषभान दुलारी,
श्यामल रंग रंग्यो सब अंग, गह्वो कटिपीत सुवख सुधारी;

पखमयूरको ताज कियो, अरु बंसिको टेर सुटेरत प्यारी,
 राधिका कृष्णको रूप धर्यो, तब श्याम भई छवि श्याम निहारी १
 कै पितु मातु सुतार्थिक त्यागिके, गैल गहो बन मंगल काजे,
 कै निज नारि उरोज ल्यो, पुनि भोग करे सुख सम्पति साजे,
 सार यहै जगमाह दुहुँ सब वेद पुराण कहै छवि धाजे,
 कै शिवभक्ति विरक्तन की, अरु कै जानिकै पग वैजनि बाजे २

गोविन्द (पहिला.)

(यांसुरी वर्णन-छन्द)

मुनत मदन मन लज्यो, तज्यो पतिव्रत व्रजनारी,
 सिध समाध छुट गई, वेत्त धुनि ब्रह्म बिसारी,
 पशु चरत व्रन चकित, शकित नममंद उढगन,
 शकित पवन पुनि जमुन, नीरगिरि चन्च्यो पुलक तन,
 पय पिवत न बालक बच्च सच, स्वग मृग रस बस प्रति मुदित,
 बंसी गोविंद व्रजचदकी, सो वृदावन बाजत ब्रिदित १

गोविन्द (दुसरा.)

(समयबल)

समय मेघ बरसेत, समय शिर होइ सब फल,
 तरुणा पावै समय, समयई आति देइ बल,
 समय सिद्धि मिलै, समय पंडितहु चूकै,
 समय प्रीति चित बटै, समय सरवरहु सूकै,
 कोउ द्वार जु आवै समय शिर, समय पाय गिरिवरहि गिर,
 गोविन्द अटल कवि नद कहि, जो कीजै सो समय शिर १

गोविन्द (तिसरा.)

(आतिस्वभाव)

बोझको लखन खात मृगजको डारि जल,
 गंगको पिलोय तोहु गंगामोहि फेर ना,

चंदनको काटि जिमि आगमें जरात तिमि,
सुंदर सुगंध देत वामें कछु देर ना,
वागमें विमल थल वोढ बहु वार सिंचे,
तोहुं शुभ छांड कदि करत है केर ना;
गोविंद कहत तैसें जाकी जैसी जाति तैसो,
तिनको सुभाव होत वामें कछु फेर ना.

१

शुरकों शिखायो किन रनहीमें त्रिविकों,
भीरुको शिखायो किन डरिवेमं देर ना;
साधवी को पास शिखी पतिव्रत पारिविकों,
कुलटा को पास शिखी छैलनकों हेरना;
दानिकों शिखायो किन दान देइवेकों सदा,
सूमको शिखायो किन बैन वर वेरना;
गोविंद सुकवि कहे जसी जाकी जाति तैसो,
तिनको सुभाव होत वामें कछु फेर ना.

२

सिंहकों शिखायो किन कुंजरकों मारिविकों,
चातुक शिखायो किन तोयदकों टेरना;
शुककों शिखायो किन वामिल वचन वर,
शिखत चकोर कहां चंद सामें हेरना;
साधुकों शिखायो किन सत्य पालिविकों सदा,
चौरकों शिखायो किन राहदार धेरना;
गोविंद सुकवि कहे जैसी जाकी जाति तैसो,
तिनको सुभाव होत वामें कछु फेर ना.

३

(शृंगाररस-नायिका भेदादि.)

सुंदर सरूपवान ओपत अमिर और,
सुधर चतूर सदा विमल विभायका;
जानत सकल कला आप अभिराम और,
उरमें उदार महा प्रेम सरसायका;
गोविंद सुहाग भरी भाव भरी भ्राजत है,
लाज भरी भाग्य भरी नेहकी निभायका;
मैन उपजायका रु दायका दयित सुख,
ऐसें गुन लायकाकों कीजे कवि नायका.

१

मोद भरी मैं भरी, अमित उद्धाह भरी,
 ओष भरी अगनमें गोविंद प्रभायका,
 भाग्य भरी छाज भरी सुंदर सुहाग भरी,
 प्रेम भरी प्रीतिमकों आनंद उपायका,
 हाव भरी भाव भरी राग भरी रग भरी,
 रूप भरी रस भरी गुनकी गहायका,
 प्रेम सरसायका रु दायका उमग उर,
 ऐसं गुन लायकाकों कीजें कवि नायका
 आजकी अनूप आलि बानक बिभात बर,
 बाहिको बिठोकी कवि करत है गौर है,
 तदपि न एके ताकी उपमा न सूक्ष्म है,
 सोचत सदाय चित्त सांभ अरु भार है,
 पेमी अग आभा तामें लोचन लगाय हसे,
 अजनही और और आस्यमें समोर है,
 ओर आमरन और अवर मुहाय चारु,
 और गति मति तेरी चितरनी और है
 सुंदर सुखद हावभावकी भरित भल,
 ओषत अपार अनुराग अकुपारसी,
 केलिमें कमाल कल्पलतिकासी राजत है,
 कठमें छात रम्य हीरनके हारसी,
 हसत यवन वर विलसत रात दिन,
 बोलत मधुर बानि गंगजल धारसी,
 गोविंद कहत ऐसी जगमें न जोरु होती,
 कविता न होती पती कवि होत आरसी
 रेनमें रमन करि सुख उपजात अति,
 दिनमें सतोषत हे उत्तम अहारदी,
 धाममें ललाम काम करिषें प्रधान सम,
 स्वामीकों सहाय करे पूत्र परिवारदी,
 जगत जलधि पार पाइयेमें पोत जैसी,
 सुंदरी न होत ऐसी विविध विहारदी,

२

३

४

गोविंद कदम तबें विधमें निगमी चनि,
पुरुष फिगत आप उंगनमें धार्यी.

५

(नायकाप्रति नायकाकी पत्रिका.)

चाहत मनेज तैमें मिथी मयमानदी,
चाहत बाफोर तैमें निनमाहि नद हो,
चाहत मगर तैमें मानगमें मैपनरी,
चाहत मदाय तैमें भंग रविह हो,
चाहत यों चाहत हे स्वातिनके बुदनरी,
चाहत माहि भौन पिह पिमानदकी,
गोविंद ददन तैमें चाहत तमेरा रन,
आनदमे फंद आगी तैमें मुरा नदकी.

६

(मर्यादा)

तो मुख नंद नकोमनमें नन, नैन नानि धर्यी सम जानो,
बार बदाहकों चहरी सम, दन नु दाडिम कीर प्रगनेा;
दोव उगेज नुना धदकों जिमि, चाहत मापिनि मांर दिदानो,
गोविंद त्यों तुमकों हम चाहत, पग्न प्रेम प्रिया भरि मानो.

१

(नायकाप्रति नायकाकी पत्रिका.)

त्यों जलनें बिलुगी जलकों, भिल्वो मन चाहत हे संसिया,
त्यों मधुकोपनकों मनमें नित, मोदनें मानत हे मखिया;
त्यों धन गाज अवाजनकों अति, चाहत हे चितमें शिखियां,
त्यों कवि गोविंद आप बिलोकन, चाहत हे हमरी अखिया. २
त्यों कनकौअन ठौरिनके बम, पाम ग्रहे किधौ दर धरेमें,
त्यों हम गोविंद आपके आधीन, आप बिना नाहि साम भेंगें;
सिंधुमें नावकें कृप बिना खग, कौनपे जाट बसेगे करेंगे,
आप बडे न विचारत हो हम, कौनहि ठौरपे जा ठहिरेंगे. ३
दीपकको जु पतंग चहे पर, दीप पतंगनको नहि जाने,
आदितको अरविंद चहे पर, आदित ना अरविदकों माने;
चंदकों चित्त चकोर चहे पर, चंद चकोरकों नाहि पिछाने,
गोविंद त्यों हम आप चहे पर, आप नही हमको उर आने. ४

मोर चहे मनमें धनकों पर, मोर नहीं धनके मन भावे,
पूगिनपे रति प्याल घरे पर, पूगि नहीं कमि ज्वालको व्याघ्रे,
चातक स्वातिकों बुँद चहे पर, बूँद न चातकके गुन गावे,
गोविंद त्यों हम आप चहे पर, आप न क्यों हमपे रति लावे ५

(नेह निभावन विचार)

नेहको नातों निभावनको सखि, नेहि करे सु धमे नहि होती,
देखिये प्रान पतंग तजे निज, प्रेमहितें परि दीपक ज्योती,
सागर नीरतें ऊपर आइके, स्वातिकें बुँदको छीप लें देती,
त्यों मधुरे तजि वारम वासकों, गोविंद हस चुगे इक मोती १
ज्यों पापिहा धन धारि बिना कठि और न पान करे लखि श्रोति,
ज्यों रवि कीरनको तजिकें कवि, धज चहे नहि औरकि ज्योती,
ज्यों निख पायतें लाकरिकों तजि, हारिल पंखिनि और न दोती,
त्यों कवि गोविंद नेह निभावन, चुगत हस सदा इक मोती २

गोविन्दचन्द्र.

(दुष्टजन स्वभाव)

भानु तेज अपनी गतिको अरु, पावक तेज प्रचढ़ धनेको,
पकजहू तजि पंक निवास, विकास करै गिरि शृंगन नेको,
गोविंदचंद्र चले अचला महि, जाइ तले कवि छंद भनैको,
पै निशि सोवतहू सपने मन, दुष्ट तजै नहि दुष्टपनेको १
शूकर नाहि तजै मलको भखु, वायस आमिख भोजन नेको,
कूकर अस्थि न चर्म सियार, न पन्नगहू विपदत सनेको,
शोणित पान तजै नहि जेफ, कहै कवि गोविंदचन्द्र गिनैको,
तैसेहि क्रूर कुचालि महा खल, दुष्ट तजै नाहि दुष्टपनेको २
विष अमृत कायर शूर बनें, वायस शुभदायक युक्ति बनेको,
निज चालिहु छाडि भुजंग चले, प्रिय अग तजै सुमुखा अपनेको,
पावक प्रकृति बिसारि रहै, धन आइ मिलै कबहु सर्पनेको,
सतसग प्रभाव बडो अद्भुत, किमि दुष्ट तजै नहि दुष्टपनेको ३

रावण सीय लड़ हरिकें पुनि, मान कियो शुभ चित अपनेको,
 वालि भुपाल अनीति करि, पारि प्रीति करि पाद दर्शन नीको,
 गातम नारि विचारि तरी, करि पाप परिनि श्राप मुनीको,
 शरणागति पाद तिरे गिरि, किमि दुष्ट तज नहि दुष्टपनेको. ४
 केतक कोऊ करै उपदेश न, लेश हिये मन आवत नेको,
 जैसे हत्याहत्याके घटमें, मन बुद्ध सुधारस काहि गिनको:
 गोविन्दचंद्र किये विनानि नहि, मानत नेक विचार हनैको,
 धारि फिरे गति पन्नगसी जग, दुष्ट तजै नहि दुष्टपनेको. ५
 जान तजै नहि जानि महानग, ध्यान तजै नहि ध्यान खनेको,
 लंपट वाम न दामहि मृग, न रामहि गोविन्दचंद्र क्षणे को.
 शूर तजै नहि शूरता धर्म, न कायर प्राण प्रमाण घनेको:
 सज्जन सज्जनता न तजै अरु, दुष्ट तजै नहि दुष्टपनेको. ६
 ज्ञानको सार संहार कहै शुभ, नीत पुनीति कहै सवनेको,
 भवकूप परे मति हिन निटे बटु, पाप करे अरु दुख सजनेको;
 चारौ यतन करि शुद्ध करै तो, प्रहार करै खर दुष्टजनेको,
 ढड प्रचंड विना कबहुं पर दुष्ट तजै नहि दुष्टपनेको. ७

गंग.

(अकबरप्रति उपदेश-सवैया.)

गग तरंग प्रवाह चढ़ै अरु, कूपको नीर पियो न पियो,
 आनि हृदये रघुनाथ वसे तव, औरको नाम लियो न लियो,
 कर्म संजोग सुपात्र मिले तो कुपात्रको दान दियो न दियो,
 (कवि) गंग कहै सुन शाह अकब्वर, मूरख मित्र कियो न कियो. १
 तारेकि जोतमें चंद्र लुपे नहि, मूर लुपे नहि वाटर छाये,
 रन चड्यो रजपूत लुपे नहि, दाता लुपे नहि मागन आये;
 चंचल नारको नैन लुपे नहि, प्रीति लुपे नहि पृष्ठ देखाये,
 (कवि) गंग कहे सुन शाह अकब्वर, कर्म लुपे न भभूत लगाये. २
 घौस लुपे तिथ वार घटे, अरु सूर लुपै अति पर्वको* छायो,
 देखि मृगेद गयंद छिपै पुनि, चंद्र लुपै जु अमावस आयो;

- पाप छुपै हरि नाम अपैं, कुलकान छुपे हें कपूतको जायो,
 (कवि) गंग कहे सुन शाह अकम्बर, कर्म छुपेगो न छुपो छुपायो ३
- बाल्यें ख्याल चढेसैं विरोध, अगोचर* नारसैं ना हसिये,
 अनसैं लाज अंगनसैं जोर, अजानत नीरमें ना धसिये
 बैलकु नाथ घोडेकु लगाम, मतगको अकूरसैं फसिये,
 (कवि) गंग कहे सुन शाह अकम्बर, कूरसैं दूर सदा बसिये ४
- जह कहा जाने मइको भेद, कुमार कहा जाने मेज अगाको,
 मूढ कहा जाने गूढकी बातमें, भील कहा जाने पाप लगको,
 प्रीतकी रीत अर्तति कहा जाने, भैंस कहा जाने खेत सगाको,
 (कवि) गंग कहे सुन शाह अकम्बर, गद्द कहा जाने नीर गगाको ५
- ज्ञान घटे कोइ मूढकी सगत, ध्यान घटे बिन धीरज लाए,
 प्रीत घटे परदेश वसे अरु, माच घटे नितही नित जाए,
 शोच घटे कोइ साधुकी सगत, रोग घटे कुछ औखद खाए,
 (कवि) गंग कहे सुन शाह अकम्बर, पाप कटे हरिके गुन गाए. ६
- पावकयुं जल बुद निवारन, मूरज तापकु छत्र कियो हे,
 व्याधिकु वैद तुरंगकु चाबक, चोपगकु प्रभु बढ दियो हे,
 हस्ति महा मदकु क्रिय अकुर, भूत पिशाचकु मत्र कियो हे,
 ओखद हे सबको सुखकार, स्वभावको ओखद नाहि कियो हे ७
- चचल नारकी प्रीत न कीजिये, प्रीत किये दुख होत है भारी,
 काल परे कबु आन* वने, कबु नारिकी प्रीत हे प्रेम कटारी,
 लोहको घाव दवासैं मिटे, अरु बितको घाव न जाय बिसारी,
 (कवि) गंग कहे सुन शाह अकम्बर, नारिकी प्रीत अंगारसैं मारी ८
- गर्जसैं अर्जुन हीज भये, अरु गर्जसैं गोविंद घेन चरावे,
 गर्जसैं ध्रुपदि दासि भई, अरु गर्जसैं भीम रसोई पकावै,
 गर्ज बडी प्रय लोगनमें, अरु गर्ज बिना कोइ आवे न आवे,
 (कवि) गंग कहे सुन शाह अकम्बर, गर्जसैं बीबी गुलाम रिजावे ९
- रती बिन राज रती बिन पाट, रती बिन छत्र नही इफ टीको,
 रती बिन साधु रती बिन संत, रती बिन जोग न होय जतीको,
 रती बिन मात रती बिन तात, रती बिन मानस लागत फीको,
 (कवि) गंग कहे सुन शाह अकम्बर, नर एक रती बिन एक रतीको १०

बासके संग तो नाक दियो, ओर आंख दियो जग जोवनकुं,
हाथ दियो कछु दान करनकुं, औ पांड दियो पृथि-फेरनकुं;
कान दियो सुननेकुं पुरान, औ मुख दियो भज मोहनकुं,
हे प्रभुजी सब आढ्यो दियो पन पेट दियो पत खोवनकुं. ११

मात कहे मेरो पूत सपूत है, बेनि कहे मेरो सुंदर भैया,
तात कहे मेरो हे कुलदीपक, लोकमें लाज अधिक बधैया;
नारि कहे मेरो प्रानपति, औ जीनको जाके में लेउ बलैया,
(कवि) गंग कहे सुन शाह अकब्बर, सोई बडो जाके गांठ रुपैया. १२

प्राख पराजनके जरमें, जनको जर संचके काम न आवै,
प्राख पराजनके तपमें, जनके तपसैं अघ दूर न जावे,
काह कहूं अन भूपनसे, जिनसैं अरि ठड थरक न जावे,
दाम दहो तिनके कहे गंग जहां घर मंगन मान न पावै. १३

नीति चलै तो महीपति जानिये, धीरमें जानिये शील धियाको,
काम परे तब चाकर जानिये, ठाकुर जानिये चूक कियाको;
पात्र तो बातनमाहि पिछानिये, नेनमें जानिये नह तियाको,
गंग कहे सुन शाह अकब्बर, हाथमें जानिये हेत हियाको. १४

(सज्जन दुरिजन-कवित्त.)

धन देवे धाम देवे बातको विश्राम देवे,
राजकी लगाम देवे ऐसो प्रिय देख्यो हे;
समय अनुकूल रेवे भूलथाप नहि देवे,
निष्कपट न्यायी पट्र कूपरन छेक्यो हे,
बात गुप्त राखे दाखे बोल ना कही उथापे,
प्रकृति पिछानी जानी लायक यों लेख्यो हे;
कहत है कवि गंग सुनो मेरे दिलीपति,
समयपैं सीस देवे ऐसो कोई देख्यो हे. १

अकारण क्लेश करे इरषामें अंग जरे,
रग देखी रीझे नहि दृष्टिदोष खडो हे;
आपको न कर काज परको करे अकाज,
लोगनकी छांडी लाज असूयामें अब्यो हे;
मन बानी काया क्रूर औरकुं संतावे शूर,
काम क्रोध हो हंजूर बिधिने क्युं घड्यो हे;

कहत है कवि गंग शाहनके शाह शरा,
दुनियामें दुःख एक दुर्जनको बडो है २

कुपात्रकी प्रीत कहा खात बिन खेत जैसे,
प्रीति बिन मित्र वाकु चित्तहु न आनिये,
मति बिना मर्द ओर नूर बिन नारी कहा,
अर्थ बिना कवि वाकु पशु ज्यों प्रमानिये,
तोया बिन फोज कहा हस्ती बिन होदा जैसे,
द्रव्य बिन देवे वान देव करि मानिये,
कहे कवि गंग सुनो शाहनके शाह शरा,
आदमीका तोल एक ढोलमें पिछानिये ३

प्रीतिके लीये पतंग प्रान देत पलमाह,
पावत है जोति जहा तहां चलि टूटि है,
प्रीतिहीके लीये मृग मानत है मनमाह,
मरिबेको नाद सुनि आवे अति तूटि है,
प्रीतिहीके लीये मृग कैतकीमें जाइ परे
लावत न जिय जोपे होत पर कूटि है,
परम प्रवीन बहेके प्रीति छोडयो चाहत हो,
प्रीति तेहे प्रान सग छूटे प्रान छूटि है ४

कछरको खेत कहा कपटीको हेत कहा,
बेदया बिसवास पैसैं कैसे पतियाइयें,
आगकी भंगारी कैसे फूसमें पसार राखो,
पप्परकी पूतरीसैं कैसे पतराइयें,
काठको समरसरें कोन देश जीत आये,
रांगके रुपैयेसंतो कैसे बुधताइये,
सुनहो गंडु गड्डु गंडुके गढैये कवि गंग,
जैसे गुनी ताको गेदपें न बुढाइये ५

(मूख-दु ख-मूछणा)

मूखमें राजको तेज सब घट गयो, मूखमें सिद्धकी बुद्धि हारी,
मूखमें कामिनी कामसों तज गई, मूखमें तज गयो पुरुष नारी,
मूखमें और व्यवहार नहि रहत है, मूखमें रहत कन्या कुमारी,
कहत कवि गंग नहि भजन भन पडत है, चारहि वेदसैं मूख न्यारि १

(प्रबोधक-छप्पय.)

मोर मेरु पर चुगै, चुगै हंसा जल सरवर,
 सिंह सकल बन चुगै, चुगै पंछी सब तरवर;
 गजकदली बन चुगै, चुगै पाताल भुजंगम,
 मच्छ कच्छ सब चुगै, चुगै घर बंधे तुरंगम;
 जीव जंत सबही चुगै, वाकि गाठ क्या गर्थ हे,
 चिंता मत कर निश्चित रे, पूरनहार समर्थ हे. १

छप्पर रेंड छपाय, तबे तरु कौन कटावे,
 खरतें व्हे संग्राम, तेजियां कोन चरावे;
 लसन सुगंधित होत, कोन केसरकों बहोरे,
 वेस्यातें घर चले, कोन कुलवंती खोरे.
 जो होय तमाशा कागतें, तो बाज कोन शिकारथें;
 जो काज कपूताथें सरे, तो कोन सपूता पारथें. २

(विधि वियोग-सवैया.)

नृप मार चली अपने पियपें, पिय नाग डस्यो दुखमें परिहूं,
 परदेश गई बनसोइ ग्रही, मुहि वेच दइ गनिका घरहूं;
 सुत संग भयो जरबेको चली, जलपूर भर्यो निकसी तरिहूं,
 महाराज कुमार अहीर भई अब, छाछकों सोच कहा करिहूं. १
 सोचत जात सबे दिन रात, कछू न सुहात कहा करिये,
 इत व्याकुल नेन परे नहि चेन, हिये महि मै न हिये जरिये;
 इत सोचत लालनको जियरो, इत लाज महा कुलकी धरिये,
 जरिये मरिये भरिये रसके, बिधि एसि लिखी तो कहा करिये. २
 दुख दूनो भयो निस बासरतें, अलि रेन दिना दुख क्यों धरिये,
 सूर सुकावत हे उतके, उत चंद्र उते उतके जरिये;
 गुन टूटिके कर नाव चलयो अब, खेबटियां बिन क्युं तरिये,
 जरिये मरिये भरिये रसके, बिधि एसि लिखी तो कहा करिये. ३
 जा दिन कंथ विदेश चले, गलहू न लगी न परी चरनां,
 ता दिनसैं तन ताप रह्यो, मन झूर रही पियको मिलनां;
 भूल गई सुख फूल रह्यो, दुख नेन ल्यो गिरिको झरनां,
 कवि गंगाकि नार विचार करे, पियके बिछेरें भलो मरनां. ४

(समश्यापूर्ति-शृंगाररस-सवैया)

मई^१ अचला रस भेद न जानत, सेज गई जियमाहि ढरी,
 रस घात करी जच चौकि चली, तब जायके कंधने बाहि धरी,
 उन दोननकी भग भोरनमें, फटि नाभितें अंबर छूट परी,
 फर दीपक कामिनी सांप टियो, तिहि कारन सुंदरिहाय जरी १
 सोल सिंगार सजी अति सुंदर, रेन रमीसो पियासग रानी,
 ऊठ प्रभात मुसलानुज घोवत, टीकि म्विसी हथेरी लिपटानी,
 तामघ चित्र हतो गजराज, अजीबिष धूषण काहु पिछानी,
 (कवि) गग कहे सुन शाह अफम्वर, इबत हाथि हथेरिके पानी २
 जा दिनतें जदुनाथ चले, बज गोपुन मधुरा गिग्गिरी,
 ता दिनतें प्रजनायिका सुंदर, रंपति अपति कंपति प्यारी,
 बाहिके नेननकी सरिता भई, (जेमे) उकसीस चले जल भारी,
 (कवि) गग फहे सुन शाह अफम्वर, ता दिनते जमुना भई फारी ३
 जा दिन फंय विदेश चले, सखि ता दिनमे बहु छागत जीको,
 अग शृंगार अंगारसें छागत, मानुनिषे मन छागत फीको,
 मेज समे कमला भई व्याकुल, सीस रणो छटकी तरुनीको,
 (कवि) गग कहे सुन शाह अफम्वर, नेनके नीरमें भीजत टीको ४
 नीचें निहार हो नागरी म्हावरी, ऊंच दिखि आसमान फटेगो,
 इंदर लोकमें होत हलाहल, सूरज चद्रको तेज घटेगो,
 राख छार विरागि बनि नर, रामहि राम स्वभास रटेगो,
 गग कहे हम यों हर छागत, तेरे लिये करतार छटेगो ५
 बेठि हुती प्रपमानमुता तहां, दस्तिका एक अचानक आई,
 सोच किये निन बोल उठी, सखि कान्ह बिदावनमांहि बुलाई,
 कान सुयो नहि आख देख्यो नहि, कान्ह कहा बिजिया फल्यु पाई,
 पेसि हसी रखि जानि पहे हम, पानिम आग लगावे छुगाई ६

१ इस कवित्तमें मुग्धा नायिकाका बणन है अकबरने गगको पूछाया कि सुंदरीका हाथ किस कारनसें जरा, जिसके जवाबमें ये सवैया कहाया-

२ (दोहो) सख मदियनको नीर है, उज्ज्वल रूप निदान

शाह पुछे कवि गगफ, जमुना क्युं भई प्याम १

कौन घरी करि है विधना मन, रूय सियां दिलदार बुबीनम,
 हस्त अनंद तबे सजनी, अज बागे बहार गुलाबन चीनम;
 प्रीतम प्यारे मिले जबते, दर सौहबत यार निगार नशीनम;
 सूरत मित्रको चित्त बसी, कवि गंग चुनाचेकि नक्स नगीनम. ७
 एक समे घरसें निकले, सखियानके संग वह सांवल मूरत;
 होशम रफ्त न मंद बदस्त, शुदेदिल मस्त जीदीदन सूरत;
 मुसकाके मोहि तन ताकि दियो, तिरछी अंखियाते कहं कह पूरत,
 गमजे ब नाज नमूद सनम, बेताब शुद तन मन ब मरूरत. ८
 लखि पायन पायल मायल दो, शुभ लंकते दुर निशंक गयो,
 जह रूप नदी त्रिवली तरिके, करिके अति साहस पार भयो;
 कवि गंग कहे बटपार मनोज रुमावलिसें ढग संग भयो,
 कुच दोनो सुमेरुके बीच भट्ट मन, मेरो मुसाफिर लूटि लियो. ९

(शृंगार-कवित्त.)

प्यारी रसाल रातकी न जानुं कोन जातकी,
 आली अनेक भातकी सो भाव भेद दे गई;
 चुरी हरि हैं हाथमें सखी सहेली साथमें,
 बिधु बिधु जमातमें सो मोज मोज के गई;
 सिंह लंक कामिनी दमक देह दामिनी,
 स्वरूप रूप मामिनी दयाल उच्छतें गई;
 जराक नेन जोरते कचाट भवां मोरके,
 चटाक चित्त चोरके कपाट पाट दे गई. १
 राति बाँस रहत हिलेई मिले दोउ पिय,
 फिरि फिरि याहीते परेखो कीजियत हे;
 कहे कवि गंग जेसें पानीन पुखान पुरे,
 पुरइनि पातन कदापि भीजियत हे;
 रूपवंत मानस रसीली आखे लागति हैं,
 याते कहा कछू तुम्हे, दोष दीजियत हे;
 जोइ जोइ रुख देखि बेठिबो छिनकु छांह,
 सोइ सोइ रुख संग लाइ लीजियत हे. २
 खंजनसे नेन तन तात तपनीय एन
 मेनसी हुलास मुख बेनन सुहात हे;

अटबेली अटकेँ सु आह रही नेननमें,
 दसन गमिनि वृति य्यों य्यों मुमिकात हे,
 चचर चकित मानो चोके मृग छोना ताको,
 एल मिटियेको खरी मरी अकुलात हे,
 नेनह न आवे नदि भूपन न भावे गग,
 पहर पहर राती फहर सी जात हे

३

(धीर, शृंगार-छप्पय)

मांग खगा लट सांग, चक्र फेउ चद हर गर,
 अति तिखन मर पय, धनुष मकुटी मुख ऊपर
 नयन चपल हय सच, चार गज गग धरति कुन,
 चरीय ग्रन गति जुद्ध, गात कमि प्रेम कवच रुचि,
 क्षिमिति ध्वज पटकन घमन, घजत नाद बिछिया पगन
 चनि कुन निपसी सुमन चटी, भये याम देखत मगन

१

(अनुषणन-कवित्त)

ओपी फरमारते चन्चो हे दल साजी धीर,
 धीर ना धरत गग गानियेको भीम है,
 सुम होत सामाही घजत दंत आधी रात,
 बीमगे पहरमें वहर दे असीम है,
 फहे कवि गंग चौधे पहर मतावे आनि,
 निपट निगोरो मुहिं जानिके अनीम है,
 घादी शीत कफा कापै उर हय अंदफा,
 लघुशकाके ओते होत लंकाकी मुहीम है

१

(मधेया)

गुजत भग निकुजके पुंज, सरोजन सौरभकी सरसाई,
 गगहि प्राणपतिको पयान, भयो केहि भानि वियोग दर्शाई,
 चोखत कोकिल बाद बसत, बसतते नासर सो न बसाई,
 चेतकी चादनिके चित ये कहु, कैसेकै छोड़ैगो काम कसाई
 निशि नील नये उनये धन देखि, फटी छतियां भजबालनकी,
 कवि गग तना वृति क्षीण भई, सुखरी छवि देखि तमास्नकी,

१

दशहं दिशि ज्योति जगाजग होत, अनूपम जीवन जालनकी,
मनोकाम चमूकि चढी किरचै, उचटे कल द्यौतके नालनकी. २

(शाहजहां-वीरता प्रशंसा.)

(कवित्त.)

लथ्थ पथ्थहथ्थ सोहै सुंदर सिंदूरयुत,
गहे रविरथ्थ मद चारों और वरखे:
ऐसे हे उतग ए मतंग शाहजहांजूके,
अगन सुमेर व्हैके अगनके सरखे,
ऐरावतके हे बेटे दिगाज लगत चेटे,
धूरिसौ धुरेटे देखि रोम रोम हरखे,
चारों चंपनके अरि बड बड कंपे वोहो,
काज सिंधु जंपे ले कल्पतरु करखे. १

नोबत बजत चढि चले दिलीपति तब,
परि हे विपत अति रघु राजधानीमें,
हय गय खुरतार सुंदर उडत द्वार,
हरत पहार हेन मानी काहु मानीमे,
मेरु गयो आमलको चल गयो शेषनाग,
शाहजहां कूच कियो यह जिय जानीमें,
कमठकी पीठ फटी टूक टूक भई तूटे,
नाव केसे तखता तुरत फिरे पानीमें. २

बजत निसान शोर दसहू दिसान भयो,
ठोर ठोर कंपे और भूधर गरुरसों,
चलत छितीत छिति व्है गई छपासी छांहि,
छाह गयो अवर बिलाई गयो सूरसों,
शाहजहां साहब दिलीसको चढत दल,
म्लान भयो नरपति भूतलकी धूहिसों,
धाव हय धमक धरासौ चपि चूर व्हैके,
उडि गयो कूरम सपूरन कपूरसों. ३

दोरे शाहजान और दलहून पारवार,
पखरे पवंगपर बढ जेब यारके,

हृदगिरि हेमगिरि गिरिजा गिरीस गिर,
 और गिर गिरे सो गिराये गजभारके,
 करवाफी कहा गग तर बात तितैं होई,
 सरधान पूजे परग्राह नव चारके,
 तुटी घीची घीची बल बल बोले बेला फूटे,
 परिधव चोट बोला होत तहिवारके ४
 शाह जहांगिरको सपुत शाहजहा चम्पू,
 सुंदर जहान सेप काट्यो चहू ओरतें,
 नाग भयो चुरमातें नागनके पाइनसौं,
 टाटे भरिनगर नगारनफी घोरतें,
 उड़ी खुरतार धार छाड़ रही अबरम
 छातसी हलन लागी क्षिति और धोरतें,
 डोस्त हे कुटलीकी ऐसे फनि मडली जो,
 पुढगीक होलत है पौनफी मफोरत ५

(खानखाना-प्रशमा)

धमक निसान मुनि धमक तुरान चित्त,
 चमक किरान मुल्तान धहरानाजू,
 मारु मरदान कामरुके करवान आवि,
 मेवारके रान हिंदवान आन मानाजू,
 पूर्वगान पक्षमाध पलटान उत्तगध,
 गुजरात देश अरु दखन बबानाजू,
 औरगान हसवान हेहलान रूमसान,
 खेळ मेळ खुरासान चढे खानखानाजू १
 नवल नवाब खानखानाजु रिसान रन,
 कीने अरि जेर समसेर सेर सरजें,
 मासके पहार समसान करि रखे शत्रु,
 कीने धमसान मुमि आसमान छरजें,
 सौनितकी धारसों चुवात चंद्रमासों धार,
 भारी भयो भेद रुद्रनको हा हा बरजें,
 न्यारो खेल बोलत फपाल मुंडमाल न्यारी,
 न्यारो गजराज न्यारो मृगराज गरजें २

नवल नवाब खानखानाजू तिहारे डर,
 वैरी विडराने धुनि सुनिकै निसानकी,
 तिनहूकी रानी फिरै थकी विल्लानी सब,
 छूटी रजधानी सुधि खानकी न पानकी;
 तेहु मिली करिन हरिन मृग वानरन,
 तिनहूतें रक्षा भई उनहीके प्रानकी,
 सची जानी करिन मृगन मयक जानी,
 भवानी जानी केहरी कपीन जानी जानकी. ३
 सात सिध सात दीप थहर थहर करे,
 जाके डर तूटत अनूटे गढ रानाके,
 मेर मरजाद छांडि कांपत कुवेरहीसे,
 सुनिके निसान डंका संका लक थानाके
 धरनी धमक कसमसक कसक गई,
 सूके वसुधाके खंड खंड खुरासानाके,
 सेसफनी फूटी तूटी फूटि चक्रचूर भये.
 चले पसरखानाजू नवाब खानखानाके. ४

(दानशाह-प्रशंसा.)

बाने फहराने फहराने घंटा गजनके,
 नाहीं ठहराने राव राने देशदेशके;
 नग भराने अरु नगर पराने सुनि,
 बाजत निशाने दानशाहजू नरेशके,
 कुकुभके कुंजर कसमसाने गंग भने,
 भौनके भजाने अलि छुटे लट केशके,
 दलके दरारहूते कमठ करारे फूटे.
 केरा कैसै पान बिहराने शिर शेषके. ५

(गंगके मृत्यु विषयमें सवैया.)*

सब देवनको दरबार जुयों, तंह पिंगल छंद बनाय सुनायो,
 काहुतें अर्थ कह्यो न गयो तब, नारद एक प्रसंग चलायो;
 मृतलोकमें हे नर एक गुनी, कवि गंगको नाम सभामें बतायो.
 सुनि चाह भई परमेश्वरकी, तब गंगको लेन गणेश पठायो. १

* कोई कहेंते कि यह सवैया गंगका पुत्र कमालने बनाया है.

गंगाराम.

(रागमाला-मभामूपण-कविस)

सज्जन अनेक तहा गुणको विवेक होत,
 ऐसी मनरंजन सभाम नित आइयै
 हास कच नूड विनोद नित आनन्दमें,
 हियमें हुडामके मधुर सुर गाइयै,
 अंग अंग फुरकानि मंद मुसक्यानि यहै,
 मन मानी जानि जिय रीझनसु पाइयै,
 गंगाराम कहै सभा भूपन गरथ यह,
 भूपणसु कट्ठमाल हियमों आइयै

१

(बीहा)

जस भूपन दूपन हरन, गुन समूह सुखधाम,
 प्रथ सभामभूपन मरम, चर्नत गंगाराम

१

(सप्तस्वर नाम स्थानानि-कविस)

प्रथम स्वरिज सुर दुतिय रिखम जानि,
 तृतीय गाधार नाद गुन अमिगम है,
 चौथौ सुर मध्यम कहत गुन नाटकते,
 पाचमो सुर पचम सुरस गुन धाम है,
 धैवतक षष्ठम रू सातवो निषाद सुर,
 नामि कठ सीस तन सुर नीके ठाम है,
 गंगाराम कहै सभा भूपन गरथमाहि,
 एहि सुर मात तिनके अनेक नाम है

१

(दाहा)

स्वरज रिपम गंधार मध्यम, पचम धैवत चारु,
 अरु निषाद ए सात सुर, गावै सब संसार
 प्रथ स्थान सगीत मत, मंद मध्य अरु तार,
 तीन धाम तीनों प्रगट, नामी गरो कपार

१

२

(सप्तस्वर, उत्पत्ति, भेद, गुण, समय इ)

मोरकी कुहक मो खरज सुर जानि गुनी,
 चातकके शब्दको रूपम सुर मानिये,

ढाग उच्चरतही गधार सुर लखि लीजै,
 कुरचकौ बौल सुर मध्यम प्रमानिये,
 कोकिल उचार सोइ पचम विचार जानि,
 हीसत तुरगम सौ धैवत पिछानिये;

धन गरजन सो निपाढ एइ सातौ सुर,
 गंगाराम कहत संगीत वै बखानिये.

१

सुरकी अलापनिमें आदि सुर सोइ धाम,
 सुरकौ विश्राम तहा मुर्खना बखानिये,
 जामे सुर सात फिरै ताकी जात संपूरन,
 लट सूर फिरै ताहि खांडवही मानिये,
 गावतमें पाच सुर फिरैं सुहं ओडव जू,
 एइ तीन भांति जाति रागकी प्रमानिये,
 गंगाराम कहत लहेजे संगीत ज्ञान,

ओर राग रूप सौ गुनीजन ते जानिये
 प्रथमही भैरो राग शिवतें प्रगट होऊ,
 मालकौस द्वितीय सुहर कठतै भयो,
 तृतीय हिदोल राग भयो ब्रह्मगातते सु,
 चतुरथ दीपक सौ भानु नेनतें उयौ,
 पचम कहत सिरी राग शेष भूमिहितै,

२

मेघ राग गाजत अकासहीते उनयो,
 गंगाराम कहत बिचारि हनुमंत मत,
 सुघर गुनीजन उपाइ गाइकै लयो.

३

भैरवतें धानी बिन बरद फिरात जात,
 मालकौस गायेते अगिन प्रजरात है;
 हिदोल अलापतें हिदोल झौटा लेत भैले,
 दीपकके गाये गुनी दीपक जु पात है;
 श्रीमै यह गुन गुनी प्रगट बखानंत है,
 सुखो सुखो हर्यो होत फिरिऊ लहात है;
 गंगाराम कहत मेघरागकी प्रभाव ई है,
 मेघ वरषत धनमाल मंडरात है.

४

भैरव शरद रितु प्रथम प्रहर जानि,
 मालवकोश चोथो जाम शिशिर मुनाइये,
 हिंदोन् वमत रितु प्रथम प्रहर मन्य,
 दीपधर्का प्रीपम जुगल जाम गाइये,
 श्रीका चोथे प्रहरमे हेमा दिन जानि गुनी,
 मेघराग धर्पा चोथो जामि चित्त लाइये,
 गगाराम एइ खट रागनको समें ऋतु,
 गायत सुघर दश दोषहि बचाइये
 हीन ताल ताल अरु काफ सुर सुरभग,
 वांछे भुव प्रीव मुख अंगहि डुलाइये,
 सुर भेद जाने धिनु कैसे मन मानो गुनी,
 गाइयो कपाल सुर मोहि न मुहाइये,
 समे धिनु गावे अरु ओर न पावे कुर,
 सुघर सगीत विनु और न उपाइ है,
 गगाराम तेइ न रम समुजत राग रूप,
 एइ दश दोष गुनी गावत बचाइये

५

६

(दोहा)

इह बिध कहे जु सत सुर, राग रूप समुजाइ,
 अवते कहु धनिता सहित, मुनि सजन मन लाइ
 देह बसन तन रूप रति, हाव भाव सुर जाति,
 भूपन भवन विचारि सब, सीस रागनी भाति

१

२

(भैरव रागस्वरूप-कवित्त)

शिवको स्वरूप शशि भाल सुरसरि जटा,
 सेतसे वसन मुहमाल नेन तीन हे,
 ककन उरग मृग चरम बिछोर्ना पर,
 सोहत सहज सिद्ध महा परमीन हे,
 धनी सगम ए सूर औही याकी आति,
 प्रातही शरद ऋतु गावत निति गवीन हे,
 धैवत है सुर ग्रह शिवते प्रगट होत,
 याकी नाम भैरव सु महा गुनी लीन है

१

(भैरव लच्छनकी पांचो रागनी-दोहा.)

भैरव वैरारी कही, मधुमाधवी बिचारि;
सैधवि बंगाली सुनो, यें भैरवकी नारि. १

(भैरवी, वैराटी लच्छन-कवित्त.)

सुंदर सुगोरी नेन अतही विशाल बाल,
बैठी स्वेत पट पर उंझलसी सारी है;
आंगी लाल पंचककी माल गरे पहिरकै,
बजावति ताल शिव रिझावति भारी है;
मध्य महीसुर ग्रह जाकौ गुनी जानी लेही,
मपधनि रिगमजु गायकै बिचारी है,
संपूरन याकी जाति सरद प्रभात समे,
रागिनी सुभैरवी या भैरवकी नारी है. १

कनक कनक करि नागिनसे छूटे केश,
अति गुन भरी बेस उरज बनायो है;
सुमन कल्प वृक्ष काननि धरति तिय,
कंचुकी सुसेत पिय रंग मन भायो है;
खेल्योइ चहत है पिहसग संपूरन,
जाति सरिगम धनि खरि यह पायो है.
सरद सुरितुमै पहर दिन अंग गुनी,
गावत अलापि नाम वैरारी सुनायो है. २

(मधुमाधवी बंगाली लच्छन.)

रतिकौसौ रूप रंग राजत मधुर बेन,
अधर स्वरूप तिय कुंदनसो तन है;
बसन जु पीत पिय प्यारी सब सुखदानि,
हसि हसि चुंवन करत पिय सन है;
कंठ भुजमै लैही रहति पिय संग नारि,
मपधनि सरिग जु जाति संपूरन है;
गावत सरद रितु प्रातहिमे मध्य ग्रह,
मधुमाधवीसौ पियसौ मगन है. १

मृग मट भाट मन मोहै रोभावत बाट,
 खाकिं बिराजी सु विभूति तन लायो है,
 जटा जूट करमें प्रिशूट जिये छविबंत,
 केसरसो भीनी सारी अति मन भायो है,
 संपूग्न जाति रोभावतसी बिराज रही,
 मरीगम पधनी खरीज गूह गायो है
 गावत सगद रिनु चौथो जाम दिन मध्य
 भगानी गुनीके मन आनंद बढ़ायो है

(द्वितीय मालकोश)

चतुर पुरुष कलि करत बघनिसग,
 धवल सुदेह तन बरन जु न्याम है,
 मरल मुगध हाथ छरीह बिराज रही,
 हिय कुरवनी गन मोतिनकी दाम है
 भयो कठ हरत प्रगट संपूग्न जाति,
 मरिगम पधनि खरीज गेह गाम है,
 सिसिर मुरितु रेन चौथे हीम हर गाइ,
 नायक सरूप मालकोस राम नाम है

(मालकोश पांचा रागिनी-दोहा)

टोडी गौरी गुनकारी, रंभावतीक कुभ,
 मालकोसको उर बसी, प तिय पांचो मुभ

(विविध रागिनी-कवित्त)

अतिहि मुमार नारि करत कराध भीरी,
 धोलत मधुर मुधानिघसी बचनमें,
 धवल मधुर श्याम कचुकी दिपति अति,
 स्वरि घनसारकी बनाइ सब तनमें,
 काम रस पागै खरी हरिन सुनावैं,
 वित्त भवन परिज अरु जाति संपूग्नमें,
 सरिगम पधनिसि सिर दिन दूजे जाम,
 टोडी नाम कहत सरस गुनियनमें

कोकिल बयन तन बरन सुदयाम गाम,
 सुतर सूक्ष्म नाद आब कलीकन है,

धवल बसन मुख दुति देखे चंद लज्जे,
विधि राचि पचिके बनाइ सुखदान है,
सरिगम पधनि खरिज गेह संपूरन,
शिशिर दिन चौथें पहर बखान है;
अतहीं सलोनी गौरी रागिनी बखानी यहै,
सुर समयौ विचारि गुनी जन मानी है.

२

बसन मलीन प्रानप्रिय विन तन खीन,
बिरहन बीन बैठी कदम तरु तरै,
भीज रही आंगी सब नेननके नीरझूतें,
दीरघ उसास लै लै हियमें हरबर,
छूटें बार बिरहकी पीर तनवे सभारि,
तनमें वियोग मन कैसे कै धरू धरै,
निस गम पनिषाद औडौ जाति सिसिरमें,
गुनकली प्रात सुनी सुनिये हर हरे.

३

बोलत बचन पिक बेनी मृगनेनी नारि,
सुंदरि चतुर अति राग रगलीन है,
कसुभी सुरग सारी शोभा सो दियत भारी,
धैवत भुवन धनि सरी गम कीन है,
कठिन उरोज अति अंग मृदु सोहत हैं,
चंदसो बदन कलहसं गति भीन है,
ललित सिसिरहुमें तीसरें पहरमांहै,
खांडौहुं कहत तीजें गावत प्रवीन है.

४

अति रस रंग लीन मानी रति प्रीतमसों,
दल्लिमलि गये अंग आंगी उर दरकी;
भरी है बिलास निस जागै एउनीदे नेन,
तूटे सब हार छूटे बार चूरी करकी,
नैन निकी छबि देखि अरुन कमल मोहै,
धनि सरिगम संपूरन है सिसिरकी;
निशि चौथे जाम गाइ धैवत सदनई,
रागिनी ककुभ जनु कला सुधाधरकी.

५

(दोदा)

सत्रह सत सबत सरस, चतुर अधिक चाटोश,
फातिक शुदि तिथि सप्तमी, बार सरस रजनीस १
सागनीर मु नगरमें, रामसिंध नृपराज,
ह्वा कविजन सब वयनसाँ, राजत सभा ममाज २
गगाराम तहा सरस, कीनो बुद्धि प्रकाश,
श्रीगोपाल प्रमादतै, यह शुभ समा बिग्राम ३

गंगादत्त.

(संयाकु कुट्टुप-कथित)

जहरकी सामु दुष्ट दुल्ही हठाहटकी
बिछीकी बहिन परपंच रूप साजी है,
नानी करियारेकी घतूरेकी ममानी,
पितियानी बन्धनागकी जहानमों बिराजी है,
कहे गंगादत्त यह पचावे घनप्रानी औ,
अफिमकी जिठानी बिप खोपरेकी आजी है,
माहुरकी मौसी महतारी सिंगियाकी यद,
तमाकु दइमारीकी किने उपराजी है, १

गोपालशरण.

(कुरंगाम्याक्ति)

बार बार मुख धनियोंका नहि देखता तु,
झूठी चाटुकारी नहि उनको सुनाता हे,
सुनता नहि तुं कट्टु वाक्य अभिमान सने,
पीछेभी फरापि उनके तुं नहि धाता हे,
खाता हे नवीन तृण तोभी तु समयमेंही,
सोता सुम्बसेही जब निठ फाल जाता हे,
कौन एसा उम्र तप तुने था किया कुरंग,
जिससे स्वतंत्रता समान मुख पाता हे ८

गुमान.

(विचित्र भूपती-कवित्त.)

दिग्गज दबत दबकत दिगपाल भूरि,
ध्रुविकी धुधेरीसों अंधेरी आभा भानकी;
धाम औ धराको माल बाल अवलाको अरि.

तजत परान राह चाहत परानकी,
नैयद समरथ भूप अली अकबरदल,
चलत बजाय मारु दुंदुभी धुकानकी,
फिरि फिरि फननु फनीस उलटतु ऐसे,
चोली खोलि ढोली ज्यों तमोली पाके पानकी. १

(सवैया.)

देश प्रवाहनकी सरिता सब, और वहें बहते सग्सानी,
फानन कोठि अगोठि कुचाचल, भार भरी धरती अकुलानी,
सूखम छांह सरूप भई, चित चाह नई निहिचें नियरानी.
शीतल आप पिये शशिमें पर, हीतलकी तब ताप बुझानी १

ग्वाल.

(प्रस्ताविक उपदेश-सवैया.)

कोल इज्जार करे कितने फिर, एकहु तो तिनमें निवहे ना,
होय सकै न रति भर काम, बिना बकवाद बवान रहे ना,
चौ कवि ग्वाल लखे जन लाख, पशु सम रंच विचारहि हे ना,
हे बिरले नर या जगमें, जो कहे सो करे व करे सो कहे ना १

(कवित्त.)

जिसका जितेक सालभरमें खरच उसे,
चाहियें तो दूनापें सवाया तो कमा रहै,
हूरसा परीसा नूर नाजनी सऊरवारी,
हाजर हमेश होय दिल तो थमा रहै;
ग्वाल कवि साहब कमाल इल्म सोबत हो,
यादमें गुसैयांकी हमेशां बिरमा रहै;

स्वानेकी हमा रहै न काहुकी तमा रहै जो,
 गांठमें जमा रहै तो स्वातरजमा रहै १
 दिया है खुदाने खूब खुशी कर ग्याल कवि,
 खाना पीना येना देता महा रह जाना है,
 केतेक अमीर उमराव बादशाह मया,
 फर गया कूच फिर लया ना ठिकाना है,
 हिलो मिलो प्यारे जान नरंदगीकी राह चलो,
 जीदगी जरासी तामें दिल बहलता है,
 आवे परवाना बने एक न बहाना याते,
 नेकी कर जाना फेर आना है न जाना है २
 आश कर आये ह मर्खि मनवारे मजु,
 उपवनवासी मुस्पुंज सरसावेंगे,
 गुंजत गुमान तज बाको सनमान कर,
 कर अपमान तो जरूर मुरसावेंगे,
 ग्याल कवि कहै तोर्म मूदुल मुगब दोहु,
 याहीको मुजरा यह जगमें बढावेंगे,
 परे प गुलाब गुल गालिब गुलोंमें यार,
 काटे तन छामे हो सा फेर नहि आवेंगे ३
 द्वारेपर झूठ पद्यवारे पर झूठ मुक्यो,
 दोहुन किनारे पर झूठ उ छहत है,
 अंगनमें झूठ औ दालनमाहि झूठ बसै,
 कोठे मांहि झूठ छत ऊपर बहत है,
 ग्याल कवि कहत है सल्यहनमें झूठे झूठ,
 सेननमें बेननमें झूठेही कहत है,
 हाथीभर झूठ जाके खरमें बसत सदा,
 ऊट भर झूठ जाके मूठमें रहत है ४
 चाहिये जरूर इनसानिफत मानसफों,
 नोबत बजै पै फेर मेर बजनो कहा,
 जात औ अजात कहा हिंदु औ मुसलमान,
 ग्यासों करि प्रीति तासों फेर भजनो कहा, ५

ग्वाल कवि जाके लिये सीसपै बुराई लई,
 लाजबी गमाई तासों फेर लजनो कहा;
 केतो काऊ रंगमें न रंगियो सुजान प्यारे,
 रंगे तो रंगेई रहो ताको तजनो कहा. ५
 आदरमें फरक परै न बहु बीते दिन,
 छिन छिन चाह बढै दिलकी सरस है;
 बैठबेकी बोलबेकी एकहीसी रहै रीत,
 जातें होत प्रीतकी प्रतीत सरबस है;
 ग्वाल कवि कहै खानपानको न टरै नेम,
 आगे रहो दानसो नसीबहीके बस है,
 चाहे दिन दस राखौ अथवा बरस राखौ,
 यापें एक रस राखौ जातें होत जस है. ६

(धनाक्षरी, कवित्त.)

बाज गजराज साच चिता फोज कामदार,
 राखिये जरूर ज्याते सबै राजकाज होय;
 भांड बहुरूपिया सरूपिया नचैयनकों,
 कांचनी कलवंतको आदर अपार होय;
 ग्वाल कवि कविनको राखवो सहज है न,
 हमे बाहि राखे ज्याके रेख लेख चार होय;
 गुनको बिचार होय, अति रीझवार होय,
 अमित उदार होय सुजस लेलार होय. १
 गंगाके न गोरिके गिरीशके न गोविंदके,
 गोतके न जोतके न जाये राह गिरके;
 काहुके न संगी रतिरंगी ब्रह्म भानजीके,
 मन अति खोटो सोटे खाई हे जमबीरके;
 ग्वाल कवि कहे देखो नारीको खसम जाने,
 धर्मको पशम जाने पातक शरीरके;
 निमकहराम बदकाम करे ताजे ताजे,
 बाजे बाजे वेशहुर गुरुके न पीरके. २

धीर कश्यो चीर कश्यो, निघिसौं गंभीर कश्यो,
हर पर पीर कश्यो, कीरत विनोदको,
वानी कश्यो मानी कश्यो, सब गुन ज्ञानी कश्यो,
बहुत बखानी कश्यो, बानी घर मोदको,
जग सुखकारी कश्यो, दीन दु खहारी कश्यो,
पर उपकारी कश्यो, पोपक सहोदको,
इंद्र कश्यो चंद्र कश्यो, बंदु उर वाको अब,
कैसे के रिझावु मन मेले कमजातको

३

(वियोग-प्रेम-शृंगार)

शरिमुख सूक गई तबतैं न्याकुल मई,
बालम चिदेशहुको चलवो जबें कयो,
दूध दहीं श्रीफल रुपैयो घरि थारिमाही,
माता सुत भाळ जबें रोरिको टीको दयो,
तादुर बिसर गई घघुसैं कश्यो छे आव,
तबतैं पसेनो लुट्यो मन तनकों तयो,
तादुर छे आई तिया आंगनमें ठाही रही,
करके पसारवेमैं भात हाथमें भयो

१

सोंह खाय साचि सो मुनाय हो सरोज नेनी,
कोनसी सखीतैं सीख सीखी पेसी चाहि है,
केलि करवेकों चह्यो जब मैं मयंकमुखी,
तब तकी बंक अरु लागी गल बांही है,
ग्वाल कबि बाहिको गहत बाहि खेंच छेत,
बाहिको छोडावै अरु दारै गर बांही है,
हांही है कि नाहि है कि नांहीमांही हांही है कि,
हांहीहिमैं नांही है ये कैसी तेरी हाही है
सोई दुपहरिका समय अति आलसमें,
पावसकी धार जिम स्वेदन रहा रहा,
जानि यह परत सुपनमें पियाने गही,
चल्यो तकाऔमें तमासो ए लहा लहा,

२

ग्वाल कवि भौंहे सत रोहे तिरछौं हे येह,
लेत हर मनको सुनाओं में कहा कहा;
निवी गह गही रही अंह अंह कही रही,
वकी रही नहीं नहीं ऊंहं ऊंहं अहा अहा.

३

केलि केरि बैठी वाल वालसो विथुरें परै,
मांग मोती भैरि गिरियत निरमलासी;
बौर गई वगर पसेनाकी पसर भई,
औठतै उसर गई लाली भौर मलासी;
ग्वाल कवि चंद्रहार चंपकलि टूट परी,
ऐसै सब छूट परै माला सब छलासी;
आंगी गई दरक तरक गई तनी सब,
चुरियां चरक गई फैली चंद्र कलासी.

४

आधी रात कालकी गोविंद सपनेमें आये,
करि करि वचन पियूपमें पगा लई;
लेटे आधि सेज औ समेठ्यो सुखपुंज सबै,
बंद कंचुकीके छौरि अंकमें लगा लई;
ग्वाल कवि कीन्हो उन पान अधराको फेर,
चितवन चोखी चित मेरैमै लगा लई,
तेरी सोंह आली फिर निवीकी खुलाखुलीमै,
सीवीके करत मोहि नींदनै दगा दई.

५

एकाएकी भेट भई तबतै सकुच गई,
भिटी कुलकानि जानि बूधटको करिवो;
लगी टकटकी उर मिटी धकधकी गति,
थकी मद छकी ऐसो प्रेमको उधरिवो;
चित्र कैसे काढे दोऊ ठाढे रहे ग्वाल कवि,
नाहि न प्रवाह लोग लाखनको लखिवो;
बशिको बजैवो नटनंगरें बिसर गये,
नागारे बिसर गई गांगारिको भरिवो:

६

(धनाक्षरी.)

आज वन वीपनि बिछोहें पर्यो आलिनसों,
भई मै अकेली पै गईरी वीर थक थक;

औंचक कहूँ तैं कपि कठिनसो कुचो आनि,
उचक छराके छौर तोरी डायों तक त्रक,
गवाल कवि बीन गही कचुकी निवार्या फेर,
उछल कदंब पै जग्योरी लसै टक टक,
आई में मरुंके भजूहूँ न मितत डर,
कर घर देख्यो क्यों न छाती होत धक धक

१

(चेषक वर्णन-कवित्त)

चदवदनीके हठ नीके सीत लागे दाग,
आननपै रहे जाग जेब सरसत है,
काम जौहरीके मोती फूल परे कोऊ कहै,
यावनको फूल्यो बाग फूल बिलसत है,
गवाल कवि कहै कोऊ कोऊ यौ नतास्त है,
मेरे मनमाम कछु और वरसत है,
चिकने कत्तन तो फिसल फूल्यो कंय मन,
भये टूक टूक ताके कनिके लसत है

१

(बांसुरी वर्णन)

गोधनके पूजिवेकों गोपी चढ़ि जातहुती,
द्याकनसों थार भरे गढ़े जात सिरके,
पायजेब सामनकी होत मनकार जैसी,
तैसी किलकार गीत प्रीत पुज धिरके,
गवाल कवि त्यूही कान बांसुरी बजाई सुन,
आंसुरी उमगि चले अंग अग धरके,
फिरि परी चिरि परी गिरि परी गिरि परी,
उंचे परी नीचे परी बिचे परी भीरके
एक और धीजना दुरायत चतुर नार,
एक और झारी ले जमुन जल पानकी,
एक और पाखेतें खवासन खवावै मान,
राधे मुख लाली अहै है ऐसे रस मानकी;
ताही समें बांसुरी बजाई नद जवत्तसों,
सुध नां रही है तिज्हे मजके लतानकी,

१

दांए गिरि नीर वारी वाएतें समीर वारी,
पाछे पान दान वारी आगे वृखभानकी. २

दीपनसी वाला दीपमालामें दीपेइ राति,
कहत दिखैया जिन्हें नरी हैकि परी है;
ताई समें तेनैं निरदई काग जब कियो,
आगें कहूं नंदहूने एक चाल करी है;
ग्वाल कवि गोपिनकी गावन हसन तामें,
फूकितें न वंसीमें न आगि फूकि घरी है;
चौकि परी चकि परी तकि परी छकि परा,
वाकि परी थकि परी मूरछित परी है. ३

कहां जाय व्रज तज वसिवो मुहाल भयो,
फैलवो विसाल भयो वसी धुन जालको;
यह तो अनोखो नयो रसिक उताल भयो,
व्याल भयो मंत्र याकी फूकमें रसालको;
ग्वाल कवि एतो भलो जसोदाको लाल भयो,
जादू जंत्र जाल भयो चलन कुचालको;
हिये हिये साल भयो गोपीन जंजाल भयो,
ख्याल भयो दैया निरदैया नंदल को. ४

(वसंतऋतु)

बाग वन डव्ये फव्ये फवनि अनेकनसों,
सरसों प्रसून पुखराज दरसायो है;
मोति ये सु मोति ये है सेवती सरस हीरै,
ठौर ठौर बौर भौर पन्ननको लायो है;
ग्वाल कवि कहत कुसुम मंजु मानिक है,
सौरभ पसार पुंज पानिप सुहायो है;
शोभ सिरताज व्रजराज महाराज आजु,
रितुराज जौहरी जवाहिर ले आयो है. १

सरसोंके खेतकी बिछायत बसंती बनी,
तामें खडी चांदनी बसंती रतिकंतकी,
सोनेके पलंग पर बसन बसंती साज,
सोनजुही मालैं हालैं हिय हुलसंतकी;

ग्याल कवि प्यारो पुस्तराजनको प्यालो पूरी,
प्याबत प्रियाको फरै घात मिलसंतकी,
रागमें बसंत बाग बागमें बसत फूल्यो,
सागमें बसंत क्या बहार है बसंतकी

२

(सचैया)

फूल रही सरसो चहुओर ग्यों, सोनेकी बेश दिव्यायत सचि,
चीर सजे नर नारिन पीत, बढी रस रीत बरंगना नाचे,
ल्यों कवि ग्याल रसालके बोरन, भौरन झौरन ऊधम नांचे,
काम गुरू भयो फाग शुरू भयो, खेलिये आज बसंतकी पांचे १

(कवित्त)

गहगहे गिरद गुलाबनके वृदावन,
किंसुक अंगार मुखमाहि परचत है,
मजुल कुसुम गोलो किसलय प्यारे छाल,
मारुत धै चेला और डोल छै पचत है,
ग्याल कवि कहै कोकिलानकी कतारें वर्त,
पतिहिं बिभारें वास लहक्यो चाहत है,
राजनके राज महाराज खुराज आगे,
आज रितुराज नटराज सो नचत है १
बाजी बाजी बिरियान शीतल गरम घात,
मंद मंद तुतरात बालक सरूपिया,
जेठकी जलकासी सलाक होय आवैं कम्,
सौरभ मुहावैं तरुनापन अनूपिया;
ग्याल कवि कहै अग थरथर काँपै कम्,
कष्टू न बसाय जू न चाहे भयो धूपिया,
आनंदके कंद रामचंद हेतु आयो आजु,
भनि धविर्वंत है बसंत बहुरूपिया २
चाजत मुरज मजु मारत मरोरदार,
मीनको बनाव तुंब धंध विळसत है,
सालकी अवाजैं सार्जैं चटक गुलाबनकी,
सुंदर सुरंगी और गुंज सरसत है,

ग्वाल कवि कहै तार ताजे अमराइनके,
साधे मुर कौकिल कुहुक हुलसंत है;
राजे महाराजे रघुवीरजूके आगे आयो,
आज वनि वानिक कलावत् ये वसंत है.

३

(धनाक्षरी.)

वाहवा है आपकों विहारीलाल ख्याल भरे,
वाला विरहागि तर्ची अब न तचैगी यह;
वानी कौकिलाकी विषदारसी पचायो करी,
अबलौ पची सो पची अब न पचैगी यह;
ग्वाल कवि केते उपचारन सच्चाई करी,
अबलौ सचीसो सची अब न सचैगी यह;
आयो पंचवान लै वसंत ब्रजमांहे वीर,
अबलौ बची सो बची अब न बचैगी यह.

१

(कवित्त.)

ऊधो यह सूघो सो संदेसो कहि दीजो जाय,
श्यामसौ सितावी तुम विन तरसंत है;
कोप पुरहूत तैं बचाई वारिधारन तैं,
तिनपै कलंकी चंद विष वरसंत है;
ग्वाल कवि सीतल समीर जे मुखद ही ते,
बेधत निसंक तीर पीर सरसंत है;
जेई विपिना गिनते वरत बचाये तिन्हे,
पारि विरहागिनमें वारत वसंत है.

१

(ग्रीष्मऋतु.)

पूरन प्रचंड भारतडकी मयूखै मंड,
जारै ब्रह्मंड अंड डारै पंख धरियें;
द्वयें तन छूयें विन धूयें की अगिनि ताते,
चूयै स्वेद बुन्द दुंद धारै अनुसारिये;
ग्वाल कवि जेठी जेठमासकी जलकनतें,
भ्यासकी सलाकनतें ऐसे चित्त अरिये;
कुंड पियें कूप पियें नद पियें नदी पियें,
सर पियें सिन्धु पियें प्रीयबोई करिये.

१

ग्रीष्मकी गज्जय चुकी है धूप धामें धाम,
 गरमी छुकी है आम नामें अति तापिनी,
 भीजे खस-विजन छुलैहु, न सुखात स्वेद,
 गात न सुहात बात दासिनी करारिणी,
 ग्वाल कबि कहै कोरें कुर्मनते कूपनतें,
 छै छै जलघार बार बार मुख थापिनी;
 जय पियों सब पियो अब पियों फेर अन्न,
 पीवतहु पीवतें नुझै न प्यास पापिनी २
 सिंधुतें कंठी है किधौ बाढबां अनल अब,
 दावा औ जठर मिलि कीनी ताप भरकी,
 कीधौ महारुद्र जूके तीसरे बिलेचनकी,
 खुलन छगी है कहूँ कोर तेज तरकी,
 ग्वाल कबि कहत सुदर्शनको म्यान किधौ,
 उधर्या कहतें दूटि सीवन है सरकी,
 हंय बिरहीनकीकि अय बिरहागिनकी,
 देत है जराय जेठी धूप दूपहरकी ३
 बरफ सिलनकी बिछायत बनाय करि,
 सेज सन्वलीपें कदजल पाटियतु है,
 गालिब गुलाबजल जालके फुहारे छूटे,
 खूब खसखानेपें गुलाब छाटियतु है,
 ग्वाल कबि सुंदर सुरोही फेर सोरांमाहि,
 ओराको बनाय रस प्यास छाटियतु है,
 हिमकर आननी हिवाला सी हियेत छूय,
 ग्रीष्मकी ज्वालाके कसाला काटियतु है ४
 जेठको न रास जाके पास ये बिलास होयें,
 खसके मधासपें गुलाब उधर्यो करै,
 बिहीके मुरम्मे हंम्मे चौकीके धरखें भरै,
 पेठे पाग केवरेम बरफें पय्यो करै;
 ग्वाल कबि चदन चहलमें कपूर कूर,
 चदन अतर तर बसन खर्यो करै, . . .

कंजमुखी कंजनैनी कंजके विद्यौननपै,
कंचनकी पंखी करकंजतें कर्यो करै.

५

भानकी तपन वन ऊपवन जारै लगी,
तैसी तेज छयें लोल लागै ज्वालजालासी;
ताल नदी नालनके नीरतें रंधन लागे,
तातें लाल सुनहुं उपाय एक आलासी;
ग्वाल कवि प्यारीकी छवीली छाती छांह छिप्यो,
चंदनसी हांसी देह चंदन रसालासी;
पालासी बिलोकन हिवालासी लिपट जाकी,
लीजै चलि कंठ मेलि मालतीकी मालासी.

६

(सवैया.)

कस पीहर जवो जरूर हमेंपें, किरने रविकी अति दागति है,
चलि भोरहि जाय टिकोंगी उहां, जहां द्याह तमालकी जागति है,
कवि ग्वाल अवेरे चलेतें अवें, सिथिलई शरीरमें पागति है,
इक जामही दोस चडे ते अला, अजवागजवी लुव लागति है. १

(वर्षाऋतु-कवित्त.)

झूम झूम चलत चहूँधां घन घूम घूम,
छम छम भूम छै छै धूमसे दिखात है;
तूल कैसे पहल पहल पर उडे आवै,
महल महल पर सहल सुहात है;
ग्वाल कवि भनत परम तम सम केते,
छम छम छम डारे बूंद दिनरात है;
गरज गये हे एक गरजन लागे देखो,
गरजत आवै एक गरजत जात है.

१

रंग रंग रंगके पयोधर तुरंग तीखे,
मुखकी सुरंग चीने सुघर समाजके;
त्रिविधि बयार सो सवार बेग बाग धार,
बीज चमकार तोप प्याले खुस काजके;
ग्वाल कवि अंबर अनूप रूप खेमा खूब,
धुरवा तनाव तने दृढता दराजके,

हेरेमें फेरर दल घेर चहु फेरे अब,
 आइ परे डेर देखो मेघ महाराजके
 प्यारसों पहिर पिसवाज पीन पुरवाई,
 ओढ़नी सुरग सुर चाप चमकाई है,
 जगाजोति जाहिर जयाहिरसों दामिनी है,
 अमित अलापनकी गरज सुनाई है,
 ग्वाल कबि कहै धाम धाम एसि नार्चै राचै,
 चित्त वित्त छेत मोद नाचत महार्ड है,
 वंचनी विरागहूकी अति परिपंचनी सी,
 कंचनी सी आज मेघमाला बन आई है

२

३

(सचैया)

यह सावन आयो सुहावत है, तरसावन मानसों भागि रहो,
 जलधारनसों थल पूरी रहे, सुर मीडे मलारन रागि रहो,
 कबि ग्वाल दया करि देखो इतै, रिस दागनतें जिनि दागि रहो,
 अनुरागि रहो निशि जागि रहो, रस पागि रहो गल लागि रहो

१

(कवित्त)

गेह अति होय खुले होय देफ होय बरे,
 होय गोखे होय चौक एसैं होय रंग सी,
 घन होय बाग होय बीन होय बग होय,
 केकी होय मेकी होय पवन अमंगे सी,
 ग्वाल कबि गरम गिलौरी होय गिला होय,
 घूंदे होय दूंदे होय दामिनीके संगे सी,
 प्यारी होय प्यारे होय प्यार होय प्याले होय,
 होंय परजंक पर जंघनकी जगे सी
 तरल तिलगनके मुग तेह तेजदार,
 कानन कर्दमको कर्दब सरसायो है,
 सुबेदार मोर घोर दादुवर हवलदार,
 बग जमादार औ तंवूर पिक मायो है,
 ग्वाल कबि बाढ़ें गरराट घन घटनकी,
 कपनीको कंपू छुला होय छवि छायो है,

१

भूपति उमंगी कामदेव जोर जंगी जान,
मुजराको पावस फिरंगी बनि आयो हैं. २

कूकै कोकिलानकी कुहूकै मंद मोरनकी,
भूकै पौन सूकै सेल सर सम मारती;
घनकी चमूकै संग दामिनी हरुकै हूंकै,
गरज चहूंकै हूकै नाहर सी पारती;
ग्वाल कवि ऊंकै औधि चूकै वा बधूकै लाल,
वेदन अचूकै लखि आली किलकारती;
हूंकै करै हूकै विरहागीनि भभूकै उठि,
लूकै लागि अंबर दिनेस फूकै डारती. ३

मेरे मनभावन न आये सखी सावनमें,
तावन लगी है लता लरजि लरजि कै;
बूंदे कभू रूंदें कभू धारै हिय फारै दैया,
बीजुरीह वारे हारी बराजि बराजि कै;
ग्वाल कवि चातकी परम पातकीसो मिल,
मोरहू करत सोर तराजि तराजिकै;
गरजि गये जे घन गरज गये है भला,
फेर ये कसाई आये गरजि गरजि कै. ४

(शरदऋतु.)

मोरनके शोरनकी एकौ न मरोर रही,
घोरहू रही न घन घने या फरदकी;
अंबर अमल सर सरिता विमल भल,
पंकको न अंक औ उडनि गरदकी;
ग्वाल कवि चित्तमें चकोरनके चैन भये,
पथिनकी दूर भई दूखनी दरदकी;
जल पर थल पर महल अचल पर,
चांदीसी चमाकि रहीं चांदनी शरदकी. १

आज अबरखतें लिपाय मंजु मंदिरन,
तामें सेत बिछात करी है चौक हृदमें;
ताने समियाने जरीदार सेत जेब भरे,
मोतिनकी शालरै झलाझलकै सदमें;

ग्वाल कवि चासर चमेलीके चगेरनमें,
चुनमा चमके चि बाठला विशदमें,
चदते मुचव मुख अमल अमठ अति,
वैठे गजचंद चद पूरन गरदमें

२

(हेमन्तश्रवण)

हरखि हिमंतमें शकंत कत संग मिलि,
मौज है अनंत धाबिवंत तेरो गात है,
रखि मयूख सो पियूखसी लगत मीठी,
स्वतनमें ऊखकी चहार दरसात है,
ग्वाल कवि तल्प तुलाई कीहि तान लागी,
आन लागी लगन बरफ भरी बात है,
दिन दिन घटन लाग्यो हैं दिन खिन खिन,
धिन धिन धनवा सरस होत जात है

१

सीरे सीरे नीर भये नदिनके तीर तीर,
सीरे भये चीर घरा सीरी सब पर गई,
दशहू दिशांत दिन रात लागी कुहरान,
पौन सररान साफ तीरसी निकर गई,
ग्वाल कवि ऐसैं या हिमंतमें न आये कत,
सो तुम्हें न दोष सखसत और डरि गई,
सूख गये फूल और और उडि गये मानो,
कामकी कमानकी कमानसी उतारि गई
कातिकादि चारों मास तखत बिछाय बैठ्यो,
बदल सजल जत्र धत्र धवि छाई है,
जब तब मेह धार चौर चारु दोरियत,
सूर दूर पौनकी वजीरी सरसाई हैं,
ग्वाल कवि सरफ बिछावत कुहर दल,
भिरनी प्रमल नीकी नौवत बजाई है,
शित बादशाहसो न और कोऊ दरसाय,
पाय बादशाही बाटे सबको रनाई है

२

३

वारियां महलकी न हलकी मुंदीही जहां,
 राशि परिमलकी अंगीठियां अनलकी;
 जोतेमे न भलकी चंगेर हें न कुलकी सु,
 प्यालियां अमलकी पलंगे मखमलकी,
 ग्वाल कवि थलकी सचीसी लंक बलकी वो,
 फूल सम हलकी प्रभामें अलखलकी,
 विपरीत ललकी कहे को बात कलकी सु,
 वाले छवि छलकी दुशालेमें उललकी.

४

(धनाक्षरी.)

अर अर झांपे बडे दर दर दांपे तड,
 थर थर कांपे मुख बजत बतीसी जात;
 फेर पशमीननके चौहरे गलीचा तांपे,
 सेज मखमली बिछी सोऊ सरदीमी जात,
 ग्वाल कवि कहै मृगमदके धुकाये भौन,
 ओढि ओढि छार भार आगिहू छपीसी जात;
 छोकें सुरा सीसी तौल्यै सीसीपै मिटेगी कभू,
 जौल्यै उकसीसी छाती छाती सौन मीसी जात.

१

(कवित्त.)

सोनेकी अंगीठीमें अगिनि अधूम होय,
 होय धूम धारहूतें मृगमद आलकी;
 पौनको न गौन होय भरक्यो सु भौन होय,
 भेवनको खौन होय डबिया मसालकी;
 ग्वाल कवि कहै हूर परीसो सुरग वारी,
 नाचती उमंगसो तरंग तान तालकी;
 वालाकी बहार औ दुशालाकी बहार आई,
 वेलीकी बहारमें बहार बडी प्यालकी.

१

विविध बनातें किनखापकी कनातें तामें,
 दीरघ दुचोवे है सिचोवे हक्क हद्दीमें;
 चांदनी है चौवनपै परदें दरीचनमें,
 दुहरे दुलीचे है गलीचे गोल गद्दीमें;

ग्याल कबि भाति भाति भोजन हैं भामिनी हैं,
दीप हैं दुशालें हैं मशाले मैं मदीमं,
चांपिके चुहरी साज सोज पै बिहरी बेश,
कर्या रीत रही तब हूँ जाय नदीमें

२

(शिशिरभ्रतु)

रैनि घटि घटिके बदन लाग्यो दिनमान,
लाजी गरमान भानु दुति घट संगकी,
सीरी सीरी पवन हितान लागी हिरयामें,
धीरी धीरी आवत सुगध रग रंगकी,
ग्याल कवि फहे छ साझते सवारे छा,
छटत तरंग तामे मदन उमगकी,
सीतमें शिशिरकी लागी है होन डगमग,
मग मग होन लागी जगमग रंगकी

१

(होरीवर्णन-सर्पया)

फागकी फँल करी मिटि ग्यालिनि, छैल बिसाल रसालन ऊपर,
लालकी छाल मुठीको गुलाल, पर्यो उडि बालके बालन ऊपर,
स्यों कबि ग्याल कहै उपमा सुखमा रहि छाया सो ब्यालन ऊपर,
पख पसारि सुरग सुभा उठ्यो, डोले तमालकी डालन ऊपर

१

फागमें रागकी लाग दिली, सिसि आंख मिलामिळ प्रानन वारे,
बालके ओछे उरोवन ऊपर, छाल दर्ई पिचकारीका धारे,
ते उचटी कबि ग्याल तबै, तिहिही सुखमा उपमा जु उचारे,
मानो उतग उमग भरे, सुलुटे इक रंग फुहारे हजारै

२

(कवित्त)

आई एक औरते अलीन लै कियोरी गोरी,
अस्यो एक औरते कियोर बाम हालपै,
भाजि चन्चो छैल छरी छोरिये छबीलिनतें,
छरीकों उठाय धाय मारी उर मालपै,
ग्याल कबि होहो कहि चोर कहि चरो कहि,
बीचमें नचायो थेई ततथेई तालपै,
तालपै तमालपै गुलाल उडि छाया पेसो,
भयो एक और नवलाल नवलालपै

१

ल्याई श्यामसुन्दरै छवीली ब्रजवाम छलि,
 टाढी जहां पौर वृषभानकी किशोरी है;
 बोल उठी नारी किलकारी गारी तारी दैकै,
 आयो यह आयो अरी छाछ निज चोरी है;
 ग्वाल कवि कोऊ गुल चावै औ रचावै रग,
 अंगन लचावै औ नचावै डारि रोरी है;
 केती कहै गोरी वरजोरी कौ न मानो बुरो,
 हेहो लाल होरी लाल होरी लाल होरी है. २
 फागमें कि बागमें कि भागमें रही है भरि,
 रागमें कि लागमें कि सौहे खान झूठीमै;
 चोरीमें कि जोरीमें कि रोरीमें कि मोरीमें कि,
 झूमि झकझोरीमें कि झोरिन कि ऊठीमै,
 ग्वाल कवि नैनमें कि सैनमें कि वैनमें कि,
 रग लेन देनेमें कि ऊजरी अंगूठीमै,
 मूठीमें गुलालमें कि ग्यालमें तिहारे प्यारी.
 कांके भरी मोहनी सो भयो लाल मूठीमें. ३

वनानंद.

(प्रेमप्रसंग-सचैया.)

खोय गई बुद्ध सोय गई शुद्ध, रोय हसे उनमाद जग्यो हे,
 मौन गहे चख चौकि रहे चलि, बात कहे तन दाह दग्यो हे;
 जानि परे नहि जानि तुम्हे लखि, ताहि कदा कछु आहि पग्यो हे,
 शोचतही पगिये घनआनंद, हेत लग्यो किधो प्रेत लग्यो हे. १
 गति मेरि यही निशबोस रहे, नित तेरि गलीनकों गाहिवो हे,
 मन कीनो कठोर कहा इतनो, कपटीं कवहू न सराहिवो है;
 घनआनंद देत नहि दरसों, इत बैरिनकों चित चाहिवो है,
 मन माने तुम्हे अब सोई करो, हमें नेहको नातों निवाहिवो है. २

अति सूयो सनेहफो मारग हे, जहा नेको सयानप वाक नहीं,
तहा साचे चले तजि आपपनो, सिमफे कपटी जो निसांक नहीं,
घनआनंद प्यारे सुजान सुनो, इत एकते दूसरे आक नहीं,
तुम कौन धो पाटि पदे हो लला, मन छेहुपे छेहु छटांक नहीं ३

घन श्याम

(काम्ता, कविता-कवित्त)

मुलिवेके रस बस नवल हिंदोरे प्यारी,
काह नर किन्नर असुर किषो मुरफी,
कवि घनश्याम अति चंचल दगचलमें,
अचल उदत कहें कोन छवि उरफी,
श्रम करमचति लचती लेंक वार भार,
मानो विपरीत रति सीखिवेफो दुरफी,
उचटि उचटि चोटी पीठिपे छगत जेसे,
खाटीके परत हांच मोटी काम गुरुफी १
रूपहीके गाहक चतुर जगमाह ऐपे,
रूप गुन गाहक चतुर अबतसही,
मीठे हैं सवेही गुड दाख मधु दूध मुधा,
मधुराह न्यारी न्यारी जाने बुधिससही,
त्योहि कविता मरम मानसमें पुष्प पुर,
पिछानेसे बे जो हरिहीके असही,
स्थाति बूद जमि सीपे मास भयो मोती ताकी,
सोमा जानी सधन सबाद जान्यो हंसही २

घासीराम

(काममहिमा-कवित्त)

कवके खरे हे कान, तदपि न छडि मान,
करके गुमान कहे करत चयावरी,

विधनां दइ हे कैंधो रूपकी निकाइ कान,
 ऐसी मन भाइ कहो वने न वनावटी;
 कहे घासीराम एक आवत अचंवो नयो,
 रीतही ठइ है के भइ है मति वावरी;
 सेवा किये पध्थरकी मूरत पसीजत हे,
 एती बडी सुरत न पसीजत है रावरी.

१

मंदही चंपेते इंद्रवधुके वरन होत,
 प्यारीके चरन नव निनहुते नरमें;
 सहज ललाई वरनी न जात घासीराम,
 चुईसी परत कविहुकि मति भरमें,
 नायनी ठकुरायनीको पायनी गहत जवे,
 ईगुरको रंग दौरि आवे दरवरमें;
 दीओ है कि देवो कै विचारे सोचे बार बार,
 वावरीसी है रही माहावरी ले करमें.

२

कहत कछु न कहि काहुकी सुने न कछु,
 आहक कराह सीस धुनत घनेरो ह;
 खानकी न पानकी न पानीकी कहानी सुने,
 पीर न पिछानी परे किनोई नवेरो है;
 जात दुवराई देह द्युति पियराइ छाई,
 एरी सुन सुरभी अनंग दल घेरो है;
 जोग है के जादु है के मारन प्रयोगे है के,
 रोग है के रसिक वियोग यह तेरो है.

३

तिमिर निवासी सुधानिधि सो सहोदर हे,
 बाप रतनाकर कल्पवृक्ष वारो हे;
 बहुत कृपालु दुज दीननको रच्छपाल,
 सुनियत सांच अति पुरुष तिहारो हे;
 घासीराम सुकवि सलेनो गात कंचन लें,
 सांचे सो सुधारी कै विराचि अवतारो हे;
 एसी गुन आगरी समूह सुखदानी व्हे,
 गरीबनके ऊपर बडोई बैर पारो हे.

४

करसों गहत धिरि आई सच आसपास,
चित्रफासी पूतरी धवन मग दे रही,
फजल फलित बख सजल उमटि आई,
भरि आई छतियां अनगरस धे रही,
धामीराम मुफवि सनेही श्याम छिखी मुनी,
प्रेम फालिदीकी वै सुरति फलु कै रही,
बहुरि वियोगके हरफ मुनि अयो मुख,
हेरिफे सलोनी दिह सास छे चिते रही ५
देवताको मुर औ असुर फहे दानवको,
दाइको मु घायदार पैतिये लहत हे,
दर्पनको आरसी त्यों दाखको मन्नका फहे,
दासको खवास आम खास विचरत हे,
देवीको भवानी और नेहराको मठ सदा,
याहि विधि घासीराम रीति अचरत हे,
दानाको चमेना दीपमालाको चिरागजाल,
दैवके डरन कयी ददो ना कहत हे ६

(सपेया)

श्याम छिखे गुनपातिके आखर, जोग चिठी वह जो मुनि पैहे,
चाचतही उडि जायगो प्रान, कपूरलें फेरि न हाथन छै हे,
अयो जुपाउ मुनी खबर, वृषभानलली तन क्यों विप बैहे,
कौल फली सम राधे हमारी सो, वा कुबजाकी खवासिनि है हे १

चतुर.

(स्वामुभव संगति-कवित्त)

जबलें न फोड पीर लागे उर आपनेकों,
तबलें पराह पीर कैसें पहिचानि हों,
जानती हों आजलें न फाहूसीं अयो हे नेह,
जब नेह लागि हे तो हित अनुमानि हों,
कहत चतुर कवि मेरे कहिबेकी तब,
एको न रहेंगी जब हित मन आनि हों,

जैसे नीके मोहि तुम लागत हो प्राण प्यारे,
 ऐसी नीकी कोऊ तुम्हे लागि हे तौ जानि हौ. १
 मानसर ताजि हंसे कूप ना करत गेह,
 मोती नहि देख्यो कहूं गरे तिया भीलकी;
 मनी परखत कहूं देखे ना मुकुट हाथ,
 वैश्या नहि देखे चाल चलत असीलकी,
 वाज कहूं बैठे ना बटेरनके झुंडनमें,
 मढत नगारा नहि चरम पपीलकी;
 याचक चतुर कहूं बैठे ना कृपिन पास,
 अलि ना विलंबे कहूं संगति करीलकी. २

चतुरसिंह.

(फिकिरी-कवित्त.)

काहेको तूं घर छोडा कोहेको घरानि छोडी,
 काहेको तूं इज्जति खोइ दुरवेशवानेकी;
 काहेको तूं नंगा हुवा कोहेको बिभूति लाई,
 किनरे सीख दई तुझे जंगलके जानेकी,
 आदतिको छोडि देता परेशान मति होता,
 लिखि सुनि लेता एक चतुरसिंह रानेकी;
 गोशा जाइ एक लेता खानेको खुदाइ देता,
 जोपै फिकिरि ना मिटी रे फकीर दानेकी. १

चिमनेश.

(परोपकार, उपदेश.)

तुम मुष्टिका बांधके आये यहां, कर खोले विना फिर जावनो नां,
 चिमनेश दया कर दीननें, दिल काहुको देव दुखावनो नां;
 उपकार भलाइ बने सो करो, वदनामीको ढोल बजावनो नां,
 दिन चारको यार तुं पावनो हे, मर जावनो हे फिर आवनो नां.

मजबूतपनो रखनो मनमें, दुखि दीनपनो दरशावनो ना,
बहनो कुल रीति सुमारगमें, हरिते हिये हेत हरावनो ना,
चिमनेरा हँसी खुशी बोलनमें, बिन स्वारथ बेर बसावनो नां,
जग जेति मलाइ बने सो करो, मर जावनो हे फिर आवनो ना २

चौरामल.

(कलिधर्म-कवित्त)

आया हे कलका दौर, धरोधर कागारोल,
पोल पोल ठेर ठेर पाप बेली जागी हे,
केती हुती रिद्ध सिद्ध केते होते सत वृद्ध,
छोडा हिंदुवाना तुरफाना हद लागी हे,
झूठनको साचे करे साचेको बनावत छूटे,
पैसे बिन बात नाहिं लोभ ज्वाल जागी हे,
राजनकी रीत गई पंचकी प्रतीति गई,
अब तो अतीतसों अनीत होन लागी हे १
पुन्य गयो पूरव प्रतीति गइ पश्चिमको,
दया गइ दख्खनको धर्मोत्तरकों धायो हे,
शरम गइ सरिता, भग्न गयो हे भाग,
आयो और बैठे काह, बिरलो ठरायो हे,
चौरामल कहे गजब चली चतुराई हाथ,
हाथ हाथ देखोजी जमाना कौन आयो ह २
कूडनकी कचेरीमें चत्रनकी चाहेना हे,
चाडिया चकोरनसें बाटते बतन हे,
सिंह शार्दूलहूसे ठाढे हो न बन कीप,
छपट लबारनसें हेतारथ जन हे,
कागनके काननमें हसनको कहा काम,
चंदनके बागमें अरुह कहा बन हे,

*

चूप करो चंदनी बबूरनको बन हे

३

* यह चरनमें कितनेक बिभक्त शब्द होनेसे कमकर दिया गया है

चंद.^१

(कवि प्रतिज्ञा.)

सरस काव्य रचना रचों, खलजन मुनि न हसंत;
 जैसे सिंधुर देखि मग, श्वान मुभाव भुसंत. १
 तौ पुनि सज्जन निमित्त गुन, रचिये तन मन फूल;
 जूका भय जिन जानिकै, क्यों डारिये दुकूल. २

(पृथीराज महिमा-कवित्त.)

मंडन महीके अरि खंडे पृथीराज वीर,
 तेरे डर बैरी बधू डाग डाग डगे है,
 देश देशके नरेश. सेवत सुरेश जिमि,
 कापत फणेश मुनि वीर रस पगे है;
 तेरे श्रुति मडलनि कुडल विराजत हैं.
 कहे कवि चंद यहि भाति जेव जगे हैं:
 सिंधुके वकील संग मरुके वकील किले,
 मानहुं कहत कलु कान आनि लगे है. १
 महाराज तेरी सब कीरत बखाने कवि,
 चंद यह केवल अकीरत बखाने है,
 आंधरेने देखी दोखि हमको बताइ दई,
 बहिरेने सुनी जैसी हमहुं पिछांन है,
 कच्छपीके दूधहीके सागरपै ताकी गति,
 बाझसुत गूंगे मिलि गावत यों जाने है;
 तामें केते बडे शशश्रृंगकै धनुषवारे,
 रीझि रीझि तिन्है मौज दैके सनमाने है. २

(दोहा.)

सीक वाण पृथिराजकी, तीन वांस गज चारि,
 लगत चोट चौहानकी, उडत तीस मन गारि. १

+ चंद भाटकी और दूसरे कवियाकी कवितापर कहाता है कि—
 (दोहा) चंद छंद पद सूरके, कविता केशवदास;
 चोपाई तुलसीदासकी, दुहा बिहारीदास. १

घर पलटयो पलटी घरा, पलटयौ हाथ कमान,	
चंद कहें पृथिराजसों, मत चूके चहुआन	२
मारह यास घतीस गज, अगुल चारि प्रमान,	
इतने पर पावशाह है, मत चूके चहुआन	३
फेरि न जननी जनमि है, फेरि न खँचि कमान,	
सातवार तुम चूकिये, अब न चूक चहुआन	४
तीनूं मिलके मारियो, रण जसराज कुमार,	
मारे मर पृथिराजके, शिर विन एक हजार	५

(क्षत्रीयधर्म छप्पय)

प्रथम अंग बल होय, द्वितीय अभ्यास शस्त्रको,
तृतीय सदा सब भोग, चतुर मददहन शत्रुको,
पंचम सब बल ज्ञान, छठेको मो मन भले,
सप्त समज कर काम, अष्टमें चित्त न डूले

नये निडर जल जाय अरु, सीत घाम सम कर भमे, फवि चंद कहें पृथिराजसों, (ए) दश गुन क्षत्रीधर्मके	१
--	---

(चहुआन बान प्रशंसा)

इही बान चहुआन, राम रावण उथप्यो,
इही बान चहुआन, करण शिर अर्जुन कप्यो,
इही बान चहुआन, शकर त्रिपुरासुर सप्यो,
इही बान चहुआन, भ्रमर लक्ष्मन कर विप्यो,

सो बान आज तो कर चढयो, चंद बिरद सच्चो चवे, चहुआन राम समर धनी, मत चूके मोटे तवे	१
--	---

इसो राज पृथिराज, जिसो गोकुलमें कानह
इसो राज पृथिराज, जिसो हथ्थह भीमकह,
इसो राज पृथिराज, जिसो अहकारी रावन,
इसो राज पृथिराज, जिसो रावन सतावन,

यरस तीस छह अगारो, लखन बतीस संजुत भन, हम जंये चंद घरदाय घर, पृथिराज उनिहार इन	२
---	---

(भुजंगी)

जहां आसन सूर ठेहे सनाह, तिने क्षत्रि वश किये एक राह, जिने धनि दिक्पाल धर्षर विस्वह, धरे नुप छत्र दुती कनकदह	१
--	---

जिने हेम पर्वतसे सच्च ठाहे, जिने एक दिन अष्ट मुल्तान साहे;
 वरं जांपियो सच्च जो चंद चंडं, सुते थपियो जाय तिहूत पंडं. २
 जिने दच्छिनं देश अप्यो विचारे, तट उतर्यो तुर्त बंधं पहारे,
 जहां करनडा हाल दुब्बान बेध्यो, जिने संधि चाट्टकके चार खेंध्यो. ३
 जहां तीन दिन जुद्ध भिरि भूमिदंड, तहां तोरि तिछंग गोवालकुंडं;
 जिने छंडियो बंधि इक गुंड जीरा, ग्रहे लीध वैराग रे श्रवहीरा. ४
 जहां गज्जने सूर साहाब साही, तिन मोकल्यो सेव निरसुरत भाई,
 जहां छोडि विभीषणे जो मरोर, तहां रोसके सोस दरिया हिलोरे. ५
 जिने बांधि खुर्सान किये मीर बंदा, सुतो राव राठोर विजपालनंदा;
 इते वंश छत्तीस आवे ह्कारे, तहां एक चहूवान प्रथिराज दारे. ६
 (सचैया-छिनाल लच्छन.)

एकनकों जपि हाथ दिखावत, एकनकों छपि देत हे सेना,
 एकनके घर दृतिकों भेजत, एकनके घर रेत है रैना;
 एकसें एक हजार जु आवत, तौ न मिटे कहि आगम बैना,
 चंद उपाय करोर करो तब, छाने रहे न छिनारके नैना. १

(प्रस्ताविक दोहा.)

पीया रणमांही मरे, नारी सती न होय;
 अगति जाय भटकत फिरे, कही गोरज्या सोय. १
 राजा रणमांही मरे, करे स्वर्गको भोग,
 दुनियामें जश विस्तरे, हसे न दुरिजन लोग. २
 जा धरतीकुं खायके, मरे न जातें कोय.
 अंतकाल नरकहि परे, जुगमें अपजश होय. ३
 श्याम सांकरे जानके, रहे अवर घर सोय;
 सो राणी फिरतो लियो, कुल रजपूत न होय. ४
 पिया मरत त्रिया रहे, करे पुत्रकी आश;
 सो नारी फिरतो लियो, कुल रजपूत न तास. ५
 रतन बूंद बरसे नृपति, हय गय हेम सुहृद;
 लगे न बूंद भंगीत तन, शिरसो छत्र दरिद्र. ६

(प्रश्नोत्तर.)

तब सुनिंद हों चंद कवि, पूछत इह अंदेह;
 सकल कुटुंबी लोकमें, कोनसु साचो नेह. १

पूरन सकल विलास रस, सरस पुत्र फलदान,	२
अत होह सह गामिनी, नेह नारिको मान	
कोन नगन अंबर छते, को ढको भिन चीर,	३
को हारे अंधो फिर, को जीते तजि तीर	
बश हीनो नागो गिनहु, ढक्यो जग जसवान,	४
लपट हारे लोह छन, त्रिय जीते भिन बान	
जुगति जुगति किन निकट हे, काते दूर दिस्वाय,	५
किन आवध जग जिति यहि, किन हारत जग जाय	
समदरसीतें निकट हे, मुगति मुगति भरपूर,	६
विपम दरस वा नरनर्त, सदा सरसदा दूर	
परयोपित परसे नहिं, ते जीते जग बीच,	७
परत्रिय तक्रत रेन दिन, ते हारे जग नीच	

पद्मावती खंड प्रकरण

(दोहा)

पूरव दिस गढ गढनपति, समुद शिखर अति दुग्ग,	१
तहं सुविजय सुरराजपति, जादू फलह अमग्ग	
हसम हय गयदेस अति, पति सायर मज्जाव,	२
प्रबल मूप सेवहिं सकल, धुनि निशान बहु साव	

(छप्पय)

धुनि निशान बहु साव, नाव सुर पच भजत दिन,	१
वस हजार हय चढत, देम नग जटित साज तिन,	
गज असख गजपतिय, मुहर सेना तिय सखह,	२
इक नायक कर घरी, पिनाक घर भर रज रस्खर,	
वस पुत्र पुत्रिय एक समरथ सुरंग उम्मर डमर,	३
महार छलिय अगनित पदम सो, पदमसेन कुंवर सुघर	

(दोहा)

पदमसेन कुंवर सुघर, ताघर नारि सुजान,	१
ता उर इक पुत्री प्रकट, मनहु कला शशि मान	

(छप्पय)

मनहु कला शशि मान, कला सोख्ह सो मनिय,	१
बाल घेस ससिता समीप, अमृत रस पिनिय,	

विगसि कमल मृग भ्रमर, वैन खंजन मृग छुट्टिय,
 हीर कीर अरु बिम्ब, मोति नख शिख अहि घट्टिय;
 छत्रपति गयंद हरि हंसगति, बिह बनाय संचै संचिय,
 पदमिनिय रूप पद्मावतिय, मनहुं काम कामिनि रचिय. १

(दोहा.)

मनहुं काम कामिनि रचिय, रचिय रूपकी रास;
 पशु पंथी सब मोहिनी, सुर नर सुनिवर पास. १
 सामुद्रिक लच्छन सकल, चौसठि कला सुजान;
 जानि चतुरदस अंग पट, रति बसंत परमान. २
 सखियन संग खेलत फिरत, महलनि वाग निवास;
 कीर इक दिखिय नयन, तव मन भयौ हुलास. ३

(छप्पय.)

मन अति भयौ हुलास, विगसि जनु कोक किरन रवि,
 असन अधर तिय सधर, बिम्बफल जानि कीर छवि;
 यह चाहत चख चकत, उह जु तक्रिय झराखि झर,
 चंच चहुट्टिय लोभ, लियो तब गहित आप कर;
 हरखत नंद मन महि हुलसलै जु महल भीतर गई;
 पंजर अजिय नग मनि जहितसों, तिहिं महं रखवत भई. १

रती.

(दोहा)

तिहि महं न रखत भई, गई खेल सब भूल;
 चित चहुट्टयो ज्यो, राम पढावत फूल. १
 कीर कुंवरि तन निरिहो दिखि, नख सिखलौं चह रूप;
 करता करि बनाय के, एक पदमिनी स रूप. २

(छप्पय.)

प्रिय पृथिराज नरेश, योग लिखि कागद दिनेव,
 लगन वार गुरु चौथ, चैत्र बदि दश सुतिनेव;
 सैं अरु ग्यारह तीस, साख संवत परमानह,
 जो क्षत्री कुल शुद्ध, बरणि बर राखेहु प्रानह;
 देखत दिखवत करि व पल, छनक न बिलंब न करिय,
 पल गारि रैन दिन पंच मह, ज्यो रुकमनि कान्हार बरिय. १

(दोहा)

ज्यों रुक्मिणी कान्हर धरी, ज्यों धरी संतर फांत,
शिव मंडप पश्चिम दिसा, पूजि समय सप्रांत १
छै पत्रि सुक यों चल्थो, उर्यो गगनिमेंह भाद,
जहँ दिछी पृथिराज नर, अट्ट जाममें जाव २
दिय कागद तुपराज कर, खुलि बाचिय पृथिराज,
सुक देखत मनमें हँसे, कियो चलनको साज ३
पदमावति हम छै चल्थो, हरखि राज पृथिराज,
एतें परि पतिसाहकी, भई जु आनि अवाज ४

(छप्पय)

भइ जु आनिखवाज, आय साहसदिन सुर,
आज गहाँ पृथिराज, बोल बुलंत गबत धुर,
क्रोध जोध जोधा अनंत, करिय पंती अनि गजिय,
पौन नाछि हय नाछि, तुपक तीरह सब सजिय,
पवै पहार मनोसारके, भिरि भुजान गजने सबल,
आये हकारि हंकार करि, खुरासान सुल्तान दल १

(भुजंगप्रयात)

खुरासान सुल्तान खघार मीर, बलक सो बल तेग अच्यूक तीरं,
रुहगी फिरेगी हलवी समानी, ठटी ठट बछोच ढांल निशानी १
मैजारी चखी मुख्त बंबकलारी, हजारी हजारी हकें जोध भारी,
तिन पख्तरं पीठ हय जीन सालं, फिरेगी कतीपास सुकलात लालं २
तहां बाघ बाघ मरूरी रिछोरी, वनं सार समूह अरू यौ रंझोरी,
पराकी अरन्बी पटी तेज ताजी, सुरकी महा धान कम्मान बाजी ३
ऐसे असिव असवार अगेल गोलं, भिरे जुन जेतें सुतते अमोळं,
तिन मद्धि सुल्तान साहब आपं, इसे रूपसों फौज बर्नाय बाप ४
तिन घेरिय राज पृथिराज राज, चिहौ और घनघोर निशान बाज.

(छप्पय)

बज्जिय घोर निशान, राज चहुआन चिहौदिर,
सकल सूर सामंत, समरी बल जंत्र मंत्र सत,

उष्टिराज पृथिराज, बाग लग मनो बीर नट,
 कढा तेग मनोबेग, लगत मनो बीज झट घट;
 थकि रहे सूर कौतिग गगन, रगन मगन भइ श्रोतधर,
 हर हरखि वीर जगो हुलस, हरख रंगि नव रत्त बर. १

(दोहा.)

हरख रंग नवरत्त बर, भयौ जुद्ध अति चित्त;
 निस वासर समुझिन परत, न को हार नहि जीत. १

(छप्पय.)

न को हार नहि जीत, रहेइन रहहि सूरवर,
 घर उप्पर भर परत, करत अति जुद्ध महाभर;
 कहौ कमध कहौ मध्य, कहौ कट यट न अंत दुरि,
 कहौ कंध वहि तेग, कहौ सिट बुटि कुटि उर;
 कहौ दंत मंत हय खुट खुपारि, कुंभ भृसुंडह रुंड सव,
 हिदवान रान भयमान मुख, गहिय तेग चहुआन जब. १

(भुजंगप्रयात.)

गहि तेग चहुआन हिदवान रानं, गजं जूथ परिकोप केहरि समानं;
 करे रुंड मुंड कही कोप फारे, बरं सूर सामंत हुकि गर्ज भारे. १
 करी चीह चिक्कार करि कल्प भगो, मदं तजियं लाज उमंग मगो;
 दौरे गजं अंध चहुआन केरो, करीयं गिरद चिहौ चक्र फेरो. २
 गिरदं उडिमान अंधार रैनं, गई सूधि सुज्झै नहिं मज्झि नैनं,
 सिरं नाय कम्मान पृथिराज राजं, पकरिये साहि जिमि कुलिंग बाजं. ३
 छै चलयो सिताबी करी फारि फौजं, परे भीरसें पंच तहें खेत चौजं;
 रजपूत पच्चास जुज्झै अमोरें, बजे जीतके नद नीसान घोरं. ४

(दोहा.)

जीत भइ पृथिराजकी, पकरि साह लइ संग,
 दिल्ली दिसि मारग चलयो, उतारि घाट गिह गंग. १
 वर गौरी पद्मावती, गहि गोरी सुरतान;
 निकट नगर दिल्ली गये, चत्रभुजा चहुवान. २

महोबा खंड प्रकरण.

(संजयराय औदार्य-छप्पय*)

छोह छागि चहुवान, परे मुरझा न्है धरतिय,
उठ गीधनि बैठिके, चंच बाहैति विरतिय
देख्यो सजमराय, नृपति द्रग दादति पछिन,
अपने तनको मास, काटि मखु दियो ततच्छिन
अपनै सुनयन देख्यो नृपति, अंत समै धम पछियब,
आये विमान वैकुण्ठके, देह सहत धरि चछियब १

(दोहा)

गिहनिफों पल मखु दियो, नृपके नेन बचाय,
देह हसत वैकुण्ठको, पहुच्यो सजमराय १

चंदन.

(विरहछप्पया-सयैया)

छितिमडलकै नममंडल मेघ, उमडि दगौ दिशि धाय रहे,
कंवि चंदन चारुसौ चातक मेर, हरे बन सोर मचाय रहे,
पिय पावसमें बिछुरे बनितान सो, आवनहार सो आय रहे,
कैहि कारन हाय बिहाय हमे, हरि आय बिदेशमें छाव रहे १
ब्रज नारि गंवारि अनारि सबे, यह चातुरता न छुगार्नमें,
बर बारिनि जानि अनारिनि सो, गुन एक न चंदन ना इनमें,
छवि रंग सुरंगके बुंद लसे, छवि इद्रवधु लघुता इनमें,
चित जो चहँदी ठगि सी रहँदी, कहँदी महँदी इन पाइनमें २

चंद्रकला.

(लेखिनी उक्ति-कवित्त)

पाप सरसावनमें दोष दरशावनमें,
जंन तरसावनमें दीन दुःख दानमें,

* आल्हा और पृथ्वीराजके युद्धमें पृथ्वीराजके मूर्छित होनेपर एक गिहनी पृथ्वीराजकी बहुत निकास रहायी, उस बखत एक और पावस मिला हुआ संजमरायने उस दृश्यको देख गिहनीको अपना मांस देकर पृथ्वीराजकी बहुतो बचाया -

उडिराज पृथिराज, बाग लग मनो बीर नट,

कढग तेग मनोबेग, लगत मनो बीज झट घट;
थकि रहे सूर कौतिग गगन, रगन मगन भइ श्रोतधर,
हर हरखि वीर जगो हुलस, हरख रंगि नव रत्त बर. १

(दोहा.)

हरख रंग नवरत्त बर, भयौ जुद्ध अति चित्त;
निस वासर समुझिन परत, न को हार नहि जीत. १

(छप्पय.)

न को हार नहि जीत, रहेइन रहहि सूरवर,
घर उप्पर भर परत, करत अति जुद्ध महाभर,
कहौ कमध कहौ मथ्य, कहौ कट यट न अंत दुरि,
कहौ कंध वहि तेग, कहौ सिट बुट्टि कुट्टि उर;
कहौ दंत मंत हय खुट खुपरि, कुंभ भृसुंडह रुंड सब,
हिंदवान रान भयभान मुख, गहिय तेग चहुआन जब. १

(भुजंगप्रयात.)

गहि तेग चहुआन हिंदवान रानं, गजं जूथ परिकोप केहरि समानं;
करे रुंड मुंड कही कोप फारे, बरं सूर सामंत हुकि गर्ज भारे. १
करी चीह चिक्कार करि कल्प भग्गे, मदं तजियं लाज ऊमंगं मग्गे;
दैरे गजं अंध चहुआन केरो, करीयं गिरद चिहौ चक्क फेरो. २
गिरदं उडिभान अंधार रैनं, गई सूधि सुज्झै नहिं मज्झि नैनं;
सिरं नाय कम्मान पृथिराज राजं, पकरिये साहि जिमि कुलिंग बाजं. ३
लै चलयो सिताबी करी फारि फौजं, परे मीरसें पंच तहें खेत चौजं;
रजपूत पच्चास जुज्झै अमोरें, बजे जीतके नद नीसान घोरं. ४

(दोहा.)

जीत भइ पृथिराजकी, पकरि साह लइ संग;
दिल्ली दिसि मारग चलयो, उतरि घाट गिह गंग. १
वर गौरी पद्मावती, गहि गौरी सुरतानं;
निकट नगर दिल्ली गये, चत्रभुजा चहुवान. २

महोपा खंड प्रकरण.

(संजयराय औदार्य-छप्पय*)

छोह लागि बहुवान, परे मुरछा चै घरतिय,

उह गीधनि मैठिके, चच बाहैति विरतिय

देख्यो सज्जमराय, नृपति द्रग दावति पंछिन,

अपने तनको मांस, काटि भखु दियो ततच्छिन

अपनै मुनयन देख्यो नृपति, अंत समै घम पछियन,

आये विमान बैकुण्ठके, देह सहत धरि चछियन

१

(दोहा)

गिद्धनिकूँ पल भखु दियो, नृपके नेन वचाय,

देह हसत बैकुण्ठको, पहुँच्यो सज्जमराय

१

चंदन.

(विरहव्यथा-सवैया)

छितिमंडलकै नममंडल मेघ, उमडि दशौ दिशि घाय रहे,

छवि चंदन चारुसौ चातक मोर, हरे मन सोर मचाय रहे,

पिय पावसमें बिछुरे अनितान सो, आवनहार सो आय रहे,

कैहि कारन हाय विहाय हमे, हरि आय बिदेशमें छाव रहे

१

ब्रज नारि गंवारि अनारि सबे, यह चातुरता न छुगार्हिनमें,

बर बरिनि जानि अनारिनि सो, गुन एक न चंदन ना इनमें,

छवि रग सुरंगके बुद छसे, छवि इद्रवधु छपुता इनमें,

चित जो चहँदी ठगि सी रहँदी, कहँदी महँदी इन पाइनमें

२

चंद्रकला.

(लेखिनी उक्ति-कवित्त)

पाप सरसावनमें दोष दरशावनमें,

जन तरसावनमें दीन दुःख दानमें,

३

* आल्हा और पृथ्वीराजके युद्धमें पृथ्वीराजके मूर्छित होनेपर एक

गिद्धनी पृथ्वीराजकी चखु निकाल रहीथी, उस वखत एक और घायल

गिरा हुआ संजमरायने उस दृश्यको देख गिद्धनीको अपना मांस देकर

पृथ्वीराजकी चखुको बचाया -

माता पितु द्रोहनमें सती तिय द्रोहनमें,
 असतीके मोहनमें विप्र अपमानमें;
 चंद्रकला वृद्धनकी निंदा अभिषायनमें,
 सुर गुरु संतनकी वृत्ति विनसानमें;
 येती ठौर भूलिकेंहूं भीहि जो खैचिहे तो,
 न्हैहे मुख मेरोसो कलम कहे कानमें.

१

(वर्षावर्णन.)

बरषि बरषि वारि हरख बढावत हे,
 करखत चितरी मल्हारनको गावनो;
 और भांति केकिनकी केका सुनियत आली,
 चातक सुनात बैन सुख सरसावनौ;
 चंद्रकला मंद मंद शीतल समीर बहे,
 फरकत वाम अंग मेरो मन भावनौ;
 ऐहं घनश्याम घनश्यामनमें वीसौ विसै,
 आवन लग्यो हे अब सावन सुहावनौ.

१

(राधास्वरूप उपमा.)

आई तजि गेह मैन आयें बलवीर वीर,
 कैसैं धरौ धीर नीर नैननमें भरिगो;
 पीरी परी देह सीरी मोतिनकी माल भई,
 बीती हे निसीथिनी चकोर चैन ढरिगो;
 चंद्रकला होत चटका हट चहुंधा घोर,
 ठौर ठौर ताम्रचूड शोर जोर करिगो;
 लाल लाल बादर भये हे नभमंडलमें,
 तारन समेत तारापति फीको पारिगो.
 जावक रजो गुन है पद जलजात चारु,
 नख शशि भान ऊरु करी कर चारीमें;
 कुच शिव शैल ग्रीवा विष्णु शंख दंत हीरा,
 हास्य जोन्ह बानी बीना मीन नेन वारीमें;
 चंद्रकला भृकुटी मनोज धनुं मुख चंद,
 वरपद भूषनकी सुखमा निहारीमें;

१

बेग चलि देखो ब्रजचंद तिलु लोकनकी,

सारी धरि छाह मयमानकी दुलारीमें

२

(राधाकी याचना)

आह होत प्रातही पठाह कुल लोगनकी,

जैहो दधि बेचि धाम यामें मोर सारौ ना,

तुम सजि होरी साज छीनी मोहि घेरि आज,

जैहे मों अकाज लाज राखौ गाज पारौ ना,

चंद्रकला सासु सौति ननद जिठानी सदा,

रावरोही नाम छै दवात खात टारौ ना,

यातें तन छेय मुख बिनती विशाल करौ,

पाय परौ हाहा छल मोंपें रग दारौ ना

१

(वंसीतान-संख्या)

कानन मंदि रहो निसि वासर, आन उपाय न व्याधि टरैगी,

कै घसि भौनन बेठि रहौ ननु, दामिनिसी उर आय अरैगी,

चंद्रकल किन चूके चले पर, आय व्याधा सब शीश परैगी,

नीद छुधा सिनह नसिहे कहु, बामुरी तान जो कान परैगी

१

छितिपाल.

(संख्या)

[क्रियाविहंगा-ममोन्नतिका]

यह केस सकेलि सम्हार रही, यह बेनि निहारि नई घतिया,

वह बधुक फूल चलाय दिया, हरदि यह देखि गहि गतिया,

छितिपाल इते पर धुधट ओंट, कियो मुख हाथ धर्या छतिया,

सब भौन मुरावन सेन भकि, ठकुराह न नाहनकी बतिया

१

कोउ कहै निज बुद्ध उदै, इन मत्तमनो गजकी गत भानी,

कोउ कहै छवि बातकी चाल, मरालनकी अवली सकुचानी,

योहि अनेक कुतर्क करै, छितिपाल यह मनमें अनुमानी,

मद चले किन चंदमुखी, पग लखनकी आखियां अरुमानी

२

(शरद वर्णन.)

मुख चंद मनोहर हांस छटा छवि, पुंज मिले क्षितिपै छहरै,
 दृग खंजन खेलै सरोज कलीन, उरोजन ओप लखै लहरै;
 गति हेरि मराठनकी मनसा, हठि मानसरोवरमें हहरै,
 क्षितिपाल विकास बनोपटमें, घट शरद थान थकी थहरै. १

जगलाल.

(धूर्त्तनार विचार.)

अन्न लाउ धन लाउ भूपन वसन लाउ,
 आग लाउ साग लाउ लाउयें बढी रहे;
 लरिका खेलाय लाउ अंगिया सिलाय लाउ,
 लाउ लाउ करिवमें छप न घडी रहे,
 बाजीगर बंदरको जा विधि नचावत हे,
 लिये लकडीको निस वामर खडी रहे;
 मरद लुगाइ पर चढत हे घडी एक,
 मरदके शीशपर जनम चढी रहे. १

चातुर कनैयाजुपे बालाजुर आइ आठ,
 कहो जु कनैया आज हमको दिराइयें;
 गोद लेहो फूल देहो नाकन पिरावो मोती,
 पातलकी पातली हुतास प्यास लाइयें;
 उचेसे झरोखे बीच मोहन वेठावो मोहि,
 रतिपतिकी सूरत चले सेज जाइये;
 बारी ना उत्तर एक दयो भेद सवें लह्यो,
 ऐसी जगलाल तेरी जुक्तिको सहाइये. २

विदेशको होवे त्यार हाथ जोड बोले नार,
 आपसों अधिक प्यार पाछा झट आवज्यो;
 करिके कमाइ सार लावज्यो मोतीको हार,
 कंदौरो ने टोटी कडा सोनारा घडावज्यो;
 बिछ्या बाजुबंध, झेल्य बंगडी घडावज्यो पैला,
 नाकवाळी दांत चुंप रतन जडावज्यो;

चद सूर बिंदी भोर पुंची पति तुसी ओर,
 पतईवाला तिमण्णाने हीरासु मढावग्यो ३
 काच टीकी सुरमो सार आढकुं ले आग्यो छार,
 हींगलकी पूडी धार छार ऐता आवग्यो,
 फूलने कनारी कोर जरी बूटा तार ओर,
 ओढ़नेके फाज चीर रेशमधि लावग्यो,
 घाघराकी चोखी घीट सोना केरी लाग्यो इंट,
 ओर कोइ नवी चीज भूल मति आवग्यो
 शान सेती जाण सही घूर्छ नार बोली नहि,
 बिन्ही केरो पेचो एक आपकेभी लावग्यो ४

जटमल.

(पश्चिमी स्वरूप-ताल रेखता)

धीं गोठ गोटा खूब देखी नार एक सुनारकी,
 दिळ लाइ साहिबने समारी सिफत सगजनहारकी,
 मुख चद भोह कचाण चादी नेन घासी सारकी,
 अलमस्त अच्छी नार जनफरी फटा जान अनारकी,
 अब आरसी अ्यु गाल चमके नाक नब्ध हजारकी १
 धिन पान खाई अघर छाटी पदमनी हे पारकी,
 दोय जुलफ विरह जजिर छटके बांधि छे दिळ प्यारकी,
 दिळ बीच एसे घाठ घाले जानेहु तरवारकी,
 ठमकत अ्यु गजराज चाले फोज जाणे मारकी २
 दोय कमल उपर, भगर सौहे बिचे शोभा हारकी,
 घमघाइ घूघरपाय घमके जाण धुन, घनसारकी,
 सुर चद ईद फरे हमेशां तलब जरा दीवारकी,
 सुख, देख जटमल सिफत कीनी पदमनी हे प्यारकी ३

जमाल.

(समस्या.)

- जोगन व्है सब जग फिरी, कमर बांधि मृगद्याल,
बिलुरै सज्जन नां मिले, कारन कौन जमाल. १
- बायस राहु भुजंग हर, लिखति बाल ततकाल,
फिरि फिरि मेटत फिरि लिखत, कारन कौन जमाल. २
- सजि सोरह बारह पहिरि, चढी अटायक बाल;
उतरी कोयल बोल सुनि, कारन कौन जमाल. ३
- उमडि घटा घन देखके, चढी अटा पर बाल;
मोती लर मुखमै लहि, कारन कौन जमाल. ४
- दधिसुत कामिनि कर गह्यो, करत हंस प्रतिपाल;
झझक हंस चुग चकोर, कारन कौन जमाल. ५
- मालिनि बेचत कमलकौ, काहे वदन छपाइ;
याको अचरज कौन है, कह जमाल समुझाइ. ६
- बाला गई बाग मंह, फल देख्यो रसाल;
फल फाडी दर्पण दिख्यो, कारन कौन जमाल. ७
- तृषावत भइ कामिनि, गई सरोवर पाल;
सर सूख्यो आनंद भयो, कारन कौन जमाल. ८
- सजन बिसारेही भले, सुमरन करै बेहाल;
देखो चतुर विचार कै, साची कहै जमाल. ९
- मनरजक छाती तुपक, बिरह पलीता लाल;
आहि अवाज न निकसती, जाती फूट जमाल. १०
- मुख ग्रीसम पावस नयन, जिय माहै जडकाल;
पिय बिन तनतैं तीन ऋतु, कबहु न मिलत जमाल. ११
- अहि शिव पावक बाज तम, बाल लिखी ततकाल;
लिखि भस्मासुर घन बाधिक, हरि फिरि लिख्यो उताल. १२

(भलपन-छप्पय.)

जदपि कुसंग संग लाम, तदपि वह संग न कीजे,
जदपि धनिक होय निधन, तदपि घट प्रकृति न छीजे;

जदपि दान नहि शक्ति, तदपि सन्मान न खूटे,
जदपि प्रीति उर घटे, तदपि मुख उधर न टूटे,
सुन सुजग द्वार कीवार है, कुजग जमाल न मुकिये,
जिय जाय जदपि मलपन करत, तऊ न मलपन चूकिये १

(विरह फुंगार-दोहा)

तिस जू लगी तीसफी, तिस विन तिस न बुझाय,
आनि मिटावी तीसफो, तिस देखे तिस जाय १
दिन्हो होय सु पाइयै, कहते बेद पुरान,
मन दे पाई बेदना, वह हमारे दान २
ओर अगन भेटत सुगम, बिगलत बसरत तोय,
विरह अगन विपरीत गति, घनतें दूनी होय ३
चित चक्रमक छतिमां पथर, काम अगनि कप गात,
नैन नीर भरपत नही, तौ तन जर भर जात ४
रगत मांस सब भस्म गयो, नेक न कीनी कानि,
अब विरहा कूकर भयो, लाग्यो हाड चबानि ५
आं इकलो मन जात है, तहांलै ये सन जाय,
तौ आ पापी विरहके, बस है मेरे बलाय ६
यह तन तों लंका भई, मन भयो रावन राय,
बिरह रूप हनमंत भयो, देत लगाय लगाय ७
विरह अगनि विपरीत गति, कही न जाने कोय,
दूर मयै वेही जैरै, निमरै सीरी होय ८
जे नित देखे चाहियै, ते नैननतें दूरि,
अस नेही अनमावते, रहै निकट भरपूरि ९
एक कलाधर शिर धरत, तन बिप जरन सिरात,
चंदमुखी चितमें बसत, ततैं मन न अरात १०
सेज ऊजरी कुसुम रचि, और ऊजरी राति,
एक ऊजरी नारि विन, सबै ऊजरे जाति ११
चंदमुखी चित चोरियौ, दिनकर दुख है मोहि,
जब निशि तारा देखिये, तब निशुतारा होहि १२
प्रीतम भंवर वियोगकी, सुन छीजो यह बात,
मुख तो पीरा है गयो, स्याम भयो सन गात १३

जो संग्रहौ तो तन दहै, तजौ तो प्रेमहि लाज; भई छलुंदर सापकी, नवल विरह पिय वाज.	१४
रखौ ऐंछि अत न लहे, अवधि दुशासन वीर; आली बाढत विरह ज्याँ, पंचालीको चीर.	१५
अवधि वीति जोवन विते, म्हेर करो मनमांहि; जियकी जियमें रहत है, ज्यौहि कृपकी छाहि.	१६
विरह शक्ति लंकेशकी, हिये रही भरपुरि, को ल्यावे हनमंत ज्यौ, सज्जन सजीवन मूरि.	१७
शीतकाल जल मांझत, निकसत चाफ सुभाय; मानहु कोऊ विराहिनी, अवही गई अन्हाय.	१८
जरती बरती हौं फिरि, जलधर दौरी जाउं; मो देखत जलधर जरै, जरती कहा समाउं.	१९
पियविन दिया न बारि हौं, मो अंवियौर सूख, करि उजियारो हे सखी, काको देखू मुख.	२०
जब सुधि आवत मित्तकी, विरह उठत तन जागि; ज्यौ चूनेकी काकरी, जब छिरको तब आगि.	२१
हौही बौरी विरह बस, कै बौरौ सब गाउं; कहा जानिये कहत है, ससिहि सीतकर नाउं	२२
हरि विछुरत कुंजन महीं, लगी विरहकी लाय; हम जलि बलि कैला भई, द्रुम कठोर हरियाय.	२३
लाल तुम्हारी देखियतु, सब काहूसौ प्रीति; जहा डारियै तहा बढै, अमरवेलिकी रीति.	२४

(सोरठा.)

मै लखि नारी ग्यान, करि राख्यो निरधार यह; वहई रोग निदान, वहै वैद औषध वहै.	१
भादौ अति सुख दैन, कहीं चंद गोविंद सौ, घन अरु तियके नैन, दोऊ वरपे रेन दिन.	२
ताला जडिया ज्याह, कूंची ता पासे रही; ऊघड सीआ यांह, (कै) जडिया रहसी जेठवा.	३

जयकृष्ण.

(विविध जाति-संकरछंद.)

सारंग दोषक छंद कहिये और मोतीदाम, तोटकौ चारल नैन जानहू फिरि भुजंगी नाम, कमिनी मोहन जानिये मैनावली सुनराज, परमानिका मल्लिका सोहै शंखनारी थाज	१
मालती तिलका चिमोहा दोहरा गनिआन, सोरठा गाहा उगाहा मणिचुल्लिका पहिचान, चौपाइ और अरिछ सोमर देखिये मधुभार, अनुकूल हाफलि चित्रपाद औ पवंगम धार	२
रासावरी पदरी कहिय फिरि दुवैया जान, संकर त्रिभंगी द्विपदठ मरहटा फेरि बखान, लीजवती उपमावली गीयासुपंडी होय, रोला कुडलिया कुडली भणि रंगिका गनि सोय	३
रंगी घनाक्षर दूमलायो मत्तगयंद गनेव, करखा बखानौ झूलना जैसे सवैया लेव, छप्पय बतायो फेरि तोटक छंद बावन पाय, सबै रूप बखान प्रथन दियो दिव्य दिखाय	४

जयकर्ण.

(दयानंदधिरह-कवित्त)

जोगको अगार गिरि धार दृढ आसनको, शिक्षक महीशनको, त्रिदेव सिधायगो, कुटिल कुरायनको, धाम मग चाहिनको, हाथ पशु हायनको, इष्ट दिन आयगो, कहे जयकर्ण चार वेदके बिघर्ननको, धर्मनिधि दयानंद परमगति पायगो, तीन वेद सासनको, समृति प्रकाशनको, आज सत भासनको, बासन बिलायगो	१
---	---

जसुराम.

(राजनीति-रायअंग.)

(दोहा.)

सबको वखत बनायवो, ज्यों सोहे जगजीत;
कबहू वखत न चूकिये, राजनीतिकी रीत.

१

(कवित्त.)

वखतके लिये झांझ नोवत टकोर बाजे,
वखतके लिये बाजे घरी घरियालकी;
वखतके लिये देवपूजनके घंट बाजे,
वखतके लिये सब रात बरे हालकी;
वखतके लिये रोज बैठवौ अदालतको,
वखतके लिये राग रागनी रसालकी,
कामकाज अरजी अनेक भांति जसुराम,
वखतको बांधिवो निशान छत्रपालकी.

१

रोज उठि नाहिवो, फिराहिवो तुरंगनको,
पान फुल चाहिवो, विवेककुं बडाइयें;
धारिवो विचित्रनकुं, मित्रकुं न धारी धारी,
शत्रुकुं विसारिवो न हारिवो सराहिये;
साहनकुं मारिवो न, चोरकुं उबारवो न,
एक घरीहूको गुन उमर निवाहिये;

राजनीति राजवंशी राजनकुं जसूराम,
एक एक दिनमें उपाय एते चाहिये.

२

केते देश केते गाम केते ठाम लोक केते,
वामें फेर केते दूर केतके हुजूर है;

केती मेरी आमंद खरचको प्रमान केतो,
केतनो विकार वामें केतो साच कूर है;
केतो मेरे सेन राज मेरे सुख चाहे केतो,
केतो मेरे देनो केतो खजानाको पूर है;

राजनीति राजवंशी राजनको जसूराम,
रोज उठ इतनो बिचारवो जरूर है.

३

मूखन आमूखन सुबाम अग भांति भांति,
 आसन बनाईबो सदाई तमामको,
 भेठबो अदालतको मिसल मिटायबो न,
 जहा जेसो होय वैसी ताजीम तमामको,
 गजफ्री सिलामती सिलामती सिपाहनकी,
 रंग रोशनार्ई दोउ चाहत मुदामको,
 राजनीति राजबंशी राजनकू जसुराम,
 एतो तो बनाय कीजे होत नीम सामको ४
 दान बूज रीत स्वीज परीक्षा अनेकहकी,
 कामादके देखे बिन महोर न कीजिये,
 काछ दूध घीरज घरम मोम नीत नीम,
 धने ठने धनहूसे भडार भर छीजिये,
 आपहुको रब्धन रब्धन प्रजानहुको,
 घरनीको रब्धन सों फीरन न कीजिये,
 राजनीति राजबंशी राजनकू जसुराम,
 करिबेको कबो एतो एतो सब कीजिये ५

(बोहा)

जेसी उनकी नोकरी, तेसो उनसों हेत,
 इतनो दूध न बुजिये, जीतनो होबे त्वेत १
 एक नेन अमृत भरे, एक नेनमें स्वीज,
 एक नेनमें बिस्व धसे, एक नेनमें रीम २
 चातक वादुर मोर धिति, सदा निवाहित नेह,
 नृप एसे चाहिये जसू, जेसे कहिये मेह ३
 फिरि ए लब्धन चाहिये, राजनीतिको राय,
 जो मन रीमे आपको, मौज न खाली जाय ४
 जो दीजे परधानपद, तो कीजे इतबार,
 जो इतबार न होय जसु, तो परधान निहार ५

(कथित)

जो जो बोल बोलिबेके धारी चित्तहूमें ल्याहि,
 येही बोल बोलनते आगेही विचारनो,

कहु बोल गयो तो निवाह वाकों लीजिये रु,
घरूनी परायनीकी नाहि चित्त धारिवो;
समो देख आपहुको दीरघ विचारि देख,
कामकाज भोग जोग सबही संवारिवो;
राजनीति राजवशी राजनकृ जगूराम,
पटितको पूछके सदाइ एसो पारिवो.

१

जहा जहा घने जने वेटे प्रीति जोर जोर,
उनका करोर भाति फोर फोर दीजिये;
दाना देख देखके बुलाइ आगें लीजिये जु,
मुखकों देखके बुलाय दूर कीजिये;
दीनही परेख देख उनकृ वढाय दीजे,
वढि वढि गये वाकों वाढन न दीजिये,
राजनीति राजवशी राजनकृ जगूराम,
करीबके कहे एते एते सब कीजिये.

२

होय काज जिनहसे उनहीतें होय काज,
ओरसो न होय काज एसो जिय जानिये,
एकहुकूं देखि एक कहे होम वरावरी,
याकी एक दोउ वेर परीछा प्रमानिये;
परीछामें सरस तो ऊनहुतें लीजें काम,
नीरस जो परे वाको कवहू न मानिये,
जगतमें राजनीतिहुकी रीत एसी जसु,
विना देखे काहुको न कामहीमें आनिये.

३

(मेघान्वयोक्ति)

रच्छन प्रजानहुको उमंड घुमड रहे,
कालकों मरोरि मारिवेकी गति गही हे;
सूके सर सरिताको भरि देत छिनहीमे,
भरे सिंधु जेसेकों सुकाय देत सही हे,
सुकविसैं अनेक जीवजंतहुकी मिटे प्यास,
कुकवि पपैयाकी एक प्यास रही हे;
राजनीतिहुकी रीत देखी देखी जसूराम,
मेह अरु महीपति एक रीति कही हे.

१

जो जो कवि कलाधारी आय मिले जाचवेको,
 सोठ एक गुनो दान पाय पथ गहे हैं,
 जो जो कवि घड़ी दरगाहनतें आये सोउ,
 पाये दान दोऊ गुनो राह लखी हिये हैं,
 जो जो कवि समर्थाके पाय दान तीन गुनो,
 विधावंत चार गुनो पाय चित्त बहे हैं,
 राजनीति राजवंशी राजनकू जसूराम,
 दानके प्रकार चार करिवेके कहे हैं

२

नींदनको जोर सब आलस शरीरनको,
 पलही धन्यबो न दिन दिन पारिबो,
 कामकी कचाइ और हुकम परायनको,
 रैन दिन तर्स वांको मचहीसैं पारिबो,
 धारे चकी कानहूकी भोरहु विलोचनको,
 भोमिको उस्वारियो सो मलहीतें दारबो,
 राजनीति राजवंशी राजनकू जसूराम,
 धारिवो तो नीतिको अनीतिको न धारिवो

३

गुनही गभीर स्तेरपना और धागपना,
 शिल्पिखाना बारूत न मेट कीजे कयहू,
 बडोसो बकील चर छोटसैं ध्याय रहे,
 घोल साच अवध अदाजे छीसे जबहू,
 हुकम बहाल पेच मनसूबे छल बल,
 दलनको एकादिल होवे काज तबहू,
 राजनीति राजवंशी राजनकू जसूराम,
 जेते जेते कहे पते राखिवेके सबहू

४

जिनहूके द्वार हस जैसे तो घरेई रहे,
 मकहूकी बहुत बखानी बात गई है,
 जिनहूके द्वारकों तुरंगनसैं ठाढ़े रहे,
 बसर बनाईके जु स्वारी साधी लई है,
 जिनहूके द्वार फूल चंपकसे कुमलात,
 सबलके फूलकी बडाइ सीह दई है,

एसीही अनीति वाकूं कबहू न चले जसू,
चार घरी चादनीत अंधारि रात भई हे.

५

(छप्पय.)

कहो अमृत कहा करै, जहा बिखपाश विराजै,
कहो मुक्ता कहा करै, जहां पथ्थर छवि राजै;
कहो नीर कहा करै, जहां निकसत दव झारा,
कहो बेद कहा करै, जहां मदिराकी धारा;
गुन समझी मथयों गयो, नहि जानी विध नीतकी,
मति कोउ करो जगमें जसू, एसी रीत अनीतकी.

१

राणी अंग.

(कवित्त.)

कीजे धाय बुनिआदि पुत्रकी सहाय कीजे,
क्रोधहू न कीजे चेरी दानी राखि लीजिये;
कीजे धन संग्रह अवासकी जलस कीजै,
दान पुन्य अदब मिटायके न दीजिये;
तनक आहार अहंकारहू तनक कीजै,
नीदहू तनक पानी छान छान पीजिये,
राजाहूकी रानी राजधानीहूके जसूराम,
कीजिये तो रीत राजनीति एसी कीजिये.
जोरे जो जो बातचित कन्तहू ज्यों राजी रहे,
सो सो बातनसें कन्त राजी कर लीजिये;
भार अधिकार ओर चातुरी अनेक भांति,
तीनो पख आपके बढाइ सोंह दीजिये,
कामकाज राजनीति हुकम प्रमान करै,
कीजिये तो रीत राजनीति एसी कीजिये;
पतिसों न अभिमान सोंतनसों ना गुमान,
आवे वाको सनमान जसूराम दीजिये.

१

२

विविध रसोइ कीजै दीजै खान पान वित्त,
औरका हलन चलन सबै देख लीजिये;
नाथ मिले लाज कीजे आबरू बढाय दीजें,
देखे बिन औरके परिछा कर लीजिये,

मुची हो रहीजे प्रीत कुटूँबसो कीजे,
गृहकाज चित्त दीजे नुध सबहीको छीजिये,
राजहूकी रानी राजधानीहूको जसूराम,
कीजिये सो रीत राजनीति एसी कीजिये ३
एक ओरसो तेजन चलन न देत आगे,
एक ओर प्रीतम बिराने छोह धार ज्यों,
एते दुख भाग्यके पसार्यों न गयो जाय,
दुख दूजो लागत है फरे जे कटार ज्यों,
दोउहूको एक ओर कचहू हलन पावे,
याँत नाउं पावे कामनीके ना करार ज्यों,
राजनीति पुरी राजधानीहूकी जसूराम,
सुरीहूके बीच आय रही है सुपार ज्यों ४
(सौरह सिंगार)

आदि किये मजन शरीर चरि ऊर एन,
नेनहूको अजन तिउक माल दीजिये,
कटि मनीं छुदाचली घंटी फापें नेपुरनी,
नाकनको मोती खोर चदन लीहीजिये,
काननको कुडल उरोजहीको कंचुकी रु,
मुखको तबोळ केशपास भरि छीजिये,
राजनीतिहूकी रीति देख देख जसूराम,
करिवेके सौरह सिंगार एसें कीजिये १
अमृतसी बानी सबें बातमें सयानी,
राजहुमें लपटानी जाके प्रीतमसो प्रीत है,
गुनमें गहरानी जाके अघरमें मुसकानी,
पीया मन मानी सब पेसी रस रीत है,
पतिप्रता जानी नहि कपट कृपानी छोक,
छछमीसी मानी सो कहानीजुकि रीत हैं,
सुखनकी दानी प्रजा मात ज्यों प्रमानी,
जसूराम राजधानीकी बखानी राजरीत है २
(बोहा)

प्रीतम कहै सो कीजिये, रहिये प्रीतम पास,
जो नहि कीजे सो जसु, बहोरों होय बिनास १

(मर्याद उल्लंघन दोष-छप्पय.)

सीता जैसी सती, राम जैसे पति राजा,
फिरे न कोऊ काल, सदा ऐसे विध साजा,
जो आगे पद दियो, रामहूकी हृद मेटी,
तो रावण हरि गयो, लाज कहां गई लपेटी,
जग नीति रीति ऐसी जसू, सब ऐसी सुनि लीजिये,
मन जानि पिया हृद मेटिके, कारज काहु न कीजिये.

१

(प्रेमस्वरूप-कवित्त.)

दिनको वियोग होवै विरहा अंगार चुगै,
भूलि जात पवन सुगंध सीत मंदको,
नेननकूं देखवेकी टगमगी लगी रहै,
रेनिकों अपारही बढावत अनंदको,
एहि विध ऐसी प्रीत ऊमर नभाई जात,
कवहू अघात नां मिटत दुख दंदको,
राजनीतिहूकी रीत राजनकूं जसूराम,
चंदमुखी चाही ज्यों चकोर चाहे चंदको.

१

राजकुमार अंग.

चार घरी रात रहे उठिबो अटक चाहे,
चढिबो सवारी आई सबें साथ जितने,
जोर खेंच चले भुजदंडको बनाय देहि,
बाक पटे सबें घात पेच होय तितने;
रोज रोज मल्लाबिद्या चढिबो शिकार रोज,
कसब कमाये बिन कह्यो जात कितने,
राजनीति राजके कुमारनकूं जसूराम,
एक बालपनेहूमें साधनेके इतने.

१

बापहूकी अदब अदब उस्तादहूकी,
मातापिता अदब जरूर कह्यो इतनो,
सबनको मन रीझ आमंद निगाह मांझ,
खरच नगर हों परिछा भेद कितनो,

चपलता साच गुरु गभीरता दान पुन्य,
 महोत्तें ना स्वाओ भूखन सुवास कितनो,
 राजनीति राजनके कुवरकू जसुराम,
 एक घालपनेहमें राखिबेको इतनो

२

गजकी सवारी ओ सवारी तुरंगनकी,
 राजनीति रागमाल कोकमेद कितनो;
 देश देशहकी भाषा पदके बिलोकबोई,
 बोलिवो संभारिये सबके गुन जीतनो,
 गांचवो ओ डिखनो हरेक भेद चातुरीको,
 जितनोई सिखीए सो याद रहे तितनो,
 राजनीति राजनके कुवरकू जसुराम,
 एक घालपनेहमें सीखबेको इतनो

३

(दीहा)

पहिलें विषा चौठ पढि, कीजें सबही काम,
 रायनके उपचार हे, जिनकों आठो जाम

१

(चौदविषा-कथित)

चाबुक सवार जलतरन अरु धनूर,
 घात जोत ज्ञान मद्य भेद कोक लहिये,
 गीतन सगीत नट विषा भेद न्याकरण,
 अश्वर अमोल तपहकी गति सहिये,
 एती बात मुरतासों चतुरसों बाइ भाति,
 बाहनको फेर फेर बेगो गुन गहिये,
 जसु मीन मुरतमें हंसके कुमार जेसे,
 कहे राज हंसके कुमार एसे कहिये

१

(सुसग-कुर्मंग विचार)

उदधी जल सोबती मली भई मुक्तनकों,
 राम रानी माल हार हिये कर रहे हैं,
 वाही फिर सोबती जो माननीको भई आय,
 कामदेव जेसे सोऊ चपल गुन चहे है,
 वाही फिर सोबती जो तुरगनकू भई आय,
 सूर जेसे चादिके फिरीय गुन गहे है,

राजनीति राजनके कुंवरकूं जसूराम,
येही सब सोवतीके गुन सोई कहे है. १

कागहूकी सोवती जो कोकिलकूं भइ आय,
श्याम रंग भयो सो सुपेत रंग ना धरे;
अनिलकी सोवती जो भई आय वसतीकूं,
छोरकें उजर वन रही वासमें धरे;

रावनकी सोवती जो भइ है समुद्रनको,
भइ सेतु बीचमेंसो वांदरने वांधेरे;
जो नही तो कोउसों वीगरे अमेट जसु,
सोवत कुसोवतमें सुमति न सुधरे. २

देख लोक सोवतीमें मुक्तासों लेते गुन,
दुनियासो दूर करीबके गुन गहे है;
कीतीसैं अंग रंग उज्ज्वल धरे हे जानी,
छीर अरु नीर दोऊ जूदे करी चेहे है;
वालहिमें माल बाधिवेके गुन साधन है,
चाली कुलहूकी चालहिकों मंडी रहे है;
राजनीति राजनके कुंवरकूं जसूराम,
येही सब सोवतीके गुन सोई कहे है. ३

(छप्पय.)

जो राजा वृतराष्ट्र, कुंवर दुर्योधन जैसो,
आप तुरगी भयो, और माने नहि ऐसो,
आप वीरसो कटे, पांच पांडव धर लीनी,
जग बिच परी हसाइ, निज अपकीरत कीनी,
भयो नाश कुल आपको, जसूराम कुतरंगकी,
राजेंद्र कुंवर कोउ मति करो, एसी या खतरंगकी. १

मंत्री-वजीर अंग.

(दोहा.)

जैसे भाग्य हे भूपके, सब जाने संसार;
मंत्री आगें मिल रहे, ऐसे बुद्धि उदार. १

रैयत सब राजी रहे, मिटे न रावत मान,
आमद घटे न रायकी, तो प्रधान परमान

२

(कथित)

अवसरके बिना बात कयहू न बाही करै,
अवसरके आयेत न भूले फोऊ धारके,
क्रियहूके आगे काज करत न फचहूको,
समे सावधान गुन आगेके बिचारके,
रायके हजूर एक दोऊ मित परे रहै,
मनसों न न्यारे कहिवेमें बे हजारके,
राजनीति राजके बजीरनकू जसुराम,

१

कहे एसं छप्पन सभैहू कारभारके
जैसी होय आमद ऐसोई खरच राखै,
मगर कहूको राह कितसों न गणो है,
नीद और अहकार आलसकों घाट करै,
ऐसो जानि कारभार बिन फोन रखो है,
साळ साळ हर साळ कागद जुदे रहे जु,
चाकरीको वाचा एक चित्त चाह चढो है,
राजनीतिहूकी रीत देखि देखि जसुराम,
कारभारहूको बीरबल एसो कषो है

२

एसो मोल मोले नहि आपहू न बांघ्यो जाय,
बातहूको आपके बनाय कहे जानियै,
चचलता धीर गुन हेमत हसाव सूधो,
टेखन पढ़न सब चातुरीसों जानियै,
घरेही न रंक छांड बडेकू न गृहे रहे,
अदल नियावहीको भेटत न मानिये,
जैसी रीत देखे एसी जगत बसाने जसू,
एसी रीत कारभार उनको बसानिये
जैसी है कचेरी वाको देखै पीछे पार वाको,
रोस भरे रहे वाकों आगेही बढ़ाइये,

३

कामहूको बिगरे बिगारे सो निकार धरै,
 कामहूको भये वाको सदाई सिराइयै;
 केते राखे राख लीजै केतेक विदाय दीजै,
 तौलो संग रहे जौलो ऐसेही निवाहिये,
 रायके वजीरनकों सबे लोक जसूराम,
 तबोलीके पान ज्यों संवारवोही चाहिये.

४

पथरसो बोल कहुं डारिये न काहूपर,
 डारियै तो हीरसैं लपेट कर डारियै;
 मुखतैं बिगारियै न चिततैं विसारियै न,
 महा रोस भयो तोऊ मनमांहि मारियै;
 एक घावहीसो कूप खोद्यो नहि जात कहू,
 धीरे धीरे लिये काम सबही सुधारिये,
 राजनीति राजके वजीरनकुं जसूराम,
 गुडहीतैं मरै वाकूं वीखतैं न मारियै.

५

जाको हे कचाई वाको आगेही बताय दीजै,
 पाछेतैं न दोष दीजे रोष न बताइये,
 कामहूतैं बिगरे बिगारे सोई काढ डारि,
 कामहूके भये वाकों सदा कर साइये;
 केते राख राख लीजे केतने विदाय कीजे,
 जौलों रंग रहे तौलों एसेइ निभाइये,
 राजके वजीरनकुं सबे लोक जसूराम,
 तंबोलीके पान ज्यों संवारीबोइ चाहिये.

६

ज्ञान जजमानहूकुं कितने बताय देऊं,
 जो कछु अजान तो सुजान करि लइये,
 विद्या बल आपकुं देखाइ सबैं साचों करे,
 जूठ कारभारके नजीकहू न रहिये,
 आप लेत घग्हीको उनहीको पुन्य होत,
 दोउहूको होय काज एसें तीर वहिये,
 राजनीतिहूकी रीत देख देख जसूराम,
 बिप्रकी बजीरनकी एक गति काहिये.

७

नेननेमें बात प्रीत कपटीको जानत हे,
एक नाही देखत हजार वृक्ष लहये,
एक घात मरनमें कितनी मिलाय दीजें,
एक रस गारनमें केते बना रहिय,
जाको राग जेसो वाको तेसोइ इलाज देत,
जाके चेन भयो बापें मागनकों चाहिये,
राजनीतिहूकी रीत देख देख जसूराम,
वैदकी वजीरनकी एक गति लहिये

८

(निमकहरामको शिक्षा-छप्पथ)

भस्मागद तप कियो, शिवहि अपनो करि भाप्यो,
जार करे अगार, शिवहि एसो यर आप्यो,
सो गिरिजाकुं देखि, शिवहिंके पाछे घायो,
कोन बिघ किरतार, आप उल्टो दुख पायो,
सब मत्री रहो साचे सदा, कर बने नहि कामही,
जग बीच कोह एसो जसूर, हारे निमकहरामही

१

मुसाहिब अग.

(कचित्त)

रोज रोझ काह बिन अरज हवाल कीज,
रीस छोम छालचके नजीक न रहबो,
करे जे जे काम सावधानके खाहिगीर,
बबहर चार हट काहूँसे न गहबो,
आपहीकी जानको समाव सबे छांड दे के,
साहिबके जानको सुभाव सबे सहबो,
राजनीति रायके मुसाहिबको जसूराम,
कामकाजहूको अवकास देख कहबो
एक नैनहूकी कोर करै बात कोऊ भाति,
पाय पाय जाय ऐसी रायनकी रीतसों,
हाकमके हुकम कुचायनसें दूर रहे,
जहूर धरत प्रीत एसी जुग जीतसों,
नाहि अभिमान रहे सबसों समान बुद्ध,
पण्डपात करे नाहि आपहिसों कीतसों,

१

लाजके जहाज देवे दान पुन्य जसूराम,
 रायके मुसाहिवकों रहै राजनीतसों. २
 साहिवके खास वरदास सैंव राजी रहै,
 साहिवको शत्रु मित्र निगा होत जितने;
 साहिवको होय मन दोख वह जाय नहि,
 साहिवके मन भावे करे राजनीतने;
 साहिवके आगे सदा अदबकी रहे बात,
 साहिवकी जातके जतन करै कितने;
 साहिव सुजानहूँकै सेवा गुन साहिवके,
 जसूके मुसाहिवके लच्छन हे इतने. ३
 कोऊ बात भीतरकी बाहिर न जाने कब,
 सोबतके लोककों पिछान है न सानमें;
 सुपनमें साहिवकी बुरी बात कहै नाहि,
 कोऊ कहे सुने नाहि ऐसे गुनगानमें,
 जा दिनतें लागै प्रीत बाहि दिन याद करे,
 परीछा अनेकहूँकी धरे कर पानमें.
 कबहूँ नां रहे दूर कबहूँ ना होय क्रूर,
 जसूराम सोऊ करै साहिव जिहानमें. ४
 दीन दगाबाजनकों सबही पिछान लेत,
 कामकाज साच जूठ सुर्त ठहरायबो;
 जबहीके सीर गुन राखत गोहरे आगें,
 आलमतगीरीहूँमें बेसेही निबाहबो,
 ज्यों ज्यों सुख देत त्यों त्यों दुखको सरीख होत,
 जानो कछु चूक नाहि देत चित्त चाहेबो;
 किनहूँकी भली बुरी मुखतें न कहे कछु,
 जसू एक जुग बीच कठिन मुसाहिवो. ५
 जेसी कही मित्रताइ त्यारी करी जाओ जीत,
 लागी पशु पंखी जीव जेते लोक जनसो;
 रसमके कापडसों हट्सों दूसाल साल,
 जाई तज धनसों मिटे न रात दिनसों;

जेसैं जुग आगेहूकी सोबतमें रहे जसू,
 एसैं रहे सोबतसैं मुसाहिब मनसों,
 होव जो दूर तोहि मिलन हे हजूरी केसो,
 होय जो नजीक तो मिलन नाहि तनसों ६
 चंचळ चपळ गुन बाहिरकी छेत शुद्ध,
 बेठ जब भीतर हजूरनमें सही हे,
 रग छवी मुरतकों बनाये अनूप रहै,
 गादी करी चाह रह गादीनकी मही हे,
 कबहु न मेटे सुख आपतैं बिलासहूकी,
 देखि देखि जाहलकों यां कबिच रही हे,
 राजहूकी रीत देखि देखि जसुराम सबै,
 मितकी मुसाहिबकी एक रीत कही हे ७
 राग रंग लिये आगे सदा बने ठने रहे,
 दोउकी बहार सब जगतमें जही है,
 नैनसैं मिलाय नैन सफोचत चितहूपैं,
 बोलत बुलावे न छुपावे बात रही है,
 एक एकहूसैं बात कबहु न उठ जात,
 दूरतैं नजीकतैं निमाय छेत सही है,
 राजहूकी रीत देखि देखि जसुराम सबै,
 सिद्धनकी साहिबकी एक रीत कही हे ८

(दोहा)

राजनकी सोबत महा, कठिन कहे सब कोय,
 बीस बिसा जानि सबे, सोल मुसाहिब होय १
 दिन दिन बाढत रंग रस, दिन दिन बाढत हेत,
 सोल मुसाहिब जान ज्यों, फीकी परन न देत २
 साहिब तेज प्रतापतैं, रहे मुसाहिब मान,
 कबहु गरव न धारिये, जानत सकल जिहान ३

(छप्पय)

अर्जुन जेसे एक, महा जग बीच मुसाहिब,
 जिहि सोमत प्रजराज, नंद नदनसैं साहिब,

प्रिय रच्छन गिरि धर्यो, संग साहीबकी छूटी,
जिहि भारत जुध कियो, सोइ देखत तिय छूटी;
गोपी सिंगार सबहीं गयो, एक न बच्यो उगारवो,
जग बीच मुसाहिवकों जसू, इतनो गरव न धारवो. १

रावत-पटावत अंग.

(दोहा.)

भृपन बसन सुवास अरु, मिटे न कबहू मान;
हिम्मत आयुध टेक दे, रावत सोहि सुजान. १

रायनके बेठे हुवे, पीक न डारत पास;
खेचन दे तलवारकों, रहत न कबहु उदास. २

जों लों राय खरे रहे, तों लों वेठत नाहि,
जाहीतें मन भंग हे, छोडे चाहे तांहि. ३

बिन बुलाय बोलत नहि, पूछे बोलत बोल;
आसन राय न वेठहीं, सो रावत अनमोल. ४

जसू करे किमत नहिं, रावतहूकी राय,
रावतका राखे हिये, साची प्रीत सदाय. ५

लोकलाज राखे रहे, कहूं करे नहि त्याज;
देवो मरवो मारिवो, लोकलाजके काज. ६

(कवित्त.)

शरनको आयो वाकुं कबहू न सोंपत हे,
निमक जो खायो वाको वाहत न हीन है;
सामे घाव सूरकें रहत हे सिंगार सदा,
दूर गयेहूतें कछु भाखत न दीन है,
करे नहि अर्ज सुख टरे नांहि पचहूते,
जसुराम ऐसेही संग्राममें प्रवीन है;
सावधान शूरवीर राखत है महाधीर,
मनमें महरवा न वाकों तन छीन है. १

समधीसों नोकरीतें रहत हे शूर रस,
दारुन दगासों कबे भावत न दीन है;
शरनकूं आय वाको कबहू न सोंपत हे,

निमककौ चाहे वाकु चाहत नहीं नहै,
 रायनके पास बेठि देत न इनाम आप,
 जगनके जोरावर मागन अधीन है,
 करत ना भरजी मुख टरत ना पंच होत,
 जसु ऐसे रायनके पटावत प्रवीन है २
 एक धेर मुजरेकु आवत हे दिनहुँतें,
 राजको पटावत हे ना फछु अनीत है,
 मिशल्फू चूकत ना बेठत न पाय बांधी,
 बठत हैं वेसैं सिद्ध जेसी जो जो रीत हे,
 हसत न बोलत न विहरत समे बिन,
 बढो डर राखत ना बहुत ना प्रीत है,
 जगतमें राजनीतहूकी रीत देखी जसु,
 राजके पटावतकी सदा ऐसी रीत है ३
 अवबहीत रहे नीच कसब न गहे भूप,
 सबनकु लहे सोउ सेवककी सान है,
 बुध रीत लहे न्याय मुखहीतें कहे चोख्खो,
 चाकरीमें रहे नित विघसों सुजान है,
 आवरूको चहे भार अधिकार सहे गुन,
 ओगुनकू गहे नाहि वीर सावधान है,
 दण्डनकों देखि टले नाहि रंच कहीं जसु—
 राम रायको सो पटावत ही प्रमान हे ४
 कसबेकी मूतल नां फूलनको हेत कछु,
 आवरूकें गये प्रान तजें जात इतनी,
 भीनें रहे लाल रंग जंगमें न पाखी कैं,
 लालसैं न घुरकी कैं न रीत जितनी,
 काहुको उठत अटककी न छूटत फवु,
 पर त्रिया लुटत न जीये वाखी तितनी,
 रायको जो रण्यन करत रहे जसुराम,
 रायके पटावतकी कही बात कितनी ५

लोक सरदारहूके राजी सब राखे जाय,
चाकरीके किय बिन लालच नां चाहिये;
एकहूकी भली बुरी कहे नहि एक आगे,
सबके कुलच्छन कबू न आप साहिये,
रायके बजीरनकूं राखि राखि लीजें रंग,
आपकी करे तें बात ऊमर निवाहिये,
राग वाग सरे कूच राखी लेत जसूराम,
रायके पटावतकूं एत गुन चाहिये.

६

जगहूमें भली तरवार हे तो कहा करे,
जब कोऊ लायक जो मारी हे न कबहू;
चढवेके लायक तुरंग कहो कहा करे,
शूरवीर पीठ सकुचाय रहे जवहु;
शूर पीठकुं जो सुराहे तो कहा करे,
करे शिरदार जहा किमत नहि कबहू;
भली तरवार नाहिं मारे ना सोपाह भले,
भले सिरदारनको कीमत हे सबहू.

७

एक बेर उत्तरहीं एक बेर चढी जाय,
देखतही देखत जो चढत हे पानी ज्यों;
लाखनके म्हेलसुं विकाय पाच लाखनसों,
बिना पानी मालवाको कोडीकी कहानी ज्यों;
जात कुल भातहीकूं बडे दधि जात जेसो,
भये तोपं कहा भयो पत्थर प्रमान ज्यों,
जगतमें पानीकी पिछानी जात बात जसु,
पानीहू पटावतको मोतिनको पानी ज्यों.

८

काखत हे लोहके मनाह बार काख जेसे,
खुदहूके सबहूके होदे गहि रहे हे,
लाजहूके लंगर बिराजत हे पायनमें,
जीनहूके बेठन कढन कारे ठहे हे;
रात दिन बानहूकी धजा फरकत रहे,
रायके अंकुश सदा सिथिल जु रहे हे;

जगरन गहराते मदमाते जसूराम,
 अटक नेह हस्तिसे पटावतकू कहे हे
 मन मानी चपळसें चले जु बमत हे मुराद,
 बाकी जाके नाम सुने वेरी तुटसे सही हे,
 जाके शिर शोभाहूके चढे फुल रात दिन,
 जीतहूके हके बाज बोल साच गही हे,
 जाके भार एक लाख हजारजु ऊठे नीके,
 जाके तन हीरनकी मंदस्वन रही हे,
 राजनीतिहूकी रीत देख देख जसूराम,
 पीरकी पटावतकी एक गति कही हे

९

१०

(छप्पय)

ज्यों तारे नव लाख, चंवहू एकके आगे,
 गहे राह जब आय, काम तब एक न लागे,
 लज भये तन रहे, फोठ जानत नहि नीके,
 जबही देखत चंद, तबहि लागत मुख फीके,
 दिन कोऊ मुख देखे नही, दोष जगत सब दीजिये,
 जन बीच पटावत बहे जसू, एसो कबहु न कीजिये

१

रैयत अग

(दोहा)

चोरी चुगली पर तिया, कोऊ काम कुकाम,
 एती बात न जानिये, सोऊ रैयत नाम
 घरहमें कजियो चुके, नातनमें न सुनाय,
 नातनमें चूके जसू, दिवानकु न सुनाय
 हय हाथी अरु सूरमा, जान लज मरजाद,
 एतो तो राजे जसू, जो रैयत आबाद
 कहा पारस कहा किमिया, कहा दधनाउत रस्त,
 जहां रैयत छार्ह जसू, रही हिमाऊ पंख

१

२

३

४

(कवित्त)

बही बेर जागे नहि गृहि राखे चचलता,
 देशहूके पुन्यमें धनीको नाम धारिबो,

कसबकुं राखे सो तो ता दिनाही ताजे^१ करे,
 त्रियासों विगार नाहिं अमलीसों डरवो;
 कृपरोस बसिवो ना बेठिवो कुसोवत ना,
 उधारको करिवो ना न्याय चोक भरवो,
 राजनीतिहूकी रीत देख देख जसूराम,
 रैयत हे नाम वाको सर्वे एतो करवो.

१

भजन बेपारके उपायमाहि शील गुन,
 धनहूको संग्रह धरम नेम धारिवो,
 शाहूकार कार बेहेवार सोई सर्वे सांचो,
 नात बेहेवारमें अन्याय नहि लरिवो;

बनावन आभूपन भूपन सब नीतहूको,
 नीतिहूको चालवो अनीतिहुतें टारिवो,
 राजनीतिहूकी रीत देख देख जसूराम,
 रैयत हे नाम वाको एतो सब करवो;

२

धनहीकों दूर राखे मुखतें न कहे धनो,
 अमलीके काम सबे देखि देखि करवो;
 करजकुं लैन दैन करिये ना आमाँलसो,
 करजमें पावे सो तो हरें हरें हरवो,
 जो जैहें दीवारी बधुवाको देवो राखिवो ना,
 खतहीके भेटेतें जु एक लेनो करवो,
 राजनीतिहूकी रीति देख देख जसूराम,
 रैयत हे नाम वाको एतो सब करवो.

३

जेतो रस पैये तेतो पलहीमें बढें जाय,
 मुखकी सुवास आसपास लोक लही है;
 अधिको अंधेरो होय रातिकुं कुमुदी जाती,
 प्रभातकुं हजार कली खीलीसी रही हे,
 मंवरके अमलसैं वाहिके सहे कराई,
 इनसैं सुहाई देत हेत प्रीत सही हे,
 राजनीतिहूकी रीत देख देख जसूराम,
 राजीवकी रैयतकी एक रीत कही हे.

४

जो जो देख्यो चाहे तो सोरह सिंगार सजी,
 चाहे तो न कोउ काज अनमनिसी लही है,
 जोइ थान छेत सोइ देत जो लगी हे प्रीत,
 छके फारमार धेहि कुलवधू सही है,
 नाह धोहे दृष्टन तो उनपही रहे सदा,
 गठकों सलाम करी दूर जाय रही है,
 राजनीतिहूकी रीति देखी देखी जसुराम,
 रानीकी रु रैयतकी एक रीति कही है ५
 अमृतके धीज बोए होइ जामे अमृतही,
 बिस्वहूते धीज बोये बाके बिस्व सही है,
 जेसो रस पैयें तेसो रस होय जाय बामें,
 ढरहु परीत सदा आप मुकी रही है,
 फूल तहा चंपक गुलाब जाकी किमत है,
 आकही धतूरा जहा कीमत न लही है,
 राजनीतिहूकी रीति देख देख जसुराम,
 कृषिकी प्रजानहूकी एक रीति कही है ६
 वाके बडे भाग्य जाके रैयतसी कामधेनु,
 जामें रस राजत है माया मन मोहिनी,
 वृष्ट्यु जो वृष्ट्यपति चाखनकू पोखत है,
 वृष्ट्य जो कलपवृष्ट्य सदा रहे रोहिनी,
 घरी घरी फेर फेर उहै देखे घरे धीर,
 पीरही जो हीत नाही होय प्रीत ओहनी,
 राजनीति मंत्रिनके दोउनकू जसुराम,
 दूष एसो दोहिबो न फूटि जाय दोहनी ७

(छप्पय)

रैयत राजा राम, तिही अपनी करि जानी,
 राजा एसो राम, बारि जीर्द्धि जात बखानी,
 देखी रैयत आय, दगा उनहीते कीनो,
 आस्वी जमीहु खाइ, अंधने कछु न दीनो,

कर भरत राजआज्ञा, विलंब न करे कोऊ कामकी,
जो अगे राज कर जइ जसू, रैयत राजा रामकी. १

कवि अंग.

(दोहा.)

लोभ नहीं आग्रह नहीं, सुच्छम वसन शरीर;
सो पूरे कविता जसू, जो गावत रघुवीर. १
सूख मनाइ कहे खरो, विद्या पढे जु राय,
सभा सोहत बोले जसू, जो पूरे कविराय. २
जाने वाकुं व्होत हे, अतही शीख अनंत;
जाने नहि वाको जसू, बहिर आगे शंख. ३
जसू न जाचे जामसुं, बडो भाटनको टेक,
तेरे मागन व्होत हे, (तो) मेरे भूप अनेक. ४

(कवित्त)

पहोर रात पीछलीकुं उठकें हरेक विद्या,
पढे भाषा धीर सब बोलके निभाइयें;
छपें राजसभा मांहे एसो परविन रहे,
जेसो हे विचार एसो बोलिवे सराहिये;
कोउसें विवाद नांहि काम क्रोध दोउ नाहि,
मेटन म्रजाद ठांहि सदा एती साहिये,
राजनीतिहूकी रीत देखि देखि जसूराम,
चतुर हे राय वाकूँ एसे कवि चाहियै. १
रंगहू न देखे उठ चले एक साहीतमें,
जायके हजार कोश रहे एसो सही है;
प्रीत जोइ लागे कोऊ समे फेर आय मिले,
नाहीं प्रीत लागी वाकूँ यादहू ना रही है,
जोइ जोइ वार वाके संग रहे आठो जाम,
जो जो हे गुहार बातचित्त ताकी गही है,
कोऊ भाषा सुनत सुनावत है जसूराम;
पंखी अरु पंडितकी एक रीत कही हे. २

जहां फलु बोलबो न चाल्यो ना दंग ढाल,
 ताजीम तवाज नाहि उहां कहा कहिये,
 कोइ फलु कहे नाहि कहिये तो सुने नाहि,
 सुने जेसे कहे एसे रुठी रुठी रहिये,
 आपहूकी खेचें घात और कूट मारे भली,
 घुरी बात जहा रहे शेर स्वाजे लही हे,
 राम राम करिके बिदाय होत जसूराम,
 एसी समा बीच घरी एकहू न रहीए ३
 रही है अनीत और नीरलज राजा रानी,
 मुख मुसाहिवको कैसे करी मानिये,
 रायत गरीब जहा रीयत बिगार तहा,
 फिरहे बजीर जहा एसो जिय जानिये,
 पढित लरकासे कुमार नीच सगत हे,
 राजनीतिहूकी रीत देखी बित्त आनिये,
 बहां भलेहूकी घाट देखिये न जसूराम,
 पूतहीके लखन सुपाखने पिछानिये ४
 काच जेसे राय जोइ राजनीति शीख छेत,
 बिना पार किये कलु अर्थ ना सरत है,
 वाकों कवि कारीगर भातकै चढावे पूट,
 बहोत बहोत वाकों पदबोइ करत हे,
 देवगुन दान वह बेमानक गुननसें,
 जेसा काम होय एसी जीनको धरत हे,
 जगतमें ताहि आगे जाय अस जसूराम,
 जेसो जहा चहे तहा जाहेर करत हे ५

जशवत

(श्रीकृष्ण चिन्तास, आध्यात्मिक, - १)
 मृदान्न निशि दिन गैया चरावे प्रभु,
 राभेपति मुखी बजावे ठोर ठोरही,

कबहू गोवर्धन पर गैया बेठाबे आप,
 बैठत एकात जहां नहीं कछु शोरहीं;
 सुचल सुदामा लिये संग ब्रह्म ब्रह्मनपें,
 लता पुंज पुजनमें करे दोर दोरहीं;
 कबहू जया सेहेली सुखसों एकेली मिले,
 भले जशवंत यों रसिक सिर मोरहीं. १
 राधेती सकल कर्म साधती सो राधा कही,
 माया नाम पति ताको कृष्ण नाम कहिये,
 वृंदावन व्रंद नाम कहीए समस्त देह,
 गो नाम इंद्रियोंको तत्वहुते लहिये;
 ताहिको चरावन प्रवृत्ति देखो यान मध्य,
 मुरली बजावनो अनहद नाद कहिये;
 मन गोवरधन हे इंद्रियोंके वर्धनतें,
 एसा जशवंत अर्थ चित्त नित्य चाहिये. २
 इंद्रिय सकल मनमध्य लीन करके सो,
 गौवन बेठावन समाधि नाम जानिये,
 सुचल सुदामा नाम चित्त अहंकृतको हे,
 तासुं मिल ब्रह्मकोस मध्य सुख मानिये;
 लता सुखमना आदि नारी जामे नित वसे,
 जया मति नाम जामे विश्वनाम महानिये;
 परम आनंदरूप कृष्ण जशवंत कब,
 अंतरमै खेलैयों निरतर पिछानियै. ३

(दोहा.)

सुख शशि वा शशिसों अधिक, उदित ज्योत दिन रात,
 सागरतें उपजी न यह, कमल अपर सोहात. १
 नेनकमल ए एन है, ओर कमल केहि काम,
 गमन करत नीकी लो, कनकलता यह वाम. २
 धुरम दुरै आरोपतें, शुद्धाहुति होय,
 उरपर नाहिं उरोजये, कनकलता फल होय. ३
 परजस्ता गुन औरको, औरविषे आरोप;
 होय सुधाधर नाहिं यह, वदन सुधाधर ओप. ४

जीवन.

(चित्तशुद्धि)

कान कथा सुने तब मुनिवेको रखो कहा,
 जीम रटे राम तब फेर कहा रटिबो,
 नैन रूप लखे तब लखिवेको रखो कहा,
 पाप आप फटे तब कहा रखो फटिबो,
 दान पानि करे तब कहा रखो करिवको,
 हटे यम हाथ तब कहा रखो हटिबो,
 ब्रह्मज्ञान भासे तब जीवा कहा भासियो है,
 जन्म मृत्यु मिटे तब कहा रखो मिटिबो १

जंगलमें जाये कहा पान फल खाये कहा,
 चारकों बढाये कहा अग रहे नगा है,
 भोगकों बहाये कहा जोगकों जगाये कहा,
 तनकों तपाय कहा वस्त्र गेरू रंगा है,
 द्वारफाकों धाये कहा छापकों छगाये कहा,
 मुठ मुढवाये कहा छार छाय अगा है,
 जीवा जगमाहि ऐस भेष धरे होत कहा,
 होत मन शुद्ध तब गेहमाहि गगा है २

(जीवनसुधार-सधेया)

पानितें दान कियो न कबू अरु, पायतें बिष्णुपदी नहि धायो,
 नैनतें ना रनद्योर लखे पुनि, कानमें वेदको शब्द न पायो,
 रामको नाम लियो रसना नहि, सत समागममें नहि आयो,
 जीवन तो नरवेह धरी कहा, या जगमें तुम आइ कमायो १
 चित्तन एक चितें करिये, फारिये नहि फेर ससारके माई,
 पार उतारन जे भवसागर, मारकें मारनहार सदाई,
 धीरज धारना धारि उरे अति, मारि सबें ममता मनमाई,
 जीवन सो भजिये निशिवासर, वेद वेदात तजी चतुराई २
 धीरज तत्त धमा तम मात रु, शांति सुलोचनि धाम प्रमानौ,
 सत्य सुपुत्र दया भगिनी अरु, भ्रात भले मन समय मानी,
 ज्ञानको भोजन वस्त्र दशौ दिशि, भूमि पलंग सदा सुखवानो,
 जीवन ऐसैं सगे जगमें सब, कष्ट कहा अब योगिको जानौ ३

जन्म लियो जगमें जवतें, तवतें शुक्ने सब आशकों त्यागी,
 पुत्र कलत्र धरा धन धाम, जनक भयो तिनमें अनुरागी;
 क्रोधि महा दुरवासा भयो, जडभर्त रह्यो नित शांतिमें पागी,
 जीवन कर्म जुड़े सबके पर, पाय हैं मुक्ति वे चारौ सुभागी. ४

जुगलकिसोर.

(लीवडी शहर-कवित्त.)

शोध सब अचल अटूट शुद्ध सोननतें,
 जाने धों कहालों जड जडी गहरीली है;
 दसो दिस रही फैल मुकवि किसोर ऊंची,
 सवे सुख संपतके पातन गसीली हैं;
 पछी गुनी गननतें भरी भरपूर छाया,
 पथिक त्रितापहारी सुखद नवीली है,
 पायके कन्हैयासी महीप जसवंत मौर,
 नीवडी निपट भई मधुर रसीली है. १

(राजवंशी होरीवर्णन.)

आनंद विविध विध राग अनुराग जुत,
 आई ऋतु फागन अरिण ऊर सालकी;
 केसर अत्तर तर कुमकुम अवीर वीर,
 मार्ची धूम मधुर मृदंगनके तालकी.
 कहा लग किसोर छवि वरनो छविली आज,
 जेसिग महीपतके आनन रसालकी,
 लोचन विसाल पर भोंहे भ्रंगमाल पर,
 भाल भरे भाग पर गरद गुलालकी. १
 अंबुधि छटासी छवि छाजै पिचकारिनकी,
 धारन हजारनकी कुकुम रसालकी,
 धधक धधक धुन मधुर मृदंगनकी,
 ध्रुपद धमारनकी आनंद विसालकी;
 कौने कौने फागनमे वस्ते किसोर छवि,
 ऐसे खेल रसिक छविले छितपालकी,

सुंदिर समीतें फट मंदिरके द्वारनसें,
 अबरलें धाई आज गरद गुलाबकी
 गरजन लगी गुज गगन भृदगनकी,
 बीजरी तरी न पातुरी न पायमाबकी;
 झरके झरनसी परन पिचकारनकी,
 घरनपें धाई धूम आनंद रसाबकी,
 जेसिंग महीपतके आज दरवार बिच,
 पावससी भई ऋतु फागन बिसाबकी,
 धरी धरी घरमें किसोर घनघोर सम,
 धुम धुम आई घटा गरद गुलाबकी

२

३

जेष्ठलाल.

(सूम स्वरूप)

सूमने रुपैयो छीनो फरमें पसीनो देख,
 जेष्ठ कवि विन्हो उपदेश यैं रुपैयातें,
 काहे अकुल्यत आमुपात कर जारे गात,
 है तु प्रिय मोकों मात तात न्हन भैयातें,
 दाता घर जातो तो कुट्यातो ना विराम पातो,
 आतो परो मेरे हाथ हार मत हैयातें,
 जीत रहों जोलों तोलों दाटों नां बटाऊ तोय,
 मैं जो मर जैहा तो सिखाय जैहों छैयातें
 सुनहो सुजान श्रुति देके हम सत्य कहे,
 हारी हें जरूर जेही हमसें बिगारी है,
 नाहि न हमारे पास ढाल करवाल छुरी,
 बरछी दुनाल्लें वचन मार मारी है,
 कायर कपूत सूम निछजपें जौर नहि,
 शत्रु मर्द दानीनपै हिंमत हमारी है,
 कहे कवि जेष्ठ जीय चाहे जापै जीन घरो,
 कविके तमलेमें तुरग स्वर तयारी है

१

२

गोरे गोरे भुजदंड दीर्घ बने हे नैन,
 शोभाके सदन सबहीके मन माने हे,
 अजब जलेब सुं जलेबदार जेब देन,
 द्वारे गज बाज हेम पूरन खजाने हे,
 ऐसे सुने नरनाह सुजशकी बाढी चाह,
 यातें कवि आसपास आन मंडराने है;
 हम मरदाने जान जशको कवित्त पढे,
 द्वारे दरवान कहे साहेब जनाने हे.

३

(सूम मनोरथ-सवैया)

पिंगल कोक पुरान पढे, शुभ अच्छर काव्यको दाखनो है,
 गुनवान धनो बिन दान खुशी, उर मान नहीं सत भाखनो है;
 निज गांठको स्वायके गाय रिझावत, ईसकी बातको आखनो है,
 कोउ ऐसो कविश्वर आन मिले तो जरूर हमे वह राखनो है, १

(लेखिनी आदि उक्ति.)

कान चढी कलम सान देत कारबारीनकौ,
 मान कहो मेरो तो नफो है बहु तेरेसो;
 आये यह लोक परलोकको न सध्यो काज,
 कहे सब लोक तो तो फोक जग फेरोसो;
 चलोगे कुचाल तो पडोगे जमजालमांहि,
 कहै जेष्ठलाल ख्याल बाजीगर केरोसो,
 पायो अधिकार नां करोगे उपकार और,
 कहों अंत वार वार व्है है मुख मेरो सो.
 एरे बागबान मेरे बेन कान दे के सुनो,
 तोरे फल पात आन नेकहू निहारों ना;
 करके बिबेक नेक टेक न नमेकों देत,
 भये एक एकके अनेककुं उखारो ना,
 कहे जेष्ठलाल श्रेष्ठ तरुकी संभाल राख,
 श्रेष्ठ श्रेष्ठ ब्रह्म आल बालतें उखारो ना,
 निंदरके मारे लेट रहे कहा मंदिरमें,
 पैठे बाग अंदरमें बंदर निकारो ना

१

२

जेमल्ल

(प्रेमपथ-सवैया)

सोच पिहाण सकोच दियारण, मोहवा सिंहवा दाह कुनेहा,
दिदादि प्यास सहंवे बहंवे, दुखाणदि खोह पिहाणदा तेहा,
मितवा ध्यान विहगदि पखण, शोला शोटा बिरहणवा बेडा,
लाजदि गग अतगदि पारण, प्रेमदा पथ केदारका पेडा १

टोडरमल्ल.

(विविध प्रयोजन-कवित्त)

नीर बिन कूप कहा तेज बिन मूप कहा,
लब्ध बिन रूप कहा त्रियाको बखानवो,
काछरको खेत कहा कपटीको हेत कहा,
दिल बिन दान कहा चित्तमाही आनवो,
तप बिन जोग कहा ज्ञान बिन मोज कहा,
कहा जो कपूत पूत डुम्यो कुल जानवो,
जिह्वा बिन मूख कहा नेन बिन नेह कहा,
रामसें विमुख नर पशु सो पिधानवो १

गुन बिन चाप जैसें गुरु बिन ज्ञान जैसें,
मान बिन दान जैसें अल बिन सर है,
कठ बिन गीत कैसें हेत बिन प्रीत जैसें,
बेस्या रस रीत जैसें फूल बिन तरु है,
तार बिन जत्र जैसें श्याने बिन मत्र जैसें,
नर बिन नारि जैसें पूत्र बिन घर है,
टोडर सुफवि जैसें मनमें बिचार देखो,
धर्म बिन धन जैसें पंखी बिन पर है २

जारकों विचार कहा गणिकाको लाज कहा,
गवहाकों पान कहा आधरेको आरसी,
निगुनीको गुन कहा दान कहा दारदीकों,
सेवा कहा सूमकी अरंढनकीसी डारसी,

मद्यपिको सोच कहा साच कहा लंपटको,
नीचको वचन कहा श्यारकी पुकारसी;
टोडर सुकवि ऐसं हठीतें न टान्यो टरे,
भावें कहों सूधी बात भावें कहों फारसी.

३

(दंडक)

जेहि जेहि सुखित भये तेहि तेहि, कवि टोडर विछुरे जदुपत्ती,
शीतल मंद सुगंध समीर जेहि जेहि, सब अवही अनल भये तत्ती;
जम भये जोन्ह व्याल भये वोऽ, तरु भये तीर कुसुम भये कत्ती,
जेहि वन हमहि हारिसंग विहरत, वेहि वन अवहि दहन लग्यो छत्ती. १

ठाकुर.

(विधि दोष-इत्यादि.)

अनघड तेरी बातें कहालें वखानो दर्ई,
मानसमें प्रीति दिन्ही प्रीतमें विद्योहतो;
कुरनकों धन दीनौ, सुघरन सौच दिनौ,
एसौ नांह कीनौ, जाकों जैसौ जहा सोहतो
ठाकुर कहत जौपें विधिमें विवेक होतो,
सुरनर मुनि पशु पंथीकैसे मोहतो,
रूपवत मानस जोपें कसकवंत होतो,
होती सोनेमें सुगंध तो सराहवेंको को हतो. १
सामिल होय पीरमें शरीरमें न भेद राखे,
अंतर कपट को उघारे तो उघरि जाय,
एसो साच ठाने तो विनाही जंत्र मंत्र जाने,
सापके जहरकों उतारो तो उत्तर जाय,
ठाकुर कहत कछु कठिन न जानी जाय,
हिमतके किये कहो कहा न सुघरि जाय,
चार जने चारहु दिशातें चार कोनै गहि,
मेरकों हिलायकें उखारे तो उखरि जाय.

२

(कविकी निरंकुशता.)

सुकवि सिपाइ हम उन रजपूतनके,
दानवीर जुद्धतामे नेक नहि मुरके;

जसके करैया हँ महीमें महिपालनके,
 नेही उनहीके जे सनेही साचे उरके,
 ठाकुर कहत हम बरी बेबकुफनके,
 जालम जमाइ हे भदेनिया ससुरके,
 चोजनके चोजी रस भोजनके पातराह,

ठाकुर कहावे हम चाकर चतुरके

१

(अदाता-छोभी प्रवृत्ति)

पौरके किंचार देत, धेरे सबे गारि देत,
 साधुनको दोष देत, प्रीति ना चहत है,
 मागनेको जवाब देत, बात करे रोह देत,
 देत छेत माज देत, ऐसे निबहत है,
 बारनके तो बंद देत, बारनकी गाठ देत,
 पर दनीकी काज देत, काममें रहत है,
 ऐतेपे सवाई कहै छाला कछु देत नाही,
 छालाजु तो आठे जाम छेतही रहत है

१

दानी कोरु नाहि जे गुलाबदानी पीकदानी,
 गोददानी धनी शोभा इनहीमें छै है,
 मानत गुनीको गुनहीमें प्रगटत देखो,
 यातें गुनीजन मन सावधानी गहै है,
 हयदान हेमदान गजदान भूमिदान
 सुकवि सुनाए औ पुराननमें कहै है,
 अब तो कल्मदान जुजु दान जामदान,
 खानदान पानदान कहीबेको रहै है

२

एरी मेरी बीर कत कोनपे कमान जाही,
 राजनकी मतिपे न चलत उपावरी,
 तन धन छीन गई मनुषा मलीन भयो,
 मनसा विकल कल पावत न बावरी,
 ठाकुर कहत या जहानमें जरब फैली,
 भइ मति मैली कछु जतन बतावरी,
 सैवे काजे सोंद राखी कीवै काजे पाप राख्यो,
 छीवै काजे अपजरा, दीवै काजे लावरी

३

(कविता, कान्ता महत्व.)

अगन बचावै शुभ वचन सुनावै वेद,
भेद मति लावै अरु कठ शुभताई है,
चुके ना चुकावै जीय अनी पर लावै सोइ,
कविता कहावै जामै इती फविताई है;
जानत सुजान जे अजान कहा जानै भेद,
याते कविराजनके राजन बतऱै है;
कोटि कोटि ग्रथनको अंतर जनावै तुक,
लावै न अनूठा तो लो जूठी कविताई है. १

कोमलता कंजते गुलाबते सुगंध लैके,
चंदते प्रकाश कियो उदित उजरो है,
रूप रति आननतै चातुरि सुजाननतै,
नीर ले निवाननतै कौतुक निवेरो है;
ठाकुर कहत यो मसाले विधि कारीगर,
रचना निहार जन होत चित चेरो है,
कंचनको रंग ले सवाद ले सुधाको--
वसुधाको सुख छटकें बनायो मुख तेरो है. २

(पतीता-भाविगति)

अबका समुझावाति को समजे, वदनमिको बीज तो वो चुकिरी,
तब तो इतनो न विचार कियो, यह जाल परे कहुं को चुकिरी;
कवि ठाकुर जो रस रीत रंगी, सब भाति पतिव्रत खो चुकिरी,
आरिनेकि बदी हुती जो लिखी भालमें, होनि हती सो तो हो चुकिरी. १

(दोहा.)

अणगटती इच्छा करे, अणदीठी कहै बात;
कहै ठाकुर सुन ठकरो, एहि मुखकी जात. १
नाम रहंदां ठाकरो, नाणां नाहि रहंत;
कीरति हुंदां कोटडा, पाड्यां नाहि पडत. २

डुंगरसिंह.

(दुर्मिल प्रसंग)

बिलासी बिधवा सोहाग भाग बुढरीकुं,
जुवान घर जोए नाहि वृद्ध घर तरुनी;

धत्रघर पुत्र नाहि पुत्र बहु रंक घर,
 रंक घर रिबक नाहि दोउ दु ख भरनी,
 नागरबेल निष्फल रु तूमरी सुफल फरी,
 डुगरसिंह कहे एक सिंगार रत भरनी,
 करमही करे हे के किरतार ना करे हे,
 कर्ताछु करे देख कर्मनकी करनी
 सुंदर सुहानी नार कथ बिन मुनी जैसे,
 जोगी बिन धुनी जैसे पंखी बिन पर है,
 दधी बिन मध्य जैसे कूप बिन कण्ड जैसे,
 मान बिन हंस जैसे कमल बिन सर है,
 दाम बिन शाह जैसे भोज बिन वाह जैसे,
 शीश बिन घर जैसे पोचे बिन कर ह,
 मोती बिन छर जैसे, दीप बिन घर जैसे,
 बिना बन केसरी हृत्क बिन नर है

१

२

(वियोग-दोहा)

सज्जन गये सिकारकु, सिरपर धरे रुमाल,
 जाकी हेली हल गई, वाको कोन हवाल
 सज्जन चले सिकारकु, घर घोड़े पर जीन,
 एसो जो में जानती, चाबुक लेती छीन

१

२

तानसेन *

(खल सज्जन भेद-कवित्त)

गौवनके जाये तेसो, धूरसें लपट रहे,
 गधियां न गौ होत, गगके नवायेसें,

* यह कवि सगीत विद्यामें बहुत निपुण था, बिस्फी कहावत श्लोकमें प्रसिद्ध है कि,—

(दोहा) तानसेनके तानमें, सभी टान गुस्तान

आप आपके तानमें, राखा भी मस्तान

१

सिंहनके जाये ताकी, ऐरावत आन माने,
 शियाल न सिंह होत, मांसके खिवायेसैं;
 हंसनके जाये वो तो पीवत मधुर पय,
 बगले न हस होत पयके पीलायेसैं;
 कहे मियां तानसेन, सुनो शाह अकब्वर,
 नफा नहीं होत खल ऊच पद लायेसैं.

१

बाजनीके जाये बाज लाज ना लुपाय लोपे,
 मुरगीके जाये बाज होत ना सधायेतें;
 गौवनके जाये सदा घरसो लपटो रहे,
 गाधियां न होत गाय गगअ नवायेतें;
 हंसनके जाये रहे उनमुख मोती चुंगे,
 कगवा न होत हंस मोतीके चुगायेतें;
 कहे मियां तानसेन सुनो शाह अकब्वर,
 हित नहि होता हे गुलामके बढायेतें.

२

(सुर प्रशंसा-दोहा.)

किधौ सूरको सर लग्यो, किधौ सूरकी पीर;
 किधौ सूरको पद सुन्यो, तन मन धुनत शरीर.

१

तुलसी.*

(श्रीराम बालस्वरूप)

अवधेशके द्वारे सकारे गई, सुत गोदकै भूपति लै निकसे,
 अवलोकिहौ सोच विमोचनको, ठगिसी रही जे न ठगे धिकसे;
 तुलसी मन रंजन रजित अंजन, नैन सुखंजन जातकसे,
 सजनी ससीमें समसील उभै, नवनील सरोरुहसे विकसे. १
 पग नुपुर औ पहुंची कर कंजनी, मंजु बनी मणिमाल हिये,
 नवनील कलेवर पीत झंगा, झलके पुलकै नृप गोद लिये,

*इनके देहान्तके सवत्का दोहा किसी कविने कहा है कि,—

संवत सोलहसै असी, असी गंगकी तीर;

श्रावन शुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यो शरीर.

१

अरविन्द सो आनन रूप मरन्द, अनदित लोचन भृगु पिये,
मनमें न बस्यो अस बालक जो, तुलसी जगमें फल कौ न जिये २
सनकी दुति श्याम सरोरुह लोचन, कजकि मजुलताई हरै,
अति सुंदर सोहत धूरि भरे, छवि मूरि अनंगको दूरि धरे,
दमकै दतियाँ दुति दामिन ज्यों, किलकैं फल बाल विनोद करै,
अवधेसके बालक चारि सदा, तुलसी मन मंदिरमें बिहरै ३

कचहूँ ससि मांगत आरि करै, कचहूँ प्रतिविम्ब निहारि हरै,
कचहूँ करताल बजाई के नाचत, मातु सबै मन मोद मरै,
कचहूँ रिसियाई कहैं हठिके, पुनि रेत सोई जेहि लागि अरै,
अवधेसके बालक चारि सदा, तुलसी मन मंदिरमें बिहरै ४

बरदंतकी पंगति कुद कली, अघराधर पल्लव खोलनकी,
चपला चमकै धन बीच जुगै, छवि मोतिन माल अमोलनकी,
घुघरारि लट्टै लट्टकैं मुख ऊपर, कुंडल छोल कपोलनकी,
निब छावरि प्राण करै तुलसी, बलि जाऊ ललाइन बोलनकी ५

(सीता स्वयंवर-धनाक्षरी)

छोनीमेके छोनी पति, छाजे तिन्हें छत्रछाया,
छोनी छोनी छाये छिति, आये निमिराजके,
प्रबल प्रचढ़ भरबढ़ बर वेष वपु,
बरवेकी बोलै वैदेही बर फाजके,
बोले बदी बिरद बजाइ बर बाजतऊ,
बाजे बाजे बीर बाहु धुनत समाजके,
तुलसी मुदित मन, पुर नर नारी जे ते,
बार बार हेरे मुख अवध भृगराजके १
सीयके स्वयंवर समाज जहां राजनके,
राजनके राजा महाराजा जान नामको,
पवन पुरंदर कृष्णानु भानु धनदसे,
गुणके निधान रूप धाम सोम कामको,
बाण बलवान यातुधानपति सारिखेसे,
जिन्हके गुमान सदा साल्मि संग्रामको,
तहा दशरथके समर्थ नाथ तुलसीके,
चपरी चढायो घाप चंद्रमा ललामको २

भले भूप कहत भले भेदेस भूपनसों,
 लोक लखि बोलिये पुनित रीत मारखी;
 जगदंबा जानकी जगतपितु रामभद्र,
 जानि जिय जोहो जीन लागे मुँह कारखी;
 देखे है अनेक व्याह सुने है पुराण वेद,
 वृझे हे सुजान साधु नर नारी पारखी;
 ऐसे सम समधी समाजना विराजमान,
 रामसे न वर दुलही न सिय सारखी.

३

वाणी विधि गौरी हर शेषहू गणेश कही,
 सही भरी लोमस भुसुंडी बहु चारिखो,
 चारिदश भुवन निहारी नर नारि सब,
 नारदको परदान नारदसो पारिखो,
 तिन कही जगमें जगमगत जोरि एक,
 दुजीको कहैया औ सुनैया चख चारिखो,
 राम स्मारमण सुजान हनुमान कही,
 सीय सी न तिय न पुरुष राम सारिखो.

४

(सवैया.)

दूल्ह श्री रघुनाथ बने, दुल्हि सिय सुंदर मंदिर माही,
 गोवति गीत सबै मिली सुंदरि, वेद युवायुव विप्र पढाहीं,
 रामको रूप निहारति जानकी, कंकणके नगकी परछाही,
 याते सबै सुधि भूलि गई, कर टेकि रही पल टारति नाहीं. १
 पंचवटी वर पर्णकुटी तर, बैठे है राम सुभाय सुहाये,
 सोह प्रिया प्रिय बंधु लसै, तुलसी सब अंग घने छविछाये,
 देखि मृगा मृगेनी कहै, प्रिय बेनते प्रीतमके मन भाये,
 हेम कुरंगके संग शरासन, शायक लै रघुनायक धाये.

२

(लंकादहन-धनाक्षरी.)

भूप मंडली प्रचंड चंडीशको दंड खंड्यो,
 चंड बाहु दंड जाको ताहीसों कहतु हौ,
 कठीन कुठार धार धरिवेको धीरताहि,
 वीरता विदित ताकी देखिये चहतु हौ,

तुलसी समाज राज तजि सो बिराजे आज,
गाज्यो मृगराज गजराज ज्यों गहव्रु हों,
छोनीमें न छांद्यो छप्यो छोनीपको छोना छोटे,
छोनीप छपन बाको बिरद बहव्रु हों १

जहां तहां बुबुक बिलोकी बुबकारी देत,
जरत निकेत धावो धावो लागि भाग रे,
कहां तात मात भ्रात भगिनी भामिनी भाभी,
दोटा छोटे छोहरा अभागे भोरे भाग रे,
हाथी छोरो घोरा छोरो महीप वृषभ छोरो,
छेरी छोरो सोवैसो जगावो जागि जागि रे,
तुलसी बिलोकी अकुलानी यातुधानी कहैं,
बार बार कस्यो पिय कपिसो न लागि रे २

देखी ज्वाला जाल हाहाकार दशकष सुनि,
कस्यो धरो धरो धाये बीर बलवान है,
लिये शूल शैल पास परिघ प्रचढ़ दढ़,
भाजन सनीर धीर धरे धनु बान है,
तुलसी समीन सौंज लक्ष यशकुंड लखि,
यातुधान पुगी फल यव तिल धान है,
श्रुवा सो लंगूल बल मूल प्रतिकूल हवि,
स्वाहा महा हौंकि हौंकि हुनै हनुमान है ३

गाज्यो कपि गाज ज्यों बिराज्यो ज्वाला बाल्युत,
भाज्यो वीर धीर अकुलह उठ्यो रावनो,
धावो धावो धरो सुनि धाये यातुधान धारी,
धारि धारा उलदै जलद ज्यों नशावनो,
लपट झपट झहराने हहराने बात,
भहराने मट परेऊ प्रबल परावनो,
ढकनि ढकेली पेलि सचिव चले छै ठेलि,
ताभ न तलैगो बल अनल भयावनो ४

(हनुमंत पराक्रम.)

प्रबल प्रचंड बरिबंड बाहु दंड बीर,
 धाय जातुधान हनुमान लियो धेरिकै;
 महाबल पुंज कुंज रारि ज्यौ गरजि भट,
 जहां तहां पटके लंगुर फेरि फेरिकै;
 मारे लात तोरे गात भागे जात हाहाखात,
 कहै तुलसीस राखि रामकी सों ढेरिकै;
 ठहर ठहर परे कहारि कहारि उठै,
 हहर हहर हर सिद्ध हंसे हेरिकै.

१

जाकी बाकी बीरता सुनत सहमत सूर,
 जाकी आंच अबहुं लसत लक लाहसी;
 सोई हनुमान बलवान बांको बान इत,
 जो है जातुधान सेना चले छेत थाहसी,
 कंपत अकंपन सुखाय अति काय काय,
 कुंभउकरन आइ रह्यौ पाइ आहसी,
 देखे गजराज मृगराज ज्यों गरजि धायो,
 बीर रघुबीरको समीर सूनु साहसी.

२

(रावण परिस्थिति प्रसंग.)

बडो बिकराल बेष देखि सुनी सिंहनाद,
 उठ्यो मेघनाथ सविषाद कहै रावनो.
 बेगि जीतो मारुत प्रताप मार्तंड केटि,
 कालऊ करालता बडाइ जितो बावनो,
 तुलसी सयाने जातु धाने पछिताने कहै,
 जाको ऐसो दूत सो साहेब अबै आवनो;
 काहे को कुसल रोषै राम बाम देवहूंको,
 विषम बलीसों वादि बैरको बढावनो.

१

पानी पानी पानी सब रानी अकुलानी कहै,
 जाति है परानी गति जानि गज चालिहै,
 वसन विसारै मनि भूषन संभारत न,
 आनन सुखान कहै क्यौहू कोऊ पालिहै;

तुलसी मदेनै मीजि हाथ धुनि माथ फई,
काहूकान कियो न मैं कसो केतौ कालि है,
बापुरे बिभीषन पुकारि बार बार कसो,
घानर बही बलाइ घने घर घालिहै

२

(संख्या)

तु रजनीचर नाथ महा, खुनाथके सेवकको जनमें हों,
बलवान है खान गली अपनी, तोहि लाज न गाल बजावत सौहों,
बीस मुजा दश सीस हराँ, न टरौं प्रसु आय सु भंगते जौहों,
स्वतमें केहारी ज्यों गजराज, दलीदल वालीको बालक सी हों १
कौसलराजके फाजु है आजु, त्रिकूट उषारि छै वारिधि बोरों,
महामुज दंड है अड कटाह, चपेटके चोट चटाक दै फोरों,
आयसु भंगते जा न डरा, सब मीजि सभासद श्रोनित घोरौ,
बालिको बालक तौ तुलसी, दसह मुखके रनमें रद तोरौं २

रजनीचर मत्तगवद घटा, बिघटै मृगराजके साज छरै,
झपटै झट कोटि मही पटकै, गरबै खुबीरकी सौह करै,
तुलसी उत हाक दसानन देत, अचेत मे बीरको धीर धरै,
बिरुझो रन मारुतको बिरु दैत जो, कालहु कालसो बूजि परै ३

(गई सो गई)

काल मयो कलिकाल कराल, बेहाल सबे सुखहाल नहि को,
काम तो बाम नचावत हे, पकि आवत जात मोकाम महिको,
जानि सदा दिनभग शरीर, भजो खुबीरहि मान कहीको,
घोस्तेहिमें बय बीतत हे, जो गई सो गई अब राख रहीको १
रावनके सम बावन वीर, रखो न गयो सो भयो कहे नीको,
रोप सुरेश महेश गणेश, सभें चलि जाइ तो ओर रहीको,
काल करालके आननमें सब, जाय ध्रुवे अरु स्वाय अमीको,
चेतके हेत करो हरिस, जो गई सो गई अब राख रहीको २
देहिक वैविक भोक्तिक पाप, सबें करि दाप नचावत हीको,
जन्म अनेकमें सचित भुरि, मनो बच कर्मज पाप सहीको,
माम्य सजोग लखो नर देह, भज्यो सुत गेह कसो नहि नीको,
होवेहु प्रेत अनौ कछु चेत, गई सो गई अब राख रहीको ३

पुत्र कलत्र सुमित्र चरित्र, धरा धन धाम है वधन जीको,
 वारहि वार विपै फल खात, अघात न जात मुधारस फीको;
 आनहु सान तजो अभिमान, कही मुनि कान भजो सिय पीयको,
 यो तन हीगसो हाथसों जात, गढ़ सो गढ़ अव राख रहीको. ४

(कवि चिनय.)

आगम वेद पुरान वखानत. कोटिक मारग जाहि न जानै,
 जे मुनि ते पुनि आपही आपको, ईस कहावत सिद्ध सयाने,
 धर्म सबै कलिकाल ग्रसे, जप जोग विराग है जीव पगने,
 को करि सोच मरे तुलसी, हम जानकिनाथके हाथ विकाने. १

कस करी वृज वासिनपै, कर तृति कुभांति चढ़ी न चढ़ाई,
 पड़के पूत सपूत कपूत, मुजोवन भो कलि छोटो छड़ाई,
 कान्ह कृपाल वडेनत पाल, गये खल खेचर खीसखराइ,
 ठीक प्रतीति कहै तुलसी, जग होइ भलेको भलेई भलाई. २

अवनीस अनेक भये अवनी, जिनके डरते मुर सोच सुखाही,
 मानव दानव देव सतावन, रावन घाटि रच्यो जगमाहीं;
 ते मिल्यै धरि धूरि मुजोधन, जे चखते बहु छत्रकी छाही,
 वेद पुरान कहे जग जान, गुमान गोविंदहीं भावत नाहीं. ३

(कवित्त.)

जीनको पुनित वारी, शिर शिव हे पुरारी,
 त्रिपथगामिनी अस वेद कहे गाड़कै;
 जिनको योगिद मुनीबुंद देव देह धरि.
 करत विविध योग जप मन लाड़कै;
 तुलसी जिनकी धूरि परसि अहल्या तरी,
 गौतम सिधारे ग्रह गौनेसी ल्वाड़कै,
 तेई पाँय पाड़कै चढाय नाव धोये विनु,
 खैहौ न पठावनी कहै हो न हँसाइकै. १

(दशावतार-छप्पय)

जय जय मीन वराह, कमठ नरहरि श्रीवामन,
 परसुराम श्रीराम, कृष्ण जनहीत खलदामन,
 जगन्नाथ कलकी, नमामि दश विधि वपु धारन,
 अमित रूप अगणित, चरित्र कृत नाम उदारन;

सुर रजन सज्जन मुखद, सियानाथ अरि जापना,
कृपा करहु श्रीरामचंद्र, मम हरहु शोक सतापना १

बधि ताडिका मुचाहु, विप्र मख रक्षक रघुपति,
मोचित चाहन शाप भक्त वरदायक शुभ गति,
प्रण विदेहको राखि, राम खंट्यो धनु शंकर,
दीन्ह शरासन बाण, जानि रामहि सुपरसभर,
सिय विवाही गयने अवधे, छूटे जनक कलापना,
कृपा करहु श्रीरामचंद्र, मम हरहु शोक सतापना २

(रामायण माहात्म्य)

रामचरित सत फोटि, रोप शारद शिव भाखे,
नारद शुफ सनकादि, बेद कहि बीचीहि राखे,
बीचीहि राखे चरित, पार फहि पावत नाहिन,
कहि कहि हारे सकल, राम यय कहत सिराहिन,
नहि सिराही रघुवीर गुण, सो तुलसी मनमे टरत,
भजन भाव बेदन कदा, कहे चरित भगनिधि तरत १
रामचरित अवगाह, मिथु फोड़ पार न पाया,
रोप सारदा निगम, नेति कहि निज मुख गावा,
शमु उमासन भरद्वाज, सो याज्ञवल्क मुनि,
कागभुसंडीसो गरुड, मानसिक कहि तुलसी गुनि,
फहें मुने रति रामपद, एक राज मति आपना,
कृपा करहु श्रीरामचंद्र, मम हरहु शोक सतापना २

(दोहा)

(सीता-राम वर्णमहिमा)

सी कहतें मुख उमजे, ता कहतें तम नास,
तुलसी सीताजी कहत, राम न छाटत पास १
मधुरा शब्द अनूप हैं, दो अक्षर लखि छेत,
जा मुख अत न आष नहि, तामुख बचलो देत २
तुलसी अघ सम दूर गे, रा अक्षरफे छेत,
फिर नेटे आवत नहि, म अक्षर पद देत ३

(तीर्थक्षेत्र-महिमा)

चित्रकूट सम फोट नहि, अवध धामसैं धाम,
सुंदर बनसैं बन नहि, राम नामसैं नाम १

वृंदावनसें वन नहिं, नंदगामसें गाम;	
वंसीवटसें वट नहिं, कृष्ण नामसें नाम.	२
क्षमा विमल बाणारसी, सुर अपगा सम भक्ति,	
ज्ञान विश्वेश्वर अति विषद, लसत दया सह शक्ति.	३
(विधिविध अंक संज्ञा विचार इ.)	
मान राखिवो मांगिवो, पियसों सहज सनेह,	
तुलसी तीनों तब फनै, जव चातक मत लेह.	१
तूठहि निज रुचि काज करि, रूठहि काज विगारि;	
तीय तनय सेवक सखा, मनके कंटक चारि.	२
शिष्य सखा सेवक सचिव, मुतिया शिखवन साच;	
सुनि करिये पुनि परिहरिय, पर मनरजन पाच.	३
तुलसी या संसारमें, पंच रत्न है सार,	
साधु मिलन अरु हरिभजन, दया दीन उपकार.	४
सदा भजन गुरु साधु द्विज, जीवदया सम जान;	
सुखद सुनै रत सत्यव्रत, स्वर्ग सत सोपान.	५
मंत्र तंत्र तत्रि त्रिया, पुरुष अश्व धन पाठ;	
प्रति गुण योग वियोगर्त, तुरत जाहिं ये आठ.	६
चारा ^१ चौदह ^२ अष्टदश, ^३ रस समुझव भरिपूर;	
नाम भेद समुझे विना, सकल समुझमह धूर.	७
राम सनेही रामगति, रामचरण रति जाहि;	
तुलसी फल जग जन्मको, दियो विधाता ताहि.	८

तेही.

(अनन्य भक्ति.)

कोऊ कहै पिता और कोऊ कहै सुत,
 कोऊ कहै नना व (वातन) तीनों ताप तयो है;
 प्रमु कोऊ कहै जन कोऊ कहै मोल लयो,
 तुम अव कहौ मोहि काहि काहि दयो है;
 तेही भनै जित तित चलि चलि होइ रही,
 सुख नहिं कहूं वह हाथ गेंद भयो है;

कियोहू तिहारो अरु पालोहू तिहारोही हौं,
बीचके लोगनि इन बांटो बाटि लिमो है

२

तोप (पहिला.)

(इश अनुग्रह-इत्यादि)

तेरी कृपा बिधि वेद बनाइ, सबै जगकी रचनाहि बनावत,
राजसमा बिच बैननिमें, अति तेरिह चासुरता छवि छावत,
तेरि कृपा कहि तोप तिह, पुर नाग नरौ सुर उकि सुनावत,
तेरि कृपातें गिरा जननी, निज मै पदवी कबिराजकी पावत १
राज तज्यौ सुखसाज तज्यौ, पितु मातु तज्यौ हठि मो सग दीनो,
कानन आइ बनाइ निऊँ, दुख रासि सबै सुख एक न चीनो,
सीय तज्यौ कहि तोप तुम्है, तजि मोहि करो जिनि माग विहिनो,
पूरि हरि करुना सो तिहुपर, जो करुना करुनामय कीनो २
मद मोह महा ममता तजिके, श्रुति संस्पृति संत कहा करूँ,
तजि पातकको परपच सबै, पग पुन्यहि के पथमें धरूँ,
कहि तोप उम्है सिर जो जिनही, जितको जरा धीननिमें भरूँ,
ढरूँ तू भवसागरके गुनते, गुनसागरके गुनमें परूँ ३
जगमें छबु जीवन जानिय जू, श्रुति सत कबौ चित्तमै धरिये,
अपनो हित आपनो पुन्य गनी, रिपु पातकके न फदा परिये,
छवि मानुष दुर्लभ देह महा, सो इहां भवसागरको तरिये,
सुनि तोप बिनै मन बाच रु काय, सदा पर कारजको करिय ४
गुनकै हस्किो गुनगान सबै, अरु प्यानहि को महारा करूँ रे,
पतवार गहो जपमालहि की, कवि तोप कहै मनमें धरूँ रे,
चदि जापर सत तरे सिगरे, कछु तापर नेकु नहि ढरूँ रे,
गुरुकी शिखको तरनी करिकै, भवसागरकी तरूँ रे तरूँ रे ५
आनके प्रान सुखी बिन ज्यों न तौ, क्यों न जहान परो जस लीजै,
वेद कही कवि तोप कह, पर स्वारथको घर पुन्य न छीजै,
मो चख चारु चकोरनिको, छवि आनन चदको देखन दीजै,
आसिख देत छट मन है, अब मोहि भटूँ तुम जीवन दीजै ६

श्रीहरिकी छवि देखिवेको, आखिया प्रति रोमनिमें करि देतो,
 वैननके मुनिवे कह श्रौन, जिते तितशो करितो करिहेतो,
 मो ढिग छोडि न काम कळू, कहि तोष यह लिखि तो विधि येतो.
 तौ करतार इती करनी, करिके कथिमें कथकारति येतो ७

(गोपिका प्रेमभक्ति.)

कान्हरकी छवि देखिवेको, यह गोपकुमारि महा छवि आई,
 सीस धरे मटुकी लट छूटि, वृजै दधि वेंचनके मिसि आई;
 नदललाको लहयो कहि तोष, हिये उनमाद दसा अधिकई. १
 भूलि गयो दधि नामसो वागहि, लेहु रे लेहु रे माइ कन्हई.
 तो तनमें रविकी प्रतिविम, परे किगिनै सो धनी सरसाती,
 भीतरहूं रहि जात नहि, आखिया चकचाव है जाति है राती
 बैठि रहो बलि कोठरिमें, कहि तोष करौ विनती बहुभाती,
 सारसी नैन लै आरसि सों, अग काम कहा कटि धाममे जाती. २
 पतिते न करे तन बाहिर औ, जिमि जाहिर सम करै न धनै,
 गुन सील सुभाव सनेह पतिव्रत, वारिधिको भयो मीन मनै.
 कवि तोष काऊ न कवः बरते गुनि, हारकि देहरी ना गमनै,
 निज नैननिसैं जति नंदकिमोरहि, औरहि चौथिको चढ गने ३
 भाग विराचि बनाइ रचे, अनुगगसों कंत सोहागिनि कीनी,
 तोष दियो गुन गौरि गलगनि, दीन्हि गिरै सिगरी परवीनी.
 सुंदरता अति भैन दियो अरु, दीन्हि मनो सुरधेनु सधीनी,
 प्रीतमके पग प्रीतिकी रीति, सप्रीति सिखाइ सिये जनु दीनी. ४
 खुनाथ कह्यो हसिकै अनुजै, तुमही धननादको लेउ जियो,
 सरवंग सुरंग भयो जनु ईगुर, कंचनको गिरि रंग दियो,
 फरके अधरा खरके सर तून, सरासन तोष टकोर कियो,
 तजि आसन वीरको वा छन लच्छन, सासन संग सलाम कियो. ५
 दौरिहौ देखि दुरोहि न काल, मरोरि हौ मीचुको पंक लतासी,
 तोरि हौ तोष सवै सुर आजु, कढोलि हौ रावनै लंकविलासी.
 तै तो विदेह न जानै कळु, खुवंसिनकी कलकीरति खासी,
 वोरिहौ सैलनको लै समुद्रमै, तोरिहौ या धनुही तिनुकासी. ६

हारि दियौ गिरिते निरदै, अरु बंधनकै बहुधा विधि मार्यो,
 कोपि कबो कब रे सठ तुं, किंतु है जेहि तुं बहु बार पुकार्यो,
 श्रीप्रह्लाद कबो कहि तोष, सी है यहि स्वमहिम रस धार्यो,
 दासको प्रास हर्यो नरकेहरि, है हिरनाकुसको तर फार्यो ७
 कुलके दरसों परलोकसों लोकसों, हौं न डरी व डरी सो डरी,
 कहि तोष वै हैं मनमोहनसो, वह मो मन मूढ़ डरी सो डरी,
 मुहि देखि जरी सो जरी जगमै, ओ मरी सो मरी औ लरी सो लरी,
 करि कौल करार टरौं न कबो, करि कौलकरार टरी सो टरी ८
 जाहि जैही चितके हितके, कहि तोष तेही तेहि लागत प्यारे,
 मीन जियै जलमाहि सदाहि, मरै छनमाहि पयोनिधि हारे,
 जीवनको तनको धनको, डर छाजहुको हरि हेत विसारे,
 कामरिवारे अहीरके ऊपर, धारौं हज्जरन पावरिवारे ९

(वंसी महिमा)

जितहीं तित धूमत हो बिसुसो, बसुरी सुर औननिमें भरिगो,
 बढही अखियाके कटाच्छके बाननि, प्राननि साननिमें भरिगो,
 हरि गोहियगे कहि तोष अबै, कछु चेटकसो करिकै टरिगो,
 वह छोहरो छेळ छबिले छली, छिनमै वृज छोहरियो छरिगो १
 कौन कहै नर नारि निकी, सुनि चेत रहै न सुरी असुरीमै,
 चैन गबावति नैन न आवति, नैनके बान गढै पसुरीमै,
 ज्यौं जल मीन बिना तलकै, स्वर बेधि उठै न सुरी न सुरीमै,
 मारन मोहन चाट उचाट, बसीकर मत्र बसे बसुरीमै २

(नायकामेव-सवैया)

प्रीतमके सुखसों सुख औ, दुखसों दुख सो सुकिया जिय जानी,
 जो परनायक सो रति मानति, ता तियको परकीय बखानी
 औ धनदायक सो जो रम, कहि तोष तिन्है गानिका पहिचानी, १
 लच्छन जानि यही क्रमते, पुनि लक्ष्य अनेक प्रकार बखानी
 भृकुटी दग नाक कपोल नचाह, कहै बतियां हरि डीठि दर्ह,
 छतिमा दरसावति है कहि तोष, हिये सरसावति नैनमई,
 रसमै रस देति महेत सचै, हितसों चित प्रीतकी प्रीति दर्ह,
 विमिचारिनको परकीय तिया, यहि लोकहिमै परलोक मई २

सबके दिसि हेरति है हरिके, हित तीछन ईछ चलावति है,
 केहि भांति मिलावति दीटि सों दीटि, सखीनिकी दीटि बचावति है,
 वृक्षत भेद हितूनक तोष, सरोष तिन्है बहरावति है,
 जिमि चोर चोरावत है तवहीं, पुनि वृद्धे मरे न बतावति है. ३

(स्त्रीभूषण-दोहा.)

सुंदरता अरु सुधरता, सील सनेह सुभाव,
 नैवो तियको जानिवो, यह माधुर्य बनाव. १
 औदारिज माधुर्य पुनि, प्रगल्भताहि विचारि;
 पुनि धीरत्व बखानिये, तियके भूषन चारि. २
 वृद्ध प्रेम समुद्रमें, पार न पावत सोइ;
 तन धन जोवन लाजकी, सुधि बुधि ताहि न होइ. ३

(निर्मल भक्ति-कवित्त.)

छापा मुद्रा लावै कि चढावै तनमें विभूति,
 कहे कवि तोष संत भेखऊ बनावै तूं;
 ओढि मृगछाला जपमाला लै करन केती,
 जटाको बढावै कितनी रह घोटावै तूं;
 वातन वैठाऔ तीरथन ध्यावै नगे,
 पाइ जाइ गिरि ढरौ समाधि लगावै तूं;
 रामको न भावै केती कलाको देखावै जौन,
 प्रेम उमगावै करि सरल सुभावै तूं. १
 भूम धौरहरसो वाढरकी छाहहि सो,
 ग्रीष्मको लाहरसो मृगपास आसासो,
 लागत अमूलासो गंजीफाको गुल्लासो,
 नीरके बल्लासो सोझरको बनासा सो;
 कहै कवि तोष भजु ताहि की बनायो जिन,
 मायामें न भूलु है सरापही बासासो,
 गोरखकी लेखनासो सपनेको देखनासो,
 पेखनेको पेभनासो जगत तमासासो. २
 संत श्रुति संमत पुरान ज्ञान मान नर,
 निंदत है ताहि अरु देत सबै दोसो है;

किन्हे सब अंगीकृत आपने उधार हित,
अधम कृपामै चित दीनो फिन मोसो है,
गीध व्याध गनिका अजामिल उधार्यो नाथ,
पूरी परतीति ना विरदपाळ तोसो है,
तोते यह मति अति तोप मन मान्यो मोहि,
अधम उधारन ये नामको भरोमो है

३

गीध व्याध गनिका अजामिल सुपच ग्राह,
औरु अनेक अब कौनिको गनाइ है,
कहै कवि तोप उन कीनो कब जप तप,
जोग अरु रावरेकी भगति बनाइ है,
अधम उधारन विरदको निचाहे बने,
धरनि धरि जो सो धरही बनि आइ है,
मेरे गुन औगुनको अक जो लिखैगे तो,
मुजर मयकमें कलक एगि जाइ है

४

(शगार सौंदर्य)

बैठनि उठनि चित चलनि चितौनि चारु,
रहनि गहनि गति मति अति औजकी,
बीनकी बजावनि सुरस गीत गावनि ज्यौ,
जोबनकी आवनि सोहावनि सो मोनकी,
कहै कवि तोप सुर नर नाममै न पेसी,
भई कृपमानकी निपट थोरे रोचकी,
सब सुखदायक सुशील बडे कीमतीकी,
भई है तलीम तलखेलि यो मनोजकी

१

कचनकी बेटीसी सहेली मिली आसपास,
केलिके अवास सुने गतियां तरंगकी,
भूपन कनक धुधुरनकी धनक, रति-
कुंजकी मनक बड लालमा प्रसगकी,
येकै कहै सुने बडी येकै रसनाको घरे,
येकै कानासानी करै जीवन उमंगकी,
ज्यौ ज्यौ रतिमंदिरमें माचै रतिरंग तोप,
त्यों त्यों या नचाइ नाचै नायिका अनगकी

२

जाहि हित हानि आनि कहा हम लीनी मानि,
 छोड़ै कुलकानि है है हांसी जग जोनिमै;
 दैहुं जब ज्वाब तब तैहुं मानि लेहै आली,
 जानति है मैहुं चतुराई सब औनिमै;
 कहै कवि तोष तेरे पाइकी दोहाई खाउं,
 कहां सति भाइ सो करौ उपाइ कौनि मै;
 लाज हरि जाति गृहकाज ऊ विसारि जात,
 गाज परि जात बृजराजकी चितौनिमै. ३
 जडित जराऊ जन भूषननि भूषितन,
 दूषनसो लगे ताते दूरिही करति है;
 कवित प्रसंग औ संगीत राग रंग आदि,
 सुनि सुनि गुननिकै हियरे भरति है;
 कहै कवि तोष तासों मोहै मनमोहन जू,
 ता ते सब सोतै ताकी डरनि डरति है;
 रूप मदमाती गुनमाती पतिप्रेममाती,
 सूधे प्रानप्यारी मग पाय ना धरति है. ४
 मैन कोम लीग दीनी रति ना रतीक कीनी,
 तिनसी तिलोतमाकी लगति निकाई है,
 धोखासी लगति मंजुघोषा ढिग मेरे तोष,
 चाउरी घृताचीकीन देख्यौ चारुताई है;
 चंद्रमा कलंकी कंज कंटको निपाटि कहा,
 कुंदनकी कठिन अति दुति पीत पाई है,
 मेरी छवि ताकी सखी छवितान पावै छवि,
 कविता बखानै सो तो फविता झुठाई है ५

तोष (दुसरा.)

(वीर, शृंगार-कवित्त.)

शक्र जो न मांगी लेतो कुंडल कवच पुनि,
 चक्र जो न लीलती धरनि रथ धारतो,

कुत्ती जो न शरन समेटि छेती द्विजराज,
शाप जो न होतो शुल्य सारथी निवाहतो,
तोपनिधि जोपे प्रभु पीतपटवारो बनि,
सारधापनेको फल्यु फारज न सारतो,
तौ तौ धीर करन प्रतापी रविनंदन सु,
पांडुमुत्त सेनाको चवेना करि डारतो

१

जुद्धम अपार भार रथी महारथी वीर,
मारिके गिराउ कपि धुजही हराउमें,
जोपे सुत सतनुको तौ न रन पीठ देहु,
इतनो न फरौ गगाजननी छजाउ में,
तोपनिधि शिर न झुकाउ सच सेनै आजु,
पाहवन पुहुमी न मुख दिखराउ में,
घनुप बहाउ धत्री कुट्ट न फहार्त जोपे,
हरिको न सजुगमें रख पकराउ में
देखे अरुनाइ करुनाइ छो खजनको,
मृगन गुमान तजि छाज गहिवे परी,
तोपनिधि कहे अलि छीननहु दीनताई,
मीनन अधीन ब्रह्मे हारि सहिवे परी,
चरन्ना चकोरनकी कोरि डारि कोरनसों,
कविन कवीशता गरीबी गहिवे परी,
आई वीर चचलाई राधिकाके नेननमें,
खासे खजरीटन खराभी सहिवे परी

२

३

(काव्यप्रसाद सचैया)

मृपण मृपित दूषणहीन, प्रवीण महा रसमें छवि छार्ह,
पूरि अनेक पदारभत्ते, निहिमें परमारथ स्वारथ पार्ह,
औ उक्तैं युक्तैं उलही, कवि तोप अनोप भरी चतुराई,
होति सबै सुखकी जनिता, बनि आवत यो बनिता कविताई

१

त्रिकम.

— १ —

(गुण महत्व.)

चंदा बिन रेनी मृगानेनी द्यग काजल बिन,
 कविता बिन कहेंनी जो नगीना बिन सूना हे;
 दान बिन दाता जोगी जन ज्ञान ध्यान बिन,
 मान बिन परोना जो पान बिन चूना है;
 जल बिन सरवर जो राव बिन नरवर,
 केसु बिन गरवर त्यों पेशु बिन पूना हे;
 त्रिकम प्रकाश करे अम्बरवास दीप बिन,
 रज बिन रजपूत अन्न ज्यों अल्लना हे. १

(दोहा.)

कहता हे करता बि हे, तलका त्रीजा भाग;
 कहता नहि करता नहि, वाका बडा अभाग. १
 पारसके परतापसें, सोना भइ तरवार,
 त्रिकम तीनो ना मिटे, मार धार आकार. २
 संतरूप सोनार कर, धरो प्रेमको खार;
 त्रिकम तब तीनो मिटे, मार धार आकार. ३
 बेरीके मन बसत हे, घटहीमें बाँडे घात;
 सज्जन रहिये शत्रुते, सावधान दिन रात. ४
 दुस्मन दावादार सो, करहि कदापी हेत;
 शत्रु सज्जन होत नहि, चलनां प्यारे चेत. ५
 मधुर वचन मुख बोलहि, भीतर विष भरपूर;
 दाव परे तो पलकमें, लेवे जीव जरूर. ६
 बैठहि मीठा बोलके, प्यार करी जू पास;
 मित्र कबू मत कीजियो, बेरीको विश्वास. ७

दयाराम

(मृष्टिकी विचित्रता)

फहु फहु पध्धग्में हीग्नकी खान होत,
 फह फह सागग्में मोतीनफा चासा है,
 फह फह धरणीपर मेवा मिष्टान्न होत,
 फह फह धरणीपें उगत न घासा है;
 फह फह पफनहुं भोजन अनेक होत,
 फह फह पफनहुं निवनेफा मामा है,
 फहत हे दयाराम घन तेरी सोहैवाहु,
 आप सृष्टि ग्वायफे देखत तमारु है १
 हाथीके दातनके सिलौना बने भाति भाति,
 घाघनकी खाट तपी शिप मन भाई है,
 मृगनकी खाटनको ओन्त है योगी यती,
 छेग्नकी खाट थोग पानी भर आई है,
 साबरकी खाटनको चापत सिपाही लोग,
 गैडनकी खाट राना रायन मुहाई है,
 फहै फवि दयाराम रामके भजन बिन,
 मानसकी खाट फन्नु काम नहि आई है २

(प्रजभाषा प्रक्षान्ता-दोहा)

श्लोक पुगनी ससृष्ट, चाचत सब इतराय,
 फुल्य मुफट गिरवान जघ, धोता ऐ समुझाय १
 बुध फहि भासा बाद जो, मुरवानी इक सांच,
 तो हम फहि ये मूर्ख है, साच न छवे आच २
 बेर बडे गिरवानतें, नारायनकी धानि,
 प्रजभाषा भल ताहितें, प्रजपति भखि मुख जानि ३

दादु.

दादु अमृत नाम ऐ, भातमतत पोखे,
 सहजे सहज समाधिमा, धरणीजल सोखे १

- पंचोका मुल मूख हे, मुखका मनवा होइ,
यहु मन राखे जतन करि, साध कहावे सोइ. २
- बहुरूपा मन तब लगे, जब लग मायारंग,
जब मन लाग्या रामसुं, तब दादूके अंग. ३
- दादु मन पगुल भया, सब गुण गया विलाइ,
हे काया नवजोवनी, मन वृढा हो जाइ. ४
- अपने कसब कर लिये, मन इद्रिय निज ठोर,
नाम निरंजन लागि रहूं, प्राणी परहारि ओर. ५
- सब काहूके होत हे, तन मन पसरे जाय;
एसा कोई एक हे, उलटामांहि समाय. ६
- मनहीं मजन कीजिये, दादू दर्पन देह;
मांही मूरती देखिये, इहि औसर करि लेह. ७
- ध्यान धरे क्या होत हे, जो मनमेल न जाय;
ध्यान धारि बक मीन जिम, पशू विचारे खाय. ८
- जिस्का दर्पण ऊजला, (सो) दर्शन देखे मांहि;
जीस्की मेली आरसी, सो मुख देखे नाहि. ९
- दादू जीवे पलकमें, मरतां कल्प बिहाइ,
निश्चे यहु मन मश्करा, जिन कोई पति आइ. १०
- निश्चय करते जुग गये, चंचल तबहीं होय,
दादू पसरे पलकमें, यहु मन मारे मोय. ११
- यहु मन पंगुल पच दिन. सब काहूका होय;
दादू उतारि अकाशतै, धरती आया सोय. १२
- दादू मन मरतक भया, इद्रिय अपने हाथ,
तोभी कदी न कीजिये, कनक कामिनी साथ. १३
- शब्द अनाहद हम सुन्या, नख शिख सकल शरीर,
सब घट हरि हरि होत हे, सहजेंही मन थीर. १४
- शून्य मंडलमें थिर किया, गरजै शब्द रसाल;
रोम रोम दीपक भया, प्रगटे दीनदयाल. १५
- खोजि तहा पिय पाइये, शब्द ऊपने पास,
तहां एक एकांत हे, जहां जाति परकाश. १६

काया अतर पाइया, त्रिकुटी फेरे तीर,	
सहजे आप उखाइया, ध्याप्या सकल शरीर	१७
जहा राम तहां मन गया, मन त्हाते ना जाय,	
जहां नेन तहां आतमा, दादू सहज समाय,	१८
जे पहेले सदगुरु कथा, नेनहु देख्या आइ,	
बरसपरस उन एकमें, दादू रया समाइ	१९
मन पवना जब बस भया, लीन भया जब नाद,	
अलख पुरुष जब मिल गया, दुबधा मिटी उपाध	२०
सोजि कपाट देखी जहा, अचरज सहा अनूप,	
आतमतत्त्वज जागते, देखे अलख स्वरूप	२१
उनमुनि छागी सूनेमें, निशदिन हे गुलतान,	
तन मनकी जब शुद्ध गई, पाया पद निरवान	२२
दादू दारु तो कहाँ, जो इक ठेरे पीर,	
रोम रोम गेह साचरी, व्यापी सकल शरीर	२३
आठ पहरका रोखनां, घड़ी पटकका नांदि,	
रोते रोते मिल गया, दादु साहेब मांदि	२४
हसा सो झानी खरा, राखे अतर एक,	
विस्वसें अमृत काड ले, दादू बडा वियेक	२५

दीहल.

(सूमकथन-संघया)

दीहल दूर करो घरकी अरु, आवन जान करो इक नाळे,
चावल दाळ कंदे मत रांघ तुं, शाक सदाहित राघ उवाळे,
सूमको पूत फहे सुन कामिनी, सोय रहूं घरमें अधियारे,
जो जग जीवनो चाहे कितोक तो, दहेके नाम दियो मति पाळे १

(गर्भधारका कोल)

दश मास रहो जब गर्भ महा, तबही प्रभुसें तुम कोल किया,
हरि बाहिर है तब भाकि करू, इहि कारन तोहि निकाल दिया,
इत आय सवे अब मूलि गये, तिहि कारन लोग भये दुखिया,
कचि दीहल चेति सदा मनमें, भज राम सिया जिन जन्म दिया १

दीनानाथ.

(प्रार्थना और कर्म.)

जाही हाथ धनुषको चढायो है सीतापति,
जाही हाथ रावण संहारे लंक जारी है,
जाही हाथ तोर औ उवारे हाथ हाथी गहि,
जाही हाथ सिधु मथी लच्छमी निकारी है,
जाही हाथ गिरिधर उठाय गिरिधारी भये,
जाही हाथ नंदकाज नाथे नाग करी है;
हौ तो अनाथ जोरि हाथ कहाँ दीनानाथ,
वाही हाथ मेरो हाथ गहिवेकी वारी है.

१

घर घनश्याम कहो आंगन अनंत कहो,
द्वारमें दामोदरके दास होय रहु रे,
टाढे होत ठाकुर बैठत विश्वंभर कहो,
चालत चतुर्भुजके चर्ण चारु गहु रे;
पथमें पुरुषोत्तम वायुदेवकों विदेश,
नदी नारसिंह कहो पाप सब दहु रे,
दिन कहो दीनानाथ रात कहो राधाकृष्ण,
आठो याम सीताराम सीताराम कहुं रे.

२

जानत हौ ज्योतिष पुराण और वैद्यको.
जोरि जोरि अक्षर कवित्तनकों उच्चरौ;
वैठि जानौ सभामाझ राजाको रिझाई जानौ,
अख वाधि खेतमांझ शत्रुनसों हौलरौ,
राग धरि गाऊं औ कुदाऊ घेरे वाग धरि,
कूपताल वावरी नेवारनमें हौतहौ,
दीनबन्धु दीनानाथ एते गुण लिये फिरौ,
कर्म न यारी देत ताको मै कहा करौ

३

दीनदरवेश.

(कर्तव्य, व्यवहार-कुंडलिया.)

बंदा वोत न फूलिये, खुदा खमदा नाहि,
जोर जुलम नां कीजिये, मृत्युलोकके मांहि,

- मृत्युलोकके माहि, तुजरचो तुर्त दिखावे,
जेता करै गुमान, सोहि नर स्वत्ता खावे,
कहे दीनदरवेश, मूल मत गाफिल गदा,
खुदा खमंदा नाहि, धोत मत फूले बंदा १
- राजा रारण मर गये, कट गये कुमकरन,
इदजीत बी उठ गये, हरणाकेश हरन,
हरणाकेश हरन, घाण सरसा बीछाया,
एसे कोटि अनंत, सवी राक्षस सीधाया,
कहे दीनदरवेश, प्रगट तुम देखो परखा,
मानवि केतिक मान, रहा नहि रावण सरखा २
- गढे नगारे कूचके, छिनमर छाना नाहि,
को आज को काल को, पाव पलकके माहि,
पाव पलकके माहि, समज ले मनवा मेरा,
घरा रहे धन माल, होयगा जगल डेरा,
कहे दीनदरवेश, गर्व मत कर गुमारे,
छिनमर छाना नाहि, कूचके गढे नगारे ३
- बदा बाजी भूठ हे, मत साची कर मान,
कहां बीरबल गग है, कहां अकबरखान,
कहां अकबरखान, बडुकी रहे बहाई,
फतेसिंग महाराज, देख ठठ चल गये भाई,
कहे दीनदरवेश, समर पेदाहि करवा,
मत साची कर मान, भूठ हे बाजी बदा ४
- रुपैया तोहि रंग है, जगत भगत वश कीन,
सच्चा तुजकू तो कहू, जो वश कर ले दीन,
जो वश कर ले दीन, दाम कलु दिन पलटावै,
धन्य ताहि अवधूत, अपटमें कबू न आवै,
कहे दीनदरवेश, दीन क्यूं नहीं तपैया,
जगत भगत वश कीन, रंग है तोहि रुपैया ५

राम रुपैया रोक हे, खर्च्या खूटत नाहि,
 साहेब सरखा शेठिया, वसे नगरके माहि,
 वसे नगरके माहि, हुंडियां फिरे न कच्ची,
 ओर साख सब जूठ, साख सतगुरुकी सच्ची,
 कहे दीनदरवेश, त्याग वेराग रखैया,
 खर्च्या खूटत नाहि, रोक हे राम रुपैया.

६

हिंदु कहे सो हम बडे, मुसलमान कहे हमं,
 एक मुगकी दो फाड हे, कुण जादा कुण कम,
 कुण जादा कुण कम, कबी करना नहि कजिया,
 एक भगत हो राम, दूजो रेमानसें रजिया,
 कहे दीनदरवेश, दोय सरिता मिल सिंधू,
 सबदा साहेब एक, एक मुसलमान हिंदू.

७

दाता नहि शूरा नहीं, नहि धरम नहि नेम,
 सो आया संसारमें, जाण जनावर जेम,
 जाने जनावर जेम, करी नहि सुकृत करणी,
 जाण्या नहि जगदीश, भार मारी व्हे जननी;
 कहे दीनदरवेश, जीवता अवगत जाता,
 नहीं धरम नहि नेम, नहीं शूरा नहि दाता.

८

डबियां राखो दंतकी, माहि भरो तपकीर,
 एक चपट भर सुंधिये, मिटे मगजकी पीर,
 मिटे मगजकी पीर, नेनमें निंद न आवे,
 काम दाम हुशियार, अंगही आलस जावे,
 कहे दीनदरवेश, रेन ओर दिनही जांखो,
 माहि भरो तपकीर, डबियां दंतकी राखो.

९

छारू जयसी छीकणी, ताका व्यसनी बोत,
 एक चपटभर सुंधिये, (पण) देवत आवे मोत,
 देवत आवे मोत, डबीयां गोद छुपावे,
 बेइमान हो जाय, जूठ सोगन बहु खावे,

फहे दीनदरवेश, आपसैं अकल बिचारू,	
ताका न्यसनी चेत, छीकणी जयसी धारू	१०
होका राखे हाथमें, तबाबुके चोर,	
गूल पराये दुत्ते, ठाली रखते ठोर,	
ठाली रखते ठोर, और कूडम बरताते,	
कसुबेके थार, नीत उठ मावा खाते,	
फहे दीनदरवेश, ईनका मत घर घोखा,	
तबाबुके चोर, हाथमें रखते होका	११

दीनदयालगिरि.

(दृष्टांतिक तथ्यबोध)

बचन तजे नहि सतपुरुष, सजैं प्रान घर देस,	
प्रान पुत्र दुहु परिहर्या, बचन हेत अवघेस	१
जनम लियो हरिभजनको, दियो विपैमें खोय,	
गयो लैन पायो न गज, आयो पंगुल होय	२
दियमें हरि हेर्या नही, हेरत फिर्या जहान,	
यौं निजमें भृग भूलि मद, खोजत फिर्यो अजान	३
चिद हरितें लीला करे, जग जहको सदोह,	
यौं चुपक परतापेतें, करत क्रिया जड ओह	४
चिदानंदकी सकतितें, मन इदिनका भोग,	
होत जथा रविके उदै, कृपा करै सब लोग	५
प्रभु प्रेरक सब जगतको, नटनागर गोविंद,	
ज्यों नट पटके ओट है, नटी नचावत वृंद	५
एकै सघहीमें बस्यो, बासुदेव करी बास,	
ज्यों घट मठ भीतर बहिर, खूज्यो एक अकास	७
सबै काम सुघरै जबै, करै कृपा श्रीराम,	
जैसे शूपी किसानकी, उपजावै घनस्याम	८

- जैसे जल लै बागको, सिंचत मालाकार,
तैसे निज जनको सदा, पालत नंदकुमार. ९
- सील सुमति सरधा बिना, बुध संग सठ सुधरै न,
होहि न सुजन पिसाच गन, शिवहि सेइ दिन रैन. १०
- साधु रहै नहि सकल थल, कविजन कहें बखानि,
वन वन चंदन होहि नहि, गिरि गिरि मानिक खानि. ११
- रचै सठहि बुध आप सम, वैन सुनाय अनूप,
जैसे भुंगी कीटको, करत सैन निज रूप. १२
- सठ सुधरै सतसंगतै, गए बहुत बुध भाखि,
जैसे मलय प्रसंगतें, चंदन होहि कुसाखि. १३
- मागतहीमें वडनको, लघुता होति अनूप,
बलि मख जाचतहीं धरै, श्रीपतिहूं लघु रूप. १४
- भाग्य फलति है सफल थल, नहि विद्या बलवांह,
पायो श्री अरु गरलको, हरिहर नीरधिमांहि. १५
- विश्वासीके ठगनमै, नहीं निपुनता होय;
कहो सूरता तासु हनि, रह्यौ गोद जो सोय. १६
- करम करै कोऊ अशुभ, लग्यौ संग वासि काहु,
यथा चोर संबंधतें, बंध होत है माहु. १७
- लखियत कोऊ वस्तु जग, बिना चाह मिलिजाय,
अचरज गति विधिकी जथा, काक-तालिका न्याय. १८
- निरबल जुगल मिलाप करि, काज कटिन बनि जाय;
अंध कंध पर बैठि करि, पंगु यथा फल खाय. १९
- नीच न सोहत मच पर, महिमै सोहत धीर;
काक न सोह पताकपै, सजै हंस सर तीर. २०
- मूरख खलको साधुजन, उपदेसत न विचारि,
कपिको दीनी सीख खग, कीन्हों गेह उजारि. २१
- गहै दीन गुनहीन प्रभु, नहि गरबी गुन पूर,
छोडि केतकी कुसुमको, हर शिर धरे धतूर. २२
- सूरहु निरबलको हनै, नहि एकै नर जान;
सिंह बाघ बृक छोडि कै, लेत छाग बलिदान. २३

फाचे घटमें जल जथा, श्रवित होत अति जाय,	
जाचकको कुल शील गुन, विधा तथा घटाय	२४
पाय बहुत सहवामको, पुरुष नहीं प्रिय होय,	
धीन चढ़ धवस सबै, पूरन चढ़ न कोय	२५
सगदोपतें सत जन, अत न होहि मलान,	
जैसे जल मल संग तजि, निर्मल होत निदान	२६
राजभ्रष्ट लखि भूपको, त्यागि जाहि सब दास,	
ज्यों सर सुखो देखिकै, हंस न आवहि पास	२७
जो मन प्रिय सो प्रिय लो, गुन अरु रूप बिहीन,	
त्यागि रतन हर जतनसों, पनग भूषण कीन	२८
पर संपति अति सुरतिकै, खलमति है जरि धार,	
पय पूरन लखि कुंमको, करें झूठ मंजार	२९
दोष गहैं गुन नहि गहैं, खल जन रहैं अवीर,	
लगी पयोधर रुधिरकौ, पिये जोंक नहि धीर	३०
जामैं बहु श्रम होह तिहि, भोग सबै फल बृद्ध,	
जप तीरथमें दुख लहै, नहीं गहै गोविंद	३१
जैसे धन गन गगन धन, आवत करत पयान,	
तैसे धन जग धनक है, विधा दूरलभ मान	३२
पराधीनता दुख महा, सुख जगमें स्वाधीन,	
सुखी रमत सुख वेन विपै, कनक पीजरे दीन	३३
तहा नहीं कलु भय जहा, अपनी जाति न पास,	
काठ बिना न फुठार कहु, तरुको करत बिनास	३४
अतिसे सूधे मृदु बने, नहीं कृत्सल जगमाहि,	
काटत संरल सुतरुनको, सों बल कूटिलहि नाहि	३५
धनी सुखी नहि तोष बिन, तुष्ट निधन सुखवान,	
नृप सुख हित पचि पचि मरै, मन मुनि मोद महान	३६
प्रियवादी प्रिय लोकमें, तैसे नहि कटु बैन,	
पिक प्रिय तथा उलकसों, कोक प्रीति करै न	३७
केहरिको अमिषेक कव, कीन्यों विप्र समोज,	
निज भुजके बल तेजतें, निषिन् भयो मृगोरान	३८

- प्रिय अप्रिय जानै नहीं, जे समरथ है लोक,
 संभु जरायो कामको, नहीं जरायो सोक. ३९
- कृपिन धनी नाहि जाचिये, वरु निरधन दातार;
 तजिकै कुसुमित आक अलि, करै कमल कृस प्यार. ४०
- करै सुजन सतकार पर, परे व्यथाके बंध,
 दहत देत सबकों अगर, अपनो सहज सुगंध. ४१
- धीर होत तृन खायकै, पयतें विप है जाय,
 यहि विधि धेनु भुजंगरद, पात्र कुपात्र लखाय. ४२
- खल जनको विद्या मिलै, दिन दिन बढ़ै गुमान;
 बढ़ै गरल वह भुजगको, यथा किये पय पान. ४३
- चहै मोद नवनीत जग, हरिसों हेत विसारि,
 मथै वारी ज्यौ डारि दधि, अंध ग्वारि श्रम धारि. ४४
- जग दुखको दारन करै, साधक लहि सतसंग,
 पाय जडीवल नकुल ज्यौ, नासै भीम भुजंग. ४५
- मृदुवादी बुध जग लसत, बसत बुदनके संग,
 सारगी हित साजतें, जैसे सजै मृदंग. ४६
- दारिद सुरतरु ताप ससि, हरै सुरसरी पाप,
 साधु समा गतिहू हरै, पाप दीनता ताप. ४७
- भाषत धौर सरीरको, नहीं छनक इतवार,
 ज्यौ तरु सरिता तीरको, गिरत न लगै वार. ४८
- संवंधिनको संग है, जगमै छनक बिचारि;
 मिलै कूप पर आनि ज्यौ, घरघरतें पनिहारि. ४९
- चलिवो है चेतै न जग, भूल्यो देखि समाज,
 जैसे पथिक सराय परि, रचै सयनके राज. ५०
- पुलकित होंहि प्रवीन सुनि, बुधवानी न अजान,
 ससि मयूषतें चन्द्रमणि, द्रवै न काठिन पखान. ५१
- चचल खलकी प्रीतिको, गए अलप बुध गाय,
 ज्यौ घन छाया गगनकी, छनमै जाय नसाय. ५२
- सरल सरलतै होय हित, नहीं सरल अरु बंक,
 ज्यौ सर सूधहि कुटिल धनु, डारै दूर निसंक. ५३

प्रीति सुखद है सुजनकी, दिन दिन होय चिसेख,	
कबहुं भेटे ना भिटै, औ पाहनकी रेख	५४
नेह सारखी रजु नहिं, कविवर करै विचार,	
बारिज बंध्यो मलिनद छसि, वार विदार निहार	५५
पीछे निंदा जो करै, अरु मुगुपैं सनमान,	
तजिये ऐसे भीतकों, असो टग पकवान	५६
गुनी रमाछ रसालसैं, नमैं सुमन फल पाय,	
नीरस तरुसैं नीच नर, नवै न कीटि उपाय	५७
उत्तम धल सेवै सुजन, नीच नीचके बस,	
सेवक गीघ मसानकों, मानसरोवर हस	५८
जितेन कोऊ पारखौ, सो थल नहि बुध जोग,	
गुजा मानिक एक सम, करैं जहा जड लोग	५९
मलिन पिताके विमल सुत, उपजत नहि सदेह,	
होत पकते पद्म है, पावन परमागेह	६०
करको मानिक निवारि नर, हन्त दूर भ्रमात,	
गंग तीर निबसै तत्क, दूर तीर्थनि जात	६१
तूटे जाके फल न हो, रूटे बहु भय होय,	
सेवजु ऐसे नृपतिको, अति दुग्मतिमें लोय	६२
नहि धन धन है परम धन, तोषहि कहैं प्रवीन,	
बिन सतोष कुबेरक, दारिद हीन मलीन	६३
नीच संगते सुजनकी, मानहानि न्है जाइ,	
छेह कुटिलके संगते, सहै अगिन धन घाइ	६४
गुनतैं होत प्रधान अग, और उंचतैं नाहि,	
हरि हित अतिसै मालती, तथा न सेमल माहि	६५
नहि जोजन सत दूर जों, दुहु मन पूरन प्यार,	
कासमीर मलयज मिले, करैं बिहार छिहार	६६
श्रीको उषमते बिना, कोऊ पावत नाहि,	
छियो रतन अति जतनसों, सुर-असुरन दधिमाहि	६७
बिनै मिलत विषा मिले, सो जों कृत अभिमान,	
कासों कहिये जौ हरै, जननी विष दै प्रान	६८

पूजत लोग मर्दानको, पावन जन पूजै न;
करन घान सुवरन लसै, नेपत कज्जल नैन. ६९

बुधजन कूर सुभावको, नहीं करै उपकार;
खाय मधुर वृत कर धरे, करे अगिनि छिल धार. ७०

अरथवान समरथनिसों, अरिहुं करै हित बात;
निर्धन जनतें मुजनऊ, दुरिजन लौ वनि जात. ७१

(प्रेमपचक-सत्रैया.)

छल बंचक हीन चले पथ याहि, प्रतीति मुसंबल चाहनो है,
तह संकट वायु वियोग लुवै, दिलको दुःख दावमें दाहनो है;
नद सोक विपाद कुग्राह ग्रसै, कर धीरहितें अवगाहनो है,
हित दीनदयाल महा मृदु है, कठिनो अति अंत निवाहनो है. १
सजि सेज सुवारि बिछलनकी, तहं मीत मतंग सो आवनो है,
वरु नीर रखै सिकता घटमै, मकरी पट सिंह फसावनो है,
सुगमै बड वारि धि पैरिवो है, पय ऊपर तारिवो पाहनो है,
हित दीनदयाल महा मृदु है, कठिनो अति अंत निवाहनो है. २
रसना अहिकी गहिवी सुगमै, वन कंटक गौन उवाहनो है,
गिरि तें गिरिवो भिरिवो गजनं, तिरिवो बडवागिको थाहनो है,
रन एक अनेक नितें जु लरै, तिमि ताहि न सर सराहनो है,
हित दीनदयाल महा मृदु है, कठिनो अति अंत निवाहनो है ३
पछलत्त तुरीनके है सुगमै, नख नाहरको हठि गाहनो है,
विष नीरकी पीरको धीर सहै, चढि चीर सरीरहि दाहनो है,
मरु कूपके बीच फसे सुगमै, वरु मीचतें बैर विसाहनो है,
हित दीनदयाल महा मृदु है, कठिनो अति अंत निवाहनो है ४
खल निन्दक सूकर भै जह है, गरजै गज मत्त उराहनो है,
कुलकानि अपार पहार जहां, गुरु लोक सकोच कुपाहनो है,
नल भीर भरी विपदाकी सरी, तह पंक कलंकहि गाहनो है,
हित दीनदयाल बडो वन है, कठिनो अति अंत निवाहनो है. ५

दुर्गादत्त.

(प्रियाविरह)

जौ न होती तेरी मुख इंदुकी उजेरी हिये,
 तौ तो तो विरह अंधेरी कौन हरतो,
 होती जो न यावि तेरी अक्षय कथानकी तो,
 तापके कलापनको फहो कौन हरतो,
 जौ न होती तेरी गुन पांतिकी गुनाहत स्यो,
 कैसें इन पायनतें पथ पार परतो,
 हो तो जो न प्यान तेरो मोहि मुन प्रानप्यागी,
 तौ तो इन प्राननकी गरे कौन हरतो
 तव मुख चंदकी मुधाको मुखपायके व,
 लोचन चकोर मेरे पानके अघाय हैं,
 तेरे कुच कुभतें परसि मम छातीसोंहि,
 ताती विरहागिकी स्यो तापको मिटाय है,
 तेही नूपुरालीकी सरस धुनि प्यारी कय,
 मंद मंद आय मेरे कानन समाय है,
 कामके दरेरे दुख घेरे कब मेरे अग,
 तेरे अग अगको उमग भरि त्राय है
 औष्ठ मगावे कोऊ वैद घर जावे कोऊ,
 कोऊ है अमीनको मु पीस पीस छाने है
 वाइ को कहत पियराइको कहत कोई,
 मेरे या शरीरमाहि कोई जर जाने है,
 प्यारी तो वियोगकी बिमारी पहिचाने नाहि
 गेग उपचारी ये दिवावे ग्रह ढाने है,
 गात्र को वस्त्राने कोउ गेहको वस्त्राने,
 दोष पौनको बस्त्राने कोउ पानीको वस्त्राने है
 घरतीमें धाममें सुधामनकी भाति माहि,
 ताकमें तन्वतम तमामठ लखो करे,
 द्वारमें किवारमें सुद्वज्जम रु छातमाहि,
 कोनमें सुकौयऊम मोहिकों चखो करे,

वाटमें रु हाटमें सुघाटमें घनीही भांति,
 सामु है मुभाय आय आयके फह्यो करे;
 जिते जिते देखों तिते तिते सुनि इंदुमुखी,
 आनन तिहारो आंखि आगेही रख्यो करे. ४

मोतिनकी वेंदी वर कनक जराव जरी,
 पाटी बिच मांग मेरे मनको मख्यो करे;
 भारे कजरारे वै तिहारे अनियारे नेन,
 रेन दिन मेरे हियरेइको गह्यो करे,
 मीठे वै सु अधर कपोल मुसुक्यान लीने,
 मंद मंद मोहि कलु वातसी कह्यो करे;
 जिते जिते लखों तिते तिते सुनि इंदुमुखी,
 आनन तिहारो आंखि आगेहि रख्यो करे. ५

बेठत उठत जात आवत सकारे सौंड,
 कामके करार वान हिये डोलियतु है;
 देखें वन बाग भले लागत भयानकसें,
 खान खान मोहि मानो विषै घोलियतु है;
 धायकै हिंसत वाये वेधत दुखद काय,
 दायके करे जो छनमाहि द्योलियतु है;
 लखे क्यों न जाय ताहि विरह संताय तायो,
 तो विन सहाय हाय हाय बोलियतु है. ६

प्राणकी पियाकों कब दोरिके उठाय अंक,
 चूमिहों मयंक मुख छातीतें लगायके;
 विरह विथाकी लखि थाकी देह ताकी कव,
 हाथनकों फेरि फेरि पैहों सुख जायके;
 ज्यों ज्यों सु सुकैहे हे त्योंहि राखिहों लगाय कंठ,
 कौन दिन हियरेके तापकों मिटायके,
 आंसुनकी धार पोंछि पोंछि बह लैहों चित,
 देश परदेशनकी बातन सुनाय के. ७

(सवैया.)

केलि कथा मंह लजको नाम, सुनै हसिके मुख आचर दैवो,
 मेंहदीमें बडे हाथ रु पायमें, छेडत मो लखि वीनती सैवो;

स्वात समे छप्यो पास खडो छखि, भूल्यो न बातहे नेन नचैवो,
नहात समे मुहि देखत देखि, कैवाड पर्ये उठि घोवती छैवो १

(कुंइलिया)

तेरी पाय सहायको, सगर जित्यो सप्राप्त,
सोइ अक्षर अक्षर छखें, सहन विदारत काम
सरन विदारत काम, सरन कहु मिटे न मोकों,
सोजत इत उत फिरो, कतहुपे छबु न तोकों,
तो बिन कोन बचाय, छेय रण्डा कर मेरी,
हाय हाय करि रहों, सुरति करि करि अब तेरी ८

(राधिकाविलास-सवैया)

रति कोविद श्याम मुजान प्रिया, परिरमा छै भुज बीचन कीन्हो,
चुवन के सु कपोलनको, अधरामृतको दृढ के पुनि पीन्हो,
हीयन स्वच्छतके अतिसैं, जु कछु मन भावन सो करि छीन्हो,
नूपर किंकिनिधि धुनिकै, सुख देन गुपाल घनो सुख दीन्हो १
तिहिं औसर शब्द भयो नमैं, अलि सोचति क्या हरि तो पिय हैगो,
रसरत्न विलास कला करिकें, सखि तोहि घनो सग छै सुख छैगो,
वन वेनु बजाय रिढाय मली विधि, गाय बनाय सुवेप नचैगो,
उठि बेनि अवे गृह जाउ चली, तजि सगय श्यामन तोहि तजैगो २

(प्रथ गौरव-सोरठा)

यह हरिप्रिया विलास, छर्यो ब्रह्मवैवर्तमें,
मापा सहित हुलास, कीन्हो दुर्गादत्त तिहिं १
राधावर गुन गान, राधावरको ध्यान करि,
राधावर सनमान, कलि अवलंबन दूखो २

(कविपरिचय-चोदा)

आदौ जैपुरनगरके, अब फाशीमें धाम,
गौड विप्रवर जानिये, दुर्गादत्त सु नाम १
तिन यह राधावृष्णको, कीन्हो गुप्त विलास,
इहिं पठिवेतैं देत हरि, जा मनको अभिलाष २

दूल्हा.

(शृंगारसौंदर्य-कवित्त.)

रति रमणीय तीय रभासी सरोजमुखी,
 रमा वाम लसै चारु मेनका प्रमानी है,
 कोकिलसे वचन मधुर जाके सुखदान,
 मृग दग छवि महा गुंदर सुहानी है,
 कहै कवि दूल्हा गु केहरि समान कटि,
 जगपीति जाकी सब जगत बखानी है;
 देखि नंदलाल मोहै उरज उतंग सोहै,
 कौ है जो न जोहै मुनि मानी महा ज्ञानी है. १

विषयी विपे है फुरै जानो परिनाम मित्र,
 कपि नाथ्यो सिंधु रामपंकज प्रभावतै,
 सोई कपि बहुतनि बहुतौ उल्लेख लेख्यो,
 देव कहे देवदानो दानो कहे दावतै,
 गुन करि एको अनेक भांति एक लेख,
 दूसरो उल्लेख लेख्यो सीता जू बनावतै,
 वारि मध्य वारि जान्यो कोटमे कृशानु जान्यो,
 देतमें अंगूठी संत जान्यो सत भावतै. २

लंककी विसालता लै उरज उतंग भये,
 रंग कवि दूल्हा है तेरे मनसूबेको,
 ताहि कटि धीनताकी नाती मानि सिंह हनै,
 तो गति गहैया गज अजब अजूबेको,
 सिद्धा औ असिद्धा चारो तुकमें विचारो भेद,
 छेद सख्यो मुक्ता तिहारी तन छूबेको;
 पोखराज भानको चढावत कलान सीत,
 मान मानो तो मुख समान सखी हूबेको. ३

सिद्धको विधान तासों कहत विबुध विधि,
 रास मंडलीमें गोपिकेश गोपिकेश है,
 हेतु मान सहित बखानै हेतु जाको वाम,
 चारो फल आठो सिद्धि दीबेहीके पेश है,

हेतु हेतुमानको अभेद चरनन दूजो,
 फान्हकी कृपा धनतै घरमनि बेस हँ,
 सूनत कबित्त नित्त रीसि बृजराज माँहि,
 करिकै मुचित्त चित्त बसत हमेस हँ ४
 हरभित गात स्वेद भरे दरशात यात,
 फहत धने न रग छायो आसियानमें,
 कुँन गई याने जान्यो किंसुककी माल साजी,
 चदसी बिराजी सो सखी छ्बी तियानमें,
 शब्द घेठ वाक्य श्रुति स्मृति औ पुरानागम,
 योही निज तोप फगो आचागे प्रमानमें,
 है कहै गहै न फटि कान मज समवेरी,
 कहा देखिचो न कहा सुनिचो जहानमें ५

देवकीनंदन.

(घिरद, चसत-कचित्त)

बैठी रंग रावटीमें जोहत पियाकी बाट,
 आये न मिहारी में निपट अधीरमें,
 देवकीनंदन मनमें उमगि आई देखि,
 अति गति प्रत्यकी डरानी महाबीरमें,
 सेजपै मूरत सदाशिवकी बनाय पूज,
 ती न डर तीनहूके किन्ही तदबीरमें,
 ता खनमें सावरो सु राखनम अच्छी बट,
 पाखनके ग्राम्बनमें छिबी तसबीर में १
 रंग रंग फूले चेलि, बिपट अनेक सग,
 देवकीनंदन कहै शोभा यों अनतकी,
 त्रिविध समीर डोले घोले पिक प्यारे घोड,
 पुज आलि गुज मति मोहै मैन मंतकी,
 सखिन समेत साजे जेवर जडाठ सधे,
 बसन बसति शोभा भारी प्यारी फतकी,

बेस बंगलपै बेस सुनत वसंत राग,
वाग वन वन कवि लोकन वसंतकी.

२

(विराग-सवैया.)

देखत जातन हे जितनो, तितनो सब देखत नाश वनैगो.
राव गये पुनि रंक गये, सुनता बकता कहो कोन रहैगो;
जोगि गये ओर भोगि गये, पुनि रोगि गये स्थिर को न रहैगो,
याहितें आनदरूप बनी, भज रामको नाम अखंड रहेगो १

देवदत्त.

(नंद-ब्रजवासीन विनोद.)

छूटै पट पाट कहू वूटै लै लै हाट कहूं,
हाट कहूं राखी न कपाट कहूं बंदकै;
औघटहूं घाट कहूं पचे तिन वाट कहूं,
भाट कहूं भट नट नाट कहूं छंदकै,
कोलाहल गोकुल सम्हारिये न गोकुलको,
कुलको उज्यारो उचै गोकुलके चंदकै,
जसुदा उदार वसुधार वरसंती देव,
धाई परै वसुधा वधाई परे नंदकै. १
वीथिन सुधारै वरसति वसुधारै काम,
दुधाते दुधारै जे उधारै जम सासनी;
गाये ते मंगाये गाये दानियौ जगाये पौरि,
पूरन पलाकी है भलाकी आजु पासनी;
लोम लोम जसोदा पुलोम जाले हरषति,
बिथि अनुलोम होम हबिकी हुतासनी;
नंदके अवास ब्रजवासिनको भाग खुल्यो,
खुलत सम्हारियै न बासन न बासनी. २

(राधा-कृष्णका प्रेम, शृंगार.)

संग ना सहेली केली करति अकेली एक,
कोमल नवेली वर बेली जैसी हेमकी;

लालच भरेसे लखि लाल चलि आयै सोचि,
 लोचन चलाय रही रासि फुल नेमकी,
 देव मुग्धाय उरमाल उरसाय फखो,
 दीजो सुरसाइ बात पृथी छलधेमकी,
 भायक मुभाय भोरें श्यामके समीप आय,
 गांठि छुटकाइ गांठि पारि गई प्रेमकी ३
 सोहति किनारी लाल बादलाफी सारी गोरे—
 अगनि उच्यारी कसी फचुकी बनाइके,
 जेवर जडाऊ जगमगत जवाहिरके,
 जूती जोती जावककी जीती पग पाइके,
 भौहनि भमाइ भुरि भाइ करि नैननसों,
 सैननिसों बेननि कहति मुसकाइके,
 धीकनी चितौनि चारु चरे करि चतुरनि,
 चित्त लियो चाहै चित्त लियो है चुराइके ४
 रीझि रीझि रहसि रहसि हसि हसि छै,
 सासैं मरि आसु मरि कहत दर्ई दर्ई,
 चाँकि चाँकि चाकि चाकि औचक उचकि देव,
 थकि थकि थकि थकि छठति धई नई,
 हुहुनके गुन रूप दोऊ बरनत फिरै,
 धरत थिरत रीति नेहकी नई नई,
 मोहि मोहि मोहनको मन भयो राघामय,
 राधा मन मोहि मोहि मोहनमई मई ५
 देखि न परति देव देखि देखि परीवानि,
 देखि देखि दूनि दिख साध उपजति है,
 सरद उदित इतु बिंदुसो स्यात लखे,
 मुखिस मुखारविंद इंदिरा लजति है,
 अदभुत ऊवपी पियूखसी मधुर बानी,
 मुनि मुनि धवननि मृखसी भजति है,
 मार कियो मंत्री मुकुमार परतंत्री बिन,
 बिना तार तंत्री जीम जंत्रीसी भजति है ६

बंसी-धून बांधि चित चंगसों चढायो सुनि,
 ताननकी तुंग धुनि चंग सुहचंगकी;
 मधुर मृदंग सर उपज उपंग भई,
 पंगु परबीन बीन बोलनि अभंगकी,
 बधिक बिहंग बधू व्याध ज्यौ कुरंग ताहि,
 हनी है कुरंगनैनी पारधी अनंगकी;
 संग संग डोलति सखीनिके उमंग भरी,
 अंग अंग उठति तरंग श्याम रंगकी. ७
 चंपा कचनारके सु केसर कदंब कुल,
 बकुल असोक राजी राजति रसालिका,
 माधुरी मधुली रसधूली बस भुली भौर-
 पांति झौर झूली झांकि फूली वनमालिका,
 सीतल सुगंध मंद गंध वह वहै महं,
 महे मल्ली मालती निबल्लरी बिसालिका,
 केली तजि डोलति अकेली बाल बेली देव,
 कोकिलाकी बानी अकुलानी कुल वालिका. ८
 देव प्रीति पंथा चीर चीरि गरे कंथा डारि,
 भसम चढाइ खान पान पौन छूजिये;
 दूरि दुख द्वेद राखी मुंदरा पहिरि कान,
 ध्यान सुंदरानन गुरूके पग पूजिये;
 शृंगीकी टकी लगाय भृंगी कीट व्हैके मन,
 धारिके विराग विरहाग मै न भुजिये;
 केली तजि राधिका अकेली होइ जोगिनि तौ,
 अलख जगाइ हेली चेली चली हूजिये. ९

(वैराग्य.)

वालतें तसन अस तसनतें बूढो भयो.
 वृद्धतें वढती विधाता गढि जाईगो;
 महितें महल चढी कोटिनि अचल चढ्यो,
 अचलतें ऊंचे आसमान चढि जाईगो,
 हरि भजि लेहि यह सबै सब खेह कहा,
 गेहसो सनेह देहहीसों कढि जाईगो

धिर न कुबेर इंद दारे देव रवि चन्द्र,

बैठ रहु घोरा तुं कहाँतो बढि जाईगो

१०

(काव्य परीक्षा-दोहा)

तत्वबोध सम सग्व मति, छूटे मोह महात्त,

शात चादि रस शात जहं, जानै जगत भतत्त

१

सग्य नित्य चैतन्य बस, शांतिरस द्वै नेम,

जोम भनन्य सरन्य गति, एक भक्ति अरु प्रेम

२

सेवक सेव्य रु भाव दृढ, भक्तिनि भक्ति अनन्य,

प्रेमीजन तन मन वचन, अर्पन असरन सरन्य

३

शात रस मु निव बढि, होत ज्ञान वैराग,

रौक्ष तुच्छ सुहे पिना, प्रेमभक्तिको छाग

४

यत्रपि मधुर रस माधुरी, मधुकर चर अनुकूल,

मूलत नही गुलाबके, तदपि कँटीले फूल

५

रन पैरी समुम्ब दुखी, मिश्रुक आये द्वार,

मुद्र क्या अरु दानकी, त्रिविध उद्याह उदार

६

मुमट उदार उद्याह बढि, उर आनद गभीर,

अग पुच्छ सुख अथु दग, होत विविध रसयी

७

देवीदत्त.

(भक्त लच्छन)

वया दिष्ट गत्तै सबहीसों मृदु भासै नित,

काम क्रोध ग्रेभ मोह मत्तसों दबावैं जू,

काहमें न तेखें ब्रह्म सबहीमें देखैं,

आपु को छु छेखैं करि नेम तन तावे जू,

खेवीत्त जामें हरिहीको पक्ष चित्त और,

जगत्तको रीतिमें न प्रीति सरसावैं जू,

दुखित है आपु दुख औरको मिटावैं ऐसो,

शात पद पावै तब भगत कहावैं जू

१

बहे बहे गुणी पुरुषारथी अपार फिरै,

केते द्वार द्वार कवि पंडित सिपाही हैं,

वाने मति मन्द सबै जानत वजिद तौ न,
 वखत बिलंदहू अमंद उतसाही है;
 देवीदत्त होत कहा कीन्हे कर तूति दर्श,
 दइकी विभूति सोन मानत थराही है;
 सेंति मेति आपनी बनाई गुमराई मूठ,
 मदके उदोत होत हरिके गुनाही है.

२

देवीदास.

(राजबोध-राजनीति.)

नीतिहितें धरम धरमते सकल सिद्धि,
 नीतिहितें आदर सभानि बीच पाइये;
 नीतिते अनीति छूटे नीतिहीते सुख छटे,
 नीति लीये बोलै भलो वक्ता कहाइये;
 नीतिहितें राज राजे नीतिहीते पातशाही,
 नीतिहीकों नोहूं खंडमाहि जश गाइये;
 छोटेनिके बडे करै बडे महा बडे करै,
 ताते सबहीको राजनीतिही सुनाइये.
 मूसे परि सांप राखें साप परि मोर राखें,
 बैल परि सिंह राखे वाके कहा भीति है;
 पूतनिकौ भूत राखें भूतकों विभुत राखें,
 छमुखकौ गजमुख यहें बडी रीति हैं,
 काम परि वाम राखें बिसकों अमृत राखें,
 आगि परि पानि राखें सोई जगजीत हैं,
 देवीदास देखौ ज्ञानी शंकरकी सावधानी,
 सब विधि लाइकपें राखें राजनीति हैं.
 कौन यह देश कौन काल कौन बेरि मेरो,
 कौन मेरो हितु मोहि ढिंगते न टारिबौ;
 केतिक आमद मेर खरच केतो क बल,
 तेहि उनमान मोहि मुखते निकांरिबौ,

१

२

सपतिके आवनिकौ कोन मेरे अवरोध,
ताछको उपाठ यह दाउ उर धारियो,
राजनीति राजनिकों दिनप्रति देवीदास,
चार धरि राति रहै इतनो बिचारियो

३

वातनि बहनहार चित्तके लहनहार,
अतरमें फारे और ऊपरतें गोरे हैं,
जानियो उनहि थोर दिनके रहनहार,
दे करि कुमत्री स्वामी संकटमें बोरें हैं,
ताहिनें अनीतिके सहनहार हम तेरी,
पोरिके रहनहार बामन हैं भोरें हैं,
राजानिके चित्तके गहनहार घने पारि,
देवीदास हितके कहनहार थोरें हैं

४

एक पाठ पेटसों लगाइ लीनो लपटने,
प्रिया पाई ठाढ़ों मुख मझा मौन हैं गणों,
नारहि नबाह करि ठोर कर बैठ चंचु,
पीठिमें दुराह राखी रूप जाइ ना कणों,
हल्लिबो चलिबे भेटे सास वाउ रोकी राखी,
आखिनमें जीउ वंम कापें जात ना कणों,
छोटी छोटी माछरीनि छलिबेंको देवीदास,
देखीयो बगुल बह पंगुलासों है रखों

५

तनुतों पतन सील असकों अमर जानि,
यह जीव आनि दानि देबों चाहियत हैं,
बड़े महिपति सोतों दीपनिके दीप कैसें,
बिना दान कहू पेस दान पाइयत हैं,
बलिक्कीतों पीठि सिबि मांसु अविनास भयो,
जगदेव देखो देह बौ छटाइयत हैं,
देवीदास करनकी खालहि खलक जानें,
दधीचिके हाड गाढ अग्यों गाइयत हैं
ऊजरे महल नाहि पालिक्की बहल नाहि,
चहल पहल नाहि होमकी हवनसी,

६

माते गजराज नाहि मागनेकी लाज नाहि,
 कविको समाज नाहि दास अरवनसी;
 देई नाहि खाइ नाहि जोरत अघाइ नाहि,
 देवीदास कहें वह वसु हैं बमनसी;
 घने दुख जोरी घने दुखनिसों राखत हैं,
 यों जों संपदा तो आपदा कवनसी.

७

कुवा मांझ मेडकौ तिमंगल है रह्यो तिहा,
 आयो हस उख्यो देखि नीचे कृप पानिये;
 वैठ्यो उपकंठ बोल्यो मरोरसों मेडक तू,
 कौहै होंतो राजहंस तेरो घर जानिये;
 मानसर केतो बडो मो फलंग हूतें बडो,
 मेरे घर हूतें बडो जूठ कैसे जानिये;
 जा जीवनकी जहां लों पोंच नाहि देवीदास,
 ताको बूरो मनमांहि तिनको न मानिये.

८

तनकसो चिनगा छिनक मांझ वाउ फरे,
 न्है करे प्रचंड करे छार बारि बनिये;
 कौने मांज बालकसों बिलवा सकुच वेठ,
 दाउ परे उंदगहि चूकें नाहि हनिये;
 जैसी हूं सुबलि काटी ज्योंकी फिरि त्योंहि होइ,
 भुलियै न जौलों तौलों मूलतंहि खनिये;
 वसुधाके बीच जौ विजय चाहे देवीदास,
 व्याधि वैरि वैसनर छोटे नांही गनिये.

९

आपन अकेलो आस पास सब बेरी तब,
 दांतनिमें जीभ जेसे तेसी भाति रहिये;
 जानिये निकसि पेठि चलीए नरम ह्वे के,
 नेह करे तोपे वा सनेहसो न बहिये;
 अनमिले मिल्यो सो दिखाइ परे इते पर,
 सतावे तो देवीदास समो पाइ सहिये;
 दाउ परे एक बोल एसो बोलिये जु जुठौ,
 ओरपै दिवये जब ठेरु कयों चहिये.

१०

सूमनतें जश जाइ गरवतें लब्ध जाइ,
कुनारीतें कूल जाइ जागे जाइ सगतें,
मुखतें म्रजाद जाइ लहाएतें पूत जाइ,
सोचतें शरीर जाइ सीलता कुसगतें,
कपटतें धर्म जाइ लोभतें बढाइ जाइ,
मागिवेतें मान जाइ पाप जाइ गंगतें,
नीति बिन राज जाइ क्रोधसौं तपस्या जाइ,
देवीदास रजपूति जाइ मुरें जगतें

११

सूरवीर राखे सो तो भोगवे बसुधराको,
कविनि कौ आदरेगो सोइ जस पावैगौ,
भीर परे तबै फोन छै रजपूत बिना,
कविनिके दीये बिन कौन जस गावैगौ,
देवीदास कहै जाके बेई ल्वाजम है,
जगमाहि नीकी मांति सोइ सरसावैगौ,
ठाकुरकौ जायौ बढी ठाकुर फहायौ चाहे,

१२

सौ तो इन बैनहि कौ अगिहि ल्यावेगो
वैरीनिकों हेरि मारै गढ कोट पेलि पारे,
अगजिन गज डारे होत ग्वाल गौन है,
परखे आसरे सारै दारिदु दरेरे मारे,
देवीदास ह्या जिनिके जसके उघोत है,
एसे कविराज निफ कहै गुन राज नीकै,
ये गुन रहीत गावै तक्रिया न सीत है,
उंचो मुहु गुरुता निलेपता रु अमिपेक,

१३

पटबंध चौर ये तौ हुस्वनेकै होत हे
उचो मोहु किये गाधुं तक्रियासौं टिकि बेन्धो,
सघसौं अलेप बिना नेह सहु रुस्वनौ,
तारें पानी न्हाइ नित नये पट बांधे औरु,
अंभरमें रातौ रातौ दिसे मनो पुस्वनौ,
करपीर केरे जाके सीस पर चौर छरे,
साथी दीग रहै घरे कंचनके भूपनो,

देवीदास तेग त्याग हीन सब भाति बन्यौ,
कहियो विचारि यह ठाकुर विदुपनौ.

१४

(शेठ-सेवक विचार.)

मौन बेठि रहे तो सभामें मूक नाम पावें,
बोले वार वार तो लवार सगरे कहें;
ढिग जाइ घटे कहें ठीठु दूरि बैठ कहें,
अप्रगल्भ तहां कैसी भांति करके रहें;
द्यमा करि रहें तो डरप स्यार कहें सब,
वरावरी करें कहें नीचके लछन हें;
देवीदास कहै जे पराए भये चाकर हें,
ते विचारे कहो कोन भांति सुखको लहें.

१

पहिलेतो आगिलेसों प्रीति करि परिनाम,
पदवीकों पहुचावे हैके परकाजसों;
करि सनमान ले समान ताहि बैठे वह,
गिरिमाकों पाइ जब होइ नेक साजसों;
हलुके उठाइ ऊंची पदवीकुं पहुंचावें,
नीचो कीजै गरुवो जु होइ सिरताजसों;
देवीदास तासों कित राजी होइ चाकर जो,
गुनकों न जाने राजा होहि वितराजसों.

२

भाइपें बडाइ हे अलोकिक सगाइ देवी—
दास सुखदाइ भृत्य सो कहाइयत हे,
बिन कहे सब जाने सासन सिरपें माने,
साहिबकी भीर माने मन भाइयत हे;
निडरमें डर राखे डरमें निडर होइ,
लाजसों लपेटे रहें छवि छाइयत हे;
घरी घरी अरजीन होइ बरजी न करें,
ऐसे चाकर तो पुरे पुन्य पाइपत हें.

३

प्राण सम राखें ताकों सुख अभिलाखें आछें,
आछें बेन भाखै सदा वेइ तो सराहियें;
चित हित पागे कहे काहूके न लागे पीर,
परे भीर भागे ज्यों दुश्मन उर दाहियें;

बार बार तुठे तकसीराहिसों रुठे घोस,
 लीवत न रुठे दु ख परेतें निबाहिये,
 कृत अति प्रीति औ प्रतीति करें एकरस,
 एसें चाकरनकों तों ऐसं प्रभु चाहिये
 सदा चाकरीमें छीन सब बातमें प्रवीन,
 पाये अनपाये हीन कबहु न भाख्यो हें,
 कुलके कुलीन कपटीन अलीसीन जिनी,
 देवीदास लोक पर लोक अभिलाष्यो हें,
 ऐसें पुरे पुण्यनि मिलें हें जाहि चाकर जे,
 सांकरमें सुर लोक बेद यह भाख्यों हें,
 साहिब कितोंक देहें केतो सनमान केहें,
 मानके बदले उनि प्रान करि राख्यो हें
 बात बात उपर खुसामदी करत हे जे,
 मुहपर मीठी पीछें चबाइ नीकों गरों,
 सपत्तिके साथी स्यार मकसूदी धेहुस्यार,
 छेवेंकों हुस्यार ऐसें चाकर कुषा परो,
 कृत्यों न मानें एक डरे डर जाने जेठा,
 रंजमें भरज ठानें तिहों बिनाही सरो,
 देवीदास सरे पेट सेबक निवा विसोष,
 पसेंनि अल्लाको तो सीख वै विदा करों
 बडेनिके सीसपेतें तनक तिनुका छेत,
 ताथिरतासों बाघे बडेजु प्रीतिकें पने,
 सावधान भारी जनमावधीलें मूर्ख नाहि,
 प्रान वाके काजे देहि एसें प्रीतिसों सने,
 देवीदास अब सुनो नीचनिकी प्रसी गति,
 कोन भांति कीजें हाथ बसे उनके मने,
 प्रानहुलें देकें उपकारहिं करेजो कोउ,
 ताहूं खल तिनुकाकों किनुका कियें गने
 जाहीको तों चाकर हें ताहीकी लुगाइ सके,
 बत कोर मारो यह ग्यान कित को गहा,

४

५

६

७

जो कहोगे प्रारब्धसेती बह आवत है,
 आइ बरताइ देउ यहो मतौ है महा;
 आपनीसों तौरौ याहि लेके तुम गांठि जोरो,
 यह विपरीत देखे हमें तो लग्यौ चहा;
 एरे भैया रामकै हो रामकी तौ छिटकाइ,
 रामकी छुगाइ सेती प्रीति करिबो कहा.

८

अनुचर चातकसों बगलकों जातकसों,
 भौरुसों भलाइ कहों कैसें परिहरि हैं;
 हाथीसों हीरनसों पानीकौसों अंग जाकों,
 बनकों बिहंग सोए जाकी ढिग परि हे;
 देवीदास ऐसैं भट वारह जो द्वार होइ,
 कैधौ बिचार ताकों बेरी कहा करि हैं;
 बिन कहे सब जाने सासन सिरपें माने,
 साहिबकी भीर भाने मन भाइयत हैं.

९

दुबरेसैं आवे भूखे कामको किलिकिलावें,
 जितही लगावें हम सोइ करे सो कहें;
 साहिबनैं भूखों जानि दुर्बलकी दया आनि,
 मेल दियो मालपर कहू न आटोक हैं,
 जहां मुख धाल्यो तिहां गिलि गए सरबस,
 माति भये पलमांहि कोन सुनें कों कहें;
 फेर दुहि लीजें तब काम आवें देवीदास,
 कहियों बिचार यहां चाकरके जो कहें.

१०

हितकारि हैकें बे सदाई निज साहिबसों,
 हितकी न कहें तो हितुपनमें खामी हे,
 बसें सभासदकी सुबुद्धिनिकी हृदकी जों,
 सुनें नहि देवीदास सो तो सठ स्वामी हे;
 मंत्रि होई हितकों कहैया और राजा होई,
 सारकों गहैया तोहि जोरी बहु नामी हैं,
 नांतरु नृपति हे विपतिहीको गामी और,
 मंत्री वह निहचै नरकहीको गामी हैं.

११

(मित्रधर्म-सग कुसग)

पहेलें विवाद व्यवहार धनको न कीजें,
जाचिये न तापे आई मागे ताहि वीजियें,
मित्रके घरमें घरनीसों मिळि बेठिये न,
दुसिये न दूरि बेठि वेन छोरि छीजिये,
फोउ भेटे पारें तो न भूले देवीदास कहें,
मनकी दुराइये न तातें भये स्वीजिये,
प्रीति स्वीयो चाहियें तो कीजिये पर सु प्रीति,
प्रीति राख्यो चाहिये तो इतनो न कीजिये

१

सरदकी चादनीसे उजर अमोल शुभ,
सुंदर सुष्ठुतें दुराप दुरियेकेहें,
बहे गुनवंत देवीदास मन मोहि लेत,
पानिपसों पुरन सुदार दुक्वेकेहें,
काहु एक कूरकी कुराइ करि फूटि गए,
फिरि मूढ मोर्या चहें है न मुरियेकेहें,
मीतनिके मन मोती फाटी टुक हें भये सु,
लम्ब दैके जोरों कहा फिरि जुरियेकेहें

२

जासों अति प्रीति सय जगम बिदित होइ,
तासों पुनि भेर होइ दसैं दाइ छीजियें,
देवीदास कहें ज्यों जिहाजको बनिज कर,
धूरत कहाव ताकि भातें नहि धीजियें,
जोपै कहु पहिले कदापि चोरी करी होइ,
कुल सिल रहित बिचार करि छीजियें,
सुख चाहो आपको तो सबको सदाको सीख,
इतने मनुस्यहिसों सगति न कीजियें

३

करनसों पातकीसों मनके गरूरनसों,
मलिनसों तातकीसों मिलियें न स्वीजियें,
भोलके चल चलेसों मीतके छल छलेसों,
भेदपक्षके हलेसों कबहू न धीजिये,

चोरसों परवधूके तर वारे मतवारे,
हीन जातिनिसों तजि जौलै जग जितिये;
देवीदास देह धरे सुख चाहो आपकों तो,
इतने मनुष्यनिसों संगति न कीजिये. ४

जौ गुन गाहक होइ तौ गुन गहै जो वाहि,
सुगुन सिखाइयै तौ औगन कहा करे;
लोकलाज लोपै एक पापहीकी प्रीत जाहि,
ठीक बात एको नांहि चीकनौ रहा करे;
लाज न कहे कियेकि नेकि नही टेकी नेक,
टेकी ओर सुनौ बेटो यदि ये कहा करै,
संगती प्रसंगते बुरौ उ भलै होत देवी,
वेसैं वा असंगतकी संगती कहा करै. ५

नरके न धाम ना नपुंसकके काम नाहि,
ऋणीके अराम वाम बेश्या ना सहेलरी;
ज्वारीके न सोच मांसहारीके न दया होत,
कामीके न नातो गोत छाया नास हेलरी;
देवीदास वसुधामें वनिक न सुनो साधु,
कूकरके धीरज न माया है सहेलरी;
चोरके न यार बटपारके न प्रीति होत,
लावर न मित होत सोति ना सहेलरी. ६

(बाक् चतुरी-सत्य, असत्य.)
एक निकों बोल लोल तोल हलुकेरे मोल,
एक कोडीहिके अविचारनि समेत हैं;
कहिकी रहीतो भले न रहितो अति भले,
ऐसैं तो मनुष्य मन कौन जाने केत हैं;
सांच सिर लियें विरले सरल देवीदास,
रेनि दिन आपनैं विचारिम सचेत हैं,
ताहितें बडे पुरुष बोलै बडी बेर क्यौ जु,
बोल काजें बोलता पुरुष जान देत है. १

कीरतिको मूळ एक रेनिदिन धान देवो,
 घरमको मूळ एक साच पहिचानिवो,
 बढिबेको मूळ एक उचो मन राखिवो हें,
 जानवको मूळ एक भलि बात मानिवो,
 व्याधि मूळ भोजन उपाधि मूळ हांसी देवी,
 दारदको मूळ एक आलस बखानिवो,
 हारिबेको मूळ एक आतुरी हें रनमांस,
 चतुरीको मूळ एक बात करी जानिवो
 मौसरसां सनी आधी दृष्टताकी छवी लीये,
 जुक्सिां जटी हें जाके अंग अन्नदात हें,
 सांचसां सनीपें मनुहारीसां मिलि विचार,
 परिनाम नीकी मीठीसो ता न अघात हें,
 आखरनि थोरी औरू अर्थ करी महा बडी,
 औरके हित हें जाके सुन दु ख जात हें;
 देवकीसी बानी बात सोइ बात फहावति,
 देवीदास और बात बातनीकी बात हें

२

३

मानसमें छखन बतीस दातहु बतीस,
 दोउ ए समान एसे राजर्नातिमें फहै,
 दोउ आधे उजरे हे दोउ सीमा देत देवी,
 दोउ आधे राखिये अपुने हाथमें गहै,
 दोउ एक साथी है प फदाचित छखन जां,
 रहै तो रहेइ ओरु दात जो टहे ठहै,
 समामास बैठि बडौ मानस कहाइ जय,
 दांत कटि दीने तब छखन फह्यां रहै
 फाहुके घरेहें फाग बेठो फाइ फाइ करे,
 देवीदास वाहि वाकी मारिवो मनि धर्यो,
 बोलनिमे सुदरीसों कबो स्वाढो छठ मैरो,
 सननि धनुष धान माग्यो ये छलि फर्यो,
 निधरफ वाइ सवा बोल पर बेठ्यो रक्षो,
 वाहि खेचि सुका मायो महिमैं गिर पर्या,

४

गिरतमे काक कह्यौ हों तों सदा जीवतु हों,
जाको बोल मर्यौ ताको तोल मर्यौ सो मर्यौ.

५

पंचन प्रतीत सांच सांचके समीप हरि,
सांचहीतें देव मन वांच्छित करत हैं;
सांचहीतें भगति मुगति होत सांचहीतें,
देखो दीप देत आगि पानिन वरत हैं;
सब पुण्य फल साच सांचको न आंच कहूं,
सांच विन सांचे जन चित न धरत हैं,
साच लाग्यो सांच देव अनुकूल और देवी,
धरमको मूल जहा साच आचरन हैं.

६

झूठते सकल नेम धरम सुपुत्र हानी,
झूठतें संसार दुःखसिंधु औ लियत हैं;
झूठ बोले सभामाहि झूठि साख भरे ताकों,
पित्रानिकों नरक किवार खोलियत हैं,
इहि लोक पर लोक झूठेको नठोर कहूं,
झूठ साच कैसें एक संग तोलियत हैं;
देवीदास कहें तीन ताप आपदाको मूल,
पापहिको मूल जहां झूठ बोलियत हैं.

७

राजा हरिचंद्र हरि भांति करि राख्यौ देवी,—
दास वाके बदले विपति झुंड औडियौ;
चेरी याकी लखीसी सुजसु याकौ पूत दया,
दानमय देहु कछू चूकननि गोडियो,
बिगयों न अंग कछु पातकू कियौ न जाति,
यांति ते उतयों कछु चाहत न कौडियौ;
एरे या सपूते सहसाही कहै छांडत हो,
संत कहूं दुखनु लगाउ तब छोडियौ.

८

(खल-सज्जनादि विविध वर्णन.)

भले बुरे मानिसको पटंतरो देवीदास,
भांति भांतिको ये उष और सन देतु हे;
चारु आपकों खिलाइ खंड खंड है पिलाइ,
मार खाइ परिनाम रसको निकेतु हैं;

अब सुनौ सन धनौ फूलि फलि वृद्धि करि,
जरतें कढ़ाय पर्यो पानीमें अचेतु हैं,
आपकों सराइ पुनि आपकों सराइ सठ,
निज घाम उपराइ परमध हेतु हैं

१

भले बुरे मानिसको पटंतरो देवीदास,
दरजीकी सूई फहें अयेलीय देति हैं,
पेनो और अघरके गुन मांहि छेव पोरें,
आप गुनहीन तासों फहें नेति नेति हैं,
अब सुनौ दुबें और दोरेकी मलाइ बह,
गेछ्तो चलाइ परि गुनसों समेति हैं,

दिग दिग दूरि दूरि नेह छेव पारे बह,
तेह यह और करि पूरि पूरि छेति हैं

२

मूखे निकें भोजन थके निकु सु धानरूप,
आसरो निरासरेकी निघरेको घर है,
ठोर है निठोहरकों आदर अनादरकी,
देवीदास एसे निको कीरति अमरु है,
मूख बल फूल फल बल फल पल्लवनि,
वेह वेत फसकी न मानउ अजरु है,
ताती सीरौ सम कीये सगहीकों मुख दिये,
तरुकि तरज छीये ते फलपतरु है

३

पूरे कुल जनम निरोग है सरिर घर,
वैभव विसाल सुरसरी-तीर घाम हैं,
राहसी सुपुत्र सुखदाइक कुटुंब घर,
पतिव्रता नारि यह पूरों मन काम हैं,
रामजूकी भगति सकति दान देवहीकी,
चाकर हुकूमकारी जाफों जस नाम हैं,
देवीदास पते गुन पाह्ये अगतमें तो,
सुनसान मुक्तिको दूरसे प्रनाम हैं

४

तालस मिष्टित जगजीवनसों प्रीति राखें,
सीतल सुमाव देखें तीन तापकों नसें,

मित्रको उदय देखें फूलि उठे आधी भांति,
कोसहि धरेंहें सुभ वासना लीयें लसैं,
देवीदास कहें उर संग्रह गुनको ग्रहें,
दंडको कठोर मधु मधुक लीयें रसैं,
ऐसैं कुल कमलके गुन होहि जाहां यहें,
निहचै हे तिहि छांडि कमला कहां बसैं.

५

छोटे कुल जनम कुठोर बास देवीदास,
रोगिल सरीर दिन दुःखसो भरत हैं;
दुःखदाता पुत धूत घरमा कलह खान,
करकसा नारि नेन देखत जरत हैं;
पराधीन जीवतु अजस लोक पूरि रखों,
मुख है हारें दोउ हरत परत हैं;
ऐसेंको जनम देखें जग मांझ मेरे जान,
जनमके नरकमे साहिबी करत हैं.

६

केतो जग जोग करी केतो सुख भोग करि,
केतो गुन रूप करि नामना कडाइ हैं;
केतो दानशील हैकै जोरावर डील हैकै,
सूरशिर मोर हैकै गीतन गवाइ है;
केतो जगपूज हैकै तप तेज पुंज हैकै,
इनिमेंते एकहू जसै न उपजाइ है;
जाइ ऐसे पूतहि सपूती भई तौ देवी,—
दास कहै कहौ वांझ कौनसी कहाई हे.

७

सजन कुलीन निकें पहिलें तौ कोप नाही,
कदाचित करे छिन एकमें परिहरे;
छिनमें न छूटे कौप काहे एक कारनतें,
तौ पारि विरोधीके विकारेकों नहीं धरै;
देवीदास बडेनिकै कोपके फलकी बेर,
छोडिके विकार बैरीहूको सुखसों भरे;
बडेनिकी वै रुखकी बोलनि गरमरीसु,
नीचनिके नेहको बराबरी तऊ करै.

८

भारंभव जाहि बहु योगनिसों येरु होइ,
दुसरो करंत जाहि धर्म न्है रहे नहीं,
कहत कहत जाहि उपजें फलैस बहु,
फल एसों लागें जासों पेटह भरे नहीं,
अति छोटो काम जैसो कुलमें कीयो न होइ,
अतिहि दुरंत जाको पुरोही परे नहीं,
देवीदास जामें लाभ स्वरच बराबरिहि,
बुद्धिवान न्हैकें ऐसो कारज करे नहि

९

कूत्रम कुरूप करतार मोरें कदरज,
औजसके भाजन रु नाय्ती तहालैं हे,
आवत गुनीही देखी करे परि जाहि सारे,
जोरे नहीं डीठि तिनकों तो कबि कालो हे,
उजरे उदार जिनें पाचनमें बैठनो हे,
जिसके निकेत और रसकौ रमालो हे,
रीमें बार बार मने मेरुकों तिनका गने,
देवीदास बेतौ कबि तिनको मसालो है
होले नहीं धने घर बने सारदाके घर,

१०

बाहनि सुघर स्वाह डारत उदारमें,
पहिले बहाइ देइ पीछे कल्लु छेइ फिरि,
जसका प्रकासैं तिहौ राखी करि हारमें,
पुराचीन पापनिर्ते सुमस ल्वारनिर्म,
जाइ परे करैं कहा मूजे मना भारमें,
देवीदास मेइ द्वे बिकानै कविराजनिके,
आयु घरबारमें के राजदरबारमें

११

पैटकौ निपट सिंधु आखिनिनि आलजीछौ,
उरकौ गभीरु होइ महा मीठो मुखकौ,
गवांइकौ पगारु पुनि याइकौ आदिगु होइ,
चौलनिकौ साचो देवीदास सूघे रुखकौ,
मनको उदार दीलो हाथुकौ अफेठी एक,
काधहीकौ गाँठो हे सहीया दु ख सुख की,

पचिकें पितामहिने एसो कौ सिगार्यौ तव,
यातें कछु ओरुहू सिंगारु है पुरुषकौ.

१२

सुंदर सुघर मृदु आखर मधुरतर,
मनोहर मोदकर गुनसों समेति हैं,
काहू कविराजकी आवाज हैं अमृतरूप,
जामे भारी भारती कलोल मोल लेति हैं;
ताहि सुन कर कहें हों तों मृदु समज्यो न,
निज दोष और मह देवकों सचेति हैं;
देवीदास जैसें ढीली चोली देखी सूकी नारी,—
हीकों तों न खौजे दरजीहि दोष देति हैं.

१३

(सवैया.)

बाहिर औरहि भीतर औरहि, वापकौ पूत न पूत है माकौ,
भीर परे नहि कोडिके कामको, अच्छर एक पढ्यौ जिहि ना कौ;
आस करी तें निरास भये देवी, नेक कर्यो निकस्यो तव आंको,
ठाकूर तीकूर जानत है, यह ठाकूर तौ निकस्यो मल माकौ.

१

(प्रकीर्ण प्रबोध.)

लौभ सौ न औगुन पिमुनता सौ पातक न,
सांच सौ न पुन्य नांहि ईरषा सौ दहनौ;
सुचि सौ न तीर्थ सुजनता सौ सेवक न,
चाह सौ न रोगी तीन लोकमेंहें कहनौ;
धरम सौ सीत न दुरित जीव घातक सौ,
काम सौ प्रबल नांहि दत्त बु सौ लहनौ,
चिता सौ न साल देवीदास तीनो लोक कहै,
संतोष सौ सुख नांहि कीरति सौ गहनौ.
पचे नहि भात दारि मूगहूँकी पचै नांहि,
पचै नहि मीसी रोटी पेट अहटाति है;
लवाके परे दूधहूसौ फूलि आवें पलकमें,
फुलका फलौरा पचें नांहि यह भाति है,
कढीहूके चाटे दौदि बढी है नदी समान,
देवीदास एको पिल उदर न माहि है;

१

- एसें मद भूख मांस वेह राखिबैको एक,
प्रमुकी कृपाते भारी रीस पचि जाति है २
दाबिले वफार पांच, पांच पुनि चूके मति,
छोडिदे चफार चारि चारिनिमे बसीयै,
छोटे मति कै वफार, छोडिदे वफार सात,
तीनिमें हिलिमिलि अतिही न गसीयै,
हहा चारि पगिहरि तीनि हहा मानिले तूं,
भूलिउ मफार मांस कबहु न रसीयै,
देवीदास कीजै है उफार लै भकार तीनि,
एकही नफार मांस सारो गुनु नसीयै ३
भागु बाको बापु कर तूती महतारी मिलि,
बेटी मह ताकौ नासु जगमै बहाइ है,
पारी गुनी घारवनि, बुधि दूष पीपु देके,
दिन दिन बढी देवीदास मुखदाइ है,
व्याहकौ बिचारु करि घडेनिके देन गये,
बडे निके मन कह नेकहू न आइ है,
छोटे बाहि जानै तिने घडे न कबुल करै,
याते जग महि यह ब्यारी एक बाइ है ४
सपति गहिये छोटी रसोइ चदिये छोटी,
सुदरी भेटिये छोटी मुपनौ सौ कै गयी,
बूढे पितु मात छोडे भाइ बिल्ल्यात छोडे,
बेटा बिल्ल्यात छोडे आपु निउपै गयी,
ठडे दासी दास छोडे घोरा खात घास छोडे,
यार आस पास छोडे सबै दु ख दै गयी,
देवीदास आपनै ल्यो न कौक एकौ साथ,
देखौ बह आपने कीयेहि साथ ले गयो ५
उरग मुरग हैके तुरंग कुरग हैके,
कोल अजगर हैके धिर जग माइमें,
नाह रु ल्युर हैके न्यारे गीघ फीर हैके,
नीरचर हैके नीठि नर जोनि पाइमें,

ताहू मांझ मुघ है सुबुद्धि सभासद हैके,
समझको इद हैके सवै सरसाइमें;
एक चिंतामनिके चरन चित लग्यो नांहि,
देवीदास यहै बडी चूक चतुराइमें.

६

के तो देह पाइ धरे धरमके ऐसे पाइ,
आसन छिडाइ लेहि जातें पुरुहूतको;
कै तो करि उदिम अपार धन जोरि कोटि,
धूजी तूं कहाइ काम कर ले सपूतको;
कै तो मन कामना असेष मुख भोगवैकें,
मुकतिकों मिलों जहा मूल पाच भूतको,
इनमेंते एकहू न वनें तो जनम पाइ,
छेरीके गरको थान दूधको न मृतको.

७

दाताकी उदारताई सूमकी कृपनताई,
क्रोधकी तपनताई कहें कौ बखानि हैं;
मागनकी हलुकाई गुनकी सुगमताई,
घोराकी तताइ ताहि कैसें उर आनि हैं;
मीत मीले सीतलता मानकी रुखाई और,
बोलकी मिठाइ देवीदास मुखदानि हैं;
कुचकी कठोरताई अधरकी मिष्टताई,
सुकविकी सरसाइ जानि हैं सुजानि हैं.
सांचकौ सरमको सरन आये पालककौ,
सरधाकौ धरमकौ औरांजमु चाल है;
सूरनिकौ सीलनिकौ औरु दान पुनिनिकौ,
जननिकौ दयाकौ संतोषही निहाल है;
राजकौ रु तेजकौ भलाइको मिताइको रु,
भक्तिभाव भावनाकौ पति लीन वाल है;
देवीदास कहै देस हेत दीप दीप देखौ,
आज कलिकाल मांझ इनिकौ दुकाल है.
पंडित गुसांइ साऊ साहेब समर सूर,
सिरदार नीकी लोक लोकमें कढाइ है;

८

९

राजा राउ उमराठ राहजादे साहिजादे,
देसपति महिपति दौलति बढाइ है,
धनधारै पूतवारै सुदरी सजूतवारै,
जिनि जाइ सागर लें कीरति पढाइ है,
देवीदाम येतो सब दुखहि के भाजन है,
ऊपर सुखकी नेंक कलह चढाइ है

१०

जो तू याही लौककी फिकरि करै तौ तू सुनि,
झाकी चिंता चित ताहि तनकौ न धरनी,
पाछिलै करम तेरे तिनिहि बनाइ राखि,
सोई तोहि इहा आवै भोगवनी भरनी,
पूछि वेद चारि देखि मनमें बिचारि अब,
आवे सु कबूल करि नाहि क्यौहु टरनी,
देवीदास जानि कहै यह पुरुषारथ है,
मानिसहि चिंता परलोकहि कि करनी

११

देवेते दरद नाहि दया नाहि मनमाहि,
नाना भाति तरुनको तूंहितों सिंगार ह,
तूहि चिंतामनि और तूहि हे कलपतरु,
और कौन पेसो तीन लोकम उदार हैं,
गराजि गरब सार्यों औरतें लरजि पूरि,
धारनि सु धरनी कह न धारुपार हें,
देवीदास कहें धन्य परजन्य देव जग,
जाइबेगो भेरे जान तेरे सिर भार हें

१२

करतार मारे जग आइके जनमहारि,
कौरनि परे हें धिक् उनिके समाजकौ,
पीर न पराइ एक स्वारथ पराइ न ह,
पेटहीके चेरे जे गुमार्यों धीज लाजकौ,
एसो कोन बिरलो विरिचिने बनायो है जु,
पेटहु पराए काज छेतु नारि राजकौ,
आपने उदर काजें पीबे बढनागि जोइ,
सोइ पानी पीबिस पयोद परकाजकौ

१३

(खल-सज्जन भेद.)

लाजकेसों जड कहे व्रतिकों कपटि कहे,
 सुचिमुं कहत यहि जैसों दभ लीनो हें,
 मुरसो निदुर कहे मतीहीन द्यमावत,
 कहें असमर्थ यह कैसो भय भीनो हें,
 आपनेतो टेटराको देख्यो अनदेख्यो करै,
 ओरनके फूल्यको प्रकास करि दीनो हें,
 देवीदास कहैं ऐसो कौन हें जु इनि मृद,
 दुर्जन जनन करि अंकित न कीनो हें. १
 दावानल दारिदकी देह मांहे दौ लगे जां,
 सोऊ तो संतोष वारि लेके सियगदये;
 आपने अदृष्ट पर हाथ डारि बैठि रहें,
 बाहि जाचि जाचि कौंड काहेंको सताइयें,
 होई जब सज्जन समीप आइ बैठे लोग.
 अतिथि निराग मागनोउ फिर जाइयें,
 तिनिकों धिक्कार मुनैं काननिमें दौ लगे मु.
 देवीदास कहैं कहो काहेसों बुझाइये. २

पानीतें कमल भयो तातें कमलासनस,
 कमलासनतें जग हें तुहि दिखाइको,
 तीन लोक लोकनाथ विश्वभर महत् विज,
 ताकों मूल पानी जीव जातिके सहाइको
 तासों बडो हे कें कोउ ऐसो काम करे ऐसो,
 काहें झख मारें लहें पीर न पराइको,
 जालमें बंधाइ सरनागतिनि जात भयो,
 धिक तोय तोकों तेरी इतनी बडाइको. ३
 बहिरेके आगे वीन वजाइवों एक ओर.
 आंधरेकु आरसी दिखाइवौ किने करौ;
 ऊसरमें चारि मास वरसिवो करौ क्यों न,
 स्वान पूछि सूति कै सुधारि सुधीके धरौ;
 मूरखके आगे ऐसे गुनकों प्रकासि बांदि,
 राचि रचिके बनाउ पचिय चिकें मरौ;

देवी यों कबुल है जु पाळे हूँ तो परो परो,
 मूरखके पाळे परि कचहूँ जिने परों
 भारत गुमान करें दारीदी नै घैसे घरे,
 मुग्धी ओरें अनुसरें पसे मूढ़ और हैं,
 पानी नै प्रपच राचें संसारी गिनें न पाचे,
 राजा नै वृषनवाकें सूम सिर मोर हैं,
 गनिका बुरूप धनुवान नै फकीरी घर,
 बाधिके सिधित भयो राति दिन जाँग हैं,
 जगमें जो बसीयों तो हसीयों न कोउ देवी,
 हस्योह जो चाहोतो ये हसिबेको ठोर हैं
 बार बार मोहोत जतन कीय बाहुहमें,
 पीलेतें परम कष्टें तेल पुनि पावेगो,
 काहु एक काल करि कोउ एक केहू फेर,
 मरुकी मरीचिकामें प्यासहि बुझावेगो,
 पुहुंभी पहार परि पुरन पर्यटनैं,
 कदाचित सोधिके ससाफो मिग लवेगो,
 देवीदास कहें ऐसो तीन लोग कोहें नहि,
 केहूँ किहूँ भाति करि मूर्ख समझावेगो
 तजे राजनीतें करे गाजत अनीतें औरें,
 मागत अनीतें घरुनीते जीतवाये है,
 मांगने बुलावे नाहि मांगने बुलावें अरु,
 भागने खुलावे खाइ तेई मन भाये है,
 रीझत नों रिझाए मुरझायें मुहुस्ति ऊठै,
 जानत न दाए देवी जानतपै दाये हैं,
 राजा राइ राने गुन गानें तौ न मानें मागे,
 सय तेज मानें अब ते जमाने आए है

(विधि-भाग्य-संतोष)

जो कछु विधिने लिख्यो करिके लिखाट पाट,
 ताहि परि आपनो अमल आप करिछें,
 सौनैके सुमेरु भावे मारुबार माहि जानि,
 घटै बँठै नाहि यह निहचैमे धरिछे,

देवीदास कहे जोइ होनहार सोइ न्है हे,
 मनमें संतोष रेन दिन अनुसरिले;
 वापी सर सरिता भरे हे सात सागरपें,
 तूं तो तेरे वासन समान पानि भरिले. १
 कौन दिन कमल बुलावतु है भोरनको,
 रूखन पंखेरु निकौ वे जु मंड रात है;
 सारस बुलाए कबु कहोघों सरोवरने,
 सरितानि छाडिये जु उहोइ समात है;
 चंद्रमाकी प्रीति कबु आइहि चकोरनिकौ,
 घनके बुलाये विन चातक चिचात है;
 देवीदास कहै लौ सुकवि गुनी लोग ये तौ,
 उनी मोह जाहि कछु देखे तांहि जात है. २

देवीसहाय.

(शिव-काशी माहात्म्य.)

शिव कहो शंभु कहो, शिवपति ईश कहो,
 गौरीनाथ शंकरको सुमिरत रहू रे;
 हर कहो शूली कहो, मनमें महेश कहो,
 काशीविश्वनाथ कहो केते सुख लहू रे;
 गिरिको विहारी कहो, गंगा शिशधारी कहो,
 विषको अहारी कहो, यही गाढे गहू रे;
 काशीजीको वासी कहो, सुखको निवासी कहो,
 तीनो ताप नासी जाविनाशी क्यों न कहू रे. १
 एरे मतिमंद क्यों न त्यागि द्वंद फंद सबै,
 सेवत स्वच्छंद है अनंदकी सु राशी है;
 काटै मोह फांस औ छुटावै यमत्रासहूते,
 सुखको निवास करै ज्ञानकी प्रकाशी है;
 महिमा महेश कहि पावै ना हिरण्यगर्भ,
 अघ ओघ नाशी बसै यामै अविनाशी है;
 अर्थ धर्म काम मोक्ष चारौको विकाशी यह,
 कलिमें सुकामनाकी कामधेनु काशी है. २

द्विजराम.

(स्वाद, प्रण, दोष ६)

यशको सवाद जोपें मुनौ कवि आननसा,
 रसको सवाद जोपें औरकों पिवाइये,
 जीमको सवाद घूरो बोलिये न काहू कहूँ,
 देहको सवाद जो निरोग देह पाइये,
 घरको सवाद घरनीके मन डिये रहे,
 धनको सवाद शीश नीचेको नमाइये,
 कहे द्विजराम नर जानिके अज्ञान होत,
 खैचेको सवाद जोपें औरकों स्वाइये १
 कचनमें यही दोष बासना न धरी जामें,
 फत्तुरीमें यही दोष रगहू न पाइयो,
 रामहीमें यही दोष मृगको शिकार कीनो,
 रावनमें यही दोष सीता हर लाइयो,
 इद्रहीमें यही दोष गौतम घर गौन कीनौ,
 अहल्यामें यही दोष चद्रमा बुलाइयो,
 कहत कवि द्विजराम बिना दोष फोक नहिं,
 एक एक दोष प्रभु सभमें लगाइयो २
 डारि नील अंबर पीतंबर पहारि लाछ,
 कछनी कछनि सीस मुकुट धरति हे,
 चदन चटाइ वनमाल उर लाइ हसि,
 बामुरी बजाइ धाइ गाइमें परति हे,
 कबहूक सुबल श्रीदाम नाम ले ले टेरे,
 कहे द्विजराम आठो जाम यो भरति हे,
 बिहरति बाबरी छै बिरह निकल बाल,
 न फल परति यातें नकल करति हे ३

धनीराम.

(विधिदोष-कविगोरव.)

अनल शिखामें करी धूम मलिनाइ तैसे,
 आवरन कारको विमल वारी बटमें;
 कोमल कमलनाल कटक निहारो कीनो,
 जलनिधि खारो सो तिहारो भुमि तटमें;
 वैन मुने जगत कुबोली छहरैहे धनी,—
 राम कोऊ काहूको न जानी शके मरमें;
 बंक विधि बुद्धिको निशंक कहियत कान्ह,
 पक कीने सरनि कटक मुधाधरमें.

१

सगनके भाले उर कटत हे साले सदा,
 औधि जिन पाले जे न ओटचोट चीन्है है;
 रगनके वान छूटे आनन कमान प्रान,
 वातक जगत जमदाढ बाढ कीने है;
 धनीराम तगनकी तीखी तरवार जिने,
 लीने फिरे देश देश निधरक कीने है;
 मनमे विचारी मूम शत्रुनके मारिवेको,
 कालिमोहि गुप्त हथियार चार दीने है

२

द्रोण.

(हास्यरस-सचैया.)

शीशके भूषण भूमि परे, कटि सातकी वीरके वानके मोरे,
 द्रोण कहे हंसिके कुरुराज जू, आय भले कर मुंड उधारे,
 बीजको बोवत पूत दुशासन, जान्यो नाहिं फल लागि हे खारे,
 जो प्रिय होइसो जाहिर कीजिये, पाग मंगावेकि चूनरी प्यारे १
 द्रोण कहे भ्रुकुटि वरि बंक, भये सुत कायर मंगल गावे,
 राज सभा बिच नाहररूप रु, काम परे पर स्यार कहावे,
 क्यों तुमसें नृप सूत दुशासन, गाल बजाय के वीरता पावे,
 सत्यकितें वचे जन्म नयो भयो, सूप बजावे कि थाल बजावे. २

धर्मधुरंधर.

(भाग-भाग)

खानेको भग नहानेको गग, चढेको तुरंग ओढेको दुसाला,
धर्मधुरंधर औ महिषी, पतिदार झुले गजयूथक हावा,
पान पुरान सोहागिनि मुदरि, गोद बिराजत मुदर घाला,
दो मंह दीजियै एक दयानिधि त्रो, मृगनैनी कि दो मृगधाला १

धर्मसिंह.

(गागरोक्ति.)

खोदि कुदाल चढाइके रासभ, छे पुटकी छटकी जलधारे,
छातन मारके चाक चढायके, डोरिकी फांसि दे देह उतारे,
मारि टिपेज जराय हे आगिमै, तोमि लुगाइन टाकर मारे,
यों ध्रमसी सिगरी गगरी कहे, कोउ न पारकी पीर बिचारे १

धुरंधर.

(प्रेम पीढा)

लगनि लगाय बिन कपटी क्षीपक जैसो,
यारे करि डारत जले पतग देहते,
छोडि छहो रितुके बिछास आश बाहिकी सु,
नेकह न टारत पपीहा मन मेहते,
मुफनि धुरंधर नकोर नित चढके सु,
रहे वनबासी नै उदासी ज्ञाति मेहते,
प्रेमिनकी वशा प्रेमवतही जु जान नै ह,
जेतो होत दु ख तेतो मुख न सनेहते १

ध्रुवदास.

(राधिका छवि)

रूप रसीली हसीली छबीली, रगीली रंगीलेके प्राणते प्यारी,
सालें सुरंग सु नेन विगलनि, शोभित अजन रेख अन्यारी,
महा मृदु मोल्नी मोसिकी डोल्नी, मोल छये ध्रुव कुंजविहारी,
रहें मुख पायन और सुहाय, मये बस नेहकै देह विसारी १

राधिका बल्लभ लालकी प्यारी, सखीनुके प्राण महा सुकुमारी,
 रूपकि बेलि फली फल फूल, मनोज उरोज भरे रस भारी;
 पत्र लावन्त्य हरे भरे रंग रु, जोवन मौजनियां निप न्यारी,
 प्रीतम नेनन चेन तरु तिहि देखतही ध्रुव बाढे तृपारी. २
 भिंजी नवेलि चमेलि फुलेलसों, फूलनके पट भूपन सोहै,
 लोइन वंक विशाद सचिकन, अंजनकी छवि प्राणनि मोहै;
 रूप तरंगनि पानिप अंगनि, प्यारि सखी ललितादिक जो है,
 भूलि रही ध्रुव तौ छवि श्री अरु, मोहनी मेनकी नारिधों को है. ३

(कवित्त.)

सोनेतें सुरंग गोरी सौधेतें सुवास अति,
 मृदुताइ पर वारों जेतक सुमनरी;
 रूपहीको रूप जगमगत सकल वन,
 आरसीको आरसी लगत ऐसौ तरी;
 फैलि रही छवि प्रभा जहांलें विराजे सभा,
 हित ध्रुव चिते लाल भये है मगनरी;
 प्राणनकी प्राण मेरी नैननकी नैन राधा,
 रीझि रीझि वार वार कहे छै चरनही. १

रूपकीसी फूलवारी फूलि रही सुकुमारी,
 अंग अंगना नारंग नवल निहारहीं;
 नैन कर कमल अधर हे बंधूक मानों,
 दसन डलक पर कुंद वारि डारहीं;
 बैदी लाल हैं गुलाल नासिक सुवर्ण फूल,
 मोती बने जहां जहां जुहीसी विचारहीं,
 छविहीके खंजन रसाल नेन प्रीतमके,
 खेले तहां ध्रुव चितें सखी प्राण वारही. २

अलबेली चितवनि मुसकनि अलबेली,
 अलबेली चलनि ललन मन हर्यो है;
 वृंदावन मंही सब भई छवि मई आली,
 पग पग परमानों रूप डरि पर्यो है,
 कनक बरन भये पत्र फल दुमनके,
 आभा तन रही छाया कुंदनसो ठर्यो है;

हित धुव पेसी भाति डलफत सनफांति,
 चितवत पिय चित नैकहु न टर्या है ३
 चडे चडे ऊजल सुरंग अनियारे नेना,
 अजनकी रेख हरे हियरो सिरात है,
 चपटाई मजनकी अरुनाई फजनकी,
 उजरई मोतनकी पानि पल जात है,
 सरस सलज नचे रहत है प्रेम रचे,
 चचटन मंचटमें कैसेहु समात है,
 हित धुव चितवनि छटा जेहि कोद परे,
 तेही पार वरपासी रूपकी नै जात है ४
 मुग्ग कसुभी मारी पेहे रंगीली प्यारी,
 आली अलबेटी घने रग माहि ठाढ़ी है,
 केसरी मुग्ग भीनी सोंघे सगवगी फीनी,
 सोहे उर अगिया कसनि अति गाढ़ी है,
 फैली रही अरुनाई तैसी धुव तरुनाई,
 मानो अनुगाग रूपमें झफोरि काढ़ी है,
 चदन डलफ पर परी है अलक आय,
 देख पिय नेन निट लक अति वानी है ५
 कचनके वग्न चरन भृदु प्यारीजूके,
 जावक मुग्ग रग मनहि हरत है,
 हित धुव गही कवि मुमि जे हरि छवि,
 नूपुर रतन खचे त्रीपसें वरत है,
 रीझि रीझि मुठर कहन पर पदु घरे,
 आरसीसी लिय छाट नेम्बिबो करत है,
 नख मनि प्रभा प्रतिबिम्ब डलमलै आय,
 चदनके जूथ मानों पाइन परत है ६
 रूपवन प्यारी तन मही है जोवन तहा,
 सहज हरित ताई पानिप अनंगरी,
 दसन डलफ हरे छविके सुरंग फूल,
 मेन मुख फट मानों उरज उतगरी,

अंग अंग माधुरी श्रवत मकरंद मानों,
 भुज रस वेलि नख पल्लव सुरंगरी;
 हित ध्रुव तिहि मधि राजे नाभि सरवर,
 क्रीडे तहां पिय मन मदको मतंगरी. ७
 अलबेली सुकुमारी नैननके आगें रहे,
 तव लग प्रीतमके प्रान रहे तनमें;
 यह जानी जिय प्यारी रंचको न होत न्यारी,
 तिनेहीके प्रेमरंग रंग रही मनमें;
 परम प्रवीन गोरी हावभावमें किसोरी,
 नये नये छबीके तरंग उठे छनमें;
 हित ध्रुव प्रीतमके नेन मीन रस लीन,
 खेलिवो करत दिनप्रति रूप बनमें. ८

नथुराम.

(शिवस्तुति-छप्पय.)

अंबक तीन विशाल, भाल मधि रह्यो हिमंकर;
 देवधुनी शिर बहे, कण्ठ बिष महा भयंकर;
 मुण्डमाल गल धरी, भव्य वपु है भस्मी भर;
 वाम अंग नगसुता, बहुत लपटाये विषधर,
 वाघम्वर गजचर्म अरु, त्रिशूल डाक डमरू धरे,
 नथुराम घोर धुनि भेरकै, गन सब हर हर हर करे. १
 इते हिमंकर भाल, उते अच्छत शुभ चर्चिय;
 इते सु अंबक रक्त, उते बिन्दी अरुन रचिय;
 इते हलाहल कण्ठ, उते मृगमद सुशोभित;
 इते जटामधि गङ्ग, उते मुकता मनलोभित;
 वाघम्वर गजचर्म इत, उत नीलाम्वर तन धरे,
 यह छबिसो नथुराम नित, साम्ब शिवा मो मन ठरे. २
 इते सुपन्नग पान, उते भूखन नग धरिय,
 इते सुवाहन बेल, उते स्वारी हरि करिय;

जटाजूट है इते, उते है बेनी उरग सम,
 इते सुताण्डव नृत्य, उते शुभ लास्य अनूपन,
 इते सुगाजा भग है, उते आसव प्याले भरे,
 यह छविसों नधुराम नित, साम्ब शिवा मो मन ठरे ३

कवि-भक्तिभाव

शीत रु मद सुगन्धी समीर, रहे परसे तनको मुद आकर,
 शम्भके शब्द अती गहरे, छहरे गिरिकदरते रहे धाकर,
 ल्यों नधुराम सु ध्यानकी धुनि, आपके छाय रहे श्रुति उत्तर,
 हे शिव हे शिव हे शिव यों मनी, काल व्यतीत करु कब में घर १
 धाय घसों नगके पगमें, सु सरीनके तीर तमालनके तर,
 स्वच्छ शिलापर बेठि अहोनिश, ध्यान घरुं मृगसायनकुं घर,
 ल्यों नधुराम सुकुम्भक पूरक, रेचककी गतिको नित आदर,
 हे शिव हे शिव हे शिव यों मनी, काल व्यतीत करु कब में घर २
 कुडलीनीकुं जगावु जवे, परिपूरन भक्षिक कुभककुं कर,
 पूर्ण पीलावु पीयूष तिन्हे, भक्षरघन भेज अनद ऊरे घर,
 ल्यों नधुराम मिलो खट देवन, पंथ सुशुभमणको शुभ पाकर,
 हे शिव हे शिव हे शिव यों मनी, काल व्यतीत करु कब में घर ३
 धारुं सिधासन स्वच्छ बनी, सब व्रष्टि विकारन दोष दुरें घर,
 रुंधन प्रानहुको करुं पूर्ण, अपाननकी गतिको सुफिरा कर,
 भेटु जवे खट चक्रनको, नधुराम सुतेजमें तेज मिलाकर,
 हे शिव हे शिव हे शिव यों मनी, काल व्यतीत करु कब में घर ४

नरहर

(अकथरशाहको अरज-कुडलिया)
 नरहर घरहर फों फरे, जननि सुतहिं विष देय,
 बार जो खेतहिं हठ चरें, साह परघन लेय,
 साह परघन लेय, नाव करिया गहि भोरें,
 जे पाहरु से चोर, प्रीत प्रीतम हठि तोरे,

नृपति प्रजहि दुःख देय, कौन समरथ कर घर हर,
छितिपाति अकबरशाह, सुनौ विनती कर नरहर.

१

गो प्रार्थना.

(छप्पय.)

अरिहु दंत तृण धरे, ताहि मारत न सबल कोइ,
हम संतत तृण चरे, वचन उच्चरहि दीन होइ,
अमृत पय नित खवहिं, बच्छ महि थंभन जावे,
हिंदुहि मधुर न देहि, कटुक तुरकहि न पियावे;
कहत नरहरि अकबर सुनो, विनवत गड जोरे करन,
अपराध कोन मोहि मारियत, मुयहु चाम सेवइ चरन.

१

(परमात्माका आधार-छप्पय.)

भूमि परत अवतरत, करत बालक विनोद रस,
पुनि जोवन मदमत्त, तत्व इंद्रि अनंग वस;
विषय हेतु जड फिरत, बहुरि पहुच्यो वृद्धापन,
गयौ जन्म गुन गनत, अंत कछु भयो न आपन,
थिर रहत न कोऊ नरपाति, एक रहत जुग च्यार जस,
(सोई) अजर अमर नरहर निरखि, जपत भक्ति भगवंत रस.

१

न कछु क्रिया विन विप्र, न कछु कायर जिय छत्री,
न कछु नीति विन नृपति, न कछु अछ्यर विन मंत्री.
न कछु वाम विन धाम, न कछु विन गथ गुरुवाइ.
न कछु कपटको हेत, न कछु सुख आपवडाई;
न कछु दान सन्मान विन, न कछु सुभोजन जास दिन,
जन सुनो सकल नरहर कहत, न कछु जन्म हरिभक्ति विन.

२

सर सर हंस न होत, वाज गजराज न दर दर,
तर तर सुफल न होत, नार पतिव्रता न घर घर,
तन तन सुमति न होत, मोति जल बूंद न घन घन,
फन फन मनि नहि होत, मलयज होत न वन वन,
रन रन शूर न होत है, जन जन होत न भक्ति हर,
नरहर कवि सुकवित्त किय, सर्व न होई एक सर.

३

(कवित्त.)

कोपे रखुनाथ जब धनुष चढायो हाथ,
दखन भुजासैं वाम, बोल्यो रोष भरकैं,

दाननमें माननमें भोजनर्म आगें होत,
गाढे रन धीच पीठ, देत अरी ढरकें,
दच्छन भनत ऐसैं, लच्छन न मेरे पास,
गुजहूकी घात जाय, पूछतहु हरसैं,
शकरकी आशिपसों, दशाननके दशों शीश,
एक घेर तोरुं के एक एक करकें

१

नरराय.

(विहारी दुहा प्रशस्ता)

मुनेतैं सरस लागे, पढेतैं हृदय जागे,
भवके तिमिर भागे, ऐसो वाको तत्र है,
जोगिनको जोग घटे, विजोगीको दिन कटे,
मोगी दिन रात रटे, मानो धीसो जत्र है,
पंडितको वे बिलास, मूरखको देत हास,
मानह मजीठ पास, अरथको अंत है,
कहे कवि नरराय, छिनह न छोव्यो जाय,
वेहरो विहारीको सिहारीको सो मैत्र है

१

नरसिंगदास भाणजी, कुतिआणा

(उपासना-अमृतचमि)

जय जय जगधर नटवर नगधर
नमत अमर बर तवपद कर धर
पदपर पदधर कर एक कट धर
नचत लछन सह करत रहस धर
भव अज गनपत रटत अमरपत
जगमह ढरकत रहत शरणतर
प्रणय रक्ष्य धर अमय अमय कर
नरहर मनस्वग तवपद मनसर

१

(प्रसन्नता-धनाक्षरी.)

राजा जब रीझे तब, देवें धन धाम गाम,
 श्रीमतके रीझबेतें, विपुल धन पावे है;
 बनीक जब रीझे तब, हसे और देवे ताल,
 योगीओंके रीझवे सों, मुक्तिद्वार जावे है;
 नारी जब रीझे तब, बुद्धि बल तेज हरे,
 कोविदकी करुना हो, तत्व सों अघावे है;
 नरसिंग नारायन, कृपा भव पार करे,
 कवि जब रीझे तब, सुज्जन जश गावे है.

१

(कवि अह वायस.)

कवियनकी बानीकों, चाहत चतुर नर,
 बानी सुन कौवनकी, काहेकों दुखात है;
 कवियनकी बानीमें, चाहिये बिचार अति;
 दग्ध वरन कुगन करत उत्पात है;
 तदपि न लेश क्लेश, मानत कोविद नृप,
 देत धन धाम गाम प्रेम सरसात है;
 कहो कौवा श्याम जासों आदर न पावत है,
 मृगमद रु कोकीलकी श्यामता विख्यात है.

१

कंज-कल-कोक-काग-कांचन-कपूर-काम,
 कोविद-कृपालु-कवि-कन्या मनात है;
 मानत-शकुन शुभ, सज्जन मिलाप जानि,
 बाल युवा वृद्ध सबें, मनमें हरखात है;
 श्राद्ध पाख कागनसों, तृप्त होत पितृदेव,
 काग द्विजराज सदा, रामयश गात है;
 बिनती सुन कवेकी, कहे नरसिंगदास,
 कवि कर्णप्रिय बानी, तेरी कर्ण खात है.

२

(उत्प्रेक्षा पादपूर्ति-सवैया.)

मंजन मंजु मनोहर अंगनिपें करिकै मुदमें मन छायो,
 अंबर धारि अनूपम बालसु भूषन भार विभाति बनायो;
 अंजन दे द्रग वेंनि गुही शिर भूषन यों उपमा वर पायो,
 दास नृसिंग कहे यह मानहु मेंडक जाय भुजंग दवायो.

१

एक समे हरि कौतुक हेत, सुमोहिनिरूप अनूप बनायो,
 त्यों कल गायन नाच मनोहर, फों करिके हर हिय लुभायो,
 काम बिकार बिहीन दिगबर के मन काम विमोह बढ़ायो, २
 दास नृसिंग कहे यह मानहु, मँढक जाय भुजग दबायो
 सुदर नारि सुसाज सिंगारनि, दीपति दिव्य सुभग सुहाये,
 रामि प्रमा मनि लाल छलाम सु, टीको जटीत महा धबि धाये,
 प्रेम पतीमन पूज बढ़ावन, भाल विमालनर्पेहि लगाये,
 यों मुखकी सुखमा भइ मानहु, चढकु देखके सूर छिपाये ३

(धनाक्षरो)

पढ़ि पढ़ि पढ़ित प्रविणहु भयो तो कहा,
 विनय बिबेकयुत जोपें ज्ञान आयो ना,
 सहस धनद सम धनिक भयो तो कहा,
 दान करी जोपें निज हाथ यश धायो ना,
 गरजि गरजि धनघोरनि किये तौ कहा,
 कहे नरसिंग नीर, चातक मुख नायो ना,
 अमलको पाय अमलदार भयो तो कहा,
 अमलकें अमलमें रंक अपनायो ना १

नरोत्तम

(श्रीकृष्ण, सुदामादि प्रसंग)

तं तो कही नीकी सुन बात हितहीकी यह,
 रीति मित्रईकी नित प्रीत सरसाइये,
 चित्तके मिलेते चित चाहिये परस्पर,
 मित्रके जो जेइये ता आपहू ज़िमाइये,
 वे है महाराज जोरि बैठत समाज भुप,
 तहां यह रूप जाय कहा सकुचाइये,
 दुख सुख सब दिन काटेही घनेगो भूल,
 विपति परेपे द्वार मित्रके न जाइये १
 लोचन कमल दुखमोचन तिलक भाल,
 श्रवणन कुंडल मुकुट धरे हाथ है,

ओढ़ पीत वसन गलेम वैजयंती माल,
 शंख चक्र गदा और पद्म लिये हाथ है;
 कहत नरोत्तम सदीपन गुरुके पास,
 तुमही कहत हम पढ़े एक साथ है;
 द्वारिकाके गये हरि दागिद हरंगे पिय,
 द्वारिकाके नाथ वे अनाथनके नाथ हैं.

२

दृष्टि चक चौधि गई देखत मुवर्गनमयी,
 एकतें सरस एक द्वारिकाके भौन है;
 पृथ्वी विन कौड काहसैं न करे बात जहां,
 देवतासे बैठे सब साधि साधि मौन हैं;
 देखत सुदामा धाय पुरजन गहे पाय,
 कृपा करी कहो कहां कीने विप्र गौन है;
 धीरज अधीरके हरन पर पीरनके,
 बताओ बलवीरके महल कहां कौन है.

३

झांडी अनुराग विराग मेरे कोन करे,
 कोन करे जाग कोन आत्मा सताई है;
 सु कवि नरोत्तम कहाइ हे जु दीनबंधु,
 सबकी बनाइ हे सो मेरी ओ बनाई है;
 देख्यो चतुराननन पेख्यो पंच आननन,
 लेख्यो जो पडाननन ताहिको बताईये;
 को कटे उपाधि पंच तत्वकी समाधि साधी,
 सहज समाधिमें जो आई हे तो आई है.

४

(सुदामास्वरूप इ.)

श्रीश पगा न जगा तनमें, प्रभु जाने को आहि वसै कदि ग्रामा,
 धोति फटीसी लटी दुपटी, अरु पांव उपायनहूकी न सामा;
 द्वार खडो द्विज दुर्बल देखि, रह्यो चकिसो वसुधा अभिरामा,
 दीनदयालुको पूछत नाम, बतावत आपनो नाम सुदामा १
 ऐसे विहाल विवायनसों भये कंटक जाल लगे पुनि जोये,
 हाय महा दुख पायो सखा, तुम आये इतेन किते दिन खोये;
 देखि सुदामाकि दीनदशा, करुणा करिके करुणानिधि रोये,
 पानि परातको हाथ छुयो नहि, नेननके जलसों पग धोये. २

आगे चना गुरु मातु दिये ते, लिये तुम चावि हमे नहि दीने,
 श्याम कही मुसकाय मुदामासों, चोरिकी बानिम हो जु प्रधीने,
 गांठरि फासमे चापि रहे तुम, खोएत नहि सुधारम भीने,
 पाछिछी बानि अजो न तजी तुम, वैसोहि भाभिके तंदुल फीने ३
 द्वारिका जाहुजु द्वारिका जाहुजु, आठहु याम यही सक तेरे,
 जो न कहा करिये तो बडो दुख, पैहो कहा अपनी गति हेरे,
 द्वार खंडे प्रभुके छडिया तंह, भुपति जान न पावत नेरे,
 पाच मुपारि तो देखु विचारिके, भेटको चारि न चाउर मेरे ४

नवनीत.

(प्रीति महिमा)

ढे दिउ ये दिखदारहिकों फिर, धे दिउ होय मने मन भाने,
 त्यों नवनीत वही उर प्यान, वही गुनगान वही तन प्राने,
 या बिन और न कोउ हितु जिहि, की चरचा कविराज बखाने,
 जाने कहा जग जाहिरसैं पर, प्रीतकी रीति रंगालोइ जाने १
 रीत यहै कुल कोविदकी मन, एक रहे नित निग्य प्रतीको,
 त्या नवनीत नई चित चाह, उचाट मनोरथ वेग नदीको,
 पाय वियोग बढे उर हेत, निकेत यहै जग जीवन जीको,
 मो मनमें परतीत यहै इक, प्रीति बिना सिगरो जग फीको २
 अब साधि वियोगकी घोर समाधि, अनाहद शब्द अनगसो है,
 नवनीत तहां हठके तट सुदर, मोह कुटी मृदु फासो है,
 शुचि यन्कल पेरे जवे हितके, गमकी गुदरी तन संगसो है,
 जिनके तन प्रीतको रंग चणो, फिर जोगको रग पतंगसो है ३
 फारे करारे ठरारे महा चहु, ओर ध्ये घन घूम घरारे,
 जोरे सबे बिरहीनके जीय, चढे तरु पीवही पीव पुकारे,
 न्यारे भये नवनीतसों हाय, रिसाय अजो उर लाय विचारे,
 प्यारे तिहारे निहारै बिना, दिन रेन चुचावत नैन हमारे ४
 लाग बुरी इन लोगनकी, मनके लगतें तन होत हैं दूरो,
 त्यों नवनीत नई चित चाह, अथाह सनेह चहूँ दिशि रूरो,

क्यों उठरेगो भरे घट ज्यों, झलके छिनकों नव नेह अधूरो,
चात खुले दरदीकी जवें, दरदीको मिले दरदी कोउ पूरो. ५

(प्रेमरग प्रभाव.)

प्रीत पंथ गहिवे सु लहियें संजोग सुख,
रावरे विजोग दुख पान भजिवो कहा;
नवनीत एक प्रान जीवन सुजानहीसों,
सुख सरसाय हाय फेर लजिवो कहा;
विदित जहान बदनामकी बजी तो भेरि,
हेरि दग देखतकों फेर बजिवो कहा;
यातो रंग काहूके न रगिये प्रवीन प्यारे,
रग तो रगेही रहे फेर तजिवो कहा. १

नागर

(नेह निरूपण.)

नागर वेद पुरान पढ्यो सव, वादके कीनी कह मति पागुरी,
गंग औ गोमती न्हात फिर्यो अति, सीतसैं प्रीतसों हाथ ले कांगुरी;
गल्लकी न्हाय गोदावरी न्हायो सु, त्यागि दे अन्न रु खावत सांगुरी,
औरहु न्हायो सु में न बदी जोपें, नेह नदीमें न दी पग आंगुरी. १

(नेह निभावन-प्रीतिरीति.)

गहिवो अकाश अरु लहिवो अथाह थाह,
अति विकराल काल व्यालही खिलाइवो;
शेल समशेर धार सहिवो प्रहार वान,
गज मृगराज ले हथेरिन टराइवो;
गिरितैं गिरन तन ज्वाल्में जरन पुनि,
काशीमें करौत तन हीममें गराइवो;
पीवो विष विषम कबूल कवि नागरपें,
कठिन कराल एक नेहको निवाहवो. १
रावरी ये अंखियां छुधित अव धीरी भई,
सीरी भई लगन दवागिनकी दाहवा;
आंचनि गलीमें नित नैनन मिलवन औ,
मंद मुसकावनकी किते गइ चाहवा;

नागर नधीननके कपट कलपवृक्ष,
 कृद्धार्षी दुराई प्यारे उमंग उमाहवा,
 पहिले प्रगट प्रीति फीनी तुम फानाफानी,
 दर्द अब आनाफानी बाह्याजी बाहवा

२

(प्रथमदर्शन नायकाच्छाया)

व्हे गयो अचानक उजास चन गहवरमें,
 घेरी आये पंथी मृग भूटै गौन गेहरी,
 छद्म गई सौरभ अघाय चलि अटिसैनी,
 नाच उठे मोर महा आनंद अछेहरी,
 आगमके होतही छतानमें निहारी फोरु,
 नागरि बरसि गई रूपकोसो मेहरी,
 कदा जानु को नहीं कदाते आई किते गई,
 घनसे घसन तामें दामिनीसी देहरी

१

(नारीवधम दानि)

कैकैके कहते उदगल अमंगल मो,
 दशरथ प्राण देके ऊर्ध्व छोकफों गयो,
 मधुरीके कहतें जु सर्वस गमायो शनि,
 ताको अपवाद सदा छोकनमें ब्हे गयो,
 जानकीके कहते गयो हे उठि देवरजु,
 भये बिन भामी दशकंध हरी छे गयो,
 नागर निपट कथा जगमें उजागर हे,
 नारिनके कहे कहो कौनको भलो भयो

१

(खटमल मच्छर)

हाथी फेरे धातीपर मुटगर रून्ते अग,
 केतक उपाय किये फोड एक लागे ना,
 याहुतें अधिक श्रम क्यों न करो दशकंध,
 अनुजके अतरतें निद्रा नेक भांगे ना,
 कहि आये नागर जे आपकाज महा काज,
 यातें काज कीजे उठि धीर जिय पांगे ना,
 वेग लेके आइयेजू खटमल खाटनतें,
 खटमल फाटे बिन कुमकर्ण जागे ना

१

सुनीही कहावत सो सांची कीनी मच्छरन,
छोटे इत खोटे महा दशन कराल है,
सूइनकी शिजहेकि विपके फुहारे परे,
किधौ ले एके वचको करे तन लाल है,
सुरनर नागर ये सवे नाक आये तन,
काटि काटि खाये भये निपट विहाल है,
विष्णु दुरे जलमांझ ब्रह्मा कौल नाल मधि
महादेव हरि मानो ओढि गजखाल है.

२

नाथ.

(जानकीहरन हानि.)

प्यारी नारी आनकी अनारी जन ठान चाहै,
आनकी है बताये कुठारी निरवानकी;
ये मति न दानकी है गतिहू अजानकी ह,
छोटी खोटी वानकी है लति पतितानकी;
जानकी कुचाल नाथ जानकी जवाल लये,
वह भक्ति ध्यानकी है शक्ति भगवानकी;
कहै तिय मेरी बात ज्ञानकी है ध्यानकी है,
जानकी न लये हौ निशानी घर जानकी.
गम खैहौ सारी बात नाम खैहौ निज घात,
पैहो केतौ उतपात सैहो निज हानकी,
लैहो नहि दड मोहि अष्ट सिद्धि नवो निद्धि,
देव पदहूते ना उछैहौ प्रनठानकी;
सकल गवैहौ चीज पछितैहौ करमीज,
नाथ ना कहैहौ खीज पैन पैज जानकी,
सबै सिंधुमें वहैहौ सारी हान लैहों फरे,
जान देहौ जानपै न जान देहौ जानकी.
पतिनी कहत यातु धान पतिनीकी बात,
पति पति राखौ लति छाडौ पतितानकी;
सानकी न बात जैहै अवसानकी सवैहै,
जान देहु अभिमान घात दुखखानकी:

१

२

मेरे अरमानकी पुजेये आस मुख रास,
नाथ ये निदानकी है बात तुष ध्यानकी,
मुगति ति दान की है उन्नति मुमान की है,
जानकी दिये बिना कुशल नाहि जानकी

३

(प्रिया कटाक्ष)

हरि जैसें भाटवारी हरि जैसें चाटवारी,
हरि जैसी चाटवारी हरिकी फटारी है,
हरि जैसें रंगवारी हरि जैसें अंगवारी,
हरि मुखवारी आसे हरि अनियारी है,
हरि सो खनफवारी हरि जैसें लंकवारी,
हरि सिर सारी तामें हरिही किनारी है,
कहे कवि नाथ ऐसी सरस त्रियाके सग,
नेह न किया तो यह जीन्गी अफारी है
चंद्रमुखी कहना नहिं कभी चुकहते ध्याम,
चदमें फलक मेरो मुख ना फलक है,

१

एक पक्ष मंद एक पक्षमें अमद शरी,
मेरे तुंहपै हमेश तेज निरशक है,
सागरकी छाया परै सागरके नंदहूपै,
मेरी रूप छाया सदा अग्नि अनक है,
कहे कवि नाथ कंध बदन हो देखे विन,
कहां श्रीराम अरु कहां पति एक है

२

कसें घरा धीर तन तावे पंचतीर होत,
ध्याकुल शरीर पीर अंतर मसोसेकी,
हों अति बिहाल अपसोसके भवर जाल,
कोऊ जनमाहि जिन करी प्रीति तोसेकी,
छोग कर ताळे देने हसत उताळे नाथ,
बायरेमों बात काहि कहियें रकोसेकी,
व्हेकें रसरशि गेसे मारियत व्यासी मोही,
पेरे ये विसासी तूई फांसी तें भरोसेकी

३

(सव्याधक धर्ममैत्रि-बोहा)

अप्युत अविनाशी अफल, अमल अनावि अनूप,
अलख अनीह अजर अमर, अर्च अगोचर रूप

१

आसन आश्रम आर्द्रता, आ मन्त्रोच आचार;	
आतिथेय आधीनता, आगमके आधार.	२
इष्टदेवने इष्ट इक्षि, इच्छु कहो इतिहास;	
इभ इव इष्टिन इति कर्हु, इतर रसादिहि नाम.	३
ईषत ईशहि ईश नदि, ईश्वरता पहिचान;	
ईश्वर ईश्वर ईशिये, ईषा ईष्टिहि जान.	४
उग उपाधि उचाटना, उद्देगहि उनगाद,	
उदय उगाह उदागता, उपकारहि उपपाद.	५
उत्तपना ऊधमपना, ऊंउपना अंतर,	
ऊंचकार ऊपर करी, ऊव ऊनपन मार.	६
ऊजुगुन ऊर्द्धहि ऊग्निये, ऊण ऊच्छहि सम मान;	
ऊषभंदव हतु हनु भजौ, ऊग्धेदहि धर ध्यान.	७
एकाकी एकाग्र मन, एक चित्त एकात,	
एक रूप एकाधिको, एक भक्ति एकान.	८
ऐचा ऐंची ऐंउपन, ऐसे ऐंगुन ऐंच,	
ऐय ऐन ऐक्ष्यैके, ऐतिके मन खैच.	९
ओढापन ओगाप नहि, ओखी चाल बहाव.	
ओघ अधनको ओगकर, ओजहि ओष बहाव.	१०
औशटपन औधी चरन, औचक औचट चोट;	
औसर चुकियो औ शुचि, ओढमपन तजि खोट.	११
अंत कर्हु अंतरपना, अंशी अंश न मार-	
अंजनकर अंगीकृतहि, अंधनको कर प्यार.	१२
कर कर्नी करतूत कलु, कपट कृद्धता काढ:	
कलिमल काल करालके, करता करहि कुचाट.	१३
खलहकी खोटी खरी, खोल न खलता खार;	
खनि खोदहु खेचड खुचड, खोनुहु खुन्स खभार.	१४
गुनि गुनि गुनि गनको गिरा, गूढाशय गुरुज्ञान;	
गहु गौरव गभीरता, गोविदा गुनगान.	१५
घनश्यामहि घेरहु घने, घोराडहि घिनघाल;	
घुलौ न वान घमडके, घिरे घात घडियाल.	१६

चहोरी चोरी चुलचुली, चुगली चचल चाल,	
चार चतुरता चेत चित, चिदानन्द चिरकाल	१७
छेद छाल छल छिद्रते, छुटत छानफे छेम,	
छारि छिछोरता छिलता, छजहु छमाफर नेम	१८
जुल वैघो जोरी जुआं, जगत जाल जजाल,	
जडता जाचकता जुद्धम, जलधी जियते टाल	१९
झगडा झूमट झूट झुल, झुझलपन झटफार,	
झांसा झुखन झपासपन, झघरामन झफझार	२०
टर् टेट टेढापना, टुथपना टुफ टार,	
टीप टाप टटा टुसुर, टरफनहु फटफार	२१
ठोंफ ठाफ ठट षट ठसफ, ठगी ठगनफा ठाव,	
ठसपन ठान ठिडोरपन, ठकुराईहि ठुफगाव	२२
ढिगि चोडहि चोडाहिबो, डांड डाडि चोडाह,	
डाचर डीचर डाफियो, डींग डिमडर दाह	२३
ढेला ढाली ढींग ढग, ढील ढाल ढच ढाह,	
ढाचा ढच रहि ढीटता, ढाहिहु ढाढहि चाह	२४
तरुनी तामस तुप्पता, तट्टा तरउ तरग,	
तगसीचो तटफाईबो, तज तेजी तम तुग	२५
थुफा थुकी थरथरी, थोधापन थिर फाम,	
थूरह थाल्यमे थरी, थामहु थिरता थान	२६
दीर्घमृतता दुष्टता, दुरित दर्प दुरनीति,	
दीह दोष दुख दुर्धचन, दहु दरिद्रता रीति	२७
घक्का घकी घक घकी, घौल घप्प घुमघाम,	
घमकी घोस्ना घूर्त्तता, घुरधानौ धिक घाम	२८
नदन दननी रजनयन, नवनाथनके नाथ,	
नवनित नित नयनीतते, नीति नियमके साथ	२९
पायनता परितोपता, परम पुरुषता पाव,	
परमारथ पर पुण्यमें, पूरण प्रेम पगाव	३०
फोड फाड फक्कडपना, फत्सव फसिबो टार,	
फद फरेव फसाद फनु, फूट फासफन फार	३१

बडी बडाई बडबडी, बोदापन बढ बात;	
बाद बिबाद बिभेदता, विषय विषम विषभात.	३२
भवपति भयभंजन भजे, भव भारा भजि जाय;	
भ्रम भडंग भुग्गापना, भोगहि भूरि भंवाय.	३३
मत्सर ममता मानपद, माया मोह महान;	
मति मुगरीते मर्दिके, मनको भेट मलान.	३४
यारी युवती यौवनहिं, यमयातनके यांग;	
यजन याद रघुनाथके, यह यश युक्ति संयोग.	३५
राम राम रटना रखौ, रोज रहै रस रास;	
रगर रोग रिस रुच्छता, रिच्चा रागहि नास.	३६
लुतरापन लुच्यापनहिं, लोभ लोलता लाग,	
लोलुपता लत लंठता, लल लीचडपन त्याग.	३७
विनय विराग विवेकता, वेद विहित व्यवहार.	
वृथा वाद व्यय व्यर्थही, विषय विशेषहि वार.	३८
शांत शीलता शूरता, शुचिता शौरभ खान,	
शंका शठता शिथिलता, शुभता शोषकशान.	३९
षट दर्शन षट कर्म षट, शास्त्रनको व्यवहार,	
षट मुख षट ऋतु षट विधी, पुज षोडश उपचार.	४०
सत्य सुसगति सभ्यता, सतपथ साधन सार,	
सदा सदय संतोषता, संशय सोच निसार	४१
हरि है हरखन हीयमें, हेरहु हेत सुहाय;	
हरिजनतेँ हित होत है, हम ता हठ हटकाय.	४२
क्षमा क्षांति है क्षीरसे, क्षोभ क्षुद्रता क्षार;	
क्षेम कहे क्षीरोदपति, क्षद क्षेदहिं क्षितिभार.	४३
त्रय मूर्तिक त्रैविध है, त्रिकालज्ञ त्रिदशेश,	
त्रोटक त्रासहि त्रिगुण है, त्रैवर्णिक त्रिपुरेश.	४४
ज्ञाता ज्ञानद ज्ञानमय, ज्ञानगम्य है ज्ञेय,	
ज्ञानात्मक ज्ञानीनके, ज्ञेश ज्ञापकाधेय.	४५
वर्णमत्रिका दोहरा, युत मनोहरा नीत;	
पदत सुनत गति मति लहत, नाथ साथ सुखरीत.	४६

(वरिष्ठ भयन)

फूस नहिं फास नहिं छप्परपै घास नहिं,
बड़े नहिं बास तहा सिंगुर सरा करै,
दिवार आर पार हैं सूरख लाख चार हैं,
फोटिन प्रमाण भूत भवन में फिरा करै,
मकरीके मेळ है बिछौती तहा रेल पेल,
गिरगिदके खेल देख जियरा डरा करै,
गोजर गिरो है सांप बिच्छु अरगो है जहा,
ऐसे मौन नाथ डेरा रुईके फड़ा करै

१

नायक.

(कलि कुटिलाह)

सुरताइ आघरेमें, ददताइ पाहनमें,
नारिका चनानि मध्य नैन रही हारमें,
धर्म रखो पोथिन बहाइ रही वृक्षनमें
बंध पढा पांतिनमें पानी रखो घाटमें,
याही कलिकालने विहाल कियो सब जग,
नायक सुकवि फेसी बनी है कुठाटमें,
रज रही पथन रजाई रही सीतकाल,
राई रही राइते रनाइ रही माटमें

१

निपटनिरजन.

(भक्ति-नीति-विशेष)

तुमनेही बीनी मन इद्रियकू चंचलता,
तुमनेही कही इन्है जीते सोइ बली है,
तुमनेही कही पुत्र दारा विन गति नाहि,
तुमनेही कही यही फदेहकी गली है,
तुमनेही कही माया त्यागकै विराग धरो,
तुमनेही कही माया सबसेही बली है,
निपटनिरजनी अवर कोई मालिक ना,
जाके आगे नाथ न्याय हम तुम बली है

१

वह मति कहां गई अब मति औरौ भई,
 ऐसी मति कीज्यो मति आपनी विगारोगे;
 सुधि कहां सोइ गई बुद्धि कहां बूडि गई,
 अब क्यों न भई सो तो नई बाट पारोगे;
 निपटनिरंजनी निहारिकें विचारि देखो,
 एकहि विचारी कहा दूसरी विगारोगे;
 तुमसों न उज्यारो (प्रभु) मोसो न पतित भारो,
 मोहि मति तारो वैकुण्ठको विगारोगे.

२

हांसीमें विवाद वसै विद्यामाहि वाद वसै,
 भोगमाहि रोग पुनि सेवामाहि दीनता;
 आदरमें मान वसै शुचिमें गिलान वसै,
 आननमें जान वसै रूपमांहि हीनता,
 योगमें अभोग औ संयोगमें वियोग वसै,
 पुन्यमांहि बंधन औ लोभमें अधीनता;
 निपट नवीन ये प्रवीननी सुवीन लीन,
 हरिजूसों प्रीति सबहीसों उदासीनता.

३

शिख्यो हे श्लोक औ कवित छंद नाद सवे,
 जोतिषकों शिखे मन रहत गरुरमें,
 शिख्यो सौदागरी वजाजी और रस रीति,
 शिख्यो लाख फेरन ज्यो बह्यो जात पूरमें,
 शिख्यो सब जंत्र मंत्र तंत्रनको शिखी लीने,
 पिंगल पुरान शिख्यो शीखि भयो सूरमें,
 शिख्यो नहि वातें घातें निपट शयानो भयो,
 बोलिबो न शिख्यो सवे शिख्यो गयो धूरमें
 गांठमें दामरी तो देखि देखि धन धाम,
 निश दिन आठौ जाम चिता चितकों दहै;
 जासों पहिचान तासों दुखको बखान कहे,
 सो तो दुख एक्के अनेकनके कहै;
 निपटनिरंजन कुटुंब भैया बंधु मित्त,
 संपतिके लोभ कोऊ भूलि न भुजा गहै;

४

झूठ मूठ कहि सब खातरकों जमा राखि,
जमा होय घरमें तो खातरजमा रहै
(देख स्वरूप)

५

है जगमूत आ आपहू मूत है, मूतहीके सग मूतन डागा,
सेजमें मूत खटोलीमें मूत है, मूतके सगमें मूतही जागा,
एक अमूत निपटनिरंजन, मूतके वासमें मूतही पागा,
तातको मूत औ मातको मूत, औ नारिको मूत छै चुवन डागा १
जागत है किन सोइयो लोक, जु सोवत है जग योवन सोई,
आप निहारि बिसारिके आपुस, आप बिसारी न सोवन सोई,
सो निपटा निरभजन जैसे को, तैसो हुआ नहि होवन सोई,
काहेको रोवत है बिन काज, सो तेरो स्वरूप न रोवन सोई २
आप नहायष याहि नहावत, पाहन तो बदनाम बिचारौ,
फूलकं छैन जु वास छई, वसुंछ तो घाटहिको बटपारौ,
घट बजाय अगूठो दिखाय सु, साय गयो निपटा रस सागै
सेव करी पर भेव न जानत, देखतें दीरघ पूजनहारौ ३
ऊंटकी पुछसों ऊट बघ्यो इमि, ऊटनकेसी कतार चली है,
कौन चलाइ कहाको चली चलि, जैहें तहा कछु पूर फली है,
ये सिगरे मत ताकी यह गति, गावको नाव न कौन गली है,
ज्ञान बिना निपटा निरभजन, जीव न जाने बुरी के भली है ४

नीलकण्ठ

(परस्त्रीसग निषेध)

कीन्हें बस लोक तीन राखन प्रतापी ऐसैं,
भयो नाश ताको जब कीन्हो हर्न सियाको,
अमिसुख परे सब कीचक पचालीनसों,
रख्यो नहि रंच रस जस उप पियाको,
इंद चव भये मद भागी अहल्यासैं मानो,
हर्ष जु गुमायो पछिताइ निज हियाको,
कहे नीलकण्ठ जाको ऐसो फल पाइवेको,
सोई रस जानि सग करे परकियाको

१

परकीय रसवस भयो कर्न धेलो तवें,
 गुर्जरमें यवन प्रवेश कीनी ख्वारी है;
 रावल पताइ जाकी कीरती सवाई गई,
 खाइ माइ काली जवें वूरी चित्त धारी है;
 महीपत मल्हार सो ख्वार हैके गयो कैद,
 याकोही बिचारो भेद तहुं परनारी है;
 कहे नीलकंठ केते केते मे गिनाओं जिने,
 कीन्हीं है धिनारी याने बडी झख मारी है.

२

(मयूरान्योक्ति.)

केका है तिहारी कान्हूको सुधा रूप,
 कुसुम जुत वेनी हरे कान्ता कलापतें;
 नीलकंठ कैसी नीलकंठकी उदित छवि,
 नाहि उपमान आना शोभा अमापतें;
 मेघ जगजीवन है तांसों अति मित्रताइ,
 व्याल विश्वद्रोहि ताहि भक्षक सदापते;
 एरे ये मयूर तेरे एकठे विचित्र मित्र,
 एते गुन पाये कौन पूज्यके प्रतापतें.

१

(सवैया.)

सुंदरि सुंदर पिऊ तजे अरु, जाइ करे कहुं नीच सनेहु,
 बाग तडाग विहाय अनाजहि, ऊखर शैल परे अति मेहु;
 सूमसो संपत आन रसे, जगना द्रव दानि जीते तित जेहु,
 देत कुपात्र बधाय नृपाल, है बाल भुपाल सवे सत एहु.
 वे जग अंधनको मगदा, चलवो इन नीकनहूँको निवारो,
 वे बलि बास बसावत है, इन बास उजार कुवासन पारो;
 सूरन थाह उजावत वे, इन प्रेम अथाहके वारिधि डारो,
 देखहुरि हरिकी बंसुरी इन, कैसे सुबंसको बंस विगारो.

१

२

नंद.

(होरी खेलन.)

बोरी हे पिचक झक झोरी है झटकि पर,
 फोरी हे कलश इहां बसै कोऊ कोरी है;

जाना जनि मोरी है कहूँकी कोऊ कोरी है न,
थोरी है छिछाड़ जाकी महिया मरोरी है,
नदजू कहत कवि गोरी हे तो काको कहा,
जानत हो फछू फफे कुलकी किशोरी है,
गोपगन घोरी है जनक जाको एहो कान्ह,
प्यारे हरि होरि है तो कहा बग्जोरी है

१

नंददास.

(मोहनमुरली-रोला)

वृष्ण छीनि करकमल, जोगमायासी मुरली,
अघटित घटना चतुर, बहुरि अघटन मुर जु रली,
जाकी धुनितें निगम, अगम प्रगटित वर नागर,
नाद ब्रह्मकी जानि, मोहिनि सब सुखसागर १
पुनि मोहनसों मिठी, फछू फल—गान कियो अस,
वाम विलोचन बास, तियन मन हरन होय जस,
मोहन मुरली नाद, श्रवण कीनो सब कोनहु,
जथा जथा विधि रूप, तथा विधि परस्यो तीनहु २
तरनि फिरन ज्यों मनी, पखान सयहीके परसे,
सुरजकात मनि बिना, नही फछू पावक वरसैं,
सुनत चली ब्रज बधू, गीत धुनिको मारग छहि,
भवन भीत ड्रुम कुज, पुज कितहु अटकी नहि ३
नावहि अमृत पंथ, रंगिलो सृष्टम भारी,
तेहि भग ब्रजतिय चछैं, आन कोउ नहि अधिकारी,
शुद्ध प्रेममय रूप, पचभूतनतें न्यारी,
तिन्हें कहा कोउ कहे, ज्योतिसी जगत उजारी ४

नेवाज.

(गोप-गोपी शृंगार)

मुख चुवनम मुख छै जो भजैं, पियके मुखर्म मुख नायो चहैं,
गलघाहि गोपालके मेलतही, मुख नाहि कहे मनतें न कहे,

नहि देति नेवाज छुटे छतिया, छतियांसो ल्गाये ते लागि रहे,
 कर खेंचत सेजकि पाटि गहें, रतिमें रतिकी परिपाटि गहे. १
 छतिया छतियांसों ल्गाय दोऊ, दोऊ जीमें कुहुंके समान रहें,
 गइ बीति निशपें निशा न भई, नये नेहमें दोऊ बिकाने रहे;
 पट खोले नेवाज न भोर भये, लखि दौसको दोउ सकाने रहे;
 ऊठि जवें को डराने रहे, लपटाने रहे पट ताने रहे. २

पजनेस.

(भवानी प्रभाव.)

ज्वाला सर्व मेघ मय्य आहुति अहारनी तू,
 अग्नि कुंड मंडल प्रचंड परकाजनी;
 त्राहि त्राहि त्राहि सरनागतको पालनी औ,
 दुष्टनपै रुष्ट उष्ट सरसक्ति राजनी,
 अविलम्ब अद्वूत अभूत उक्त जुक्त कर,
 कवि पजनेस कंठ भनत विराजनी;
 भूतट विभाजनी ब्रह्माड सन्द वाजनी,
 गरीबननेवाजनी गरीबिनि नेवाजनी. १

(शुगलकिशोर शृंगार.)

कोटि मारतंड मनि मंडित मुकुट कोट,
 चंद्रिका चमक चकचौधी चहुंओरकी;
 सिर पेज पैच किल कलंगी कुलिस कन,
 चन्दनी बिचित्र चित्र असिल अजोरकी;
 सतगन नग पर वसन सुकेस राजे,
 एकसी प्रकारसी गत दोनों चितचोरकी;
 तीन लोक झांकी ऐसी दूसरी न झांकी जैसी,
 झांकी हम झांकी झांकी जुगल किसोरकी. १
 छहरै छबीली छटा छूटि छित मडलपै,
 उगम उजेरी महा ओज उजबकसी;
 कवि पजनेस कंज मंजुलमुखीके गात,
 उपमाधिकात कल कुंदल तबकसी;

फैली दीप दीप दीपति दीपति जाकी,
 दीपमालिकाकी रही दीपति दबकसी,
 परत न ताथ छवि मुख महतात्र जब,
 निकसी सिताव आफतावके भभकसी
 नवला सरूप रूप राये रुचिर रूप,
 रचना विरंची कीन सज्जन लागी है,
 भने पञ्चनेस छेल लोयनकी धीकें गोल,
 गुल्फ गोराइ लाज सकृचन लागी है,
 सुदर सुजान सुखदान प्रीति प्रीतमकी,
 एकौ ना परेम्ब अव सकृचन लागी है,
 औचक उचन लागी कचुकी रुचन लागी,
 सकृचन लागी आठि स-सुचन लागी है
 कवि पञ्चनेस पुन्य परम विचित्र भूमि,
 केतकि फनुस झाड जोतैं जैर ज्वालासी,
 करत प्रदोष व्रत पूजन किसोरी गोरी,
 डेरे कर आरती उजेरे शीलसायासी,
 मुकुर नवीनतैं निहारि वरविन्दनीकी,
 मिदुरावलीश दीपदान बहु बालासी,
 मानो व्योम गगाकी गमीर धीर धारा धसी,
 दीपक चढावै देवकन्या दीपमालासी
 दौर दौर झालैं झकोरैं छेत चादनीको,
 नीको भौन चित्रित विचित्र चित्रकारीको,
 गिल्म गलीचनपै अतर सु पुष्पनके,
 चदन कपूरपैं फुहार पिचकारीको,
 हवभर हारी हौं मैं पजन तिहारी सोंह,
 सोचत न गालन गुलाल गिरधारीको,
 रंग डारि कन्हरे छवीली छिति महलपै,
 सग छै सहेली चमकति चित्रसारीको
 चपक लतासी भासी सेस मदकासी बाल,
 ललित लतासी आंस अजन गुपालकी,

२

३

४

५

पजन अवीरनकी उडत घटासी तामें,
 बिज्जुल छटासी बेंदी दमकत भालकी;
 केसर सुगंध सरसानी यौ नवेली अग,
 संग अलवेली सो नवेली नंदलालकी;
 काढे कुच कंचुकी किसोर कसकोर लागी,
 लागी लाल जर्द गाल गरद गुलालकी. ६
 चोवा चौक चांदनी चंदोवा चिकै चौकी चौक,
 चंपक चंपावली चमेली चारु चोज है;
 ग्वासे खस फरस उसीर खसखाननमें,
 पजन कपूर चंदनादि करि मौज है;
 लाली लखि ललित ललीके लाल लोयनमै,
 अमल गुलाबदल मल्लत उरोज है;
 अवनि असीतलपै ग्रीषम तपी तलपै,
 पिय हाथ हींतलपै सीतल सरोज है. ७

परमेश.

(तुतिका पुकार-शिशिर-विरह)
 प्रान जो दहेगी विरहागनमें चंदमुखी,
 पापी प्रानधाती कोन फुली है जुही जुही,
 भंगी कल गान किधों मदनके पंच वान,
 दिखन पवन किधों कोकिला कुही कुही,
 मधमें मयंक जों मुकुंद तरुनाई बाल,
 रजनी निगोडी रेनी रंगन चुही चुही;
 बालम बिदेश ज्योंपें मिलबो विचार कियो,
 तो लैं तुती प्रगट पुकारी रे तुंही तुंही. १
 आछे चित्रशाले जगे जोतनके जाले धरे,
 गरम मसाले प्याले प्याले समे समेमें;
 गिल गिली गिलमें गलीचा गुल बापी पडे,
 मंडे हे मकान ऊन वल्लके सु बेशमें;
 कहे परमेश तोहू थर थर कांपे अंग,
 एते दिन आई तेती साहेबी सुरेशमें;

बिना प्राण प्यारी पड़े निपट कलेश मीत,
शिरीशकी सीत रेन बसवो विदेशमें

२

पहार.

कुडलिया

(मनोभाव)

सबो जहा देखो चलन, मन रुचै तिहि ठोर,
धिति पर वाता बहोत हे, ध्वनि बिद्रमकी ओर
ध्वनि बिद्रमकी ओर, सो तो बिपती न छुपाइ,
मूरख नहिं समझंत, चरच चातुर चित जाइ
याते कहत पहार, यार हरफनतें बचो,
मन रुचै तिहि ठोर, चलन देखो जहा सबो

१

पद्माकर.

(रामनाम माहात्म्य)

सुखद सुफुल सखा साहिबा सरन्य सुचि,
सूखे सत्य सधके प्रबधनकी गहिये,
कहै पदमाकर कलेशहर कौसलेस,
कामद कबध रिपुहीको छै उमहिये,
राजिवनयन रघुराज राजा राजाधिप,
रूप रतनाकरको राजी रायि रहिये,
रैन दिन आठो जाम राम राम राम राम,
सीता-राम सीता-राम-सीता-राम कहिये -(टेक)
काहेको बधम्बरको ओढि करो आहबर,
काहेको दिगबर है दूब खाय रहिये,
कहै पदमाकर त्यों कायके कलेश हित,
सीकर सभीत सीत बात ताप सहिये,
काहेको जपोगे जप काहेको तपोगे तप,
काहेको प्रपच पच पावकमें ठहिये, -रैन दिन०

१

२

आनंदके कंद जग जावत जगत वृंद,
 दशरथनंदनके निवाहे निवहिये;
 कहै पदमाकर पवित्र पन पालिवेको,
 चारु चक्रपानिके चरित्रनको चहिये;
 अवधविहारीके विनोदनमें वीधि वीधि,
 गीधा गुह गीधके गुनानुवाद गहिये;—रैन दिन० ३

आवतहू जात खात खेलत खुलत गात,
 छीकत छकात चुप चाप है न रहिये;
 कहै पदमाकर परहु परभात प्रेम,
 पागत परात परमातमा न जहिये;
 बैठत उठत जात जागत जवात सुख,
 सोवतहू सापनै न औरे नाघ नहिये,—रैन दिन० ४

गोदावरी गोकर्न गंगाहू गयाहू यह,
 येही कोटि तीरथ कियेको लाभ लहिये,
 कहै पदमाकर सु ज्ञान यहै ध्यान यहै,
 येही सुख खान सरवम्ब मानि रहिये;
 येही जप येही तप येही जज्ञ जोग यहै,
 येही भव रोगको उपाव एक अहिये;—रैन दिन० ५

भाये पद्माकर न तैसे भाग्य जग्नयके,
 जैसे भगवान भीलनीके फल भाये हे,
 भोजनकी सामा सत्यभामाकी भुलाइ भले,
 दुखी वा सुदामाके सुचाउर चवाये हे;
 छप्पन सुभोग दुरजोधनके त्यागी करी,
 आसा गहि वेगते विदुर घर आये हे,
 धरा धाये फिरत वृथापै नेम नीरधिमें,
 पाये जिन राम तिन प्रेमहीसों पाये है. ६

(सवैया.)

रामको नाम जपो निसबासर, रामहीको इक आसरो भारो,
 भूल्यो न भूलकी भीरनमें, पदमाकर चाहि चितौनिको चारो;
 ज्यों जलमें जलजातके पात, रहै जगमें त्यों जहानतें न्यारो,
 आपने सों सुख औ दुख दैरि, जु औरको देखे सु देखनहारो. १

भोगमें रोग वियोग सजोगमें, जोगमें काम कलेम कमायो,
 त्यों पदमाफर बेद पुरान, पञ्चो पादिके बहु वाट बढ़ायो,
 दूनो दुरासमें दास भयो पै, कहू बिसरामको धाम न पायो,
 पाय गयायो सु पेसही जोवन, हाय में रामको नम न गायो २
 यों मन लाउचि लाउचमें, लगि लोभ तरगनमें अवगाहो,
 त्यों पदमाफर देहके गेहके, नेहके काजन काहि सराहो,
 पाप किये पै न पातकी पावन, जानिकै रामको प्रेम निवाहो,
 चाहो भयो न कछू फचह, यमराजहुसा कृथा बैर बिसाहो ३
 बैठि सदा सतसगहीमें विप, मानि विषय रस कीर्ति सदाहीं,
 त्यों पदमाफर झूठ जितो जग, जानि सुज्ञानहिंके अवगाहीं,
 नाककी नोकमें डीठि दिये नित, चाह न बीज कहू चित्त चाहीं,
 सतत सत शिरोमणि है धन, है धन वे जन बेपरवाहीं ४

(गंगा माहात्म्य)

गंगाको चरित्र लखि भाँपे यमराज ऐसे,
 परे चित्रगुप्त मेरे हुकुममें कान टै,
 कहै पदमाफर ये नरफन मूदफर,
 मृदि ठरवाजनको धोड यह शान है,
 देव यह देव नदी किये वश देव याने,
 दूतन बुलाइये शिवाके घेड पान दे,
 फार डार फरव मिटेर रोज नामे डार,
 स्वातो स्वत जान है र वही बहि जान है १
 यमपुरद्वारेके फिवारे लो तारे फोरु,
 हैं न रखवारे ऐसे बनके उजारे हैं,
 फहे पदमाफर तिहारे प्रणघारे जेत,
 करि अघ भारे सुरलोकको सिधारे है,
 सुजन मुखारे करें पुण्य उजियारे अति,
 पतित कनारे भवसिधुते उतारे है,
 काहनै न तारे तिन्हें गंगा तुम तारे आज,
 जेत तुम तारे ते ते नभमें न तारे है २

(रामसे याचना.)

व्याधहूँ विहद असाधु हों अजामिल लें,
 ग्राहते गुनाही कहो तिनमें गिनाओगे;
 स्यारी हों, न शूद्र हों, न कवट कहुंको लों,
 न गौतमी तिया हों जापें पग धरि आओगे;
 रामसों कहत पदमाकर पुकारी तुम,
 मेरे महा पापनको पारहू न पाओगे,
 झूठोहि कलंक मुनि सीता ऐसी सती तजी,
 साचोहू कलंकी ताहि कैसे अपनाओगे. १
 जोग जप संध्या साधु साधन सवैइ तजे,
 कीन्दे अपराधते अगाध मनभावते;
 ते ते तजि औगून अनंत पदमाकर तौ,
 कौन गुन लैके महाराजहि रिश्रावते;
 जैसे अब तैसेपै तिहारे बडे कामके है,
 नाहीं तो न एते बैन कवहू सुनावते;
 पावते न मोसों जोपै अधम कहूं तो राम,
 कैसे तुम अधम उधारन कहावते. २

(विविध बोध)

आयो मन हाथ तव आयबो रह्यो न कछू,
 भयो गुरुज्ञान फेर भायबो कहा रह्यो;
 कहै पदमाकर सुगंधकी तरंग जैसे,
 पायो सतसंग फेर पायबो कहा रह्यो,
 दान बलवान बल विविध वितान बल,
 छायो जस पुज फेर छायबो कहा रह्यो;
 ध्यायो रामरूप तव ध्यायबो रह्यो न कछू,
 गायो राम नाम तव गायबो कहा रह्यो. १
 एरे जड जीव जानु राखु वेद भेद यहै,
 सुमृति पुरान राखी यहै ठहराय है;
 कहै पदमाकर सुमाया परपंचनको,
 पेख परपंच पेखनेको सब भाय है;

यातें भज दसरथ नद रामचदजूको,
 आनदको फन्द फौसलेस रघुराय है,
 जा दिन परंगो काम जमके जसूसनिसों,
 ता दिन तिहारे काम राम नाम आय है २
 एकनसों बैर करि प्रीति करि एकनसों,
 एकनसों बैर है न प्रीत कछू गाढी है,
 कहै पदमाकर न होत चित चाहि बात,
 बात करिवेको अनचाही मीच ठाढी है,
 एतेपैं न चेतै फेर केते बाघ बाघत हे,
 दत लागे हिलन सपेन भई दाढी है,
 बाढी कहू रामको न भगति हियेमें देखो,
 तृपना बिसासिनि या निलई सो बाढी है ३
 आस बस डोलत सु याको बिसवास कहा,
 सास बस बोले मर मासहीको गोला है,
 कहै पदमाकर विचार धनभगुर यों,
 पानीमके फैन कैमा फलत फफोला है,
 करम फरोर पचतत्य नवटोर जोर,
 जोरके बनायो तोउ पोर पोर पोला है,
 छाडि राम नाम नहि पैंहैं बिसराम अरे,
 निपट निश्राम तन चामहीको चोला है ४
 घोखाकी धुजा है औ रजा है महा दोपनकी,
 मलकी मजूसी मोह मायाकी निसानी है,
 कहै पदमाकर सु पानी मरी खाल ताके,
 खातिर खराब कत होत अभिमानी है,
 राखे रघुराजके रहै तो रहै पानी न तो,
 जगी जमराजहीके हाथन विकानी है,
 जौही लगि पानी तौलों देह सी दिखानी फेर,
 पानी गये खारिज पखाल उयों पुरानी है ५
 आवत गलानि जो बम्बान करौ जादा यह,
 मादा मल मूत मेदा मज्जाकी सलीती है,

कहै पदमाकर जरा जो जाग भौंजी तब,
 छीजी दिन रैन जैसे रेनुहींकी भीती है;
 सीतापति रामके सनेह वस वीती जौ तो,
 तौ तो दिव्य देह जमजातनातें जीती है;
 रीती राम नामतें रही जो विन काम तो या,
 खारिज खराब हाल खालकी खलीती है.

६

(मनमोहन शंगार.)

सुंदर सुरंग नैन सोभित अनंग रंग,
 अंग अंग फैलत तरंग परिमलके;
 वारनके भार सुकुमारिको लचत लंक,
 राजे परजंक पर भीतर महलके;
 कहै पदमाकर विलोकि जन रीझै जाहि,
 अंबर अमलके सकल जल थलके;
 कोमल कमलके गुलावनके दलके,
 सुजात गडि पायन विद्यौना मखमलके.

१

तासनकी गिलमें गलीचा मखतूलनके,
 झुरपै झुमाऊ रही भूमि रंगद्वारीमें;
 कहै पदमाकर सुदीपमणि मालिनीकी,
 लालनकी सेज फूल जालन समारीमें;
 जैसे तैसे नित छल-बलसों छवीली वह,
 छिनक छवीलेको मिलाय दई प्यारीमें;
 छूटि भाजी करतें सुकरकै विचित्र गति,
 चित्र कैसी पूतरी न पाइ चित्रसारीमें.

२

शोभित स्वकीयागन गुन गनतीमें तहां,
 तेरे नामहीकी एक रेखा रेखियतु है;
 कहै पदमाकर पगीयों पति प्रेमहीमें,
 पदमनि तोसी तिया तूही पेखियतु है;
 सुवरन रूप जैसो तैसो सील सौरभ है,
 याहीतें तिहारो तन धन्य लेखियतु है;
 सोनामें सुगंध न सुगंधमें सुन्योरी सोनो,
 सोनो औ सुगंध तोमें दोनो देखियतु है.

३

धोइ गई केसर कपोल कुच गोल्नकी,
 पीक छीक अधर अमोल्न ल्गाई है,
 कहै पदमाकर त्यों नैनहु निरजनमें,
 तजत न कप देह पुलकि न छाई है,
 चाद मति ठाने झूठ यादनि मईरी अघ,
 दूतपनौ छोड घूतपनमै सुहाई है,
 आई तोहि पीर न पराई महा पापिन तू,
 पापी छौं गई न कहू यापी न्हाय आई है ४
 फान सुनि आगम सुजान प्रानप्रीतमफो,
 आनि सखियान सजे मुदरिके आसपास,
 कहै पदमाकर सुपन्नके हौज हरे,
 ललित लबालब भरे हैं जल बास बास,
 गूदि गेंदे गुलगज गौहरन गजगुल,
 गुपत गुलाबी गुल गजरे गुलाबपास,
 खासे खसबीजन सुखौन पौनखाने खुले,
 खसके खजाने खसखाने खूब खास खास ५
 नैननही सैन करै वीरी मुख दैन करै,
 लैन करै चुयन पसारि प्रेम पाता है,
 कहै पदमाकर त्यों चातुरी चरित्र करै,
 चित्त करै सोहैं जो विचित्र रतिराता है,
 हाव करै भाव करै विविध विभाव करै,
 वृक्ष प्यौ न एतेपै अबूझनको आता ह,
 ऐसी परवीनिको कियो जो यह पुरुष तौ,
 बीस बिसे जानी महा मूरख विधाता है ६
 रति विपरीत रची ठपति गुपति अति,
 मेरे जानि मानि भय मनमथ नेजेतैं,
 कहै पदमाकर पगीयों रसरग जामें,
 खुल्लिो मुर्छंग सख रगन असेजेतैं,
 नीलमणि जटित सुबेदा उच्च कुचनपें,
 पर्या टुटि ललित ललाटके मजेजेतैं,

मानों गिर्यो हेमगिरि श्रृंगपै सुकेलि करि,
कढिकै कलंक कलानिधिके करेजेतै.

७

मंद मंद उरपै अनंदहीके आंसुनकी,
वरसै सुबुंदै मुकतानहीके दानैसी;
कहै पदमाकर प्रपची पंचवानके सु,
काननके मानपै परी त्यों घोर घानैसी;
ताजी त्रिवलीनमै विराजी छवि छाजी सवै,
राजी रोमराजी करि अमित उठानैसी;
सोहै पेख पी को विहसोहै भये दोऊ दग,
सोहै सुनि भौहै गई उतारि कमानैसी.

८

पार्ता लिखी सुमुखि सुजान पिय गोविदकों,
श्रीयुत सखेने स्याम मुखनि सने रहौ,
कहै पदमाकर तिहारी छेम छिन छिन,
चाहियतु प्यारे मन मुदित घने रहौ;
बिनती इती है कै हमेसहू मुहै तौ निज,
पाइनकी पूरी परिचारिका गने रहो;
याहीमें मगन मनमोहन हमारो मन,
लगानि लगाइ लग मगन बने रहौ.

९

वानीके गुमान कल कोकिल कहानी कहा,
वानीकी सुबानी जाहि आवत भनै नहीं,
कहै पदमाकर गोराईके गुमान कुच,
कुंभनपै केसरिकी कंचुकी ठनै नहीं;
रूपके गुमान तिलउत्तमा न आनै उर,
आनन निकाई पाई चंद्रकी रनै नहीं;
मृदुती गुमान मय तूलहू न मान कछु,
गुणके गुमान गुन गौरिको गनै नही.

१०

(कविपरिचय-कवित्त.)

भट्ट तिलगानेको बुदेलखंड बासी कवि,
सुयश प्रकाशी पदमाकर सो नामा है;
जोरत कवित्त छंद छप्पय अनेक भांति,
संस्कृत प्राकृत पढ़े जु गुणग्रामा है,

हय रथ पालकी गयव गृह ग्राम चारु,
आखर छागह छेत, लाखनकी सामा है,
मेरे जान मेरे तुम फान्ह हौ जगतसिंह,
तेरे जान तेरो यह विप्र मैं सुदामा है

१

प्रधान.

(कर्षशा और कृपाग्र भर)

सामुके बिलोके सिंहिनिसी जमुदाह छेद,
समुग्के देखे बाधिनिसी मुह यावती,
नणंदके देखे नागिनीसी फुफुफारे बेठी,
नेवरके देखे डाकिनीसी डरपावती,
भनत प्रधान मोछ जारती परोसिनकी,
खसमके देखे खाउ खाउ करि धावती,
करकसा कसाइन कुबुद्धि कुलच्छनी ये,
करमके फूटे घर पसी नार आवती

१

आज जो कहे तो आठ मासमें न लागे ठीक,
काल जो कहे तो मास सोरह चलावहीं,
पाच दिन कहे पाच बरस बिताय देहिं,
पाच वर्ष कहे तो पचास पहुचावहीं,
भाखत प्रधान जो बै ताहूपे न त्यागे द्वार,
आप न लजात फेर बाहूको लजावहीं,
एसे सयभापी सरदार हे देवैया जहा,
काहेको पवैया तहां जीवत छैं पावहीं

१

प्रवीनराय.

(कल्लि वर्णन)

कूत भये कुवर मजूर भये मालकार,
शूर भये गुप्त अशूर भये जमरे,
दाता भये कृपण अदाता कहैं दाता हम,
धनी भये निधन निधन भये गवरे,

साचेनकि बात न पत्यात कोऊ जगमांझ,
राजदरवारन बुलैये लोग लबरे;

भनत प्रवीन अब छीन भइ हिम्माति,
सो कलियुग अदलि बदलि उरे सगरे. १

केते नद नदी नारे भरे हे समुद्र खारे,
हस मन हेत एक मान सरोवरसें;

वन उपवन केते गिनती न आवे एते,
कामनाको काज एक कल्पतरुवरसें;

वर्षाकृतु सरदकाल भरे नीर जल्द ज्वाल,
चातुरक न्याल एक स्वातबिंदु जलसें;

अर्जकी तो गर्ज कोउ जाने लजीर लोक,
गरीबकी अरजी एक गरीबपरवरसें. २

(कुंडलिया.)

यहि संसार असारमें, साखी एकन काम,
सारेको साज्यो जन्यो, सारीसों विसराम,

सारीसों विसराम, राम सपन्यों नहि जान्यो,
दया धर्म उपकार, कबहुँ नहि उरमें आन्यो,

कहि प्रवीन कविराय, करौ केहिकी समता तिहि,
श्रुति मारगको छोडि, रहत अप मारग मन जिहि. १

नरकधाम जो तियनको, रमत सदा नर नीच,
धम धूसर मूसर परी, दो नितंबके बीच;

दो नितंबके बीच, कबहुँ निकसी नहि काढे,
दिन दिन रहत तन्यात, मनो डोलीके दाढे;

कहि प्रवीन कविराइ, बात मानो नहि तर्कै,
सांची कहत बनाइ, कुगति है परिहौ नर्कै. २

प्राग.

(सापेक्षिक दर्शन.)

कहा कामिनि विन धाम, धाम कहा दाम नई हे,
दाम कहा नहि पुन्य, पुन्य कहा क्रोध जई हे;

शोध कहा जन रफ, रंक कहा भक रहावै,
 चक कहा कहा छिद्र, छिद्र कहा नाम टरावै,
 जुग रीत नीत नर देहपी, जूगत जन जानो महीं,
 गिंग प्राग लाभ ससारके, समज मन रहेवे सही १

(बोलाछव)

कहा कामन भिन मर्द, मर्द कहा जर्द न अगी,
 कहा धीर भिन वीर, वीर कहा शाख न सगी,
 कहा नवाण भिन नीर, नीर कहा प्रीत न रीजे,
 कहा दाता भिन दान, दान कहा देत न स्वीजे १

कहा कायर पर शर, शर कहा अरिय न मारे,
 कहा अरिय बिस्वास, बाह कहा नीच सहारे,
 कहा नीचसें नेह, नेह कहा फरत न वूजे,
 वूजे कहा गुनहीन, हीन कहा मती न सूजे २

कहा कामन भिन प्यार, प्यार क्या यार देखेवे,
 कहा यार पर नार, जार जन लाज गुमावे,
 कहा लाज भिन काज, काज कहा लोमहि अगी,
 लोम कहा बहेवार, भिना बहेवारको सगी ३

कहा नीर भिन वीर, वीर कहा बात न वूजे,
 वूजे कहा नहि करे, करे कहा बखत न सूजे,
 कहा मरद भिन रीत, रीत कहा नीति न जाने,
 नीत कहा जन मीत, मीत कहा नेक न आने ४

कहा कायरसो जुद्ध, बुद्ध कहा आप बखाने,
 कहा गनकासो प्रीत, नीत कहा पक्ष बखाने,
 कहा विधा भिन मान, दान कहा देत न जाने,
 कहा नारि भिन शर्म, घर्म कहा ओर चलाने ५

कहा पंडित भिन पढे, षडे कहा आप बखाने,
 गुनी वोत क्या धुनी, मुनि कहा मेख बताने,
 चूगल कहा चक्रोर, और कहा गनका रानी,
 कहा अर्थ भिन काव्य, भाव कहा अर्थ बखानी ६

कहा कमल भिन भमर, भमर कहा भूत कहावे,
 कहा चंदन भिन बास, घास कहा ब्रथ रहावे,

रजत होत कहां राग, कांगको चावल माने,
बिडल बाघ कहां होत, बोत बोले मनमाने.

७

पिंगलसिंह.

(रुठे ब्रूठे राम.)

मानुष उत्तमको नहि मानत, जानत ना कछु भाखत जूठो,
आश करी कोउ आंगन आवत, याकुं बतावत हाथ अंगूठो;
क्रोध विरोध भयौ मुख कायम, तापर संत कबु नहि ब्रूठो,
पिंगल सो नर शाति न पावत, राम रहे इनके पर रूठो. १

पच कहे सो कबूल करे नित, रंच प्रपंच नहिं इतराजी,
सत्य जिभान रु दान सुजानकुं, पास न राखत नोकर पाजी;
आनन आप प्रसन्न अहोनिश, गर्व नहिं रही कीरती गाजी,
पिंगल सो नर उत्तम पुरूष, राम रहे इनते पर राजी. २

(भावि प्रबलता.)

करबो थो जहां राज, तहां भयो बनमें निकरबो,
हरबो थो मृग प्रान, तहां भयो सीयको हरबो;
जरबो थो कपि अंग, तहां भयो लंका जरबो,
सरबो थो सुर काज, तहां भयो सुधी विसरबो;
यह बात देव दानव अगम, पिंगल कहे प्रतक्ष ये,
जक्तके लोक जाने कहा, भावीके वश सब भये. १

प्रियादास.

(श्रीराधाकृष्णभक्ति.)

छोडि सबै भ्रमजाल कुचाल, सु काम औ क्रोधको दीजै बहाई,
वृषभानुकुमारिको नाम जपौ, तुमको सब ठौर जे होत सहाई;
पुत्र औ दार सबै परिवारसो, स्वारथ हेत रहे लपटाई,
प्रियदास गोपालकी भक्ति गहौ, नर देह धरेको यहै-फल भाई. १
ध्यानमें मेरे श्री राधिका नाम है, गानमें राधिका नामको गाऊं,
यह मुखते कहे राधिका नामसो, बार अनेक यही वर पाऊं,

तीरथ मरे श्री गधिका नाम है, गधिका नामहि को मैह नार्क,
 प्रियादामकी आस यहै विधास सो, कुब्जके बासपै चित्त रमाऊं. २
 रोज द्विगे मति काहूके जाव, मली बिधि बात येहै सुबिचारी,
 मानकी हानि नितै प्रति होत, सो प्रीतिकी रीतह होत है न्याये,
 ताते रही प्रियादास जु दरिये, बात सबै बिधि मानि हमारी,
 नूरख जानत है मनमें, अकि आवत स्वारथके हितकारी ३

प्रेम.

(सूम-कपूत अतिशयोक्ति.)

न्याणो होय सूम जब मनमें विचार करे,
 दान पुण्य देतो बड़ा बावला चलायो क्यों,
 यहसा समान नहि जमी पडदे या घर,
 याकों दूनी दूनी खर्च बायदे गमायो क्यों,
 कवड़ीके लिये जात अपनी गमाय देत,
 हा हा विधनाथ यह दानही बनायो क्यों,
 प्रेम कहे ऐसे परिवार विन सार्यो होत,
 भेटन मर्याद ओ कपूत पूत जायो क्यों १
 नव मास गर्भमाहि पाळ पाळ रक्षा करी,
 जायो जद कष्टी देवि देवता मनायो क्यों,
 तातो शीलो अन्न खाय कदे मूखी धायी रही,
 असछी निरोगो बूध कष्टने चुगायो क्यों,
 आप तो सूती रही आलाही बिधावनामें,
 पके तल सूको वस्त्र पूछके बिधायो क्यों,
 प्रेम कहे ऐसे परिवार विन सार्यो होत,
 भेटन मर्याद ओ कपूत पूत जायो क्यों २
 पाप देन कही सो मांगत हो आजहीपे,
 आवेगो आपाद तब बनहु बुढावेगो,
 छोट पीज फात कर सार करिहिगे फिर,
 घोषी काहू चतुर तापे ऊजरी धुवावेगो,
 बुगचेमें बांधकर राखेंगे कितेक दिन,
 आवेगो कसुमो तब गुलाबी रंगावेगो,

हम बांध पूत बाध पोते परपोते बांध,
ताही पीछे वाही पाग तुमको दिलोवेंगे.

३

पृथ्वीदास.

(वृद्धत्व, दैवगत)

पीथल धोलां आविया, बहुली लागी खोड
पूरे जोवन पदमिनी, ऊभी मुंह मरोड. १
पीथल पली टमूकिया, बहुली लागी खोय,
मरवण मत्त गयंद ज्यों, ऊभी मूख मरोय. २
प्यारी कहे पीथल सुनो, धोला दिस मत्त जोय,
नरा नाहरां डिगमरा, पाकाही रस होय. ३
विद्या भलपन समुद्रजल, ऊंचपनो अभ्यास,
उत्तर पथ रु देवगत, पार न पृथ्वीदास. ४

फकीरुदीन.

(सुरती सिपाई-कवित्त.)

सुरतको सार गयो, लोकको व्यवहार गयो,
रोजगार डूव गयो, दशा ऐसी आइ हे,
टूट गये शाहुकार ऊठ गई धारि धार,
नहि कोइ किस्के यार, बेरी सगा भाइ हे;
खानेकुं जहर नहि, रहेनेकुं घर नहि,
बात कहा कहूं यार, सभी दुखदाइ हे,
कहेते फकीरुदीन, सुनो हो चतुर जन,
टूट गये तो भी पक्के सुरती सिपाइ हे. १

फेरन.

(विधिदोष-कवित्त.)

गृहिनि वियोग गृह त्यागिनी विभूति दीनी,
योगिनी प्रमोद पुन्यवंतिनी छलो गयो;

गृहनि गृहेश कियो शनिको मुचित लघु,
ज्यालनि अनद शेष भारनी बलो गयो,
फेग्न फिरायत गुनीन गृह नीच द्वार,
गुननि बिहीन घर बैठही भलो भयो,
फौन फौन पातें तेरी कहों एक आननतें,
नाम चतुराननपें चूकतें चलो गयो

१

वनचारी.

(शब्द चमत्कृति, शृंगार)

नेह घरसाने तेरे नेह घरसाने रेम्बी,
यह घरसाने घर मुरली बजायेंगे,
साजु लाल सारी लाल करें लाल सारी देखी—
बेफ्री लाउसारी लाल देखें मुख पावेंगे,
तुंही उर बसी उरबसी नहि और तीय,
फोटि उरबसी तजी तोसों चित लवेंगे,
सेज धनचारी बनचारी तन आभरन,
गोरे तनचारी धनचारी आजु आवेंगे

१

धनारसी.

(शील-स्वधर्म-सत्य-ई)

ताहिनि बाघ भुजगनको भय, पानि न बोरे न पावक जाले,
ताके समीप रहे मुर किन्नर, सो शुभ रीत करे अघ टाले,
तासु विवेक बड़े घट अंतर, सो मुरके शिषके मुख माले,
ताकि सुकीरती होय तिहु जग, जो नर शील अखडित पाले १
धीरज तात क्षमा जननी, परमार्थ मीत महा रुचि भासी,
ज्ञान सुपुत्र सुता करुणा, मति पुत्रवधू समता अति भासी,
उद्यम दास विवेक सहोदर, बुद्धि कलत्र शुभोदय दासी,
भाव कुटुंब सग जिनके दिग, यों मुनिको कहिये गृहवासी २
फाज विना न करे प्रिय उद्यम, लाज विना रनमाहि न जूमे,
ढील विना न सधे परमार्थ, शील विना मृतसों न अरुमे,

नेम विना न लहे निहचें पद, प्रेम विना रस रीति न वृझे,
 ध्यान विना न थंभे मनकी गति, ज्ञान विना शिवपंथ न सूझे. ३
 केइ उदास रहे प्रभु कारण, केइ कही उठि जाइ कहीके,
 केइ प्रणाम करे गढि मूरति, केइ पहार चढे चढि छीके;
 केई कहे असमानके ऊपरि, केई कहे प्रभु हेठि जमीके,
 मेरो धनी नहि दूर दिशांतर, मो महि हे मुंहि सूझत नीके. ४
 सो करुणा विन धर्म विचारत, नैन विना लखिये कोउ माहे,
 सो दुरनीति धरे यशहेतु, सुधी विन आगमको अवगाहे,
 हो हियशून्य कवित्त करे, समता विन सो तपसों तन दाहे,
 सो थिरता विन ध्यान धरे शठ, जो सत्संग तजी हित चाहे. ५

(कवित्त.)

पावकते जल होय वारिधते थल होय,
 शल्लते कमल होय ग्राम होय वनतें;
 कूपतें विवर होय पर्वततें घर होय,
 वासवतें दास होय हित दुरिजनते;
 सिहतें कुरंग होय व्याल श्याल अंग होय,
 विषतें पियूष होय माल्य अहि फनतें,
 विषमतें सम होय संकट न व्यापे कोय,
 एते गुन होय सत्यवादीके दरशतें. १
 मौनके धरैया ग्रहकाजके करैया विधि,
 रीतके सधैया परनिदासो अपूठे हे,
 विद्याके अभ्यासी गिरिकंदराके वासी,
 शूचि अंगके अचारी हितकारी बेन छूटे हे,
 आगमके पाठी मन लाय महा काठी भारी,
 कष्टके सहनहार रामाहू सो रूठे हैं;
 इत्यादिक जीव सब कारज करत रीते,
 इंद्रिनके जीते विना सरवंग जूठे हे. २
 अगनिसैं जेसैं अरविंद न विलोकियत,
 सूर अथवत जैसे बासर न मानिये,
 सांपके बदन जेसैं अमृत न ऊपजत,
 कालकूट खाये जेसैं जीवन न जानिये.

कलह करत नाहि पाइये मुजरा जेसे,
बादत रसांस रोग नारा न बखानिये,
प्राणीबधमाहि तैसे धर्मकी निशानी नाहि,
याहितें बनारसी विवेक मन आनिये

(छप्पय)

अग्नि नीर सम होय, मालसम होय भुजंगम्,
नाहर भृग सम होय, कुटिल गज होय तुरगम्,
विष पियूष सम होय, शिखर पापान खडमित,
विघन उलट आनद, होय रिपु पलट होय हित,
पीला तलाव सम उदधि जल, गृह समान अटवी विकट,
इहि विधि अनेक दुख होहि सुख, शीलवत नरके निकट

बलदेव.

(शुभाशुभ द्विज)

सुदर सतोष दूरि करत है दोष सब,
नेकहु न रोष वेदशास्त्र परगामी हैं,
सुगम बनाते बलदेव यश छाते जग,
बोले पर आते हरि ध्याते हित नामी हैं,
पूरन प्रताप मान मडित महिषनमें,
मजुल बदत बैन ऐन अभिरामी हैं,
रंचित विधान गति दयाके निधान अति,
ऐसे द्विजराजनको धन्य ते नमामि हे
दान हठ ठाने दोष औरके बखानै,
रीति मांति नहि जानै औ न मान खाष्ट पूरीसें,
विषाको न लेश ल्यों न वेप रूप रेख कछू,
हज्जति हमेश याज आवैं नहीं कुरीसें,
स्त्रीभि केश राखैं विष खैहे इमि माखै,
चट टेढ़ी करि आखे चीरि ढारे तन छुरीसें,
कलियुगके काजनका साजे तजी लाजनको,
ऐसे द्विजराजनको ददवत् दूरीसें

(शुभाशुभ क्षत्रिय.)

गो द्विजको पालै सत मारगमें चालै निज,
 शत्रु ढल घालै रणमेंतें मन मोरै ना,
 सुखद सजीले वीरतामें गरवीले कुल,
 एकहू न ढीले हीनताईके निहोरै ना,
 जाको संग धारे ताको पार निरवौर दान-
 दयाको संचारे धर्म धारै तौ न छोरे ना;
 युद्धनकी पत्री सुनि मोद लहै अत्री अति,
 ऐमें शूर क्षत्री समतामें और जोरे ना. १

गावै गीत गेतलसें भेड दरशावै कवौ,
 कर चटकावै मटकावै मुख फेरतें;
 विप्रको न माने पाव लागिवो न जानै कहा.
 शास्त्रकी प्रमानै सुनि वा दिशिन हेरेतें,
 लंपट लवारीमें लायक लखावत है,
 लेहेके लपेट सुनी लकी रहे देरेतें,
 ऐसें क्षूद्र क्षत्री क्रूर काहे किरतार किये,
 कूंजरे न कीने शिर मूली धरी टेरेत. २

(शुभाशुभ वैश्य.)

धारत विधान मंजु शीलके निधान मान,
 द्विज बलदेव लख्यो लाभ लहे लोग है,
 चेत दान दीरघ त्यों लेत सब कीहि सुधि,
 हेत हरिहीसौ सुनि शत्रुनके शोग है,
 धनसों धनेश दयो ज्ञानसों गनेश दयो,
 फतेसों फनेश दयो भौन भरे भोग है,
 साचीके स्वरूप सब लायक सनेह भरे,
 शाह सुखदातातें सराहनके योग है. १

लेहै लाभ काढी जापनेको बाढि तौलि पुनि,
 शेर आवे शेर फेर औरनकों जो दे है,
 कामके समेमं कठिनाइ गहि लेत अति,
 आदि अंत नम्र .. श्रके समान वोदे है,

वामके गुलाम धाम धाममें धकाकों लहै,
निमक हराम काम की है नहीं वोदे है,
तिया चमार बैठि चौकमें चुराई लेत,
शाइ फहवावैं सब चोरनको दे हैं

२

(शुभाशुभ घेघ)

सुदर सुमग तन सुखद मुदित मन,
आनदके घन घन भण हित साज है,
दया दान धारी बलदेव उपकारी जग,
भारी भीर टारी शुचि शीलके समाज है,
देशकाल जानै तिमि औपघ विधाने-
समर्हकों सनमानैं ठानै गुण शिरताज है,
विश्व विचार त्यों अचारैं श्री सचारैं चारु,
सेई सिद्ध भेई लखु तेई वैधराज है

१

नारी नाहि जानत अनारी फहे गारी वेत,
तारी दे हसत है हजारनकों मारामें,
झोली बीच गोली तौ न गोलीसी लगत यह,
तोली फई वार गई प्रौढनको पाराम,
करणी यही है घर घरनी रिझैवे योग,
बसु वयतरनी मिलैगी यौ विचारामें,
बैठ हैं वधिकसैं बिसारे बकरूप बनि,
ऐसैं वैधराजनको बहावैं वारि धाममें

२

(शुभाशुभ वकील)

न्याय रस राचे आदि अंत गति जाचे,
अपनेसों सदा साचे अंक वाचे बरकारमें,
द्विज बलदेव सुख सिद्धिनको सेव छुपो,
छोहको न भेष औ न लोम ठरकारमें,
रूप गुन फाय फैलि राखत हे आव अति,
हाजिर जबाब हे न ताबत रकारमें,
अमित बिचार अधिकार हेत मालिकके,
फरै कारागार ते वकील सरकारमें

१

पूंछी भूलि जावै समै कैसें को बुझावे तिन्है,
 आपुको न आवै कछु एती कहे एंठे है;
 मामिलेकां वेर भई देर काऊ टेर करै,
 बंदरसें बोले आवै अंदरमें पैठें है;
 जीते हारि मानी कबौ जीते जे न आजु लग,
 तीते गनि लीजें और कीजें कहा ठैठ है;
 ढील ढील गात वात नील मुख कान्है लखौ,
 भीलकी सकलके वकील वनि वैठें है.

२

(कवि, भाषाविचार.)

द्विज बलदेव कहै आप महाराज तैसें,
 चोऊ कविराज कछु जान अनुमानौ ना;
 आप वित्त देत त्यों कवित्त वै विचित्र देत,
 वरण अधिक एक ताको पहिचानौ ना;
 मानत रहे है जिन्है पुरिषा सनातनतें,
 तिनको उचित मानिवो हे हठ ठानौ ना;
 नागी शमसेर सी जवान जोर जाको रहे,
 ऐसं कवि इन्द्रको खिलाना करि जानौ ना.

१

विदित पदारथ प्रयोजन प्रसिद्ध सब,
 तासों बलदेव भाषा भाय ठीक ठानिये;
 भाषा विन भाखे सन्निपातीसैं वक्त रहै,
 दूजी कौन भाषा ब्रजभाषा सम आनिये;
 संस्कृत नाम ना सरस्वतीको भाष्यों कोऊ,
 भाषा* नाम भाष्यो ऐसी भाषा धन मानिये;
 भाषा जो न जानत सो कैसें संस्कृत जानै,
 भाषा जो न जाने ताहि शाहामृग जानिये.

२

(संपूत-कपूत लच्छन.)

कोश उदार प्रभुहित त्यों, सत रीति सदा बलदेव लहावत,
 नाम प्रसिद्ध सभा अति चातुर, आतुर आनंद आनि गहावत;

*हिंदी भाषाकि महत्ता बताते कहा है कि,—

हिंदुस्थानी सोरहि आना, अवे तवेका वार,

ईकडं तिकडं आठहि आना, सुं सा पैसा चार. १

क्यो न करै कुलको अधिकार, स्वरूप भरे दुख दूर बहावत,
 घूतनको मत कृतत हैं नित, ते मजयूत सपूत कहावत १
 आयस मात पिताकी न मानत, नीति तजे कुल रीति बहावत,
 नाम त्यों रूप लजावनो हे, सतसगिनहूको गरूर गहावत,
 एकहु काम सरो न कर्चौ, निरलज अधी लघु लोभ लहावत,
 कायर काम कुमारगके, फलिकाल ठये ते कपूत कहावत २

(शुभाशुभ स्त्री लच्छन)

शील सुख सुलक्षण लाजमें, शुद्ध सुधा बच हैं मन भायक,
 प्रेम पतिव्रतसो परिपूरण, संपति साज सजे सब लायक,
 चातुरि चचलताको तजे गति, मद निरालस धीगुण लायक,
 भाग्य भरे पतिभाव सराहत, ते युवती जगमें सुखदायक १
 रोष अहारको रूप चनी, पर मदिर माझ सदा सुतिया है,
 मद मलीन अलज अलायक, क्षोभ तजे त्यों दली छुतिया है,
 देत सचे विग जा सतसगर्सो, धाम रही चहुधा छुतिया है,
 दूर करौ भुतियाको भयानक, ऐसी तियातें मली छुतिया है २

बलभद्र.

(प्रियार्थग दर्शन)

अवलंबी अलिन नलिनही कीरिकाके,
 अमीकुंभ ऊपर अर्नग धाय दीनी हे,
 केंधो शित कंठ कंठ राजित गरल दुत्ति,
 कनक गिरिन मनी मजरी नवीनी हे,
 सिसुताकी तनुता तनक तम घरी जनु,
 तामसकी रीतितें तरुनी तेज कीनी हे,
 श्यामाके अनुप कुच अग्रनकी श्यामताइ,
 माना बलभद्र रसराज छवि छीनी हे १
 केंधो उठबाचल उराजे राफा जोवनको,
 केंधो अथवत शिशुतार्ह भान गति हे,
 अंतरको राग किंधो बाहिर प्रगट भयो,
 केंधो मुखरागकी झलक झलकति हे,

कंधो चंद्रवदनीके वदन गयंद कुंभ,
 कंधो उभै भास राजे शिवही शक्ति हे;
 कंधो बलभद्र जाभी मूल द्वे सजीवनको,
 एसी कुच अग्रकी अरुनता लखति हे. २

पाटल नयन को कनक कैसे दल दोउ,
 बलभद्र वासर उनिदी देखी बालमें;
 शोभाके सरोवरमें बाडवकी आभा कीर्ण,
 देव धुनि भारती मिली हे पुण्यकालमें;
 काम करवत कंधो नासिका उडुप वेठो,
 खेलत शिकार तरुनीतें मुखताल्में;
 लोचन सितासिततें लोहित लकीर मानो,
 फंदे जुग मीन लाल रेशमके जालमें. ३

तारसो तगासो वार लीकसो लु कंजनसो,
 छंदी केसो छंद कहिवमें छलियतु हे,
 चितही परत चोकी जात ह चितौननि जहां,
 नेननिकी गतिको गुमान दलियतु हे,
 पगन धरत धरकत हियो बलभद्र,
 डगनि भरत डग डग हलियतु हे;

कच कुच हार चीर वारनके भात भार,
 ऐसे छीने लंकपे निसंग चलियतु हे. ४

विषकी लतासी विनु पात दुहितासी आसी,
 विष अलपासी भामिनीकी यहि भांति हे;
 कुच चक डेरिनकी डोरी मखतूलहकी,
 जानी अमीघट चढी पिपिलिका पाति हे;
 जठर अगिनी आभा डोरी नाभिकूपकीकि,
 चतुर चितौनिर्म चिहुंठी अहटाति हे;
 अल्प उदर पर तेरे रोमराजी किधों,
 बलभद्र वानीकी विषाचिहीकी ताती हे. ५

पातिप मदनको वदन झलकत अति,
 रूपकी तरंग तामें प्राण तानियतु हे;

जीवनकी जोति प्रगमगति प्रभाकी मानो,
अजिर उदोत ताको उर आनियतु हे,
मुकुरतें अमल बनायो हे विधाता विधु,
बल्लभ यह अनुमान मानियतु हे,
मेरे जान झाँझ झलकत तेरे आननको,
ताहिको उच्यारो जग जोन्ह जानियतु हे

६

बल्लभ

(विविध विचार-कवित्त)

कत बिन कामिनी ज्यों बसत बिन कोकिल ज्यों,
वत बिन गज जैसे फज बिन सर है,
दीप बिन मंदिर महीप मिजलस बिन,
मान बिन दान जैसे शीश बिन घर है,
पानी बिन मोती ज्यों वाणी सुमरण बिन,
अक्ष बिन ज्योति जैसे पक्षी बिन पर है,
रीस बिन बल्लभ कवित्त रस चित्त बिन,
गाति बिन हस जैसे मति बिन नर है
दूधको कहत क्षीर दुधकों सु घास कहे,
दारमोको अनार नाम धरिक् रहत है,
दर्पणको आरसी त्यों ठलकों कहत पत्र,
दूनीको जहान काहि मुसका छहत है,
बल्लभ दफार कहं कान परे बाके कछु,
छोड़िकें भकान म्हातें भागन चाहत है,
दाइहकों ताई नाई कहिकें पुकारें और,
देयबेमें बरतें वे ददा ना कहत है
देवतासों सुर कहे दानव असुर कहे,
दालनसों पेती कहे धा कहत दाइसों,
देहरेकों मठ कहे देवीकों भवानी कहे,
दासकों मुनका कहे तापता दरियाइसों,
दपणकों बटा कहे दारम अनार कहे,
द्वारिकाको कृष्णपुरी कहे चतुराइसों,

१

२

दियेकों चिराग कहे दानेकों खुराक कहे,
देवेकों कछु नांहापै ददा केत भाईसों.

३

वालकृष्ण.

(आर्यअनार्यविचार.)

प्यार नां प्रभूसों बडे लंपट लवार जार,
यार कलदारके पुकारे पैसे पैसे है;
धर्मसे सरोवरकों पकिल करन काज,
मानौ यमराजकी सवारीहूके भैसे है;
तीरथ पुरान व्रत मंदिर विरोधी क्रोधी,
इनके समान और निदक न ऐसे है;
कहे कवि वालकृष्ण दिलमें विचार देखो,
ऐसे जोपें आर्य तो अनार्य फेर कैसे है.

१

वालचंद.

(देवगुरू स्वरूप.)

सकल पातक हर विमल केवल धर,
जाको वास शिवपुर तासुं लेह लाहिये;
नाद वृंद रूप रंग पाणि पाद युक्त अंग,
आदि अंत मध्य भंग जाकों नहि पाहिये;
सघेण सठाण जाण नाहि कोइ अनुमान,
ताको करतहि ध्यान शिवपुर जाहिये;
भणे मुनि वालचंद सुनो हो भाविक वृंद,
अजर अमर पद सोय देव जानिये.

१

जाको क्रोध नाहि मुल मन माया लोभ दूर,
कर्म किया चकचूर जासु मोह नाणिये;
जाकों नमें इंद्र चंद्र सूर वृंद मुनिवृंद,
जीणंद अनंत गुण मनमें प्रमाणिये;
जाकों है अनंत ज्ञान करत मुक्तिप्रदान,
अहोनिश ताकों ध्यान अंतर बखानिये,
भणे मुनि वालचंद सुनोही भाविक वृंद;
तरण तारण गुरु तार भव पाइये.

२

याजिद.

(उपदेश चिन्तामणि-छन्द अरल)

- सुंदर पाई नेह, नेह कर रामसें,
क्या लब्धावे काम, धरा-धन-धामसें,
यह सन रग पतंग, सग नहि आवसी,
जमहूके दरबार, मार घहु स्वावसी, १
- गाफ्त मूढ गमार, अचेतन चेत रे,
समजी सत मुजान, शिखामन देत रे,
धिपयामाहि बेहाल, लगा तिन रेन रे,
शिर वेरी जमगज, न सूझे नेन रे २
- निलफी अदर देख, के तेरा फोन हे,
चलै न भेला साध, अफेला गीन हे,
देह गेह धन पार, इनुसे चित दिया,
रट्या न निशदिन गम, फाम तें क्या किया ३
- खान अरु मुलतान, बडे जग कावते,
देश विदेशा माध, के हुकूम चलावते,
स्वाग तणे बल भोम, बयाफी स्वाटिया,
जीय गये जम झाल, मिछे तन माटिया ४
- जीमत रोज जरूर, मिठाइ ताजिया,
चौसर चौपाट ढाल, रमंता याजिया,
छल बल चतुरा छेल, अचीछल नारिया,
खेले आतस खेळ, फटाका बारिया ५
- रहते मीने छेल, सदा रग रागमें,
गजरा फुल्य गुथत, घरता पागमें,
दर्पणमें मुख देख, के मुखवा तानता,
जगमें बाका फोय, नाम नहि जाणता ६
- सुंदर नारी संग, हिंदोले झुलते,
पेर पाटवर अंग, फरता फूलते,
जोते खूबी खेळ, के बैठ बजारफी,
सो बी हो गये छेल, देरी छारफी ७

अण कलया मेल, भंडारी ऊडियां, देश विदेशा मांहि, चलंती हुंडियां; जाके आगे देश, कमाता वेठिया, हो गये फना मकाम, के एसा शेठिया.	८
गादी तकिया नाख, रहेते गमरमें, रेशम धोती पेर, कंदोरा कमरमें; ज्याका चलता हुकुम, मसवे मलकमें, कोटिधज शाहुकार, विलाने पलकमें.	९
सब दिन चाकर पास, रहंते सासते, कामकाज करनार, के वोत गुमासते; लेखा करते रोज, हजारों लाखके, हो गये छिन एक माह, के ढगले राखके.	१०
नित जाके दरबार, जडंती नोवतां, मत्री पास प्रवीन, करंता मोवतां; चतुरा जीना चोज, तरक अति सूजता, तीनांहूका जगत, नाम नहि वूजता.	११
जहं आगे मल रोज, अखाडा मंडते, खग बल खाते खंड, उड दंडा दंडते; थता कचेरी थाट, छटा रंग छायके, सूता ताणी सोड, मसाणुं जायके.	१२
धरे रहते रोज, के अबके रावके, मछराले मेवास, के को धन मावते; कनक छडी ले हाथ, नकी पोकारते, धरे रहे सब राज, गये जख मारते.	१३
बंका किला बनाय, के तोपां साजियां, माते मंगल द्वार, केत ते ताजियां; नित प्रत आगे आय, नचंती नायका, याकुं गये उपाड, दूत जमरायका.	१४
जोगी करते जोग, के आसन साधते, अखंड भभुत लगाय, जटा सिर बाधते, साधि कल्प केदार, के ततपर होय रे, काल व्यालकी झपट, वचा नहि कोय रे.	१५

यह दुनिया घार्जिद, पलकफा पेखना, यामें बहुत विकार, फहौ क्या देखना, सच जीवनका जीय, जगत् आधार हे, जो न भजे भगवत, छठीमें छार हे	१६
गमनामकी छट, फाँ है जीवको, निस चासर कर ध्यान, सुमर तूं पीवको, यहै वात्त प्रसिद्ध, कहत सच गाम रे, अधम अजामिळ तरे, नारायण नाम रे	१७
फेते अर्जुन भीम, जरा जसधतसे, फेते गिने असस्व, घली हनमतसे, जिनकी सुन सुन हाफ, महा गिर फाटते, तिन घर न्यायौ फाल, जो इव्हि ठाटते	१८
हो जाना कलु मीठ, अंत कह सीत हे, देखो हृदय विचार, या देह अनीत हे, पान फलों रस भांग, अत कह रोग हे, प्रीतम प्रभुके नाम, विना सब सोग हे	१९
नभियोंका सिरताज, स्वम ठरगाहदा, सय ना दाम कबूल, रसूल खुदाहदा, उगमत दे पुत जिवन, उत्सदी जानसर, फाँन साहिवनू अकबै, याँ नहि याँ कर	२०
विना चासका फूल, न ताहि सराहिये, बहुत मिश्रकी नारि, सौ प्रीति न चाहिये, सठ साहिवकी सेव, कबहु नहि कीजिये, विद्या विद अरु जिव, अक़ाज न कीजिये	२१
इक राम कहत कलमा, न हूँघा फोइ रे, अर्द्ध नाम पाषान, तरा निर छोइ रे, कर्मकी फेतिफ वात्त, मिला न्है जायगे, हाथीके असवार, कुत्ते क्यों स्वायगे	२२
कुजर मनमें मत्त, मरे तो मारिये, कामिनि कनक फलेस, टरे तो टारिये,	

- हरिभक्तनसों नेह, पले तो पालिये,
रामभजनमें देह, गले तो गालिये. २३
- जेती बोली बानी, सो तो वह रही,
हृदय कपटकी बात, तो मुखसों का कही;
बोले बोली बोल, बुलाई पीवकी,
ऊपरकी सब जूठ, फलेगी जीवकी. २४
- घड़ी घड़ी घडियाल, पुकारे कही हे,
बहुत गइ हे अवध, अलपही रही हे,
सोवे कहा अचेत, जाग जप पीव रे,
चलि हे आजकी काल, बटाऊ जीव रे. २५
- पानौ लगे न ताहि, तहां लागोय रे,
रीते हाथ न जाय, जगत् सब जोय रे;
यह माया बाजीद, चले क्या साथ रे,
वहते पानी पूर, पवाले हाथ रे. २६
- पाहन कोरा रहे, वरसते मेहमें,
धाल धरो बाजीद, दुष्टता देहमें,
डसे औचका आय, मूड गहि रोइये,
सर्पहि दूध पिलाय, वृथा हो खोइये. २७

विहारी (पहिला.)

(श्रीराधाकृष्ण भक्ति-शृंगार.)

- मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोइ,
जा तनुकी झाँई परे, श्याम हरित कृति होइ. १
- सीस मुकुट काटि काछनी, कर मुरली उर माल,
यहि बानक मो मन बसौ, सदा विहारीलाल. २
- मोर मुकुटकी चंद्रिका, यों राजत नदनंद;
मनु शशि शेखरके अकस, किय शेखर शत चंद. ३
- अपने अंगके जानिके, यौवन नृपति प्रवीन;
स्तन मन नयन नितंबको, बडा इजाफा दीन. ४
- देह दुलहियाकी बढे, ज्यों ज्यों जोबन ज्योति,
त्यों त्यों लखि सौतिन सबे, वदन मलिन दुति होति. ५

मानहु मुख दिखरावनी, फुलहिन करि अनुराग,	
सास सदन मन छलनहु, सीतिनि दियो सुहाग	६
नेह न नैननको फलु, उपजी बडी बलाय,	
नीर भरे नितप्रति रहें, तरु न प्यास बुझाय	७
साजे मोहन मोहको, मोही करत कुचेन,	
कहा करों उलटे परे, टोने छेने नेन	८
(दम्पति विरह, प्रेम)	
वामा भामा कामिनी, कहि बोलो प्रानेश,	
प्यारी कहत छजात नहि, पावस चलत विदेश	१
होही वौरी बिरहबश, कै बौरो सब गाव,	
कहा जानिये कहत क्यों, शशिहि शीतकर नाव	२
सोवत जागत सुपन बश, रस रिस चेन कुचेन,	
सुरत श्यामघनफी सुरत, बिसरेहु बिसरे न	३
प्रगट्यौ आग बियोगफी, बधा बिलेचन नीर,	
आठो जाम हियौ रहे, उच्चो उसास समीर	४
औरे भौंति मये व ये, औसर चदन चद,	
पति विन अति पारत बिपति, मारत मारुत मद	५
तजत हठाव न हठ पर्या, सठमति आठो जाम,	
भयो वाम वा वामको, रहत काम बेकाम	६
मरन मलो घर बिरहते, यह विचार चित जोय,	
मरत मिटे दुख एकको, बिरह दुहुँन दुख होय	७
लाल तिहारे बिरहकी, अगनी अनुप अपार,	
सरसे बरसे नीरहु, सरसे मिटे न मार	८
देखत दूरे कपुरलौ, उहै जाय निन छाल,	
छिन छिन जात परी खरी, छीन छषीली बाल	९
कहा कहों वाकी वशा, हरि प्राणनके ईश,	
विरह ज्वाल जरयो लखे, मरिबो मयो अशीस	१०
रग राति राते हिये, प्रीतम लिखी बनाय,	
पाती काती बिरहकी, छाती रही छायाय	११
कर ले चूमि चढ़ाय शिर, उर छायाय मुज भेंट,	
छहि पाती पियफी लखति, नांचति धरति समेट	१२

कागद पर लिखत न बनत, कहत संदेश लजात;	
कहि है सब तेरो हियो, मेरे हियकी बात.	१३
अति अगाध अति ओथरो, नदी कूप सर वाय;	
सो ताको सागर जहां, जाकी प्यास बुझाय.	१४
गति दै मति दै हेत दै, रस द जस दै दान;	
तन दै मन दै सीस दै, नेह न दीजै जान.	१५.

(नायिकादि शृंगार.)

कहाँ कुसुम का कौमुदि, कितक आरसी जोति;	
जाकी उजराई लखे, आंखि ऊजरी होति.	१
नख सिख रूप भरे खरे, तउ मांगत मुसक्यान,	
तजत न लोचन लालची, यें लल्योंही बान.	२
ज्यों ज्यों जोवन जेठ दिन, कुचमिति अति अधिकात;	
त्यों त्यों छिन छिन कटि छपा, छीन परत नित जात.	३
भई जु तनछवि बसन मिलि, बरनि सकै सु न बेन;	
अंग ओप आंगी दुरी, आंगी अंग दुरे न.	४
चलन न पावत निगम-पग, जग उपजो अति त्रास;	
कुच उतंग गिरिवर गह्यो, मीना मेन मचास.	५
कुचगिरि चढि अति थकित न्है, चली दीठ मुख चाड;	
फिर न टरी परि ये रही, परी चिबुकके गाड.	६
दुरति न कुच बिच कंचुकी, चुपरी सारी सेत,	
कवि अच्छरके अरथलों, प्रगट दिखाइ देत.	७
चलत घेर घर घर तऊ, धरी न घर ठहराति;	
समुझि उही घरकों चले, भूलि उही घर जाति.	८
सदन सदनके फिरनकी, सद न छुटे हरिराय;	
रुचे तितें बिहरत फिरो, कत बिरहत उर आय.	९.

(प्रस्ताविक, अन्योक्ति इत्यादि.)

तंत्री नाद कवित्तरस, सरस राग रातिरग;	
अनबूडे बूडे तरे, जे बूडे सब अंग.	१
भजन कह्यो तातें भज्यो, भज्यो न एकौ बार;	
दूर भजन जातें कह्यो, सो तें भज्यो गँवार.	२
लोपे कोपे इंद्रलों, रोपे प्रलय अकाल;	
गिरिधारी राखे सबै, गो-गोपी-गोपाल.	३

जम करि मुंह तरहरि पर्या, घर घर हरि चित लाव,	
विषय तृषा परिहरि अजों, नरहरिके गुन गाव	४
कोऊ कोटिक संग्रहो, कोऊ लाख हजार,	
मो सपति यदुपति सदा, विपति विदारनहार	५
जप माला धापा तिलक, सरै न एको काम,	
मन काचे नाचे ध्या, सौंचे राचे राम	६
जगत जनायो जिहि सकल, सो हरि जान्यो नाहिं,	
ज्यों आँखिन सब देखिये, आखि न देखी जाहि	७
तौ लमि या मन सदनमें, हरि आवैं कोहि बाट,	
निपट विकट जबलों जुटे, खुले न कपट कपाट	८
कैसे छोटे नरनसों, सरत बदनके काम,	
मदयो दमामा जात क्यों, सौ चूहेके चाम	९
बडे न हुजे गुनत बिन, बिरद बडोई पाय,	
कहत घतुरेसों कनक, गहनों गदयो न जाय	१०
सगति सुमति न पावही, परे कुमतिके धंध,	
राखो मेलि कपूरमें, हींग न होय सुगंध	११
समै सम सुदर सबै, रूप कुरूप न कोइ,	
मनकी रुचि जेती जितै, तितै तिती रुचि होइ	१२
वसै बुराई जासु तनु, ताहीको सनमान,	
भलो भलो कहि धौंडिये, खोटे ग्रह जप दान	१३
कहै इहै धृति सुमति सो, यहै समयने लोग,	
तीन दबावत निसकही, राजा पातक रोग	१४
नहि पराग नहि मधुर मधु, नहि विकास यहि काल,	
अली कलीहीतें बंन्यो, आगे कोन ह्वाछ	१५
(जयशाह औ ग्रंथप्रकाशा)	
चलत पाय निगुनी गुनी, घन मनि मोती माल,	
भेट भये जयशाहसों, भाग चाहियत माल	१
घर घर हिंदुनी तुरकिनी, देत असीस सराह,	
पतिनु राखि चावर चुरी, पति राखी जयशाह	२
यों बल फाटे बलखतें, ते जयशाह जुवाल,	
उदर अघासुरके परे, ज्यों हरि गाय गुवाल	३

- हुकुम पाय जयशाहको, हरि राधिका प्रसाद;
करी विहारी सतसई, भरी अनेक सवाद. ४
- सतसैयाके दोहरा, ज्यों नावकको तीर;
देखतके छोटे लगे, घाव करे गंभीर. ५
- ⁺ ^८ ^१ ^७ ^६
संवत् ग्रह-शशि-जलधि-छिति, छठ तिथि वासर चंद;
चैत्र मास पछ कृष्णमें, पूरन आनंदकंद. ६

विहारी (दुसरा.)

(संगदोष असर.)

- वेठिये न जहां तहां कीजे न कुसंग संग,
कायरके संग शूर भाग हेपें भाग हैं;
काजलकी कोटडीमें केसोही जतन करे,
काजलकी एक रेख लाग हेपें लाग हे,
देखो एक वागनमें फूलनकी वासनमें,
कामिनीके संग काम जाग हेप जाग हैं;
कहेते विहारीलाल कठिन विराग पथ,
सोवतको प्रेमफंद लाग हेपें लाग हे. १
- प्रेमके बजारमें विचार कर बैठो मन,
कामकी दुकानहमें, सान सब हार्यो हैं;
लोभको गुमास्ता तँह मिले अति आदर दे,
दयाके दिवान जाने मायापास डार्यो हैं;
क्रोध कोटवाल तामें, प्यादेने पकर पायो,
मोखन बजीर जाने, बसवो बडार्यो है,
अब बन बेपार कैसें करहो विहारीलाल,
कंचन सो शहेर उन पंचुनें विगार्यो हैं. २
- मान हेमवास तामें धुंधट सुकोट होट,
अधर कपाट आड अंजन बनाई हे;
भ्रकुटी धनुष खेंची मारत कटाच्छ बान,
नासिका कमान एहि गढपें चढाई हे;

काहेकू छड़त अति जीति न शकेगी आली,
 वेतो महाराज जाकी जगमें दुहाई हे,
 मेरी सौह मिल तोको मिलिये बिहारीलाल,
 नातर अनत फोज तोपर चढ़ाई हे ३
 मृगसी चपल आखे चपला लजानी मानु,
 भोंहें घन हरे चाप घनमें छिपानौ है,
 नासिका बिलोकी बन डोलत रहत फीर,
 श्वेत दात देखो जेसो दारिमको दानो हे,
 सपुट कवळ कुच श्रीफलसें शोभा ठेत,
 रिसेरी बिहारीलाल तो बिन दुखानो हे,
 चित्ता जेसी एक शीनी मुसत पवन लागे,
 बाली गजराज तेरी चालमें बिकानो हे ४

धीरवल-(ब्रह्म)

(माधवमहिमा)

जो तुम छत्रकि छाह चलावत, तो न कहु कछु में रिधि पाइ,
 जो तु घराबर भीख मगावत, तो न कहु कछु आप दयाई,
 ब्रह्म भने बिनती इतनी अब, छोरुं नहिं हरि तो शरणाई,
 वीनदयाल वृषा करि माधव, मोहि कहा सब तोहि बढाई १

(अकबरको नीतिशिक्षा)

पूत कपूत कुलञ्चन नारि, छराक परोंसि लजावन सारो,
 बंधु कुचुद्धि पुरोहित लपट, चाकर चोर अतीत धुतारो,
 साहेब सूम अराक तुरग, किसान फठोर बिवान नकारो,
 ब्रह्म भने सुन शाह अकबर, बारह बांधि समुद्रमें डारो १
 दूत दयामनो मूरख ब्राह्मन, नारि निरंकुश कायथ भोरो,
 स्वार कुवीर कुलञ्चन पोरियो, आकरो बानियो चाकर खोरो,
 वैष असिद्ध अनाथ समासद, कूर कलावत काटनो घोरो,
 ब्रह्म भने सुन शाह अकबर, बारह बांधि समुद्रमें डारो २

(नम्रता)

नमे तुरी बहु तेज, नमे दाता धन वेतो,
 नमे अब बहु फल्हो, नमे जलधर बरसतो,

नमे सुकविजन शुद्ध, नमे कुलवंती नारी,
 नमे सिंह गय हनत, नमे गजवेल सम्हारी;
 कुदन इमि कसियो नमे, वचन ब्रह्म सच्चा चवे,
 पुनि सूखा काष्ठ अजान नर, भाज पडे पर नहि नमे. १

(शृंगार, समझ्या.)

एक समे नवला तियसें निशि, केलि करी जव श्याम सिधारे,
 आलसवंत उठ्यो नहि जात, परेहि परे कर केश संवारे;
 श्रौननतें तरवन्न गिर्यो इक, ब्रह्म भने उपमा उन भारे,
 मायोहि राहु धको रथ चंदको, दूटि पर्यो रथचक्र सुनारे. १

कुच ऊपर मोतिन माल फवे, गिरिराज सुता सम रूप ढरे,
 भनि ब्रह्म मिली अवली जमुना, सम संगम कोटिन पाप हरे;
 तियके सु नख क्षतकी उपमा, हियमांझ चुभी द्रगतें न टरे,
 जनु कालिमा भेटनकों रजनीपति, मज्जन तीरथराज करे. २

सखी भोर उठी विन कंचुकि कामिनि, कान्हुरतें करि केलि घनी,
 कवि ब्रह्म भने छवि देखतही, कहि जात नहीं मुखतें वरनी;
 कुच अग्र नखक्षत कंत दियो, सिरनाइ निहारति हे सजनी,
 शशि शेखरके शिरसे सुमनो, निहुरे विधु लेत कला अपनी. ३

एक समै हारि धेनु चरावत, वेन वजावत ऐन रसालहि,
 दीठि भरी मनमोहनकी, वृषभानसुता उर मोतिन मालहि;
 सो छवि ब्रह्म लपेटि हिये, करसों कर ले करकंज सनालहि,
 ईशके शीश कुसुंभकी माल, मनो पहिरावत व्यालनि व्यालहि. ४

काम कलाधिक राधिका आधिक, गतलों कामकी वात बनाई,
 कामसों कान्हुर दे कुचपें कर, सोइ रहे रति काम किं नाई,
 ब्रह्म जराइकी मुद्रिका दे सु, सखी लखि कोटिक भांतिन भाई,
 देखनकों पियको तियके, हियकी अखियां मनो बाहिर आई. ५

सबकी सुनिए सबसों कहिए, सब देखि सबे कछु कीजत हे,
 जिन रूसत रूसत हो जियसें, तिनके बिछुरे अब जीजत हे;
 कवि ब्रह्म भने विनु प्रानपिआ, इन प्राननिकों न पतीजत हे,
 छतियां न फटी इतने दुखतें, अलि पाहन हूतो पसीजत हे. ६

बेनी.

(अस्तोदय-कवित)

पृथु नल जनक गयाति मानघाता एसे,
येते भूप भये यरा क्षितिपर छाड़गे,
फालचक्र परे शक्र लकर न होत जात,
कहायें गिनावों निधि बासर बिताइगे,
बेनी साज सपति समाज साज सेना कहा,
पापन पसारि हाथ स्रोले मुख जाइगे,
क्षुद्र क्षितिपालनकी गिनती गिनावे कौन,
रावनसे बलीते बबूलेंसे बिलाइगे

२

(तुलसी महिमा)

वेदमत शोधि शोधि देखिके पुरान सबै,
संतन असंतनको भेद को बतावतो,
कपटी कपूत कूर कलिके कुचाली लोग,
कौन रामनामहूकी चरचा चलावतो,
बेनी कवि कहै मानौ मानौ रे प्रमाण येही,
पाहनसे हिये कौन प्रेम उमगावतो,
कलिके कुचाली लोग कैसे भवपार होते,
जो न रामायण यह तुलसी बनावतो

१

(कर्तव्य-अकर्तव्य)

बाधे द्वारि फाकरी चतुर चित्त फाकरीको,
उमिरि वृथा करी न रामकी कथा करी,
पापको पिनाकरी न जानै नाक नाकरीसो,
हारिलकी लाकरी निरंतरही नाकरी,
ऐसी सूमता करी न कोउ समता करी सो,
बेनी कविता करी प्रकाशता सता करी,
न देव धरचा करी न ज्ञान चरचा करी,
न दीनपे दया करी न वापकी गया करी

२

(भीराभाकृष्ण शृंगार, ३)

बदन सुधाकरे उधारत सुधाकरे,
प्रकाश बुधा करे सुधा करे सुधा करे,

चरन धरा धरे मृनाल ऊधरा धरे सु,
 ऐसे अधरा धरे ये विव अधरा धरे;
 सु वेनी द्रग हा करे निहारत कहा करे,
 सु वेनी कविता करे त्रिवेनी समता करे;
 सुरतमें सिकरे सु मोहनें वसी करे,
 विरंचिहू यसी करे सु सौतिन मसी करे. १
 वियत विलोकतही मुनिमन डोलि उठे,
 बोली उठे वरही विनोद भरे वन वन;
 आकुल विकल व्हे विकाने रे पथिक जन,
 ऊर्ध्वमुख चातक अधोमुख मराल गन,
 वेनी कवि कहत महीके महा भाग भये,
 सुखद सयोगिन वियोगिनके ताप तन,
 कंज पुंज गंजन कृपीदलके रजनसो,
 आये मान भंजन ये अंजन वरन घन. २

(सचैया.)

रतिरंग जगी चख मिजत ज्यों, त्यों त्यों मोहन चोपतसो,
 कवि वेनि हहा करि हासि कियो, सो जगावे न जागत कोपतसो;
 कर मडित मोतिनके गजरा, द्रग मीडत आनन वो पतसो,
 अरविदनको पकरे मनोतारे, कलानिधि भूपतिसो पतसो. १
 छहरे सिरपें छवि मोरपखा, उनके नथके मुक्ता लहरें,
 फहरे पियरों पट वेनि इते, उनकी चुनरीके झवा झहरें;
 रसरंग भिरे अभिरे हैं तमाल, दोऊ रस ख्याल चहे लहरें,
 नित एसें सनेहसों राधिका श्याम, हमारे हियेमें सदा ठहरें. २

(कवित्त.)

तरनि तनूजा तीर फूले हे निकुंज पुंज,
 तेसी ये सुभग सांझ सांवरी सुहाइ हे;
 तेसो दूजी ओर तें मयंक जगिमगि उद्यो,
 ऊजरे प्रकाशमें विलास पियराइ हे;
 किरने चमकि चहूं ओरन बिहरि गई,
 जलमें झलक परें ओरे छवि छाइ हे;
 बेनी मनि मानिक प्रसून पत्र पंखी पछ,
 यहै जूथि कानन झिलमिलात झाइ हे. १

बैताल.

(राय विक्रमको उपदेश)

- प्रथम ध्यान जब लगी, तबहिं कछु धीर न सूझे,
 सुघ बुघ गई हेराय, तबहिं संमुख है जूझे,
 विरह तेग तलवार, सेउ अति बज्जर भारी,
 तपत रहै दिन रेनि, घाव अतस तन कारी,
 नित मरना नित जीवना, सो रेनि पलट यां दीजिये,
 बैताल कहे विक्रम सुनो, जो मित्र कहे सो कीजिये १
 अरुण तेज अति रूप, बरन उनको है न्यारो,
 तिमिर नाश परकाश, जगतको सिरजनहारो,
 देव आदि नर भूप, ध्यान उनहीको धारे,
 प्रउय पयन जउ नाश, भये इनहीति सारे,
 बैताल कहे विक्रम सुनो, सकल लोक जिनतैं तरत,
 भानू प्रतापि नित जान कर, नमस्कार सबहिं करत २
 बचन छन्यो बट्टिराज, बचन कीरव मत खंडो,
 बचन करन छो कोश, बचन कीरव बन महो,
 बचन लाग हरिचंद्र, नीच घर नीर समर्पा,
 बचन लाग जगदेव, शीश ककालिहि अप्यां,
 बाचा पलट बैताल मनत, तौ कर गई निहा काटिये,
 उर जाय लक्ष विक्रम सुनो, सौ बोडि बचन नव पडिये ३
 शशि विनु सूनी रेन, ज्ञान विन हिरदय सूनो,
 कुल सुनो विन पुत्र, पत्र विन तरुवर सूनो,
 गज सुनो विन दंत, सलिल विन मायर सूनो,
 विप्र सुनो विन वेद, बास विन पुहप विहूनो,
 सुनो राव सामंत विन, अरु घटा सुन विन दामिनी,
 बैताल कहे विक्रम सुनो, पति विन सूनी कामिनी ४
 दया चढ़ हो गई, धर्म घसि गयो धरनिमें,
 पुन्य गयो पाताल, पाप भो बरन धरनमें,
 राजा करे न न्याय, प्रजाकी होत खुवारी,
 घर घरमें थे पीर, दुखित भे सब नर नारी,-

अब उलटि दान गजपति मगे, शील संतोष कितै गयो,
वैताल कहे विक्रम सुनो, यह कलियुग प्रकट भयो.

५

नही इंद्र नहि चंद्र, नही तारे तारागण,
नहि ब्रह्मा नहि विष्णु, नही नारद नारायण,
नही राज्य नहि पाट, नही धरणीधर चावर,
नहीं अंब नहि खंब, नही भरथरी दिगंबर;

नहि रावण नहि राम था, (तौ) नहि इतना विस्तार था,
वैताल कहे विक्रम सुनो, (एक) अंधाधुंध गुब्बार था.

६

दिये नौ सौ हाथी, नौ तुरंग पचास गयंदन,
दिये सो सुंदर पद्मिनी, कि दिये भाट निरंजन;
दिये केसर कस्तूरि, कि दिये मलयागिरि चंदन,
(दिये) चंबर चीर नग हीर, लाल माणिक जड खंभन,

सकल सभाके राव तुम, सो मन विचार चितै धरौ,
वैताल कहै विक्रम सुनो, छप्पनकि डोर कागद चढो.

७

डबकर पढे कवित्त, पास मोची तुक जोरे,
मुल्लां पढे कवित्त, नाव गहिरेमें बोरे;
भुजवा पढे कवित्त, जीव दश बीस जरावै,
धोवी पढे कवित्त, छान कर कल्प चढावे.

कुछ कुछ कवित्त नाऊ पढै, सो बाल मुंडि आगे धरै,
वैताल कहे विक्रम सुनो, अब कवित्त सब नर पढै.

८

हाथी चंचल होय, झपट मेदान देखावे,
राजा चंचल होय, मुल्कको सर कर लावे;
पंडित चंचल होय, सभा उत्तर दे आवे,
घोडा चंचल होय, सवारे युद्ध जितावे;

ये चारों तो चंचल भले, (सो) राजा-पंडित-गज-तुरी,

वैताल कहे विक्रम सुनो, (एक) नारी चंचल बहु बुरी.

९

पहिर झींग ले पटा, पाग शिर टेढ़ी बांधे,
घरमें तेल न लोन, प्रीति चेरीसों साधे;
वातनमें गढ लेय, युद्ध आंखिन नहि देखे,
अवघट घटमें जाय, त्रियासो मांगै लेखे;

जानत हे सो जानत सचै, दुख सुख साथी कर्मके,

चैताल कहे बिक्रम सुनौ, ये लच्छन नामर्दके

१०

मर्द शीशपर नवै, मर्द बोली पहिचाने,

मर्द स्वेलाये स्वाय, मर्द चिंता नहि माने,

मर्द मेय औ लेय, मर्दको मर्द बचावे,

गाढ सकरे काम, मर्दके मर्द आवे,

पुनि मर्द उनहीको जानिये, जो दुख सुख साथी ठन्के,

चैताल कहे बिक्रम सुनो, ये सब लच्छन मन्के

११

चोर चूप कर रहे, जाइ परघर धन दुके,

जोख चुप कर रहे, पिया बोल न सकै,

चेरी चुप कर रहे, शील साहेबको माने,

गंगा चुप कर रहे, घात एको नहि जाने,

वृक्ष और जल जीव सब, पवन साथ उड़ते रहे,

चैताल कहे बिक्रम सुनो, कवि होइ सो कुछ कुछ कहे

१२

चुप कर रहे कोइ चोर, रेन अचियागी पाये,

सत चूप बै रहे, मदीमें ध्यान लायाये,

बाधिय चूप बै रहे, फांसि पछी छे आवे,

छिछ चुप बै रहे, सेज परनारी पावै,

घर पीपर पात हस्ती धवण, कवि होइ सो कुछ कुछ कहै,

चैताल कहे बिक्रम सुनो, चातुर चूप कैसे रहे

१३

बुध भिन करे वेपार, नटि बिन नाच चलाये,

सुर भिन गावे गीत, अर्थ भिन नाच नचावे,

गुन भिन जाय निदेश, अकल भिन चतुर कहाये,

बल भिन गधि युद्ध, हॉम भिन हेत जनावे,

अन इच्छा इच्छा करे, अन दीठी चाता कहे,

चैताल कहे बिक्रम सुनो, ए मूरखकी जात हे

१४

पाठ बिन कटे न पथ, बाहु बिन हटे न दुरिजन,

तप बिन मिले न राज, भाग्य बिन मिले न सजन,

गुरु बिन मिले न ज्ञान, द्रव्य बिन मिले न आदर,

बिना पुरुष सिनगार, मेघ बिन कैसे दादुर,

वैताल कहे विक्रम सुनो, बोल बोल बोली हटे,
धिक्र धिक्र ए पुरुषको, मन मिलाइ अंतर कटे.

१५

रणमें अंझे शूर, टकापर जान गंवावे,
दाता दे जिन ज्ञान, आप भिक्षुक हैं जावे;
लोभी अति मतिवान, बैठ अपने घर खावे,
कादर रहे गुनवान, सदा वे प्रान बचावे;
लोभी औ कादर हे भले, जिन युद्ध पुन्य दोऊ चले,
वैताल कहे विक्रम सुनो, दाता शूर विरला मिले.

१६

मरो अवेदन बेल, मरो विरंगी टट्ट,
मरो बेरानी नार, मरो खसम निखट्ट;
बेह वामन मर जाव, जूठ बेरानी खावे,
पुत्र सो मर जाव, कूलमें दाग लगावे;
वचनहीन राजा मरे, तवे निद भरि सोहिये,
वैताल कहे विक्रम सुनो, गुन संभार का रोइये
जीभि योग अरु भोग, जीभि सब रोग बढ़ावै,
जीभि करै उद्योग, जीभि लै कैद करावै;
जीभि स्वर्ग लै जाय, जीभि सब नरक दिखावै,
जीभि मिलावै राम, जीभि सब देह धरावै;
जीभि ओंठ एकत्र करि, वांट सहारे तौलिये,
वैताल कहै विक्रम सुनौ, जीभि सम्हारे बोलिये.

१७

१८

टका करै कूलहूल, टका मिरदंग बजावै,
टका चढै सुखपाल, टका शिरछत्र धरावै,
टका माइ अरु बाप, टका भाइनको भैया,
टका सासु अरु स्वशुर, टका शिर लाड लडैया.
एक टके बिन टुक टुका, होत रात अरु रात दिन.
वैताल कहै विक्रम सुनौ, धिक जीवन एक टके बिन.

१९

(समस्या पूर्ति)

अवध छाड रघुनाथ, जाय बन खंड पहुँचे,
त्रिया हरी दशकंध, वहां संग्राम व गुच्छे,

- उया एकसु एक, लपण शक्ति जो पछार्यो,
पवनपूत हनुमंत, जाय दोनागिणि स्वार्था,
चाधी समुद्रकी हृद बल, नीर लहर ऊर्ध्वरी,
बैताल कहे विक्रम सुनौ, तादिन मञ्जु गिरिवर चरी १
- बिन मुख करै अहार, कठ बिन राग सुनावे,
बिन अंग चोला पहार, हस्त बिन तांग बजावे,
पाचो पडा जोर, शीश बिन पुरुष कहावे,
बिन ह्द्री ओलाद, त्रियाके निकट न जावे,
अचरज सुजान वृक्षो गुणी, (जाके) हाड मांस नहि और कर,
बैताल कहे विक्रम सुनो, (तो) कलियुग अक्षर कोन नर २
- एक अंग भुज चार, शीश सोढ्य जो कहिये,
चार चरणसों चलै, नेत्र चौंसठ युग लहिये,
द्वै मुख हैं परत्यक्त, चौदह भवनंम धाये,
नीति लोकम फिरे, देव सब पूजन आये,
सात दीप नव खड्गें, आनि अत जाको सुभार,
बैताल कहे विक्रम सुनो, योग शृंगार के वीररस ३
- सबल पुरुषको भजि, भजि करि तिरिया कीनी,
त्रिया गई जलमाहि, चोह बाफी हरि लीनी,
त्रियासैं त्रिया भई, जबे घट पुरुष सवारे,
जब वह कुहकी जाय, तीर धरधीके मारे,
ताहि स्ववाये रस ऊमजे, (सो) और स्ववाये होत यश,
बैताल कहे विक्रम सुनो, (कहुं) योग शृंगार के वीररस ४
- पग तुरग नहि तुरी, पूछ ऊंची नहि कृत्तर,
ग्याम बरण नहि रीछ, जमी खोदत नहि शूकर,
मुख बाको नहि बौल, नहि केहरि नहि चीता,
बिलग चढ़े आकाश, नही केहर नहि चीता,
जो तो तो बोझ कष्टू नहि, (जाके) हाड मांस नहि और कस,
बैताल कहे विक्रम सुनो, (कहु) योग शृंगार के वीररस ५

बोधा-बुद्धसेन.

(प्रेमपंथ विरलता.)

- अति छीन मृनालके तारहुते, तेहि ऊपर पाव दै आवनो है;
 सुइ बेहतें द्वार सु कीन तहां, परतीतिको टांडो लदावनो है;
 कवि बोधा अनी घनि नेजहुतै, चढि तापै न चित्त डरावनो है;
 यह प्रेमको पंथ कराल महा, तरवारकी धारपै धावनो है. १
- घरमै नरमै सरमै तरुमै, गजराजमै बाजमै जानि परै;
 मुक सारो मयूर कपोतनमै, मृग केहरि और जो चित्त अरै,
 कवि बोधा बजाइकै प्रीति करै, यह आतमज्ञान हियेमे धरै,
 हम राम—दोहाइ न झूठि कहै, यह प्रीतिसों मौत तर पै तरै. २
- वरही कर प्रीति पयोधरसों, परलै ब्रजराजके माथ मढै;
 पुनि रागसों प्रीति कुंग करी, वह राग कुंगके श्रिंग कढै,
 कवि बोधा न कौल अनोखी करी, यह प्रीतिकी रीति बिरंचि पढै;
 जब आसकी तेरी सईकी करै, तब काहे न संभुके सीस चढै. ३
- वह प्रीतिकी रीतिको जानत हे, तबहीं तो बच्यौ गिरि दाहनते,
 गजराज चिकारिकै प्रान तज्यौ, न जर्यो संग होलिका दाहनतें;
 कवि बोधा कछू न अनोखी यह, का बनै नही प्रीति निवाहनतें;
 प्रह्लाद जो ऐसी प्रतीति करै, तब क्यों न कढै प्रभु पाहनतें. ४
- यह प्रेमको पन्थ हलहल है, सु तौ बेद पुरानऊं गावत है,
 पुनि आंखिन देखो सरोजन लै, नर संभुके सीस चढावत है;
 वरही पर माथे चढै हरिके फल, जोगते एते न पावत है,
 तुम्है नीकी लगै ना लगै तौ भले, हम जान अजान जनावत है. ५
- शत यज्ञ करे ते सुरेस भये, करे जोग ते जीव जिआवत है;
 दिये दानके दौलति होति घनी, तपके किये राजको पावत है;
 कवि बोधा सु तौ हम चाहत ना, परतीतिकै प्रेम बढावत है,
 तुम्है नीकी लगै न लगै तौ भले, हौ अजान न जान जनावत है. ६
- लोककी लाज औ सोच परलोकको, वारिये प्रीतिके ऊपर दोऊ;
 गांवको गेहको देहको नातो, सनेहमें हांतो करै पुनि सोऊ;
 बोधा सुनीति निवाह करै, धर ऊपर जाके नही सिर होऊ;
 लोककी भीति डेरान जो मित तौ, प्रीतिके पैडे परै जनि कोऊ. ७

भाटन चाटन हाटनमें, भृगतृष्णा तरगिनि छै तरियै छै,
 पै वह चाउ नहीं बिसरै, भरमै भ्रमकी भवरी भरियै छै,
 बोधा कहै दिग कौनके या दुख, की गरुवी डलिया धरियै छै,
 जो न मिले दिल माहिर एक, अनेक मित्र तो कहा करियै छै ८
 कूर मिले मगरूर मिले, रनसूर मिले घरे सूर प्रभाको,
 मानी मिले औ गुमानी मिले, सनमानी मिले धविदार पताको,
 राजा मिले अरु रक मिले, कवि बोधा मिले निरसग महा को,
 और अनेक मिले तौ कहा नर, सो न मिच्यो मन चाहत जाको ९
 एक सुभानके आननपै, कुरवान जहा लगि रूप जहाको,
 क्यो सतनतुकी पदवी, लटियै तर्किक मुसकाहट ताको,
 सोफ जरा गुजरा न जहां, कवि बोधा जहा उजरान तहांको,
 जान मिठी तौ जहान मिलै, नहि जान मिलै तौ जहान कहां को १०
 लखि नीर बहै औ दवागि दहै, जमराज गहै कचहू निबहै,
 पुनि सेर लथेरे बिछुके उसे, बहुतेरे बिधा पुनि और सहै,
 कवि बोधा अनोखी कि साया लखौ, दुइ टुक ह फेरि न धीर गहै,
 तिग्छी तरवारि छै हँ तिरछे, दग लागे जिन्हें ते लगे न रहै ११
 सुख मूल गये दुख मूल लये, पुनि पाप रु पुण्य छडाइ बई,
 कबौ काम न क्रोध औ लोभ गहे, समुझै सपनेकी बदीकी बई,
 कवि बोधा गही धवि सावरेको, उरमै यह प्रेमकी यारी बई,
 तुम होउ सब महारानी अबै, हम तौ अथ राम निवानी भई १२
 दुख औ सुख पाप औ पुन्य दुओ, रसरामुको रोवत गावत है,
 गुन औगुन नेकी बदी हितू बैरि, सुधा विष एक सु भावत है,
 कवि बोधा अनादर आदर ऊपर, तै जिय तौ सुख पावत है,
 दिलवारपै जीछौ न भेट भई, तबलौ तरियो का कहावत है १३
 चाहिये बिरहानल दाहनसौं, निज पापन तापनको सहिये,
 चाहिये सुख तीलौ रहै दुखकै, दग धारियै बोधनकै चाहिये,
 कवि बोधा इतें पै हितू न मिलै, मनकी मनहीमे पचै रहिये,
 गहिये सुख मौन भई सो भई, अपनी करि काहूसौं का कहिये १४
 गहि पाइ ते भीलनी हाथ करौ, तू तहां न गुसा उर आनतु है,
 बनियै घर बोधा बिके गुरको, तिनपै रिस काहे न ठानतु है,

हिय फाटी तूं मेरी जो बात सुने, उनते घटिकाभै बखानतु है;
हंसिकै तब जाब दियो मुकुता वै, अजानतै जौहरी जानतु है. १५

(प्रस्ताविक.)

चामके दाम गुनीनके आम, यों विस्वाकी प्रीति पलीतको मेवा,
सेनापती सपनेमे सती अरु, भानुमती करै पांख परेंवा;
बोधा जुवान जथा सठकी, लखो फागुका वापु देवारीको देवा;
आखिर चूमिकै कौन गयो, करि धूमकी धाम लौ सूमकी सेवा. १

(नीति-कवित्त.)

हिलिमिलि जानै तासों हिलिमिलि लीजै आप,
हिलिमिलि जानै ऐसो हितू ना विसाहिये;
होय मगरूर तासों दूनी मगरूरी कीजै,
लघुता है चलै तासों लघुता निवाहिये;
बोधा कवि नीतिको निवेरो एहि भांति करो,
आपको सराहै ताहि आपहू सराहिये;
दाता कहा सूर कहा सुंदर प्रवीन कहा,
आपको न चाहै ताहि आपहू न चाहिये. १

(इश्क-दोहा.)

उपजै इश्क जु अंगतै, रहत अंगके बीच;
हाड मांस गलियो करै, इश्क न जानत नीच. १
लगानि बहे थल एक लगी, दूजे ठोर बढै न;
कीच बीच जैसे गुरा, खुचकै फिरि उचटैन. २
नेहा सब कोऊ करे, कहा करै मै जात,
करिवो और निबाहिनो, बडी कठिन यह बात. ३

वंशगोपाल.

(सूम-लच्छन.)

खायके पान विदारत होठ, है बेठि सभामें बने अलबेला;
धोति किनारिकी सारिसी ओढत, पेट बढाय किये जस थेला;
वंशगोपाल बखानि कहें सुनो, भूप कहाय बने फिर छेला;
सान करे बाडि साहिबकी, और दानमें देत ना एक अधेला. १

ब्रह्मानन्द.

(हिंदोरे घर्जन)

फूटन हिंदोरे झूले फूले पिय प्यारी धो,
 फूटन सिंगार किये फूटन बिछायेरी,
 फूटन बनायो धत्र फूटनकी चौकी नीफी,
 फूटन भेराय जाली फूटन बनायेरी,
 पिया फूट सजे पाग प्यारी सजे फूट माग,
 फूटनके हार पेरे दोनों हुल्लायेरी,
 ब्रह्मानन्द फूटे मन झूले शमा-याम ठसो,
 फूटे मज गोपी ग्वाल बाळ हरखाएरी १
 नवल बनाई पाग नवल फूटन तोरे,
 नवल हिंदोरे झूले नवल बिहारीरी,
 नवल प्रवाउ खंभ नवल रतन दांडी,
 नवल भनाय टीनी फूटनकी जारीरी,
 नवल अवेकी डाल नवल झुलावे ग्वाल,
 नवल बनी हे मन्वमानुकी दुलारीरी,
 ब्रह्मानन्द नवल प्रीतम घनस्यामहुकी,
 मुरती नवल मोय लागत हे प्यारीरी २

(दुर्गुणी भेखधारी-त्रिभंगी)

भट वेद पढदा, सप्या धदा, कर्म न फटा ऊर्जदा,
 ओंकार जपदा, मुन्य रहदा, अंतर मदा, मुमंदा,
 पुनि कथा कहदा, लोक टाढा, विकल फिरदा, बतदा,
 सद्गुरुका बंदा, ब्रह्मानदा, साच कहदा, सब हदा (टेक) १
 सन्यास सहता, खिन न थरुता, फिरत बगूता, जगखूता,
 मामाके पूता, नगन रहता, घरत बिभूता, धनधूता,
 भैरव अरु भूता, जपत संजूता, रडी रूता, न तरवा-सद० २
 जग का'वत लोगी, सब विधि भोगी, अतर रोगी, अध ओषी,
 मदमास भखोगी, भूत जपोगी, लज्जा खोगी, कामोगी,
 तन कान फटोगी, बेसुध होगी, फरत हे पुंगी, फूकदा, -सद० ३
 अरु जंगम कहावे, लिंग लटकावे, धंठ बजावे, शिव गावे,

पुनि भीख मगावे, पैसा पावे, त्रपत न आवे, तन तावे;
 फिर स्वान भसावे, लोक हसावे, भेख लजावे, भरमंदा;—सद० ४
 अरु फकिरा फरता, कलमा भरता, अंतर जरता, नहि ठरता;
 जीवनककों मरता, शंक न धरता, जोंहर करता, नहि डरता;
 बोलत वर वरता, कंठहु करता, पच्छिम धरता, घूमंदा;—सद० ५
 आखत आरिहंता, जंता जंता, कर्म कथंता, भरमंता;
 विषये वरतंता, कंचन कांता, अंतर शांता, नहि अंता;
 अरु कर्म करता, नहि डरपंता, नहि भगवता, उचरंदा;—सद० ६
 कहावत वैरागी, लुब्धा लागी, अंतर आगी, त्रियरागी;
 ज्वाला विष जागी, माया पागी, अकल बेकागी, निर्भागी;
 बांधत घर बागी, लज्जा त्यागी, धन अरु दांगी, धारंदा;—सद० ७
 भक्तिके भगला, वातन बगला, अंतर दगला, विष दगला;
 देखत टग टगला, डोलत नगला, थिर थव पगला, जग ठगला;
 बाहर मति बगला, अंतर कगला, याका संगला, छांडंदा—सद० ८
 गल धारत माला, अंतर काला, विषे विहाला, चित चाला;
 मजबूत मसाला, त्रपत रसाला, ठाकुर थाला, पँड पाला;
 मन क्रोध कराला, जरत जंजाला, अंतर ठाला, मुर्झंदा—सद० ९
 वैरागां झंडी, देखत भंडी, जातम खंडी, क्रम कंडी;
 उर जडता उंडी, ममता भंडी, टीला दुंडी, पाखंडी;
 राखत घर रंडी, सब विधि छंडी, पथ्थर पिंडी, पूजंदा;—सद० १०
 नावत जल नीका, धारत टीका, गल कंठीका, तुलसीका;
 अरु मीठा जियका, कपटी हियका, नाहन ठीका, मुरधीका;
 बाना हरजीका, विकल विलीका, किंकर त्रियका, विषकंदा;—सद० ११
 भेखनके धारी, सबमें ख्वारी, अंतर भारी, अहंकारी;
 बोलत मुख गारी, राखत नारी, माया यारी, व्यापारी;
 जब मंगलकारी, गुरु मिल्यारी, भ्रमना टारी, जगफंदा;—सद० १२

(उपदेश-सवैया-झूलणा.)

पायि जीदगी बंदगी नाहि करी, नित ख्याल किया ठगबाजियोंका;
 मद मोहमें तें मगरूर फिर्या, तन ताकता नारियां ताजियोंका;
 सदगुरु साहेबका रंग चडया नहि, संग किया नर पाजियोंका;
 ब्रह्मानंद कहे कैसें बेत माने ते तों, ग्राहक जूतिया जाझियोंका. १

ताकु देख फरे परिवारे सारा, डारा देत छे हाथमें धोंकटिखुं,
 फनु सिखकी बात न कान धरे, डाया होय हलावत डोकटिखुं,
 खरे मोक्षके पथसे खूट बेठा, हियाफुट छोडे नहि होकटिखुं,
 ब्रह्मानंद कहे चल चलि गप्पू, मर वृड देखात क्या मोकटिखुं २
 रामनामकी फोर तो सोई रखा, काम क्रोध रु लोभमें जागता हे;
 भरपूर रहे बात भूडियामें, छुचा छटियामें मन लगता हे,
 रहे दास भया भगतानियाका, हरिमरुके सगसें भागता हे,
 ब्रह्मानंद कहे नख सीख सुधां, तेरा मुखतें जुतिया मागता हे ३
 पनघट बैठे पन खोवता हे, मुख जोवता हे पनियारियाका,
 दिन रेन माया बिच भूल गया, खुरी-म्याल किया नित ख्यारियाका,
 चित फाट गया बरफेल चले, बार टेयता हे घरबारियाका,
 ब्रह्मानंद कहे तोखु दु ख लगे, पण मुखस तो प्राक पेजारियाका ४
 धिक्ताइ सर्तनके साजहुमे, धन देखहि के डुलि जायकेजी,
 धिक सूर हटया सगरामहुसे, कहा जीवता हे घर आयकेजी
 सत भेख धर्या चहे छोकहुके, मुख देहसें चित लगायकेजी,
 ब्रह्मानंद कहे तिनु स्वार भये, जग माहि बटे जस पायकेजी ५
 बहु होय प्रवीन ज्युं बोलता हे, चित छोटता हे दाम चामकि वे,
 अति बाहिर भेख बनावत सुंदर, भीतर चाल हरामकि वे,
 मद मोह टर्या नहि मनहसें, कहो चातुरता कोन कामकि वे,
 ब्रह्मानंद कहे सब बात जुटी, जोछ मुष नही सिया रामकि वे ६
 कडा बेद बिंटी मोती पर फाने, महा जोरसें मूख मरोडता हे,
 चले देखता आपनि धांयडिखु, टेडि पाग बांधी तन तोडता हे,
 तन अत्तर तेल फूलेल लगावत, नेह त्रियासंग जोडता हे,
 ब्रह्मानंद कहे खबरदार बंधे, देख काल किसें नहि छोडता हे ७
 तेरा कोन गजा केते जिवनपे, एते जोर जुलूम जनावता हे,
 कबु धमकी बातमें पाव धरे नहि, पाप सदा मन भावता हे,
 पिंड पालनेकुं राक पीढता हे, ताकि त्रास नहि उर लावता हे,
 ब्रह्मानंद कहे दिन दोइ पिछे, देख काल भचानक आवता हे ८

(भरतन फिटकार-कुंडलिया)

पहला बखतर पे'रके, लढत चलत मुकलाय,
 हक बाजे पीछा हटे, धिक जीवत तेहि माय

धिक जीवत तेहि माय, असत पग भर घर जावे,
 वूड मरे जल मांछ, कहा शठ वदन देखावे;
 दाखत ब्रह्मानंद, हिमत अरु किमत हरेला,
 लडत चले मुख लाय, पे'रके वखतर पहेला. १

विष त्यागी संग्रह करे, उलटा अंगकुं खात;
 नर जोनीसैं नीकला, भया स्वानकी जात.
 भया स्वानकी जात, वात कोउ वाकी माने,
 लंपट होत लवार, रात दिन हे हेराने;
 दाखत ब्रह्मानंद, राम अंतर नहि रखिया,
 उलटा अंगकुं खात, त्याग कर संग्रह विषया. २

सती पतीके कारणे, चली बलन ले साज;
 वहि देखि पाछी फिरी, कहो कहां रही लाज;
 कहो कहां रही लाज, काज सब भ्रष्ट कियाका,
 रजपूतनके रंग, संग तजि दिया पियाका;
 दाखत ब्रह्मानंद, रही नहि मोल रतीके,
 कुडा कहे सब कोय, करुण फिरि ताहि सतीके. ३

सती शूर अरु संतका, तीनूका इक तार;
 जरे मरे सुख परहेरे, तव रीझे किरतार.
 तव रीझे किरतार, सवे संसार सरावे,
 नहितो होत खुवार, हार जित सबही जावै;
 दाखत ब्रह्मानंद, महा फल अचल मतीका,
 तीनूका इक तार, शूर अरु संत सतीका. ४

(संत लच्छन.)

राज भयो कहा काज सर्यो, महाराज भयो कहा लाज बढाई;
 शाह भयो कहा वात बडी, पतशाह भयो कहा आन फिराई;
 देव भयो तो कहा तुं भयो, अहमेव बढो तृष्णा अधिकाई;
 ब्रह्ममुनि सतसंग विना, सब और भयो तो कहा भयो भाई. १

गौरव रौरव तुल्य गने, प्रभुताइसो पाप समान गहे हे,
 काल समा सउकारकुं जानत, कंचन गार समान रहे हे;
 नारिसो नागिनी कारि समान हे, यारिसो तो जम धारि बहे हे;
 कोमल अंतर ब्रह्ममुनि कहे, सो सत्शास्त्रमें संत कहे हे. २

क्रोध न काम न लोभ नहीं मक्, द्रोह नहीं मक् मोह हटावे,
शीतल शुद्ध विचार सुलब्धन, जाहि मिले भवरोग मिटावे,
सार ग्रहे धन दारसँ दूर हे, जग्त विकार असार विहावे,
ब्रह्ममुनि सुविचार फहंत हे, संत सोई भगवतकु भावे

३

(कवित्त)

पारस पलकमहीं ऐहिकं सुधार छेते,
पारस भये ते धनमाहि हेम होइ हे,
आफ दाफ वृक्षनक् चदन सुधार छेत,
आपके समान फीन शीत खुरयोइ हे,
जैसे भ्रग फीटकं सुधारके फिरत भग,
भ्रग सग भ्रग होय फीट जाति होइ हे,
फहंत हे ब्रह्मानन्द राय मन वाणि करी,
तत्काल सिपकं सुधारे गुरु सोइ हे

७

(जडजन-संन्यास)

रोतिहुतें फोइ तेळ न पायत, पानि मथे घृत कोन लयो हे,
कृकम कूटत कैसे मिले फन, शून्य मुठी भरि काह अयो हे,
प्रीठ वसा पथरा नहि भीनत, म्वार बोई अन कोन जयो हे,
भीषघ बोध न ब्रह्ममुनि फहे, जाहिहु रोग असाध्य भयो हे १
देखनमें नर सो म्वर डोलत, नारि खगि मुख छात समी हे,
ग्राम कथासँ विगम न पामत, काम रु क्रोधमें बुद्धि भमी हे,
'हु हु' कियोइ रहे निरु वासर, व्याकुलता उरमें न समी हे,
ब्रह्ममुनि फहे और मने गुन, पूछ नहीं तन एक फमी हे २

(साधुभंग-छप्पय)

ऐस न अतर लोभ, क्षोभ कचह नहि पावे,
हानि वृद्धिके जोग, हरख अरु शोक न आवे,
जहं कारण जग भई, लोभकी होवत पीरा,
सो जानत है सग, अस्त धन भग शरीरा,
सब भोग साज मुर राजसुख, कार्कषिष्ट सम जानके,
फहे ब्रह्ममुनी जग फिरत हे, ब्रह्मरूप निज मानके १
ग्राम्य गीत नहि सुनत, फहे नहि ग्राम्य कथाकु,
अहोनिश हरिकी याद, बढत नहि वाद वृथाकु,

१

सज चंदन त्रिय सेज, ताहि स्पर्शनकूं त्यागे,
मायिक मिथ्या जान, एक हरिसैं अनुरागे,
लहलीन मग्न नंदलालमें, जगत स्वभवत् जाहिके,
कहे ब्रह्ममुनी माहंत सो, दर्शन दुर्लभ ताहिके. २

अंतर तेल फुलेल, धरन प्रिय वस्तु न चाहे,
यथा लाभ संतोष, ताहिते तनु निर्वाहे;
विषय अधिक रमणीक, पंच इंद्रिनकूं प्यारा,
ताकूं इच्छत नाहि, रहत याते डरि न्यारा;
आकर्ष करत इन्द्रिनको, कुपथ जान देवत नहीं,
कहे ब्रह्ममुनी सब जग सुखद, सो जगमें साधु सही. ३

होत न विषयासक्त, रहत अनुरक्त भजनमें,
दुर्मति दुवधा दूर, सूर सुखि साजत जनमें,
जातन इन्द्रिय जतन, रहत ततपर दिन राती,
काम क्रोध मद लोभ, आत नहि निकट अराती.
वैराग्य धर्म भक्ति विमल, गुन विन समजत ज्ञानकूं,
नित ब्रह्ममुनी निशदिन नमत, ऐसे संत सुजानकूं. ४

मधुकर वृत्ति महत, गहत दृढ जनको ज्ञानी,
अरूप अरूप अन लेत, जाचि ग्रहियनसैं जानी;
रसनाके वश होय, एक ग्रहिकूं न सतावे,
निज कर पाक बनाय, प्रभूको भोग लगावे;
निर्स्वादि निरंतर वर्त निज, अंतर अति आनंदमें,
कहे ब्रह्ममुनी नर हीत कर, गर्क रहत गोविदमें. ५

मिलहि भूमिको राज, साज सुखसंपति नाना,
मिलहि स्वर्ग सुरलोक, प्रबल अमृतको पाना;
मिलत इंद्र अधिकार, मिलत क्रम करि पद विधिको,
अष्ट सिद्ध पुनि मिलत, मिलत संग्रह नवनिधिको,
सुत भ्रात तात वनिता मिले, खूब खजाना नंग हे,
कहे ब्रह्ममुनी सबही मिले, पन इक दुर्लभ सत्संग हे. ६

(असाधु-सवैया-झूलना.)

कंठि धार टीका किया भेखनका, बने ठीक ठीकां चले रावनेमें,
सबे पाय लागे धरे भेट आगे, बहु चातुरी लोक बोलावनेमें,

साखि वात शिखि करे वात तिखी, घनी रीत ठाने गुन गावनेमें,
 प्रधानद कहे घेत ग्यान जाने, तेरा तान तो राड रिश्रावनेमें १
 पेदि माड घेठा काज पेटहुके, माहि माड भर्या टग फांसियाका,
 विपे आप सेवे छी द्रव्य लेवे, एसा बोध देवे रोटि स्वासियाका,
 हरिजनकू देखके देख घरे, भरे दोड होका गाम प्रासियाका,
 प्रधानदके रामका दास नही, तें तो दाम हे टुनिया दामियाका २
 गले घर माडा विपेमें बिहाला, करे चित्त चाडा पट्ट पामरीमें,
 घसे भांग घोटा खरा भाव खोटा, गिये रोज आंटा सवे गामडीमें,
 चहे घेत चेला मडे दार मेला, करे धन भेला धरे तामडीमें,
 प्रधानद के राममें प्रीत नही, तेरा चित तो तामडी चामडीमें ३
 लड्डु खाडहुका चये छालजीकु, गुड चेत गरम जनावता हे,
 धोइ मीसराका घाल भोग चहे, दूध भेसहुका घणा भावता हे,
 चये भाग गांजा मेरे छालजीकु, मानी ताजिया भोग व्यावता हे,
 प्रधानद करे ठगी छेत पेसा, एसा छोकहुं ज्ञान बतावता हे ४
 कहे बाइयाहुं तन धन हुसैं, सहु चाफरी सतकी कीजीओजी,
 कोइ आइ किये राम आन मिले, एमी वातकु नाहि पतीचियोजी,
 अछे भोग धरो मेरे छालजीकु, धोइ सात्रिगमकु पीजियोजी,
 प्रधानद कहे खबरदार रेना, देना होय मो हमहुं पीजियोजी ५
 करे एक चेला रखे आप भेली, ताकी बंदगी वात बखानता हे,
 सदग्रथकी रीत न फान घरे, करे बाट खोटा मत तानता हे,
 करे कूड पपट रु ओरहुका, धन आपने मखिर आनता हे,
 प्रधानद के रामकी वात नहीं, मन माडफी जातमें मानता हे ६
 सवे दोर ठाडे मेरे गमजीके, भेस रामजीकी दुध पावनेकु,
 सवे खेतवाडी भेरे रामजीके, भाजी शाकची भोग घरावनेकु,
 दोय छोकरा छोकरी रामजीके, एक टेडवी छान उठावनेकु,
 प्रधानद के रामका नाम लेखे, सवे आपने काम लगावनेकु ७

(सप्त अंग)

धन भाग बडे जगमाहि जाके, एसे सतहुस ओलखान हेजी,
 इद्रियाकुं व्याय स्वरूपहुम किये केरहुमें मन प्रान हेजी,
 हरि साथ रहे छय छीन सदा, करी प्रीति प्रगट प्रमान हेजी,
 प्रधानद कहे दास रामहुके, एसे जगमें संत मुजान हेजी १

एसे संत मिले कभि काहु रही, साची शीखवे रामकी रीतकुंजी,
 परापर सोई परब्रह्म जामे, ठहरात हे जीवके चितकुंजी,
 दृढ आसन साधकें ध्यान धरे, करे जान हरिजीके गीतकुंजी:
 ब्रह्मानंद कहे एसें संत मिले, प्रभु साथ बढावत ग्रीतकृजी. २

(कवि परिचय)

ज्ञाति चारण ओडक आसिउंकी, आवु द्वाय भयो खाणगाममेंजी;
 ताके नाम शंभुदान तातहको, मात लाटुवाई धर्यो ठाममेंजी;
 लाडु मेटके श्रीरंग नाम धर्यो, दोउ लीन ब्रह्मानंद नाममेंजी,
 चित धार सेजानंद शाम छवि, जग जीत गयो निज धाममेंजी. १
 आदि त्रीसमें मायिक जीव हूकी, लखि रीत देखावन त्रास हेजी.
 पीछे भेख लजावन भुंडुवाके, लखे द्वादश वाक्य विलास हेजी.
 पीछे आठमें संतकी रीत लखी, सोई सत्य प्रभुजीके दास हेजी.
 ब्रह्मानंद विचारके तोलनाजी, यह झूलनां नंग पचास हेजी. २

भगवंत. (पहिला.)

(शरम-वेशरम.)

शरम मत नहि चले, शरम सरवे पहिचाने.
 शरम समझि पग धरे, शरम कुलकाति सु माने;
 शरम दिये नित दान, शरमकों लज्जा आवे.
 शरम कपट नहि करे, शरम रनमें चढि धावे,
 भनंत भगवत सवमें शरम, वेद वदत गुण नरमके,
 सुनि हो राय अरु सुजन नर, ये लच्छन सव शरमके. १
 पहिर चीकनो झगा, पाग टेढी कर बंधे,
 पनघट पर जइ वेठ, युवति पर नैनहि संधे,
 वातनसें गढ लेत, युद्ध आंखे नहि देखो,
 घरमें लौन न तेल, तिथापें बडबर लेख्यो,
 भगवंत भनत चित ना शरम, वेद वदत गुण नरमके,
 सुनि हो राय अरु सुजन नर, ये लच्छन वेशरमके. २

भगवत (दूसरा).

(राम प्रताप)

पानपूत आगको छाग्य भगवंत कवि,
छात न घाय काहू तूपकके तीरको,
रतो भयो आसमान तातो भयो भासमान,
फरो पीरो नीर भयो नीराधिके सीरको,
छफ छागी धरन जरन रनिवास छाग्यो,
व्याकुल न्है असुर धैर नर न धीरको,
सूरनको आप कैधौ सीताको सराप हैकि,
रावनको पाप के प्रताप रघुवीरको

२

भगवत (तिसरा).

(खोलशृंगार-कुंडलिया)

शुचिता शील सनेह गति, चितवनि बेछनि हास,
कच गूधनि सीमन्त शुभ, भाल तिलक मुखरास,
भाल तिलक मुखरास, दगन अंजन अति सोहै,
बीरि बदन मुदेश, चिबुक मसिकन मन मोहै,
आवक मिहँदी रग राग, भनत भगवत नित उचिता,
ये सोरह शृंगार, मुएय तामें घर शुचिता
नूपुर बिछिया किंकीणी, नीवी बधन सोइ,
कर मुँदरि कंकण बलय, बाजूबद मुज दोइ,
बाजुबद मुज दोइ, कठ श्री दुलरी राजै,
नासा बेसरि सुमग, श्रवण ता टक बिराजै,
भगवत बेदा भाल, मांग मोती गो उमर,
शदश भूषण भग, नित्य प्यारी पग नूपुर

१

२

भगवतसिंह.

(युक्तिभिरूपण-कविचिन्त)

यदरा न होंहि दल आये मैन भूपतिको,
बुढिया न होंहि परे बान सर छाइ है,

दादुर न होंहि ये नकिबे चहूं और बोले,
 मोर ये न होंहि हाक शरून सुनाइ है;
 बगुला न होहि शेत धजा भगवंतसिंह,
 चपला न होंहि समशेर चमकाइ है,
 बाल्म विदेश तेंहि बिरहनि मारिबेको,
 जुगनु न होंहि काम जामगी जगाइ है.

१

भरमि.

(पाखंडवर्णन-कवित्त.)

काम रस मातो परमारथकी बातै करै,
 जरातै जराते नाहि छोरे और धज्जको;
 वेद औ पुरानके बखान करे आठो जाम,
 साधक समाज जाइ पूजे पांय रज्जको;
 हाथ लिये माला जपमाला मुख बोलनकी,
 धर्मके ठगैया खल खात है अखज्जको;
 भरमि सुकवि कहे सुना है उखाना यह,
 सो सो चुन्हा खायके बिलैया चली हज्जको.
 आदि आप आय मीठी बातन बनावे फेर,
 हा हा करे सौहे खाय सांचो आवे मनको;
 याहि भांति दाम लेत बीच जगदीश देत,
 हमे तुहो राम ना जनावे काहु जनको;
 भरमि सुकवि जब औधि आवे मागे जाइ,
 झगरो मचावे औ लजावे साधुजनको;
 गुन पाछे औगुन है जगतमें सु देखत हौ,
 मरेतें जिवाय धाय बैरी होत तनको.

१

२

काशी अरु मक्के जावे संव्या औ निमाज पढे,
 वेदही कुरान जाप जपे आठौ जामको;
 तीरथमें न्हायके अनेक मन माला जपे,
 निंद भूख त्यागी रहे तन धन धामको;

भरमि मुफवि कहे कोटिक उपाय करे,
राननमें ध्यान धरे एक हरि नामको,
बनफल खावे चहुं और आप धावे तोहु,
नाहि मल्यो होत एक निमकहरामको

३

(सुधरी सन बर्नम)

अरुण कमल पग पाखुरीकी पाति छर्म,
सरस सधन शोभा मनके हरनकी,
दीरघ न लघुताई पातुरी मुहावनी है,
देखे पुति होत जात विट्ठम घरनकी,
नखकी निकाइ नीकी आरसीसी सोहति है,
जामें देखी अति शोभा सौतिके सरनकी,
भरमि मुफवि कहि आवति न मेरी मति,
पागुरी भई है छवि आगुरी चरनकी

४

रूप रस आसनकै कामके सिंहासन है,
केलि कला कौतुककी जीत मन आनिये,
सौतिनको गरब गयो हे देखि देखि जिन्है,
कदलीके खम दोउ उलटे प्रमानिये,
भरमि मुफवि गज शुड सखुचन लागे,
सौगुनी करमहत्तें शोभा सरसानिये,
मुचर मुठार ये सवारे हैं विराचि कपों,
जघ अलबेटीके अनूप युग जानिये

५

कोमल विमल कामभृषकी सुरग भुमि,
पान कैसो दल चल दल कैसो पात है,
मोहनके मनके मनोरथकी मोहनीके,
सौतिके सतौयबेकी शोभा सरसात है,
नामि सर कूपकी मुघाट मिलि सींटी डारी,
टरत न डीठ नीठ नीठ दरसात है,
भरमि मुफवि रोमराजीकी विराजी छवि,
उखर अनुप ऐतो मुमग मुहात है

६

सुंदर सुरग गोल शोभा कर पल्लवकी,
फिघों इंद्र गोप आन बैठे ब्रिज बालके,

किधौ लोल कुंदनके अधिक अमोल तामें,
 स्वाती कैसी वृंद थिरानी हें रसालके;
 किधौ नग पांतिनकी काति धुति फेल रही,
 मदनको मालाहुन देखनके चालके;
 भरमि सुकावि छबी बरनी न जात मोपें,
 कामिनीकें नखके नगीना नंग लालके.

७

(दोहा.)

पीठ परी जब दीठ में, न थिर रखा तन सास;
 मन इच्छा कर मरजियो, फिर देखनकी आस.
 कर पल्लव पखुरी अरुन, सुरंग हथेली बाल;
 रूप सरोवरमें मिले, भुज अंबुज सम नाल.

१

२

(मुच्छ पुच्छ-छप्पय.)

जिहि मुच्छन धरि हाथ, कछू जग सुयस न लीनों,
 जिहि मुच्छन धरि हाथ, कछू परकाज न कीनों;
 जिहि मुच्छन धरि हाथ, कछू पर पीर न जानी,
 जिहि मुच्छन धरि हाथ, दीन लाखि दया न आनी;
 अब मुच्छ नाहिं वे पुच्छ सम, कवि भरमी उर आनिये,
 चित दया दान सनमान नहि, मुच्छ न तेही जानिये.

१

भाण.

(पुत्र लच्छन.)

गया पिड जो देइ, पितर अपनेको तारे,
 करज वाय कर देइ, लटे परिवार सँभारे;
 हरी भुमि गाहि लेइ, दुवन शिर खङ्ग बजावे,
 पर उपकारज करे, पुरुषमें शोभा पावे;
 सोइ भाणज वंश सराहिये, तव वैरी सब हलमले,
 इतनो काम जो ना करे, तो पुरुष खेह कन्या भले.

१

(तलवार जाति-कवित.)

लीलम हरिदार बंदरी हलच्ची पटा,
 मानसाही खांडा धोप ऊना तेग तरनौ;

मिसरी नेवाजखानी गुपती जु नग्गीखानी,
इल्मानी खुरासानी कत्ती सेग करनौ,
सैफ गुजराती अगरेजी दुवभी रूसी,
मक्की दुधारो नाम डौत नाम घरनौ,
गुग्दा मगरवी सिरौही औ पिरोजखानी,
भान कवि एती तरवारि जाति बरनौ

२

भारत.

(धृथा यङ्गपम)

उपल मणीमे मजु उदधि तिहारे मान्न,
हरिसैं हमेश जल जलु इववासी है,
तनया रमासी वर रोति मुगतासी ल्योहि,
सुभग सेवाल श्याम विट्ठम ल्यतासी है,
अमृत अगार देवतरुहि अपार तीर,
नाम रत्नाकर ये दयात जग स्वासी है,
भारत यह दुरनतैं करन हुलासी पर,
आये पास तेरे पास शातिकी न आगी है

१

भावनादास.

(कामिनी मिह्रा-सवैया)

कवि ते विपरीत विबोधनके, जिन तो विनता अबला बरनी,
अपने बल्लैं जगमाहि चराचर, जतुनके मनकी हरनी,
जेहि चंचल नेन प्रहारनतैं, सुरनायक आदि परे धरनी,
हमतो जिय जानत हे सबग, अबलाकि कहा इतनी करनी १
त्रिवलीसि तरंग चले तिनमें, चकई चक उच्च उरोज महारे,
सुख पकजहूसी प्रभा बिलसे, सफरी जुग लोचन हे अनियारे,
मये भौर समान सुनामि भनु, मदनालय सीप नितबु करारे,
भव धारिधि पार तथा जो चहै, तज कामिनी रूप तरंगनि प्यारे २

भावनाप्रसाद.

(उपदेशात्मक कवित्त.)

अस्त भयो बालापन सूरज समान देखो,
 अंग दुति पश्चिमासी आइ हे कलुक लाल;
 सिंजित सुहाइ धुनि झिगुरकी भाइ सुनि,
 चंद उयो चाहत हे रावरेके भाग भाल;
 प्रीति रजनीसी सजनीके ळैं हे भावन जू,
 जैहे तम अगुताई बैहे प्रेम तारा जाल;
 नागर तुं नायक हे ध्यान सुखदायक हे,
 भोगके न लायक हे वैस संधि संध्याकाल. १

(शृंगार-सवैया.)

कोटि कला करि काम कलोलनि, सारि निशा सो निशा करि जीकी,
 सोइ रही रचिके विपरीति नु, प्रौढ तिया छतिया पर पीकी;
 श्याम लला अवला लखिके, कवि भावनजू उपमा जिय ठीकी,
 काम सोनार सराफ विचच्छन, कुंदन लीक कसोटिहि लीकी. १

साकलिके सिंगार सुखादिनि, ज्वालित कै विरहानल ज्वाला,
 कामके मत्र भने सु मने मन, रोम खरे परिचारक चाला;
 आंसुनिको अभिषेक छिने छिन, जीव पर्यो बलिको प्रतिपाला,
 लाल तुम्हे मिलवैके मनोरथ, होम करे प्रतिवासर वाला. २

कानन काहु कहाति सुनी, कवहुं कहुं आनि कही मिस काने,
 भाजन भावनि जूके भयो, तन वीस विसे अनुराग न पोते,
 ता दिनतैं इनतैं ळैं विदा, सुख साजन जानि कहा कहुं गोने,
 चाहत चारिकु ओर चके, जल रूप थोक दग वे मृगछोने. ३

भिरवारी.

(सूमसेवा-सवैया.)

पाय विहीनके पाय पलेट्यो, अकेले है जाइ घने वन रोयो,
 आरसी अंधके आगे धन्यो, बहिरेसों मतो करि उत्तर जोयो,
 ऊसरमें वन्यो बहु वारि, पषानके ऊपर पंकज बोयो,
 दास वृथा जिन साहब सूमकी, सेवनिमें अपनो दिन खोयो. १

(विक्रमयश-कवित्त)

कैसी कामधेनु कामनाकी देन ऐन जैसी,
चिन्तामणि चारु चित्त चैनको सु कर है,
कैसी चारु चिन्तामणि चैनकी सुकर जैसी,
कामतरु शाखा कामनाकी विधि बर है,
कैसी कामशाखा कामनाकी विधि बर जैसी,
दामपै हमेशकी हमेश दान भर है,
कैसी है हमेशकी हमेश दान भर जैसी,
वैसी बीर बिज्रम नरेशकी नजर है

१

भिखारीदास.

(सापेक्षिक श्रुमत्ता-रोला)

जम कहा विन युवति, युवति सु कहा विन यौवन,
कह यौवन विन धनहि, कहा धन विन अरोग तन,
तन सु कहा भिन गुणहि, कहा गुण ज्ञानहीन धन,
ज्ञानहि विद्याहीन, कहा विद्या मुकाव्य विन

१

(शृंगाररस-छप्पय)

भाल नयन मुख अधर, चिबुक तिय तुव बिलोक अति,
निर्मल चपल प्रसन्न, रत्न शुभ वृत्ति थकी मति,
उपमा कह शशि खज, कज बिबिय गुलाब वर,
खंड भान भित्ति प्रात, पक प्रफुलित सु शौम घर,
शरद फिसोर शुभ गंध मृदु, नवल दास आवत न चित्त,
जु फलक रहित युग सरल हित, हार गहत पटपद सहित

१

(सखि उक्ति-सवैया)

सखि तो कह याचन आई हौ मै, उपकार कै मोहि जिया बहि तूं,
तोहि तातकी सौं निज भातकी सौं, यह बात न काहू जनावहि तु,
तुव चेरी हौं होउगी दास सदा, ठकुरायन तोरि कहावति हूं,
करि फद कछू मोहिं या रजनी, सजनी ब्रजचंद मिलावहि तू

१

भूधर.

(संगीतध्वनि उपदेश.)

धनकारन पापनि प्रीति करें, नहि तोरत नेह जथा तिनकों,
 लव चारखत नीचनके मुंहकी, शूचिता सब जाय छियें जिनकों;
 मद मांस वजारनि खाय सदा, अंधले विसनी न करें धिनकों,
 गनिका संग जे शठ लीन भये, धिक हे धिक हे धिक हे तिनकों. १
 दिवि दीपक लोय बनी बनिता, जड जीव पतंग जहां परते,
 दुख पावत प्रान गवावत हे, वरजे न रहे हठसों जरते;
 इहि भांति विच्छन अच्छनके वश, होय अनीति नहि करते,
 परति लखिजे धरती सिरखे, धनि हे धनि हे धनि हे नर ते. २

(वैराग्य-विवेक-विचार.)

तेज तुरंग सुरग भले रथ, मत्त मतंग उत्तंग खरेही,
 दास खवास अवास अटा, धन जोर करोरन कोश भरेही;
 ऐसे बढे तो कहा भयो हे नर, छोरि चले उठि अंत छरेही,
 धाम खरे रहे काम परे रहे, दाम डरे रहे ठाम धरेही. १
 जे परनारि निहारि निलज्ज, हंसे विगसे बुधिहीन बडेर,
 जूठनकी जिमि पातर पेखि, खुशी उर कूकर होत घनेरे;
 हे जिनकी यह टेव बहे, तिनको इस भौ अपकीरति हे रे,
 हे परलोक विषे दृढ दंड, करे शत खंड सुखाचल केरे. २
 लोभ निवास छिमा धुवनी बिन, क्रोध पिशाच उरे न टरेगो,
 कोमल भद्र उपाव बिना, यह मान महामद कोन हरेगो;
 आर्जव तार कुठार बिना, छल खेल निकंदन कोन करेगो,
 तोष शिरोमनि मंत्र पढे बिन, लोभ फणी विष क्यों उतरेगो. ४
 काहेको बोलत बोल बुर नर, नाहक क्यों जश धर्म गमावे,
 कोमल वेन चले किन एन, लगे कछु हे न सवे मन भावे;
 ताल छिदे रसना न भिदे, न घटे कछु अंक दरिद्र न आवे,
 जीभ कहे जिय हानि नहि, तुझ जी सब जीवनको सुख पावे. ४
 जो धन लाभ लिलाट लिख्यो, लघु दीर्घ सुकृतके अनुसारे,
 सो लहिहें कछु फेर नहि, मरुदेशके ढेर सुमेर सिंधारे;
 घाट न बाढ कहीं वह होय, कहा कर आवत सोय विचारे,
 कूप कियों भर सागरमें नर, गागर मान मिल जल सारे. ५

तुं नित चाहत भोग नये नर, पूरव पुन्य विना किम पैहें,
 कर्म सयोग मिले कहिं जोग, गहे तब रोग न भोग सवै हें,
 जो दिन चारको प्योत बन्यो कहूँ, तो परि दुर्गतिमें पधितै हें,
 यों हित यार सलाह यही कि, गई कर जाहु निबाहन ऋ हें ६
 बाय लगी कि बलाय लगी, महमत्त भयो नर भूलत तौही,
 वृद्ध भये न भजे भगवान, विपै विष खात अघात न क्योंही,
 शीश भयो बगुला सम भेत, रखो उर अंतर श्याम अजौही,
 मानुष भौ मुक्ताफल हार, गवार सवा हित तोरत यौही ७

(कवि कण्ठ)

राग उदे जग अंध भयो, सहजें सब ऐगन लज गवाई,
 शीख बिना नर शीख रहे, व्यसनादिक सेवनकी सुघराई,
 तापर और रचे रस-काव्य, कहा कहिये तिनकी निदुराई,
 अघ अशुभनकी अखियानमें, शोकत हे रज राम दुहाई १
 कचन कुंभनकी उपमा, कह देत उरोजनको कवि बारे,
 ऊपर श्याम विलोकत कै, मनि नीलमकी दकनी दँकि छारे,
 यों सत बैन कहे न कुपडित, ये जुग आमिष पिंड उघारे,
 साधन भार दई मुंह छार, भये इहि हेत किषों कुचकारे २

(विधि-भाग्य)

सजन जो रचे तो सुधारससों कोन काज,
 दुष्ट जीव किये कालकूटसों कहा रही,
 दाता निरमापे फिर बापे क्यों कल्पवृक्ष,
 जाचक बिचारे लघु तृणहुतें हें सही,
 इष्टके सजोगतें न सीरो घनसार कछू,
 जगत को व्याल इंद्रजाल सम हें वही,
 एसी दोय होय बात दीखें विधि एकहीसी,
 काहेको बनाई मेरे घोखो मन ये यही १
 कैसे कैसे बली भूप भूपर विख्यात भये,
 बैरी कुल कपि नेकु मोहोंके विकारसों,
 लंघे गिरि सायर दिव-यसैं दिपे जिनों,
 कायर किये हें मट कोटिन हुंकारसों,
 एसे महामानी मोत आयेहु न हार मानी,
 क्योंही उत्तरे न कभी मानके पहारसों,

देवसों न हारे पुनि दानेसों न हारे ओर,
काहसों न हारे हारे एक होनहारसैं;

२

(असार संसार-देहकी क्षणिकता.)

काहू घर पुत्र जायो काहूके वियोग आयो,
काहू राग रंग काहू रोआ रोई करी हे;
जहां भान उगत उछाह गीत गान देखे,
सांझ समे ताही थान हाय हाय परी हे;
एसी जग रीत क्यों न देखि भयभीत होय,
हा हा मूढ तेरी मति गति कोन हरी हे;
मानुष जनम पाय सोवत विहाय जाय,
खोवत करोरनकी एक एक घरी हे.

१

सो वरष आयु ताका लेखा करि देखा सब,
आधी तो अकारथही सोवत विहाय हे;
आधीमें अनेक रोग बाल-वृद्ध दशा भोग,
ओरहु संयोग केते ऐसे बीते जाय हे;
बाकी अब कहा रही ताहि तुं विचार सही,
कारजकी बात यही नीके मन लाय हे;
खातिरमें आवे तो खलासी कर इतनेमें,
भावे फांसि फंद बिच दीनों समुझाय हे.

२

जोई दिन कटे सोई आवमें अवश्य घटे,
बुंद बुंद बिते जेसैं अंजुलीको जल हे;
देह नित छीन होत नेन तेजहीन होत,
जोवन मलीन होत छीन होत बल हे;
आवे जरा नेरी तके अंतक अहेरी आवे,
पर भौ नजीक जात नर भौ निफल हे;
मिलके मिलापी जन पृछत कुशल मेरी,
एसी दशा मांहि मित्र काहेकी कुशल हे.

३

देखो भर जोवनमें पुत्रको वियोग आयो,
तैसेंही निहारी निज नारी काल मगमें;
जे जे पुन्यवान जीव दीसत हे यानहीपें,
रंक भये फिरे तेऊ पनहीं न पगमें;

एतपें अभाग धन जी तयसों धरे राग,
होय न विराग जाने रहगो अलगमें,
आंखिन विलोकि अध सूसेकी अंधेरी करे,
एसे राज रोगमें इलाज कहा जगमें

४

(जैन यैम प्रशंसा)

कैसे करि केतकी कनेर एक कहि जाय,
आक दूध गाय दूध अतर घनेर हे,
पीसी होत हीरीपै न रीस करे कचनकी,
कहां काग बानी कहा कोयलकी टेर हे,
कहां भान भारो कहा आगिया विचारो कहा,
पूनीको उजारो कहां आवस अंधेर हे,
पञ्च छोरि पारसी निहारो नेक नीके करि,
जैन बैन और बैन इतनोंही फेर हे

१

(मनमत्तग-छप्पय)

ज्ञान महावत डारि, सुगति सकल गहि खडे,
गुरु अंकुश नहि गिने, ब्रह्मवत धिरख विहंडे,
करि सिधत सर न्होन, फेलि अघरजसों ठाने,
करन चपलता धरे, कुमति करनी रति माने,
ढोलत सु धद मदमत्त अति, गुण पथिक न आवत उरें,
वैराग्य खभते बाधनर, मनमत्तग बिचरत बुरे

१

(छत-आमिष-अभक्ष निषेध)

सकल पाप संकेत, आपदा हेत कुलच्छन,
कलह खेत दारिद्र्य, देत दीसत निज अश्वन,
गुन समेत जश छेश, केत रवि रोकत जेसैं,
औगुन निफर निफेत, ऐस लखि बुधजन एसैं,
जुआ समान इह लोकमें, आन अनीति न पेखिये,
इस व्यसन रायके खेछको, कौतुकहू न देखिये

१

जगम जियको नारा, होय तय मांस कहावे,
सपरस आकृति नाम, गघ उरधिन उपजावे,
नरक जोग निरदयी, खाहि नर नीच अधर्मी,
नाम छेत तज वेत, असन उत्तम कुल कर्मी,

यह निपट निंद्य अपवित्र अति, कृमिकुल रास निवास नित;
आमिष अभच्छ याको सदा, वरजो दोष दयाल चित्त. १

भूषण (भूखण.)

(औरंगजेब अपयश.)

किबलेकी ठौर बाप बादशाह शाहजहां,
ताको कैद कियो मानो मक्के आग लाइ है;
बडे भाई दारा वाको पकरिके कैद कियो,
रंचक रहम आप उरमें न आई है;
खाइके कसमते मुरादकों मनाइ लिये,
फेर उन साथ अति कीन्हीते ठगाई है;
भूषण भनंत साच सुन हों औरंगजेब,
एसेही अनीति करी पातशाही पाइ है. १

तसवी ले हाथ उठि प्रात करे बंदगी सो,
मनके कपट सबें संभारत जपके;
आगरेमें लाय दारा चौकमें चुनाय लीनो,
छत्रही छिनाइ लीनो बूढे मार बपके,
सूजा बिचलाय कैद करिके मुराद मारे,
एसेही अनेक हने गोत्र निज चपके;
भूखन भनंत अब शाह भये साचे जैसें,
सौ सौ चूहा खाइके बिलाइ बैठे तपके. २

(रोमा औ सोलंकी नरेश प्रशंसा.)

जा दिन चढत दल साजि अबधूतसिंह,
ता दिन दिगंतलौ दुवन दाटियतु है;
प्रलै कैसे धाराधर धमकै नगारा धूरि,
धाराते समुद्रनकी धारा पाटियतु है;
भूखन भनंत भुव गोलको कहर तहां,
हहरत तगा जिमि गज काटियतु है;
कांचसे कचरि जात शेषके अशेष फन,
कमठकी पीठिपै पिठीसी बांटियत है. १

बाजि बम्ब चण्यो साभि बाजि जब कलामूप,
गाजी महागज राजा भूखन बखानतें,
चढिकी सहाय महि मडी तेज तार्ह पेंढ,
छडी राय राजा जिन दंडी औनि आनतें,
मदी भूत रविरज बदी भूत हठ घर,
नदी भूतपति मो अनदी अनुमानतें,
रकी भूत दुवन करंकी भूत दिग्गदती,
पकी भूत समुद्र मुलंकीके पयानतें

२

(पद्मानरेश छत्रसाल प्रशासा)

भुज भुजगेशकी वै सगिनी भुजंगिनीसी,
खोदि खोदि खाती दीह दारुन दलनके,
बखतर पाखरनि बीच घसि जाति मीन,
पेरि पार जात परवाह ज्यों जलनके,
रैयाराय चंपतिको छत्रसाल महाराज,
भूखन शक्त को बखानि यों बलनके,
पण्डी पर छीने ऐसैं परें परछीने बीर,
तेरी बरछीने घर छीने है खलनके

१

चाक चक चमूके अचाक चक चहु और,
चाकसी फित्त धाक चपतिके टालकी,
भूखन भनंत पातगाही मारी जेर करी,
काहु उबराय ना करेरी कस्वाल्की,
सुनि सुनि रीति बिर देतके बड्ढपनकी,
अप्यन उयप्यनकी बानि छत्रसालकी,
जग जीति ऐवा ते वै व्हैकें दाम देवा भूप,
सेवा लागे करन महेष्वा माहिपालकी.

२

रैयाराय चंपतिको चढ्यो छत्रसालसिंह,
भूखन भनंत समसेर जोम जमके,
मावीकी घटसी उठी गरवें गगन धिरै,
रैले समरोर फेरें दामिनीसी दमके,
खान उमरावनके आन राजा रावनके,
सुनि सुनि चर लागै घन कैसी घमके,

वैहर बगारनकी अरि के अगारनकी,
नांघती पगारन नगारनकी धमके. ३

हेवर हरद साजि गैवर गरद सम,
पैदरके ठट फोज जुरी तुरकानेकी;
भूखन भनत राय चंपतिको छत्रसाल,
कोप्यो रन ख्याल व्हेकें ढाल हिंदुवानेकी;
कैयक हजार एकवार वैरी मारि डार,
रंजक दगानि मानो अगिनि रिसानेकी;
सैद अफगन सेन सगर सुतन लागी,
कापिल सरायलौ तराय तोपखानेकी. ४

अख गहि छत्रसाल खिज्यो खेतवेतवेके,
उततें पठाननहू किन्ही झुकी झपटै;
हिम्माति बडीके गवडीके खिलवारनलौ,
दैतसें हजारन हजार बार चपटै;
भूखन भनंत काली हुलसी असीसनकों,
सीसनको ईशकी जमाति जोर जपटै;
समदसौ समदकी सेना त्यों बुदेलनकी,
सैलै समशेरें भई बाडवकी लपटै. ५

(छप्पय.)

तहवरखान हराय, एड अनवरकी जंग हरि;
सुतरुदीन बहलाल, गये अवदुल समद मुरि;
महमुदको मद भेटि, शेर अफगनहि जेर किय,
अति प्रचंड भुजदंड, बलन कहिन दंड दिय;
भूखन बुदेल छत्रसाल डर, रंग तज्यो अवरंग लजि:
जुके निशान सके समरसों, मके तक तुरक भजि. १

(बुन्दी और पन्ना नरेश शत्रुसाल विषयक
दोहा)

इक हाढा बुन्दी धनी, मरद मोहवा बाल;
सालत नौरंगजेबकों, ये दोनो छतसाल. १
वे देखो छत्ता पता, ये देखो छतसाल;
वे दिल्लीकी ढाल ये, दिल्ली दाहन बाल. २

(कुमाठमरेश उद्योतध्वसिंहके गजघर्जन)

(कविस)

उलदत मद अनुमद उयों जलधि जल,
बलहद भीमफद फाहके न आहके,
प्रचल प्रचंड गंड मंडित मधुप धृंद,
विच्यसे बुलन्द सिंधु सातहके ग्राहके,
भूखन मनंत झूल भपति भपान छुकि,
झुमत झुलत झहरात रथ डाहके,
मेघसे घमडित मज्जदार तेज पुंज,
गुजरत कुजर कुमाठ नरनाहके

१

(जयपूरपति रामसिंह जयसिंह प्रशंसा)

अफबर पायो भगवतके तनेसों मान,
बहुरि अगतसिंह महा मरदानेसों,
भूखन यों पायो जहांगीर महा सिंहजूसों,
शाहजहा पायो जयसिंह जग जानेसों,
अब अवरंगजेब पायो रामसिंहजूसों,
औरो दिन दिन पहे कूरमके मानेसों,
कैते राव राजा मान पावे पातशाहनसों,
पावे पातशाह मान मानके घरानेसों

१

भले भाइ भासमान भासमान मान जाको,
मानत भित्तारीनके सुरि मय जाल हैं,
भोगानको भोगी भोगीराज कैसी भांति मुजा,
भारि भुमिमारके उभारनको ख्याल है,
भावतो समानि भूमि भूमिनीको भरतार,
भूखन भरतखड भरत सुवाल है,
विमौको मंडार औ मलाइको भवन भास,
भाग मेरे भाल जयसिंह भुवपाल है

२

(राजपुत्र शाहु प्रशंसा)

शाहजीकी साहिबी विस्वात कछु होनहार,
जाके रजपूत मेरे जोम शमफत है,

भारे भारे नग्वारे भागे घर तारे दे दे,
 बाजे ज्यों नगारे घनघोर घमकत है;
 व्याकुल पठानी मुगलानी अकुलानी फिरै,
 भूखन भनंत मांग मोती दमकत है;
 दखिनके अमिल भो समिलहि चहूं और,
 चंबलके आरपार नेजा चमकत है.

१

शाहूजीकी साहिबी बखाने उमराव कौन,
 ऐसैं रजपूत जैसे शेर भमकत है;
 भारे भारे नगर भजत गढ तारे दे दे,
 कारे घनघोर ज्यों नगारे घमकत है;
 जाके भय छानी मुगलानी विल्लानी फिरै,
 दृष्टि दृष्टि मांगनके मोती दमकत है;
 दिल्ली दल दाहिबेंको दखिनके केहरीके;
 चंबिलके आरपार नेजे फरकत है.

२

बलख बुखारे मुलतान पेलि पारे अरु,
 काबुल पुकारे कोउ गहत न सार है;
 रूम रुंद डारे खुरासान खुद भारे खग,
 खंधारलौ झारे ऐसी शाहुकी बहार है;
 सख्खरलों भख्खरलों मक्करलौ चले जाओ,
 टकर लिवैया कोऊ वार है न पार है;
 भूखण सिरोइलों परावने परत अब,
 दिल्ली पर परत परदनकी छार है.

३

(शिवाजी महाराज शौर्य-बल महिमा.)

इंद्र जिमि जंभ पर वाडवसु अंभ पर,
 रावनसु दंभ पर रघुकुलराज है;
 पौन वारि वाह पर शंभु रतिनाह पर,
 त्यों सहस्र बाह पर राम द्विजराज है;
 दावा द्रुम दंड पर चिता मृग झुंड पर,
 भूषन द्वितुंड पर जैसे मृगराज है;
 तेज तम अंश पर कान्ह जिमि कंसपर,
 त्यों मलेच्छ बंश पर शेर शिवराज है.

१

गरुडका दावा जैसे नागके समूह पर,
दावा नाग जुध पर सिंह शिरताजका,
दावा पुरकृतका पहारनके कुल पर,
दावा सब पंथिनके गन पर बाजका,
भूपन भनंत सात द्विप नव खंडमाहि,
तम पर दावा रवि किरन समाजका,
उत्तर दक्षिन विशि पूरव पछांह माहि,
जहा पातशाही तहां दावा शिवराजका

(सुनत होत सबकी)

आदिकी न जानो देवी देवता न मानो साच,
कहू सो पिछानो बात कहत हों अबकी,
अकम्बर बम्बर हुमायु हव बाधि गये,
हिंदु औ मुरककी कुरान घेद जबकी,
याहि पातशाहिनमें हिंदुनकी चाह थी सो,
जहागीर शाहबहां शास्त्र पूरे सबकी,
काशीजूकी कल्य गई मथुरा मसीद भई,
शिवाजी न होता तो सुनत होत सबकी

देवल गिरावते फिदावते निशान नये,
ऐसे समै राव राने सब गये डबकी,
गौरी गनपति आप औरंगको देख ताप,
आपके मुकाम पर भार गये डुबकी,
पेगम्बर पीर सबे दिगम्बर देख लिये,
सिद्धकी सिद्धाई गई वहेते पूर फवकी,
काशीजूकी कल्य गई मथुरा मसीद भई,
शिवाजी न होता तो सुनत होत सबकी

कुम्भकर्ण औरंगको औनि अबतार लेके,
मथुरा जराहके दुहाई फेरी रबकी,
सोदि डारे देवी देव देखल अनेक सीढ़,
पेस्वी निज पाननते छूटी माल सबकी,
भूपन भनत भाजे काशीपति बिचनाथ,
और क्या गिनार्त नाम गिनतीमें अबकी,

दिलमें डरन लागे चारौ वर्ण वाहि समै,
 शिवाजी न होता तो सुनत होत सक्की. ५
 रानी रजवारनकी दुकानां लगाइ बैठी,
 तहां आइ बादशाह राह देखे सक्की,
 बैटिनको यार और यार है लुगाइनको,
 राहनके मार दावादार गये धक्की;
 ऐसी कीनी बात तोउ कोउ ये न कीनी घात,
 भइ है नादानी वंश छत्तीशमें कक्की;
 दाखिनके नाथ ऐसी देखी धरे मूच्छें हाथ,
 शिवाजी न होता तो सुनत होत सक्की. ६

(शिवाजी पराक्रम.)

औरंग अठाना शाह शूरकी न माने आनि,
 जघ्वर जौराना भयो जालम जमानाको;
 देवल डिगाना राव राना मुरझाना अरु,
 धरम ढहाना पन मेढ्यो हे पुरानाको;
 कीनो बमशाना मुगलानाको मसाना भरे,
 जपत जहांना जस विरद बखानाको;
 शाहिके सपूत शिवराना किरवाना गही,
 राख्यो है खुमाना वर वाना हिदुवानाको. ७
 कूरम कबंध हाडा तुंवर बाघेल वीर,
 ग्रवल बुंदेलाहूते जेते दल मनीसों;
 देवल गिरन लागे मूरति ले विप्र भागे,
 नेकहू न जागे सोइ रहे रजधनीसों;
 सवने पुकार करी सुरन मनायबेकों,
 सुरने पुकार भारी कीनी विश्वधनीसों;
 धरम रसातलकों डूवत उबार्यों शिवा,
 मारी तुरकान घोर बल्लमकी अनीसों. ८
 वेद राखे विदित पुरान परसिद्ध राखे,
 रामनाम राखे अति रसना सुघरमें;
 हिंदुनकी चोटी रोटी राखि है सिपाहनकी,
 कांधमें जनेउ राखी माला राखी गरमें;

मीढि राखे मुगल मरोढि राखे पातशाह,
बेरी पासि राखे बरदान राखे करमें,
राजनकी हृद राखी तेग बल शिवराज,
देव राखे देवल स्वधर्म राख्यो घरमें

९

प्रेतनी पिशाच और निशाचर आपुसमें,
मिलिकें मुदित घनी चाटत बघाह है,
भैरव औ भूत प्रेत भ्रमत भयकरसें,
जुध्य जुध्य जोगिनी जमात जोरि आह है,
किलकि किलकि काली करत कुल्हाहटसों,
हौरु छे दिगम्बर डिम डिम बजाह है,
शिवा वृक्षे शिवसों समाज आज कहा चलै,
काहपे शिवा नरेन्द्र भकुटी चढाह है

१०

साजी चतुरंग सेन अंगमें ऊमग धरि,
सरजा शिवाजी जंग जीतन चलत है,
भूखन भनत मुनि निनद नकीषनके,
नैन निरमद दिशा गजफे गलत है,
एल फैल सेलमेल खलकमें गैलगौल,
गजनकी टैलपैल गैल उखलत है,
तारासों तरनि धूरि धारामें छात जिमि,
धारा पर पारा पारावार ज्यों द्युत है

११

सिंहलके सिंह सम रन सर जाकी हल्क,
मुनि चौंकि चलत बघाह पाटसादीके,
भूखन भनत मुचपाल दूरे द्राविडके,
पेलफैल गैलगौल भूले उनमादीके,
उखलि उखलि उंचे सिंह गिरे लंकमाहि,
वृद्ध गये महल विभिषनके दावाके,
महि हाले मेरु हलि अटका कुबेर हाले,
जा दिन नगारे बाजे शिव शाहजावाके
कोट गढ़ दाहियत एके पातशाहनके,
एके पातशाहनके देश दाहियत है,

१२

भूखन भनंत महाराज शिवराज एक,
 शाहनके सैनपर खग वाहियत है;
 क्यों न होहि बैरिनकी बाल बौरी कान सुनि,
 दौरानि तिहारी कहो क्यों निवाहियत है;
 रावरे नगारे सुनि बैर बारै नगरन,
 नैन वारे नदन निवारे चाहियत है.

१३

फिरगाने फिर है हृद हवसाने सुनि,
 भूखन भनंत कोऊ सोवत न घरी है;
 बिजापूर विपति बिडारि सुनि भाजे सब,
 दिल्ली दरगाह बीच परी खरभरी है;
 राजनके राजा सब शाहनके शिरताज,
 आज शिवराज पातशाहि चित्त धरी है;
 बलख बुखारा काशमीरलों पुकार परी,
 धामधाम धूमधाम रूपशाम परी है.

१४

मालवा उजेन लगि भूखन भनंत साच,
 शहर सिरोइलों परावने परत है;
 गोडवान फिरगान करनाट तिलमान,
 हबसान खुरेसान हिय हहरत है;
 शाहिके सपूत शिवराज वीर तेरी धाक,
 गाढे गढपति कोउ धीर ना धरत है;
 गोलकुंडा बिजापूर आगरा दिल्लीके कोट,
 बाजे बाजे दिन दरबाजे उघरत है;

१५

बदल न होय दल दच्छन उमंडि आये,
 घटा येन होय इम शिवाजी हकारेके;
 दामिनी दमक नाहि खुले खग वीरनके,
 इंद्रधनु नाहि ये निशान है सवारेके;
 देखि देखि मुंगलकी कामिनी बिगर त्यागे,
 उझकि उझकि घर छांडत बिडारेके;
 दिल्लीपति भुहीमति गाजत न घोर घन,
 बाजत नगारे ये सितारे गढवारेके.

१६

चपला न तेग धरो फिरत फिरगो मद्र,
 इद्रको न चाप रूप बेरख समाजको,
 धाये धुरवा न धाये धूरिके पटल ब्योम,
 गाजयो न साजयो है दुदमि अंवाजको,
 भोशिलाके डरन डरानी रिपु रानी कह,
 पियु भजो देखि उदे पावसके साजको,
 घनकी घटा न गज घटनि सनाह साजि,
 भूखन भनत आयो सैन शिवराजको १७
 दाराकी न दौर यह मुजुवेकी रारि नाहि,
 चांधवा न होय ये मुरादशाह घालको,
 मद्रु विश्वनाथको न बास ग्राम गोकुलको,
 देविको न देहरा न मंतिर गुपालको,
 गाढे गढ लीन्हे फित धैरी फतखान कीन्है,
 जानत न भयो यह शाहकुल सालको,
 इकत है दिल्ली सो सम्हारे क्यों न दिल्लीपति,
 आन ल्यो घको शिवराज महाफालको १८
 बघ कीने बख्ख सो धैर कीनो खुराशान,
 कीनी हवशान पर पातशाही पलही,
 बेदर फन्थान घमशायकें छिनाम लीने,
 जाहिर जहान उपखान येहि चल्ही,
 जग करि ओरसों निजामशाहि जेर कीनी,
 रनमें नमाय है बुंदेल छलबल्ही,
 ताके सब देश छंटी शाहजीके शिवराज,
 कूटी फोज अजो मुंगलन हाथ मल्ही १९
 चूर करी चंद्राव जावली जपत करी,
 घेरे हे सिंगारपुर भूपनको जायकें,
 भूखन भनत दल दखिनि उमाहि आये,
 मारे पातशाहि दल सबल भजायके,
 हुरेमें डरानी अकुलानी कहे बार बार,
 सोवे कहा फत अब सिंहको जगायकें,

आये शिवराज आज घौसाकी धुकार देत,
बाजी करनालें परनालें पर आयकें. २०

दुर्ग पर दुर्ग जीते सरजा शिवाजी गाजी,
उग्र नीचे डगपर रुंडमाल फरके;
भूखन भनंत भारे जीतके नगारे बाजे,
सारे करनाटी भूप सिंहलको सरके;
मारे सुनि सुभट पनारे वारे उदभट,
तारे लागे फिरन सितोरे गढधरके;
विजापुर वीरनके गोलकुंडा धीरनके,
दिल्ली उर मीरनके दाडिमसें दरके. २१

तेरे त्रास बैरि बधू पीवत न पानी कोउ,
पीवत अघाय धाय उठे अकुलाइ है;
कोउ रही बाल कोउ कामिनी रसाल सो तो,
भई बेहवाल फिरे भागे बनराइ है;
शाहिके सपुत खूद आलम खुमान सुनो,
भूखन भनंत तेरी कीरति बनाइ है;
दिल्लीके तखत तजि निंद दिन रात भारी,
शिवा शिवा बकत है सारी पातशाइ है. २२

साजी गज बाजि शिवराज सैन साजतहि,
दिल्ली दल गही दिशा दीरघ दुखनकी;
तनिया न तिलक सुथनिया न रही अंग,
घामें घबरानी छोडी सेजियां सुखनकी;
भूखन भनंत पति बांह बहियां न तउ,
छहियां छबिली ताक रहिया रुखनकी;
बालियां बिथुरी ज़िमि आलियां नलीन पर,
लालियां मलीन मुगलानियां सुखनकी. २३

कत्ताकी कराकनि चकताको कटक काटि,
कीनी शिवराज तुम अकथ कहानियां,
भूखन भनंत और मुलक तिहारी धाक,
दिल्ली औ बिलायत सकल बिल्लानिया;

आगरे अगारनकी नांघती पगारनि,
सम्हारती न बारन बदन कुम्हिलनियां,
क्रीबी अब क्या कहि गरीबी गहि भागि जात,
बीबी बिन सुथनही नीबी बिन रानियां २४
सोघेको अधार कितमिस जिनको अहार,
चार अंक एक मुख चंदके समानी है,
पेसी अरि नारि शिवराज धीर तेरे त्रास,
पायनमें छाले परे काय कुम्हलनी है,
प्रीपमकी तपतीकी विपति न कान सुनि,
कचकी कलीसी बिन पानी मूरमानी है,
तोरिके छराको अप्सरासी यों निचोरि कहै,
तुम्हने कह्ये कत मुक्तामें पानी है २५

(विरोधाभास)

अत्तर गुलाब चोवा चंदन सुगंध सम,
सहज शरीरकी सुवास बिसाती है,
पलभर पलंगतें भूमि न धरति पाय,
सोइ खानपान छोडि बन बिलछाती है,
मूखन भनत शिवराज चीर तेरे त्रास,
हार भार तोरि निज सुर्धा बिसराती है,
परम नरम हूँ हरम बादशाहनकी,
नाशपाती खाती सो विनाश पाती खाती है २६
अदरते निकसी न मंदिरको देख्यो द्वार,
बिन रथ पथ वे उघारे पाय जाती है,
हवाह न छागी सोइ हवातें बेहाल भई,
लाखनकी भीरमें सम्हारती न छाती है,
मूखन भनत शिवराज तेरी हाक सुनि,
हार डारि चीर फारि मन छुलछाती है,
पेसी बनि नरम हुरम बादशाहनकी,
नाशपाती खाती सो विनाश पाती खाती है २७
उतरी पलंगतें न दियो हे धरापै पग,
सोइ निशि पोस चली सगबग जाती है,

अति अकुलाती मुरझाती न छिपाती गति,
 बात ना सुहाती बोले अति अनखाती है,
 भयनके भार दबी मखनके भार दबी,
 विजन डुलाती सोइ विजन डुलाती है,
 भूखन भनंत शिवराज नारि वैरिनीकी,
 नगन जडाती सोइ नगन जडाती है.

२८

प्रबल पठान फोज काटिकें कराल महा,
 अपनी मनाइ आनि जाहिर जहानकों;
 दौरी करनाटकमें तौरी गढ़ कोट लीन्हें,
 मोढीसों पकारि लोढी शेरखां अचानकों;
 भूखन भनंत सब मारिके विहाल करी,
 शाहिके सुवन राचे अकथ कहानकों;
 वारगीर बाज शिवराज तो शिकार खेले,
 शाह सैन शकुनमें ग्राही किरवानकों.

२९

(रूपकालंकार.)

कूरम कमल कमधुज हे कदम्ब फूल,
 गौड हे गुलाब राना केतकी विराज है;
 पाटल पवार जूही सोहत हैं चंद्रावत,
 बकुल बुदेल अरु हाडा हंसराज है,
 भूखन भनंत मुचकुंद बड गूजर है,
 बघेले वसंत आदि सुमन समाज है;
 सबहीको रस लेकें बैठि न शक्त आई,
 आलि अवरंगजेब चंपा शिवराज है.

३०

केतकी भो राना और बेला सब राजा भये,
 ठौर ठौर लेत रस नित्य यह काज है,
 सिंगरे अमीर भये कुंद मकरंद भैर,
 भृंगसें भ्रमत लखि फूलके समाज ह;
 भूखन भनंत शिवराज देशदेशनकी,
 राखि है बटोरि एक दच्छनमें लाज है,
 तजत मलिन जैसे तेसैं तजि दुर भाज्यो,
 अलि अवरंगजेब चंपा शिवराज है.

३१

सतयुग द्वापर औ त्रेता कलियुग मधि,
आदि भयो नाहि भूप तिनहत्तें आधरी,
अकबर बन्धर हुमायु शाह शासनसों,
स्नेहत्तें सुधारी हेम हीरनत्तें सगरी,
भूखन भनत ऐसी मुगलानी चूथ दीन्ही,
दौरी दौरी पौरि पौरि छूट ली चह फरी,
घूरि तन छाहि बैठि झरत है रैन दिन,
सूरतफों मोरि बढसूरत शिवा करी

३२

पट्खर प्रबल दल भस्तर सों दोर करी,
आय शाहजीको नद बांधी तेग बाकरी,
शहर मिल्यो मारी गिरद मिलायो गद,
अजह न आगें पाछें भूप किन ना करी,
हीरा मनि मानिककी लाख पोछि छादि गयो,
मंदिर दहायो जोप काढी मूल कांकरी,
आलम पुकार कर आलम पनाहजूर्पे,
होरीसी जराय शिवा सूरत फना करी

३३

उतै पातशाहजूके गजनके ठह छूटे,
उमड़ी धुमड़ी मतवार घन भारे है,
इतै शिवराजजूके छूटे सिंह राजसो,
बिदारे कुम्भ करिनके चिक्करत फारे है,
फोजें शेर सैयद मुगल औ पठाननफी,
मिछि अफसर काह भीर न सम्हारे है,
हद हिंदुवानकी बिहद तरवारि राखी,
कैयो वार दिल्लीके गुमान झारि डारे है

३४

शाहिके सपूत शिवराज वीर तेरे डर,
अहग अपार महा दिमाज सो डोलिया,
चंदर बिलायत सो उर अकुलाने अरु,
सक्ति सदाय रहे बेश बहलोलिया,
भूखन भनत कोल करत कुतुबशाह,
चारे चहु और इच्छा येदिल्ला मोलिया,

दाहि दाहि दिल कैने दुखदही दाग ताँत,
आहि आहि करत औरगशाह ओलिया.

३५

तेरी धाकहीतें नित हवसी फीरंगी औ,
बिलायती बिलंदे करे वाराधि बिहरनो;
भूखन भनंत विजापुर भागानेर दिन्ही,
तेर बैर भयो उमराओनको मरनो;
बीच बीच उहां केते जोरसैं मुलुक छंटे,
कहा लगी साहस शिवाजी तेरे वरनो;
आठ दिगपाल त्रास आठ दिशि जीतिवैंको,
आठ पातशाहनसों आठौ याम लरनो.

३६

भूप शिवराज कोप करी रनमडलमें,
खगग गहि कुयो चकताके दरवारमें;
काटे भट्ट बिकट रु गजनके मुंड काटे,
पाटे डर भूमि काटे दुवन सितारमें;
भूखन भनंत चैन उपजे शिवाके चित्त,
चौसठ नचाइ जेवे रेवाके किनारेमें;
आतनकी तात बंगली खालकी मृदंग वाजी,
खोपरीकी ताल—पशुपालके अखारेमें.

३७

आये चतुरंग सैन सिंह शिवराजजूके,
देखि पातशाहनकी सेना धरकत है;
जुरत सजोर जंग जोम भरे शूरनके,
झ्याह झ्याह नागिनमें खगग खरकत है,
भूखन भनंत भूत प्रेतनके कंधनपै,
टांगी मृत वीरनकी लोथें लरकत है;
कालमुख भेटे भुमि रुधिर लपेटे पर,
फटे पठनेटे मुंगलेटे फरकत है.

३८

जीत्यो शिवराज सलहेरको समर सुनि,
नर काहू शूरनके सीना धरकत है;
देवलोकहीमें अजो मुंगल पठाननके,
सरजाके शूरनके खगग खरकत है;

मुखन भनत भारी भूतनके मुखनमें,
टागी चंद्राउतनकी लोथ लरकत है,
कोउ ना लपेट अध फारे रन छेटे अजो,
रुधिर लपेटे पठनेटे फरकत है

३९

कोप करी चढयो महाराज शिवराज वीर,
घोंसाकी धुकारतें पद्मार दरकत है,
गिरे कुमि मत्तवारे श्रोणित फुहारे छूटे,
कडाकड छिति नाल लखो करकत है,
मारे रन जोमक जुवान खुरासानि केते,
काटि काटि दाटि दाँधें छाती थरकत है,
रनमूमि छेटे वे चपेटे पठनेटे परे,
रुधिर लपेटे मुंगलेटे फरकत है

४०

दिल्ली दल दलै सल्हरेके समर शिवा,
भूखन तमासे आय देव दमकत है,
फिलकत कालिका फटेजेकी कल्ल कर,
करिके अल्ल भूत भैरों तमकत है,
फहु रूढ मूड फहु कुड भरे श्रोणितके,
फहु बखतर करी छुड शमकत है,
खुले खग कध घरी ताल्याति बंध परी,
धाय धान धरनि कबंध धमकत है

४१

कत्ताके कसैया महा वीर शिवराज तेरी,
रूमके चकतालों शका सरसात है,
काशमीर काबुल कलिंग कलकत्ता अरु,
कुल करनाटककी हिम्मत हरात है,
बिकट बिराट भग व्याकुल बलख वीर,
बार हो बिलायत सकल बिलछात है,
तेरी धाक धुधरि धरामें अरु धाम धाम,
अधाधुध आधीसी हमेश हहरात है
बारही हजार असबार जोरि दलद्वार,
एसे अफजुलखान जोर जुल्मात है,

४२

ऊंट हय पैदल सवारनके झुंड काटी,
 हाथिनके मुंड तरबूचलों तरासती.
 जिन फन फुतकार उडत पहार भारे,
 भुतल हलत पीठ कमठ बदालिगो,
 जिन विषज्वाल ज्वालामुखीसी पसारि सवे,
 उनतें चिक्करि मद दिग्गज उगलिगो;
 किन्हे पायमाल सब मालिक जहानजूके,
 भूखन भनंत सिधु जलथल हालिगो;
 खग खगराज महाराज शिवराज तेरो,
 ऐसेही मुंगल दल नागको निगालिगो.

५०

५१

मार कर बादशाही खाकशाही कर दीन्ही,
 छीन लीनी छिति हद सब सरदारेकी;
 खिस गई शेखी फिस गई शरताइ सवे,
 हिस गई हिम्मतही हियतें हजोरकी;
 भूखन भनंत भारे धोंसाकी धुंकार वाजे,
 गरजत मेघ ज्यों वरात चढे भारेकी;
 दच्छनी दमाकदार दुल्हो शिवराज भयो,
 दिल्ली दुल्हनि भई शहर सतारेकी.
 चकित चकता चित चौक उठे बेर बेर,
 दिल्ली दहसति चित चाहे सरकति है;
 बलख बिलात बिलखात बिजापूरपति,
 फिरत फिरंगिनकी नारि फरकति है;
 थरथर कापत कुतुबशाह गोलकुंडा,
 हहरि हवश भूप भाम भरकति है;
 सिंह शिवराज तेरे धोंसाकी धुंकार सुनि,
 केते पातशाहनको छाती दरकति है.

५२

५३

(सुरतकी लूट; विजापुर-सिंहगढ विजय.)
 दौरी चढि ऊंट फरियाद चहूं खूंट किये,
 सुरतकों कूट शिवा छंट धन ले गयो,
 कहि ऐसैं आय आमखास मधि शाहनकों,
 कौन ठौर जाये दाग छाती बिच दे गयो;

मुनि सोइ शाह कहे यारो उमराओ जाओ,
सो गुनाह राव एती धेरमें करी गयो,
भूखन मनंत मुगलानी सबे चूंय दीन्ही,
हिन्दमें हुकुम शाहिनदजूको धे गयो

५४

जोर कर जैहें अब अवर नरेशपर,
लडिये लडाइ ताके सुभट समाजपें,
भूखन मनंत रूम बलख बुखारे जैहें,
जैहें शाम चीन तरी जलधि जहानपें,
सब उमराव मिलि एकमत ठानि कहे,
आइके समीप अवरंग शिरताजपें,
मिख मागि खैहें चिन मनसब रैहें पैं न,
जैहें हजरत महा बलि शिवराजपें

५५

तेगा भरदार स्याह पंखा भरदार स्याह,
निखिल नकीम स्याह बोलत विराहकों,
पान पिकदानी स्याह सेनापति मुख स्याह,
जहा तहा ठाढे गिने भूखन सिपाहकों,
स्याह भये सारी पातसाहिके अमीर खान,
काहूको न रबो जोम समर उमाहको,

सिंह शिवराज दल मुंगल विनाश करि,
घांस ज्यों प्रजायों आमखास पातशाहको

५६

दिल्हीको हरीछ मारी सुभट अडोल गोल,
चालीस हजार छे पठान बायो तुरकी,
भूखन मनंत जाकी दौरिहीको शोर मध्यो,
वेदिलकी सीम पर फोज आन दरकी,

भयो है उचाट करनाट नरनाहनकों,
ढौल उठि छाती गोलकुंडाहीके घरकी,
शाहिके सपूत शिवराज बीर सेने तन,
बाहुबल राखी पातशाही बिजापुरकी

५७

अफजुलखान जूकों मारे मयदान जाने,
बिजापुर गोलकुंडा ढराये दराज है,

भूखन भनंत ऐसे अनंत उपाव करी,
हवसी फिरंगी मारे उल्टाइ जहाज है;
देखतमें रुस्तमकों दिनमें खराव कियो,
सल्हेरके संगरके आवत अवाज है;
चौकि चौकी चकता कहत चहुंधातें यारो,
लेत रहो खवारि कहा लौ शिवराज है.

५८

छूटत कमान वान वंदुक रु कौकवान,
मुसकिल होत मुरचानहकी ओटमें;
ताहि समे शिवराज हुकम दे हल्ला कियो,
दावा बांध द्वेषीपर वीरन ले जोटमें,
भूखन भनंत तेरी हिम्मत कहालौ गिनो,
किम्मत इहां लग है जाके भट जोटमें;
ताव दे दे मूच्छन कँगुरनपै पाव दे दे,
घाव दे दे अरिमुख कूद परे कोटमें.

५९

कैयक हजार किये गुर्ज वरदार ठाढे,
करिकें हुस्यार नीति शिखई समाजकी;
राजा जसवंतकों बुलायकें निकट राखे,
जिनकों सदाय रही लाज स्वामि काजकी;
भूखन भनंत ठाढो पीठ है गुसलखान,
सिंहसी झपट मन मानी महाराजकी;
हठतें हथ्यार फेंट बाधी उमराव राखे,
लानी तव नौरंगने भेट शिवराजकी.

६०

सबनके उपर खडे रहन योग्य ताके,
आन ठाढों कियो छ हजारिनके नियरे;
जानी गैर मिसल गुसिले गुस्सा धारि मन,
कीन्ही ना सलाम न वचन कहे सियरे;
भूखन भनंत महावीर बलकन लाग्यो,
सारी पातशाहिनके उड गये जियरे;
तमकिके लाल मुख शिवाको निरखि भयो,
शाहमुख नौरंग सिपाह मुख पियरे.

६१

सारी पातशाहीके अमीर जुरि ठाढ़े तहा,
लायकें पिठाय कोइ सुबनके नियरे,
देखिकें रसीले नैन गरव गसीछे भये,
करी न सलाम न बचन कहे सीयरे,
भूखन मनत जब धर्या कर मूठ पर,
देखी तुरकनके निकसि गये जियरे,
देखी तेग चमक शिवाको मुख छाल भयो,

स्याह मुख नौरंग सिपाह मुख पीयरे
घिरे रहे घाट और बाट सब घिरे रहै,
बरग दिनाफी गैल दिनमें छवै गयो,
ठौर ठौर चाँकी छडी रही सब स्वारनफी,
मीर उमरावनके बीच छै चलै गयो,
देखेमें न आयो एसे कौन जाने कैसे गयो,
दिल्ली कर मीडे कर भारत बिते गयो,
सारी पातशाहीके सिपाह सेवा सेवा करे,
पर्या रक्षो पलग परेवा सेवा छे गयो

६२

६३

मोरँग कुमाउ आदि बाघव पलाउ सबे,
कहाँलै गिनाउं जेते भुपतिके गोत है,
भूखन मनत बडे पर्वत निवासी लोग,
बाघनी बघजा नव कोटि धंध होत है,
काबुल कपार खुराशान जेर कन्है जिन,
मुगल पठान शेख सैयतसें रीत है,
अब लग जानत है बडे होत बादशाह,
शिवराज प्रगटे तें राजा बडे होत है
उदधिके अगस्त औ बांस बन दावानल,
तिमिरपें तरनिकी फिरन समाज हो,
कंशके कन्हैया और चूहाके बिडाल पुनि,
कैटभकी फालिका बिहगमके बाज हो,
भूखन मनत सब आसुरके इद्र पुनि,
पन्नगके कुलके प्रवल पंथीराज हो,

६४

रावनके राम सहस्रबाहूके पशुराम,
 दिल्लीपति दिग्गजके सिंह शिवराज हो. ६४
 जोर रुशियानको हे तेग खुरासानहूकी,
 नीति इंगलांड चीन हुन्नर महादरी;
 हिम्मत अमान मरदान हिंदुवानहूकी,
 रूम अभिमान हवसान हृद कादरी;
 नेकी अरवान शान अदब इरान त्योंही,
 क्रोध है तुरान ज्यों फरांस फंद आदरी;
 भखन भनंत इमि देखियें महीतलपे,
 वीर शिरताज शिवराजकी बहादरी. ६६

आपसकी फूटहीतें सारे हिंदवान तूटे,
 तूटयो कुल रावन अनीति अति करते;
 पैठिगो पताल बलि वज्रधर ईरपातें,
 तूट्यो हिरनाक्ष अभिमान चित धरते;
 तूट्यो शिशुपाल वासुदेवजूसों वैर करि,
 तूट्यो हे महीश दैत्य अधर्म विचरते;
 राम कर छुवनतें तूट्यो ज्यों महेश चाप,
 तूटी पातशाही शिवराज संग लरते. ६७

(शिवाजीकी राजनीति-कीर्ति.)

चोरी रही मनमें ठगोरी रही रूपहीमें,
 नांही तो रहि हे एक मानिनीके मानमें;
 केशमें कुटिलताई नैनमें चपलताई,
 मोहमें बँकाइ हीनताइ कटियानमें;
 भूखन भनंत पातशाह पातशाहनमें,
 तेरे शिवराज राज अदल जहानमें;
 कुचमे कठोरताइ रतिमें निलजताई,
 छांडी सब ठौर रही आइ अबलानर्म. ६८
 दरबर दोरि करी नगर उजारि डारे,
 कटककों कूटि मारे दुर्जन दरबकी;
 जाहिर जहान जंग जालम है जोरावर,
 चलै न कलुक जोर जब्बर जरबकी;

गिरगन से ग्राम दृग्न गदत सोद,
 मरग कवत विगयन अरगकी,
 टोन्न गदेगी गर कावुन कंधार जय,
 रोप गरि कां. ममगेर ज्यों मरगकी ६९
 गरा पानगाहनगों कंठि गिरगन बीर,
 जे कीहे देग हद मारी दग्गामें,
 हरी दग्गरी सामें गम्यो न मवान कोऊ,
 हीने हाथियार टोरे वन वनचामे
 अतिष अदारी मामदारी दे दे सारी नावे,
 माटे सर विर । उदाये मय मरमें,
 पीर मम डीगारे गिरिमें गिरन गगे,
 मुदमनगारे गिरे छट मनगारमें ७०
 (मर्वणा)

केनक देग विसे मुवके वर, मज्जिन चगुन चापिक राग्यो,
 रूप गुमान हया गुजगनको, मृगनको रग वूमिके चाग्यो,
 पवन मेरि मनेर मने दार, सोद बभ्यो सिद्धि नीन हि माम्यो, १
 सो रंग हे गिरगन महावलि, नौगामें रंग पद न गम्यो
 औरंगा इक और मजे, इक और गिराव मेत्रनवारे,
 भूपन दजिन गिरीय देग, विये दुहु टीक छिदान विनारे,
 सोद गिराव गुमानदिके मग, गेग पगन समान निहारे,
 आत्मगीरक मीर यजीर विर चहुगान पगनमें भारे २
 यों पहिरे उमराव गेरे रन, नेर किये जगवन अजूषा,
 गायनमा अर गउदमा, पुनि हागि गिरे महमद दया,
 भूमन मने महादुग्गा पुनि, होय महापनमा अति ऊषा,
 मूमत नात गिराविके सेपने, पानमें केरत औरंग मूषा ३
 श्री गिरावरी भगपतिके यह, भांनि पराक्रम होवन भारी,
 दद गिये भुममटके नदि, कोउ अदद बभ्यो दत धारी,
 घंट मु दधिन भूमन दन, गुमान सये हिंदवान उजारी,
 दिन्हीने गाजन आयत साविये, पीटत आपकों पाच हजारि ४
 (छप्पय)

विग्यपर बिदनर, गर गर धनुष न संधदि,
 मगट विनु मझारि, नारि धम्मिट नहि बधदि,

गिरत गर्भ कोटीन, गहत चिंजी चिंता डर,
 चालकुंड दलकुंड, गोलकुंडा शंका उर;
 भूषण प्रताप शिवराज तुव, इमि दक्षिनदिशि संचरहि,
 मधुरा धरेश धक धक धकत, द्रविड निविड अविरल डरहि. १

सैयद मुँगल पठान, शेख चंद्रावत भच्छन,
 सोम सूर द्वै वंश, राव राणा रन रच्छन;
 इमि भूखण अवरंग, अरू एदिल दल जंगी,
 कुल करनाटक कोट, भोट कुल हवस फिरगी,
 चहुऔर बैर महि मेरु लगि, शाहितनै साहस झलक,
 फिर एक और शिवराज नृप, एक और सारी खलक. २

(कवित्त.)

मदजल धरन द्विरद बल राजतही,
 बहु जल धरन जलद छवि साजे है,
 भूमिके धरन फनपति अति लसतही,
 तेज ताप धरन ग्रीष्म रवि छाजे है;
 खगके धरन सोहे भर भारे रनहीमें,
 भूषण लसत गुन धरन समाजे है;
 दिल्लीके दलन देश दच्छनके थंभनाहि,
 एडके धरन शिव सरजा विराजे है. १

(सचैया.)

चक्रवती चकता चतुरागिनि, चारि यों चाप लई दिशि चक्का,
 भूप दरीन दुरे भनि भूषण, एक अनेकना वारिधि नक्का;
 औरंगशाहसों साहिकों नंद, लड्यो शिवशाह वजायके डंका,
 सिंहको सिंह चपेट सहे, गजराज करे गजराजसों धक्का. १

भैया.

(तत्त्व महत्व.)

शुद्धितें मीन पीए पय बालक, रासभ अंग विभूति लगाये,
 राम कहे शुक ध्यान गहे बक, भेड तिरे पुनि मुड मुंडावे;
 वल्ल विना पशु व्योम चले खग, व्याल तिरे नित पौनके खाये,
 ए तो सबी जड रीत विचच्छन, मोच्छ नहि बिन तत्वक पाये. १

जो पर छीन रहे निशि वासर, सो अपनी निधि क्यों न गुमावे,
जो जगमाहि लखे न अध्यात्म, सो जिय क्यों निहचें पद पावे,
जो अपने गुन भेद न जानत, सो भवसागरमें फिर आवे,
जो विप खाय सो प्राण तजे, गुड खाय जो काहे न कान विधावे २
(कर्मफल)

ग्रीष्ममें धूप परे तामें भूमि भारी जरे,
फूलत हे आक पुनि अतिही उमगिरे,
वर्षाकृतु मेघ भरे तामें वृक्ष केइ फले,
जरत जवासा अघ आपहीतें बहिके,
ऋतुको न दोष कोउ पुण्य पाप फले दोऊ,
जैसें जैसें किये पूर्व तैसें रह सहिके,
केई जीव सुखी होंहि केई जीव दुखी होंहि,
देखहु तमारो भैया न्यारे नेकु रहिके १

भोजराज.

(सापेक्षिक म्यूनता ई)

शरिके प्रकार पास माणिककी केती ज्योत,
रविके प्रकार तारा तेज ना धरत हे,
शूरवीर आगे कबू कायर न ठेरत हे,
सुजगकी दृष्टि आगे दीप न जरत हे,
कस्तुरीकी नास आगे केवडो कपूत लागे,
त्यो करम आगे रूप पाणीहि भरत हे,
कहत हे भोजराज सुने क्यु न कान वेत,
चतुरकी चारो वरण चाकरी करत हे १
भोज भनै पते होत हलके हरामजादे,
होस हीन हीजनिसें हिरगिज हितैये ना,
कलही कलकी क्रूर कृपिण कुनामी काक,
कपटी कुकर्मि क्रोधी किंचित हितैये ना,
चूसिया चवाई चोर चचल चलांक चित्त,
चोप चोप घस सिन तरफ चितैये ना,
बदी बखराही बदनामी बदफेळ बद,

चाहके है चाकर गुलाम गोरे गातनके;
 सेवक है सांचे सुघराई सुखदानके;
 खाने जादखांसे खूबसूरतिके भोज भनै,
 जोरावरदार तेरे कदम कलानके;
 छोरा छांह छबिके पछौरा पाय पोंछनके,
 भौरा खुशबोइ मुख मधुर बतानके;
 मोहके मुसाहब मुसद्दी दग फेरनके,
 हेरनके हुकुमी हजूरी हँसी जानके.

३

भौन.

(विरह व्याकूलता.)

आवनि सरद कैसी आवनि पियाकि पाइ,
 व्है गयो तियाको मन अंब रु अमल हे;
 वदन कलाधरकी और छबि छाइ रही,
 भाइ रही सारी सेत चादनी विमल हे;
 भौन कवि कहे हास कासको प्रकाश तैसे,
 कैसेके निकट आइ विहरत भल हे;
 नागरिके नेन जुग नाहको निरखि नेह,
 नीरमें विकसि रहे नील ज्यों कमल हे.
 चंदन उसीर नीर शीतल समीर धीर,
 लागत समीर पीर दूनी सरसति हे;
 भौन कवि कहे जोग जीवको न जानि परे,
 एसी या विभावरी विषम दरसति हे;
 चेत चारु चांदनी अचेत करि डारे मन,
 कहाँलों संभारे अंग अंग झरसति हे,
 वार वार तोहि में पुकारों हित लागि सखी,
 आउ भाजि भौन आजु आगि वरसति हे.

१

२

(सपैया)

हो अनुराग प्रवीन प्रिया औ, मनोहर हौ प्रभु हौ छवि किन्हे,
 मृपित हो नवयोवनसों, सिगरी अयल मत आनँद चिन्हे,
 मौन कहे कहिके अस बेन, चिते पिय ओर रही द्रग दिन्हे,
 और कछु न बने कहतें, असुवा भरि बाल द्रगचल लिन्हे १
 बारिद बारिसों मजनके, घन कानन मध्यमें वास ठयो हे,
 शतिल चदन बिंदुनके, पुनि देव मनोजहि पूजि ल्यो हे,
 मौन कहे कियो राति जगा अरु, लाज हुती सों तो दान दयो हे,
 कौन में पूरनरी तपस्या, अँखियानको आतिथि जो न मयो हे २
 रक महा बहु वासरको, जिमि पावे घनो प्रथ मूमि फही हे,
 मौन कहे बिलसे अतिहिंपे, तरु घन आनँद बारिज ही हे,
 या तनके बिछुरे अबलों बिरहानल ज्वाल्फी आच दही हे,
 लालको रूप लखे अस्त्रियां, अनिमेष मई अलसात नहीं हे ३

मतिराम

(भक्ति-शृंगार)

मेरी मतिमें राम हे, कवि मेरे मतिराम,
 चित मेरो आराम हे, वित मेरे आ राम १
 मो मन तम तो महि हरो, राधाको मुखचंद,
 चंदे जाहि लखि सिंधु लें, नंद नद आनंद २
 मुज गुजको हार उर, मुकुट मेरपर पुज,
 कुजबिहारी बिहरिये, मेरई मनकुज ३
 सखिन करत उपचार अति, परति विपति उत रोज,
 हुरसत ओज मनोजके, परस उरोज सरोज ४
 जागत ओज मनोजके, परसि पियाके गात,
 पापर होत पुरै निके, चंदन पफित गात ५
 बिरह तजे तिय कूचनि लें, असुवा सफत न आय,
 गिरि उदगन अँग गगनतें, बीचहि जात बिलस ६
 मली ल्यो उर भावतें, फरी भावती आप,
 काम निसेनी सी बनी, यह बेनीकी छाप ७

अटा ओर नंदलाल उत, निरखौ नेक निशक;
चपला चपलाइ तजी, चंदा तज्यो कलंक.

८

(प्रियामूर्ति शृंगार-कवित्त.)

सांझही सिंगार सजी प्राणप्यारे पास जाति,
वनिता वनक वनी बेलिसी अनंदकी;
कवि मतिराम कल किंकिनीकी धुनि बाजे,
मंद मंद चाल ज्यों विराजत गयंदकी;
रगे केसरी दुकूल हांसीमें शरत फूल,
केसनमें छाड़ छवि फूलनके बृंदकी;
पाछे पाछे आवत अँव्यारीसी भंवर भीर,
आगे फेल रही उजियारी मुखचंदकी.

१

वारने सकल एक रोरिहीकी आड पर,
हा हा पहिरिन आभरन ओर अंगमें,
कवि मतिराम जेसे तिच्छन कटाच्छ तेरे,
ऐसे कहां सर हे अनंगके निपंगमें;
सहज स्वरूप सुघराइ रीझि मन मेरो,
लोभि रह्यो देखि रूप अमल तरंगमें;
सेत सारीहीसों सब सोतें रंगों श्याम रग,
सेत सारीहीमें श्याम रगे लाल रगमें.

२

सहज जलद जिमि झलकत मयजल,
झिति तल हलत चलत मंद गतिमें;
कहे मतिराम बल विक्रम बिहदसी न,
गरजनि परें दिग वारन विपतिर्म;
सत्ताके सपूत भाऊ तेरे दिये हलकनि,
वरनी उंचाइ कविराज निकी मतिमें;
मधुकर कूल कर टीनिकै कपोलनितें,
उडि उडि पियत अमिय उडूपतिमें.

३

मेरे हसे हसत हे मेरे बोले बोलत हे,
मोहिको जानत तन मन धन प्रानरी;
कवि मतिराम मोहे टेढी किये हासी हूमें,
छोडि देत भूषन वसन खानपानरी;

मोते प्राणप्यारी प्राणप्यारेके न ओर फोऊ,
 तासों रीस कीजे यह कहाकी सयानरी,
 भै न कामनीको भैन काहूके न रूप रीझे,
 भैन काहूके सिखाये किनो मन मानुरी ४
 फेसरी कनक कहा चंपक धरन कहा,
 दामिनी यों दुरि जात देहकी दमकतें,
 कवि मतिराम छीने छेचन छपट लाज,
 अरुण कपोल काम तेजकी तमकतें,
 पगके धरत कल किंकिनी नेवर बजें,
 बिछिया समक उठैं एकही चमकतें,
 नाह मुख चाहि चिते औचक हंसति चौंकि,
 परे चंदमुखी निच चौकाकी चमकतें ५
 सेत सारी सोहत उज्यारी मुख चंदकीसी,
 महल निमद मुसबयानकी महामही,
 अगियाके ऊपर है उलही उरोज ओप,
 उर मतिराम माल मालती डहाडही,
 माने मंजु मुकुटसें मंजुल कपोल गोल,
 गोरीकी गोराइ गोरे गातन गहागही,
 फूलनकी सेज बैठी दांपती फैलाय रही,
 लायके फुलेल फुल वेल्सि लहालही ६

(संघर्ष)

सचि विराचि निकाइ मनोहर, लाजकि मूरतिवत बनाई,
 तापर तो बढभाग बडे, मतिराम लैं पति प्रीति सुहाई,
 तेरे सुशील स्वभाव भट्ट, कूलनारिनको कूलकानि शिखाई,
 तोहि मनो पति देवतके, गुन गौरि सबै गुनगौरि पठाई १
 कुदनको रंग फिको लो, मलके अति अगन चारु गोराई,
 आस्त्रिनमें अलसानि चितौनिमें, मजु विलासनकी सरसाई,
 को विन मोल बिकात नहीं, मतिराम लहे मुसकानि मिठाई,
 ज्योंज्यों निहारिये नेरे वै नैननि, त्योंत्यों खरी निकरेसि निकाई २
 जाके लो गृहकाज तज्यो, न शिखी सखियानकी शीख शिखाई,
 बेर कियो सिगरे ब्रजगांउमें, जाके लिये कूलकानि गवाई,

जाके लिये घर बाहरहुं, मतिराम रहे हँसि लोग चवाई,
 ता हरिसों हित एकहि बार, गंवारिमें तोरत बार न लाई. ३
 बीति गई जुग जाम निशा, मतिराम मिटी तमकी सरसाई,
 जानति हों कहुं ओर तियासों, रम्यो रसमें हंसिके रसिकाई;
 सोचति सेज परी यों नवेलि, सहेलिसों जात न वात सुनाई,
 चंद चढ्यो उदयाचलपें, मुखचंदपें आनि चढी पियराई. ४

मधुसूदन.

(चित्तशुद्धि.)

जिनके मनमें चुगली उचरी, सु तो पापको बीज बयो न बयो,
 जिनके मनमें इक लोभ बस्यो, तिन औगुन और लयो न लयो,
 जिहकी अपकीरति छाव रही, जन सो जमलोक गयो न गयो,
 मधुसूदनमें चित लीन भयो, तिन तीरथ नीर पयो न पयो. १

मनि (चिंतामणि.)

(वनिता विनोद.)

अवलोकनिमें पलकें न लगे, पलको अवलोकि विना ललके,
 पतिके परिपूरन प्रेम पगी, मन और सुभाउ लगे न लके;
 तियके विहसोंहि विलोकनिमें, मन आनंद आंखिन यों झलके,
 रसवंत कवित्तनको रस ज्यों, अखरानके ऊपर व्है झलके. १
 कोटि विलास कटाक्ष कलोल, बढावे हुलासन प्रीतमही तर,
 यों मनि यामें अनूपम रूप, जो मेनका मेन बधू कहि ईतर;
 सुंदरि सारि सुपेतमें सोहत, यों छवि ऊंचे उरोजनकी तर,
 जीवन मत्तगयंदके कुंभ, लसे जनु गंग तरंगनि भीतर. २
 यों मनि मेन महीप प्रताप, तिया तन वैर सुभाव गिले हे,
 आनन पूर निशाकरके ढिग, बार घने तम आइ हिले हे,
 वै सुखमाके समूह कछू, अगुरी पगुरी न प्रकाश खिले हे,
 छोडि सदाको विरोध कहा कर, कंजनसों नखचंद मिले हे. ३
 आंखिनकुं दिबेके मिस आनि, अचानक पीठ उरोज लगावे,
 केहुं कहुं मुसकाइ चिते, अंगराइ अनूपम अंग दिखावे,

नाह छुई छलसों छतियां, हसि मोंह चढ़ाह अनद बढ़ावे,
जोयनके मदमत्त तिया, हितसों पतिको नित चित्त चुरावे ४

मनियार. (यार.)

(हनुमंत पराक्रम)

फट फटाय है क्रुद्ध, किलकि कूघो कराल कपि,
दपट दिग वहलात, दिवाकर घद दीने तपि,
चले घराघर रूप, धरनि धारो घर घस्सत,
धुधि घवल धुव घाम, धूम करि फेरि घीर मत,
क्रिय छतनि घात अघात कह, यार मेरु डोल्यत डरनि,
कसमत कोल फह हरत कमठ, असकत फनि घसकत धरनि १

घसि पताल तन वाल, ब्याल पुरमाहि कालरुख,
देत ताल बेताल, नचति जोगिनि कराल मुख,
रव श्रिकाल विकराल, बाल काली किलकारत,
अमत भूत करि मीर, पिशाचिनी यु पुकारत,
कह यार चल्यत हनुमंत जब, नचति मीच अरिके पुरहिं,
वृफ वृद बटी घुमकेत फिरहि, श्यार डुंड डुडहिजु रहि २

(कविस)

दहराति छितिपें छुपाचरके छतनकी,
छाप उठी छपकि छतज घारा छलके,
डाकिनी डफरि ऊठे वीर परि परि ऊठे,
फारि खल जुध्यन गरजि गिद्ध गलके,
यार कहे नोबत निसान बाजे स्वर्ग जब,
पवनके नदनके स्वर्ग रग झलके,
मोले बिरवावली बिलदी भूत बंदी फिरें,
फालिका अनवी शिवर्नदी ओन हलके १
चफतर यो सरन रोस मेरे घावे जब,
कूवि मारें किलकी चपेटन शरीरकी,
टोप खल सोपरी खपर लेय शीश निकी,
भीखत्रति काली धरि करि न जजीरकी,

रनभूमि डूमि परे रुंड मुंड खल नीके,
 यार जव सोहें खाय राम रणधीरकी;
 भैरव मसाण किलकारे समसान वासी,
 श्वान चढे देखे घमसान कपीवीरकी. २
 लपकि लपेटि पूछ प्रविशे नगरवर,

वीर जव धरती धरत पग चढि चढि;
 दुंदुभी बजति नम्भ सम्भय सुनागलोक,
 अम्भ अति रानिनके गम्भ परे कढि कढि;
 यार कहे सुंदर सगुन नाचें भर्थजूके,
 सिय वाम अंग नाचें आनंदतें मढि मढि;
 सिद्धि नाचें अवधि सरग नाचें देववधू,
 काल नाचें शत्रुनके सीसनपें चढि चढि. ३
 स्यार वृक वन नाचें गिद्ध नाचें लोथनिकों,
 जोगिनि जहकि नाचें घोर घमसानपें;
 प्रबल पिसाच प्रेत पंगति पुकार नाचें,
 भूतनकी भीर नाचें रुधिर अघानपें;
 यार कहे हनुमंत कटकमें कपि नाचें,
 कोसला करम नाचें विपति विहानपें;
 रन नाचें कालिका अशुभ लंक चढि नाचें,
 जमकी जमाति नाचें रावन भुजानपें. ४

(महिम्न-शिवस्तुति.)

तीनौ वेदके विभेद सांख्य सत्य तत्वज्ञान,
 ध्यान योग शिव विष्णु सेवन सुहात हे;
 सबे भिन्न भिन्न सबे सुंदर अछीन सबे,
 ग्राहक गरिष्ठ यार दृष्टि दरसात हे,
 नरनकी रुचिकी विचित्रता अनेक शिव,
 सूधे टेढे पथनि है तुममें समात हे;
 जैसे जल वृंद थल थलनिमें छिटिकेंसि,
 मिटिके सकल जल जलधिमें जात हे. १
 मन वृत्ति चित्त अवराधिके सविधि विधि,
 साधिके पवनको गवन युं व्यापको;

छड़े तन रोम बाड़े बड़े उदगारनसो,
 नेन जल धारनसो घोवें पूर्व पापकों,
 मनियार पावे जो अनद उर सीमें मनो,
 सुधा सर सीमें मज्ज तजे श्रय तापकों,
 जोशी जन जल करिरल करि जाने सदा,
 सदाशिव सत्य करि तत्व करि आपको २
 तुही भासकरको प्रकाश करता कुमुद,
 विकास कर अनिल अनल उजेरी हे,
 तुहि जलराशिहूके अबनि अकाशहूके,
 आत्मा प्रकाश हैके सृष्टि सब घेरी हे,
 यार फहे तुं यों असपष्ट अष्ट मूर्ति हे,
 देव दीन फष्ट नष्ट करत न बेरी हे,
 सबमें समस्त है प्रगट पुरि रहे शिव,
 एसां फोन तत्व जामें शक्ति नहि तेरी हे ३
 नमो अणुहूतें अति सूक्ष्म सुरूप नमो,
 महा मेरुहूतें षणु प्रभुता पसारीजू,
 यार कोटि कल्पवारे सिद्ध बृद्ध नमो तोहि,
 तनके तरुण उदे कोटिनत मारीजू,
 नमो धर्मकर्त्ता नमो व्यापक विमर्ता नमो,
 संकट संहर्ता सर्वकर्त्ता त्रिपुरारीजू ४
 नमो भव रजोगुणमडल उर्मडिफे,
 अखंड प्रज्ञांड कीर्ति मंडित अशेषजू, ५
 नमो मूंड सत्य पुनि जीव सुखदाता, मय-
 त्राता होत जन पितुमाताओं विशेषजू,
 यार फहे नमो हर हरन समस्त विश्व,
 तरल तमो गुन गरल कंठदेरजू,
 नमो शिव ब्रह्म चैतन्य ध्रुवधाम धन्य,
 रहित त्रिगुन पुन्य मूर्ति महेशजू ८
 (कषिपरिचय)
 सषतके अंक रघु वेद वसु चंद्र पुरो,
 चद्रमा सरस्वको वरद धर्म धनको,

चाकर अखंडित श्रीरामचंद्र पंडितको,
मुख्य शिष्य कवि कृष्णलालके चरनको;
मनियार नाम श्यामसिंहको तनय भो,
उदय क्षत्रिवंश काशीपुरीनि वसनको;
पारवतीकंत जश जगमें दिगंत कियो,
भाषा अर्थवंत पुष्पदंत महीमनको.

१

मनोहर.

(जीव औ यमयातना)

सोचत सोचत साझ करे सठ, साझते सोचत होत विहाना,
जो घट खंडकि संपति आवत, तो न कहुं कछु आज अघाना;
लोभ लग्यो पुन वृच्छ उपाडण, भाग विना न लहे इक दाना,
चेत अचेत सुधारस पीयके, जीव चिडी जमराज सिचाना. १

मातपिता सुत आदि कुटुंब सो, दीसत है सब लोक विराना,
तुं नित एक सदा त्रिहु कालमें, कर्म वली तिन हाथ विकाना,
काहिको पाप करे धर्म छोरके, क्यों न मनोहर होत सयाना,
चेत अचेत सुधारस पीयके, जीव चिडी जमराज सिचाना. २

एह कुटुंब जैसे षंग वृच्छके, रात बसे परभात उडाना,
इंद्रिय पंच तने वश होयके, तुं विषया ठग पास ठगाना,
मोह महा मद पीयके मूरख, आतमज्ञान सदा विसराना,
चेत अचेत सुधारस पीयके, जीव चिडी जमराज सिचाना. ३

मयाराम.

(गांव नांव.)

आग्रेकी सों प्यारे सुरत तिहारी देखी,
बिन देखे चंदेरी रंग बिजापुर जात हे;
पड़न रहत कछु डुंगरपुर बांसवारे,
कबहू न गोर कीनी सामरे सुपात्र हे;
भई हे अबेर तोहुं कीजिये निजानाबाद,
देखी मुलतान भजमेरसी बिलात हे;

जोद्रापुर जातहुते लीजिये श्रीकृष्णघड,
 एते रूप आली उद्वेपुरमें वस्वात हे १
 नावको समाज कैसो बसवो सराव कैसो,
 तीरथके मेलेमें कब त्या रहायगे,
 आतशकी बाजी तन साचो हे सपन जैसो,
 मृतनको फटक देखी तामें मरमायगे,
 पानीके बुदबुदें खु पानिमें विलाय जात,
 ऐसे पंचभूत काया मायामें मिळायगे,
 देखत हमारे मिल्यो जात हे जगत जैसे,
 जगत देखत कबु आपहि चल जायगे २

महेशदत्त.

(चर्पा विरह)

एरी ऋतु पावसमें मोर घोर शेर करें,
 ठौर ठौर मडुक कठोर सौर है रखो,
 देखिकै बकालीरी कपाली अरि जाली हाली,
 आली बनमाली बिन काली मोहि कै रखो,
 ठामिनी दमक बीच यामिनी बिलोकी नित,
 कामिनी शकत वात मुखपै न धै रखो,
 झिछी झनकारै मेघवारी धार झरैं पिक,
 कोकिल पुकारैं यों महेशदत्त है रखो १

(सवैया)

कौंच भरी फल क्यारनमें, सुक सारिकातें न फलू भय वानो,
 फंटक बेलि बिसादनसों, तरु जाल बितान तहा अरुझानो,
 सग न कोउ सहेली गुलाब, स्वहातनतें चुनिने मनि मानो,
 हेत महेशके पात पसूनकों, आजु महु मोहि बाग खोमानो १

महमह

(सर्वध्यापी ईश्वर)

आपहि कागद आप मसि, आपहि लिखनेहार,
 आपहि लिखनी आखर, पंडित आप अपार १

(चोपाइ चाल.)

आपुहि आप जो देखइ चहा, आपन प्रभुता आपसैं कहा;
 सबइ जगत दर्पन करि लेखा, आपहि दर्पन आपहि देखा. १
 आपहि बन औ आप पखेरु, आपहि सउजा आप अहेरु;
 आपहि पुहुप फूल गति फूले, आपहि भंवर वासरस भूले. २
 आपहि फल आपहि रखवारा, आपहि सो रस चाखनहारा;
 आपहि घर घट महमद चाहै, आपहि आपन रूप सराहै. ३

मार्कंड.

(चितकी चंचलता)

कवहू रंग भोग संयोग करे, कवहू धरि योग कसे तनकों,
 कवहू ग्रह गान बसाय रहे, कवहू मृग होय चले वनकों;
 कवहू सब तेज फरक चले, कवहू वतरे मुसटी अनकों,
 कहि मारकुंडे फिटकार पन्यो, अब क्या कहिये कपटी मनकों. १

(राधाउक्ति-कवित्त.)

वृषभानु सष्टमकी सुखमां कहांलो कहों,
 अष्टमसी चढै सोति हिये नखियनपै;
 तीनमै प्रथम होवे दसकेतु जूके जोर,
 कुचन एकादस लजावै लखियनपै,
 कहै मारकुंडे कटि पंचम दुरैहै देखि,
 खायके चतुर्थ वर आपने जियनपै,
 भोंहपै न नौम कबौ आज लौ भये है सत,
 द्वादस दिवाने छवि रास अंखियनपै. १

मान (खुमान.)

(हनुमंत वीरश्री.)

हनुमंतकी लपेट दै लंगुरकी झपेट,
 दल दुष्टको दपेट चरपेट चाखलानः

धजे नख चराचट दत होत खटाखट,
 गिरे सैन घटागट फटि फटि पार जान,
 फपि कूह फिलफार खेले जूह मिलफार,
 परि पेह पिलफार कटें राफस निदान,
 तह तेजको कुमार फरी कोप बेशुमार,
 चीर छपन कुवर छुकि शारी किरवान
 प्यारो सीतारामको उज्यारो खुवंशहूको,
 अनियारो जन पैज महा कूरो रनको,
 रघुकुल मढल प्रचढ बरिबड मुज,
 दंडन उमहनसो खडन खलफको,
 मान कवि रघुके अपक्ष पक्ष लक्षमन,
 अक्षमन लक्षमन कृष दीन जनको,
 सिंहनको सर्भ गर्भवतनको गर्व गांजि,
 अर्भ अवधेशको सगर्व शत्रुहनको
 भूप दशरथको नवेलो अलबेलो रन,
 रेलो रूप भेलो दल राफस निकरको,
 मान कवि कीरती उमंडी खलखडी चंडी,
 पतिसों धमडी कुलकडी दिनकरको,
 इंद्र गज मजनको मजन प्रमजनतै,
 ताको मनरंजन निरंजन मरनको,
 राम गुणभाता मनवांछितको दाता,
 हरिदासनको प्राता धन्य भाता रघुवरको
 हरिहय है घरसो हस सोह माननसो,
 हरिनी हरा सोहि रक्ष हस हरसो,
 हिमसों हराचलसों हरसों हरिभरसो,
 हपीकेश हर्म्यसो हरोसो होम घरसो,
 मानकवि हसकुल हससो सुभश हरि-
 दासनके हियसो हलीसो हिमफरसो,
 हरिफसो हारसो हनुमनकी हिम्मतसो,
 हरासो हेरबसो हिमाचलसो हरसो
 मित्रकुल मढन महीप रामजुकी महा,
 कीरति महीमें मदी मानस मृणालसी,

१

२

३

४

मानकवि मंजुल मनीसी मल्लिकासी माल,
 मन महीपतिसी मीन केतुपालसी;
 मालती लतासी मोतीयासी यही माधवीसी,
 माधव महादधिसी मुदित मयंकसी,
 मधवा मतंग येसी महिषा महिधरसी,
 महादेव मंदिरसी मोतीनकी मालसी.

५

(कूट समझ्या-छप्पय.)

ऊख पुच्छको नाम, नाम विन पत्र वृक्षको,
 जहं गनती नहि मिले, भक्षको करत मक्षको,
 का विनती को कहत, वृद्धको नाम कहावे,
 द्रग शृंगार तहं राखि, नाम उज्वल यश गावे;
 भानु मित्रको गनत को, मध्य अंक अभिलापही,
 कवि खुमान यहि छप्पका, अर्थ शुद्ध नर भापही.

१

मानसिंहजी.

(वैराग, राग, नीति-धर्म.)

याही जग वीच नीच कीचहूमें आन फस्यो,
 आप कृत्य आपहीसों बुड्यो हे वेहालसों,
 भ्रातृ मित्र प्रेम गयो भृत्य स्वार्थ भग्न भयो,
 तोलकों अतोल अयो हीन लज्जा हालसों,
 पुत्र चित्त भेद जग्यो कुटुंबीको स्नेह भग्यो,
 अनादरके बोलसों खून बह्यो खालसों,
 एरे मन मूढ तुन्हे कौन हेतु हित जान्यो,
 जासुं दृढ गांठ बांधी जूठेही जंजालसों.
 नीतिसें रच्यो हे ब्रह्म नीतिसें है आदि क्रम,
 तीन लोक ठाठ सबें नीतिसुं रहात हे,
 मान मही मंडलमें नीति हे अडग दुर्ग,
 जप तप जोगहुंते नीति अग्र आत हे,
 नेन नगपुर यामें अनीति अनोप पेखी,
 अपराधि हैं औरें शासन औरें पात हे,

१

गुनेहगार नैनां जो लगनी लगाने आवि,
 स्नेह पाशहको बध जियाकों बधात हे २
 फाहु प्रेमपथमें जा आजधों अजान रह्यो,
 फाहु मित प्रीतसों ना दिलकों ढगायो हे,
 याहि मन नेह गेह आन फस्यो गाढे बन,
 यामें बिन राग दाग रागमें दगायो हे,
 दिनहमें चेन नाही रेन नेन निंद नाही,
 चिरह न्यथाको बीज जियामें लगायो हे,
 मान यों मनोज बात बानीमें न कही जात,
 जीगरकी ज्वाल सो तो जीगर जगायो हे ३
 नीति धर्म जोड़वेको दुष्ट मुम्ह मोड़वेको,
 स्वर्गद्वार तोड़वेको धर्म न उपायो हे,
 राशुन जड टार्या ना याचक अर्थ सार्यों ना,
 शूद्र नहिं दाता हो हु कीरत कहायो हे,
 स्तन युग्म तरुनीके आलिंगन अभाव युं,
 अघरपान आदि लौ स्वप्नहु न पायो हे,
 माताहुको युवावन फाटन कुहाड़ पाय,
 वृथा गर्भ आय वृथा उमर गुमायो हे ४
 कही वेद वायककी पंडितो छराह छरे,
 कही दमी दम प्रही करें रवारी जान हे,
 कही मुञ्ज सप न्हेके विद्या प्रेम पाठ पढ़े,
 कही मस्त मदिराके उदत उपान हे,
 कही शोक सागरकी निशा अधियारी परी,
 कही बघाड़ मगल हर्ष उठे भान हे,
 कहा जानों करताने सरज्यो ससार सार,
 अमृतको पान हूं के विपिया समान हे ५

(सरितान्योक्ति.)

सरिता समान तेरे और कोन उज्ज्वल हे,
 परसे ते पावे जन आनंद उद्याहको,
 प्रकृति सहज स्वच्छ अपूर्व हे अवनीपें,
 शीतल स्वभाव सदा हरे देह दाहको,

लीलासैं लहेर जोड, बोरत पहाड तोड,
 पृथ्वी मध्य कोन पावे तेरे बल बांहसो;
 गुन हे अनेक याको फनीहं न पार लहें,
 औगुन अगाध एक गामी नीच राहको.

१

(हास्यरस.)

बिख हे विनासी याको अमृत जों मान लीनो,
 श्लाघा कर जूठ मूठ मिष्टता बखानी हे;
 मूरख अबुध मूढ अक्कलहुंके अंधेने,
 जानहुं गमायवेकी जियासुं न जानी हे;
 खुदहुंको मोत होत यामें तो संदेह नाहीं,
 चंसको विनाश और कुल कुलहानी हे;
 दूधपाकहुंके गुन कहालें बखान करूं,
 कुंभीपाक बसवेकी प्रगट निशानी हे.
 जोगी भोग आश कीनो कुलही सिंगार लीनो,
 बरात बनाइ चले अलेक जगाइके;
 नख बीन कटे केते नाक कन फटे केते,
 साथहुं लंगोट केते चले उधकाइके;
 जमाइको झांख नंगा आंगन भयो हे दंगा,
 सासहुंको शुद्ध भंगा देखत डकाइके;
 कन्याका विचित्र ताला बल ये कहांसैं आई,
 कच्चा खाय जावेंगे के मांसहू पकाइके.

१

२

मीरन.

(प्रियाविरह.)

मीरन बिछुरनही पिया, उलट गयो संसार;
 चंदन चंदा चांदनी, भये जरावनहार.

१

(कवित्त.)

सुमनमें बास जैसे सुमनमें आवे कैसे,
 नाहिनै कहत नाही हां कद्यौ चहत है;
 सरस्वती सुरसरी सूर तनियामें जैसें,
 वेदके वचन बांचे सांचे निवहत है;

इंदुकला जैसे रहे अचरमें परि बाफो,
पर बाफो लच्छन प्रत्तच्छ ना हलत है,
जैसे अनुमानतें प्रमान पाइ ब्रह्म जीको,
तैसे कामिनीकी कटि मीरन कहत है १
(सवैया)

पौढि हुती पलिका परमें निशि, श्रान रु ध्यास पिया मन लाये,
लागि गइ पलकें पलसों पल, लागतही पलमें पिय आये,
ज्योंहि उठी उनके मिलिबे हों, सु जागि परी पिय पास न आये,
मीरन और तौ सोईकें खोवत, हौ सखि प्रीतिम जागि गवाये १
नैन रगे सब रैन जगेतें, लखेतें लखे मनको लटचावन,
भेरि यों रीस किधौ पिय प्यारेको, रूप खरो लगे रीस रीझावन,
मीरन आजकी आऊन ऊपर, पावन हूँ करिये करि पावन,
आये कहु अनंत रतिके मन,—भावन छोड़ तऊ मन भावन २

मीराबाई.

(बोहा)

रसन कटै आनहि रटै, फूटै आन लखि नैन,
धवण फटै ते सुने बिन, धीराबा यश बैन १
(कवित्त)

कोऊ कहौ कुलटा कुलीन अकुलीन कहौ,
कोऊ कहौ अकिनी कलंकिनी कुनारी हौं,
कैसे सुरलोक नरलोक परलोक सब,
कीनमें अलोक लोक लोकनतें न्यारी हौं,
तन जाहु मन जाहु देव गुरुजन जाहु,
जीम क्यों न जाहु टेक टरत न टारी हौं,
वृन्दावनवारी गिरिधारीके मुकुट पर,
पीत पटवारेकी मैं मूरतिपै वारी हौं १
कैसी कुलबहू कुल कैसो कुलबहू कौन,
तुं है यह कौन पूछ काहू कुलटाहिरी,
कहा भयो तोहि कहा काहि तोहि तोहि मोहि,
कीधौ ओर का न्है ओर कहानतो काहिरी,

जातिही ते जाति कैसी जाहिकौ है जाति चेरी,
तोसों हौ रिसाती मेरी मोसों न रिसाहिरी;
लाज गहु लाज गहु लाजि गहि वका रही,
पच हसि हैरी हों तौ पचनिते वाहिरी.

२

मुवारक.

(प्रियावाणी.)

हमको तुम एक अनेक तुम्है, उन्हींके विवेक बनाय बहो,
इत आश तिहारि विहारि उतै, सरसायके नेह सदा निवहो;
करनी हे मुवारक सोइ करो, अनुराग लता जिन वोय दहो,
घनश्याम सुखी रहो आनंद सों, तुम नीके रहो उन्हींके रहो. १

(कवित्त.)

पानीपके पुज सुघराइके सदन सुख,
शोभाके समुद्र सावधान मन मोजके;
लाजनके वोहित परोहित प्रमोदनके,
नेहके नकाव चक्रवती चित्त चोजके,
दयाके दिवान पतिव्रतके प्रधान युग,
नेन ये मुवारक विधान नव रोजके;
मीननके शिरताज मृगनके महाराज,
साहिव सरोजके मुसाहिव मनोजके.

१

(प्रियास्वरूप)

कनक वरन वाल नगन लसत भाल,
मोतिनके माल उर सोहें भलि भांती हे;
चंदन चढाइ चारु चंदमुखी मोहिनीसी,
प्रातही अन्हाइ पग धारे मुसकाती हे;
चूनरी विचित्र श्याम सजीके मुबारक जु,
ढाकी नख शिखें निपट सकुचाती हे,
चंदमें लपेटिके समेटिके नखत मानो,
दिनको प्रनाम किये राति चली जाती हे.

१

(बोहा)

- मृगनैनीके नैनपर, अलक छूटि छवि देत,
मनहु प्रकारी पंच सर, फासी खजन हेत १
- लट लटके सिय बदनपर, को हटके के धार,
मन मयूर ससारकों, ए हरि हार अहार २
- तिय ससिसें मुख पर कदी, तेले बढो मुहाग,
ढसत फिरत वह खलककों, अलक बटपरा नाग ३
- अलकपरी वनिता बदन, लगि मुक्ता मनि लाल,
बढत सुधाकर मर मनो, कवि मगल महि लाल ४
- मन योगी आसन कियो, चिबुक गुफामें जाय,
रक्षो समाधि ल्यायके, तिल तिल द्वारे लाय ५
- बेनी तिरबेनी बनी, तह मन माघ नहाय,
इक तिलके आहारत, सब दिन रैन बिहाय ६
- चिबुक सरूप समुद्रमें, मन जान्यो तिल नाव,
तरन गयो बूझ्यो तहां, रूप कहर दरियाव ७
- ज्यों निसि दिन शिवके सदा, शिवा रहत अरधंग,
ज्योंही मुखपर तिल लसे, ससिके सदा निसंक ८
- तेरो तिल वो तिलोत्तमा, तौल तुले सम जाय,
वह उठिके स्वर्गहि गई, वे भुमि रही धिराय ९

मुक्तानन्द.

(भक्तिमहिमा)

- वासुदेवके भजन बिन, धृथा न भरनां स्वास,
मुक्त कहे हरिभजनसें, उरमें होत प्रकाश १
- भरतखंड नर तन दिये, वासुदेव जगवन्द,
मुक्त कहे भज ताहिहु, हरन विकट भवफन्द २
- वासुदेवकें त्यागके, पूजत भैरव भूत,
मुक्त कहे सो मूढ नर, माके पेट कपूत ३

(सधैया-ईदव)

कर्णसें दानि घनाद कुनेरसें, सूजत चोज विधि सम जाना,
वेद पुरान रु नीति नरेणकी, ताहिमें देव गुरुसें प्रवीना,

- तेज प्रतापि दिवाकरसें, जगमें दृढ दीग विजे करि लेना,
 एसो भयो तो कहा मुक्तानंद, श्री ब्रजचंदसें नेह न कीना. १
- चंदसें शीतल रूप अनंगसें, देव गजाननसें जग माने,
 सिद्ध शिरोमणी गोरखसें, कविराजहु काव्यरसे खुब साने;
 शूर जरासंध रावनसें, रिपु जीतिके देश सवे घर आने,
 एसो भयो तो कहा मुक्तानंद, कारणरूपि श्रीकृष्ण न जाने. २
- अमृतसें सबकुं सुखदायक, शांत धरासें सदा उपकारी,
 नीर नदी तरुसें परमारथ, करत सदा निज काज विसारी;
 पंडित भोगि पुरंदरसें, भृगुसें महा सिद्धनसें नर नारी,
 एसो भयो तो कहा मुक्तानंद, जो न भजे हरि कुंजविहारी. ३
- शात रहे सुनि जाजलिसें, उरमें अवलोकि तजी सब खोरी,
 काम रु क्रोध लोभादिकके झट, त्यागके जोर दे मूढ़ मरोरी;
 कीसे करे किरती अरु वंश, वढावनहारसें सम्रथ भारी,
 एसो भयो तो कहा मुक्तानंद, जो न भजे नंदलाल विहारी. ४
- कंचन मोल सची सम कामिनी, वांछित भोग सदा रहे खाते,
 ताते तुरग बडे गिरिसें, गज चार पलाय रहे मदमाते,
 प्रौढ प्रतापि प्रजापतिसें रहे, गंधर्व वास सदा गुण गाते,
 एसो भयो तो कहा मुक्तानंद, श्रीब्रजचंद्रके रंग न राते. ५
- ज्ञानि बडे गुनि गौतमसें, पद वंदत आयके देव धराके,
 जाहिको तेज प्रताप विलोकित, वादिविवादि, सबै जन थाके;
 जानि बडे जगदीशनमें, जग भूपतिहु सब सेवक नाके,
 एसो भयो तो कहा मुक्तानंद, श्रीनंदलालसें नेह न जाके. ६

मुरारिदान.

(श्रीकृष्ण विनोद-वर्षाविरह.)

गोकुलमें जन्म लीनो जल जमुनाको पीनो,
 सुबल सुमित कीनो जाको जग जाप है;
 भनंत मुरारि जाकी जननी जसोदा जैसी,
 उद्धव निहार नंद जैसो तेहि बाप है;

- काम मानते अनूप तजी भज चवमुखी,
रीझ्यो सग कूबरी कुरूपसों अगाप है,
नेह धीर नयको न पंच तीर भयको न,
बयको न पूतनाके पयको प्रताप है १
- घोय दिने अचल भिजोय दीने भूमितल,
बांय दीने फूल फल अंकुर झराझरी,
छाय दीने तरु ल्यों नचाय दीने मोरनकों,
दादुर जिवाय दीने कितनी कृपा करी,
भर दीने सिंधु सर फर दीने सर्व मुखी,
हर दीने विरह मुरार नर नागरी,
एक आस रावरी बितोये मास चातकनें,
ऐहो घन कौन दोष याकी प्यास ना टरी २
- काढे क्यों अनदसो न चद रोज जिंदगी है,
काल फद डार्या ना अचित कध कानके,
भूले मत हरिकों विभैकों देख फूले मत,
कुलमत झूले मत लग कहे आनके,
छोर रंकपनको मुरार तु निराक रहे,
घटे भटे नाहि अक परमेश पानके,
तूटि है न आव पूठ फेरै जिनि आवहमें,
खूटि है न घन छट जस या जिहानके ३
- (मुरारिकी सहायता-सखैया)

नाहि यह नभमंडल मंडित, सोहत अनुनिधि अति कायक,
नाहि यह उड्डु वृद्ध विराजत, फेनन बिंदु फवे सुखदायक,
नाहि यह शशि बिंब लसै मुनि, कुंडलाकार कनीनको नायक,
नाहि कलंकको अंक यह सुख, सोर्व मुरार मुरार सहायक १

(राधिका शृंगार)

- उठ प्रभात नीवी कसत, नाभि निहारी नेन,
सरसिज उखर सहोदरा, उरतें छिन उतरें न १
- मरु मारग इव अधर तुव, विद्रुम छाया नार,
अतिहि पिपासा आकुलित, किंह नहि करत मुरार २

सुधा श्रोत सम मधुर जव, सुनियतु हे तुव वान;	
कलखवहू लागत कटू, विगरी बीन समान.	३
राधे मुखतें छुट अलक, लगी पयोधर आय;	
शशिमंडलतें मेरु शिर, लटकी भोगिनि भाय.	४
कृश कटि अकृश कुच युगल, विपुल नितव रु नेन;	
अधर अरुणिमा चित चपल, गति सुमंद सुख देन.	५
सकुचित होत सरोज साखि, हरषित होत चकोर;	
तरलित होत तोयनिधि, समुझ शशी मुख तोर.	६

(साहित्य, स्तुति,-इत्यादि.)

काव्यरूप संसारको, है कविही करतार;	
पलट देत विधि सृष्टिको, ह्या निज रुचि अनुसार.	१
करत बुद्धिकों तीव्र अति, विमल जु करत विचार;	
याहित सबही शास्त्रको, है साहित हितकार.	२
अनिमिष अचल जु बकवकी, नलिनीपत्र निहार;	
मर्कत भाजनमें धरे, शंख शीप अनुहार.	३
गुण दोषहिं बुधजन गहत, इंदु गरल इव ईश;	
सिरसैं श्लाघन कंठही, रोकत विसवा वीश.	४
एक दोष गुण पुंजमें, होत निमग्न मुरार;	
जैसैं चंद मयूरखमें, अंक कलंक निहार.	५
अनिवारित रवि रस्मिसों, रत्नदीप असंहार;	
दृष्टि रोध कर नरनकों, जोबन जनित अंधार.	६
विकसत चख मुख फरक भुज, उर बढ हरख अतंत;	
तोरनपें तेसो लख्यो, तो रनपें जशवंत.	
भय कंपित भुवि कन्यका, हठहिं हरी दश शीश;	
वात विधु नित मालती, करसत जैसैं कीस.	७
की रच्छा प्रह्लादकी, धर नरसिंग स्वरूप;	
त्यों तुम गोपी गोपकों, ज्याये न्है जदुरूप.	८
न्है न होय तो थिर नहिं, थिर हू तौ फलहान;	
खल पुरुषनकी मित्रता, सज्जन कोप समान.	१०

मेरामण.

(प्रेमयाण-कवित्त)

कटि फेंट छोरनमें, भकुटी मरोरनमें,
 सीस पेच तोरनमें, अति उरसायके,
 मद मंद हासनमें, बरुनी बिलासनमें,
 आनन उजासनमें, चक चौध छायाके,
 मोती मनि मालनमें, सोमनी दुसालनमें,
 चिकुटीके तालनमें, चेटक लगायके,
 प्रेमबान दे गयो, न जानिये किते गयो,
 सु पंथी मन छे गयो, झरोखे दग लायके (टेक) १
 सुगध समीर जैसै, हस बार धीर जैसै,
 भूजल मिहीर जैसै, मयूषी चढायके,
 पारद कुमारी जैसै, हरी स्वांत धार जैसै,
 अन्न एन सार जैसै, घूम उरसायके,
 उकि एक दंत जैसै, शुद्ध बोध सत जैसै,
 मित बात मित जैसै, सेनन जनायके, प्रेमबान० २
 अहि खगराज जैसै, चिरिया सु बाज जैसै,
 केहरी सु गाज जैसै, प्राण निकसायके,
 जलचर अखाह जैसै, मीन मीन हाह जैसै,
 फीर पख ग्राह जैसै, फद उरसायके,
 मागीरिष गंग जैसै, घटिक कुरंग जैसै,
 कूहिमा कूल्या जैसै, भूतल भमायके, प्रेमबान० ३

(प्रवीणसागर प्रेम-संघथा)

प्रेमसें दारा भयो दरबेसहि, पैक सिकंदर प्रेम लपटा,
 प्रेमसें फूल फकीर भये, पुनि प्रेमसें साहपने परिहटा,
 किंकर प्रेम भयो गज नन्धिय, प्रेम चिते बहराम उलटा,
 प्रेम प्रवीन नवीन कला, यह प्रेम करी मजनू शिर जटा १
 मोरकि ध्यान लगी घनघोरसें, दोरसें ध्यान लगी नटकी,
 दीपकि ध्यान पतंग लगी, पनिहारिकि ध्यान लगी घटकी,

- चंद्रकि ध्यान चकोर लगी, चकवानकि ध्यान दिनेस टकी;
मीन मनो जल ध्यान सु सागर, पंथ प्रवीन रहें अटकी. २
- श्रोत कल्लू न सुने वतियां, जवतें वतियां रस प्रेम पिवायो;
या रसना कल्लू ओर न जापत, नाम प्रवीन प्रवीन पढायो;
या मन और न चाहत हैं, जवतें मन आपहिकेसैं मिलायो;
नैन कल्लू न निहारत हैं, जवतें मुख चंद जेसो दरसायो. ३
- अंबरतें अति उंचि वहे, अरु ऊंडि रसातलहूंतें अपारी;
तूहिनके गिरतें अति शीतल, पावकतें अति जारनहारी;
मारहूतें कटु मीठि सुधाहुतें, शीनि अनुतें सुमेरतें भारी;
जानत जान अजान न जानत, सागर वात सनेहकि न्यारी. ४
- भंग पतंग कुरंग भुजंगम, कंज शिखा सुर पुंगिन लेंहें;
मोर परीह चकोर सुपंकज, घोर वृषा राशि सूर चहें हैं;
हारल मीन मराल जुराफहि, काष्ट जले सर जोरि जुरै हैं,
देहकुं छेह दहें इतनें परि, नेहकुं छेह प्रवीन न दैहें. ५
- पानिके जंतु कहा पहिचानत, ग्रीपमके तपते गरदीकी;
केसरकी करही कहा किंमत, है न परीख जहां हरदीकी,
कायरकुं कल नांहि परे, कल्लू शूरनको सुद्धि है मरदीकी;
बेदरदी न प्रवीन लहे कल्लू, जानत हे दरदी दरदीकी. ६
- बिप्र जो वेद पढे तो कहा, जव जानि परी नहि वेदकि बानी;
गानक गान कियो तो कहा, उन राग कला सुर तान न आनी;
जोगि विभूति चढाइ कहा, जव जोग कला न हिये अनुमानी;
सागर प्रीत करी तो कहा, जबलें जिय प्रीतकि रीत न जानी. ७
- ध्यान प्रवीनहुको उर धारत, गान प्रवीनहुके गुन गावे;
कान प्रवीन बिना न सुने कल्लू, तान प्रवीनहुसैं जु मिलावे;
खान प्रवीन बिना नहि खावत, पान प्रवीन बिना नहि पावे;
स्थान प्रवीनहुको सुमिरे उर, भान प्रवीन बिना भुल जावे. ८
- खान रु पान बिधान निधान, निमग्न सदा सुखकी तरनीमें;
जोबन जोर भयो तरु कंत, मिल्यो नहि चूक परी करनीमें;
रूपकि राशि प्रकाशित देह, नहीं तिय ता सम निर्जरनीमें;
तौ पुनि धीरज धर्म तजी नहि, धन्य प्रवीन सती धरनीमें. ९

खान रु पान विमानसें यान, सुजान महान धिमान कुमारी,
 जोचनमें धनमें धनमें, तनमें मनमें अति मेन प्रजारी,
 अत प्रयंत न कंत मिन्च्यो, पर कतहुपें नहि दृष्टि पसारी,
 एसि पतिव्रत अन्य नहीं बहु, धन्य प्रवीन पतिव्रत धारी १०
 ध्यान धरे चित नैन भरे जल, गान रही गुन पाग रही,
 बान करे नित मेन फरे दल, बाग रही बिन कागरही,
 मान जरे गत रेन परे फल, ताग रही दिन आग रही,
 कान हरे हितसें न टरे पल, सागरही धुनि लाग रही ११
 बनमें रितुराज प्रभा विकसी, विकसी रतिराज प्रभा तनमें,
 तनमें बिरहा प्रगटी दरसे, दरसे रस आवलि आंखनमें,
 खनमें मन मित बिना तरसे, तरसे मुख बास निवासनमें,
 सनमें सखि सागर ज्यू न मिले, न मिले धन वृत्तनि हे बनमें १२
 जाय कहो चित चाहि चकोरिकु, काहिकु चद्रपें चित ल्यावे,
 और कहो सब कजनकों तुम, गजन बीन क्युहिं कुमलवे,
 नीरजकुं तुहि धीरज देहु, क्युं नीर बिना नहि धीर धरावे,
 देहु सिखामन सो सचकु, सखि तेरी सिखामन मोकु न भावे १३
 राज तय्यो सुख साज तय्यो, गज बाज तय्यो गति पाठसें कीनी,
 मात रु तात तय्यो कुल जात, त्रिपात भये तजि आत मगीनी,
 देह रु गेहसें नेह तय्योके, विवेह दरा दिलमें धरि दीनी,
 मेर लिये सुख सागरकुं तजि, सागर सघ बिदागिरि लीनी १४
 सागर मित पुकार सुनो, अब में पुनि आपकि सगहि आऊ,
 जो तुम अग भमूत लगाइ तो, में पुनि अग भमूत लगाऊ,
 जो तुम भीखको भोजन पाइ हो, में पुनि भीखको भोजन पाऊ,
 जो तुम नाथ अलेक जगाइ हो, में तुम साथ अलेक जगाऊ १५
 भस्म लगाइ बनाइ जटा छवि, सागर छीनि हे शमु प्रमाकी,
 जोगि बनी करि मोकुं बिजोगिनी, भोगिनि भइ रहि भोग बिनाकी,
 शमु चिताकि बिभूति घरे, इतनी कमि काहिकुं राखि कदाकी,
 परी सखी उन टेरि कहे, धरि जाय बिभूति सु मेरी चिताकी १६
 आईहों ब्रह्मन मत्र तुम्है, भिन स्वासनसों सिगरी मति गोई,
 देह तजों कि तजों कुलकानि, अजों न लजों लजि हे सब कोई,

हाथ रहै परमारथ स्वारथ, चित्त विचारि कहौ पुनि सोई;
जामै रहै प्रभुकी प्रभुता, अरु मेरो पतिव्रत भंग न होई.

१७

(छप्पय.)

प्रेम सु हृद बे हृद, किया लेलां अरु वानां,
सुचिह प्रेम सरसाय, सोच परि हृदनि जानां;
भोरी जोरी प्रीत, मीत सावेनां बहरां,
जुगल रीतकी नीत, चित्त पाई गुल जहरां;
यह देह नेह ऐसे सुने, ब्रह्म भये जुग जाय छन,
परबीन दीन सब प्रेम बस, महत पुरुष उदार मन.

१

संत प्रेम परिव्रह्म, ताप सितहुं तन तावे,
स्वामि धर्मके सूर, प्रेम परि अंग कटावे;
सती श्यामके प्रेम, अंग अगनीमै जारै,
यहै रीतसैं प्रीत, सोय भावीक विचारै;
साधन विशेष सो सो सरे, चित अनुमान दबाइयै,
सिद्धा बदंत सागर सुनो, प्रेम नेम यों पाइयै.

२

(कवित्त.)

प्रेमहीमें परतीत, रस रीत प्रेमहीमें,
प्रेमहीमें राजनीत, हार जीत जंग है;
प्रेमहीमें हाव भाव, सहित समूह प्रेम,
प्रेमहीमें राग रंग, उमंग अनंग है;
प्रेमहीमें ध्याता ध्येय, ग्याता ग्येय प्रेमहीमें,
प्रेमहीमें जोग भोग, पंचभूत अंग है;
प्रेमको प्रकाश सो तो करताकी करामत,
जहां देखो तहां एक प्रेमको प्रसंग है.
केते नद नदी नारे भरे हे समुद्र खारे,
हंसनको हेत एक मानसरोवरसैं;
वन उपवन केते गिनती न आवे एते,
कामनाको काज एक कल्प तरोवरसैं;
वर्षाऋतु सरद काल, भरे नदी नीर ज्वाल,
चातुरक न्याल एक स्वात बुंद जलसैं,

१

अर्जकी तो गर्ज फोड जानेहे लजीर लोक,
 गरीबकी भरजी एक गरीबपरवरसें २
 मुरत संजोगि जागे, जोगी जोग ध्यान लागे,
 निश्चिज जोर भागे, भंग पागे भागमें,
 चिरियान सोर प्रदो, चकवा आनद भयो,
 चकोरा उदास लक्षो, चप रहे जागमें,
 शंख आदि नाद धुनि, बिप्र वेद पढे मुनि,
 गावत संगीत गुनी, रामफली रागमें,
 निरह वियोग छीन, दरदी अधीन दीन,
 चाहत प्रवीन फला, सागर समागमें ३

(विधि खेल-सयेया)

सीत हरी दिन एक निशाचर, एक लई दिन एसोहि आयो,
 एक दिना दमयंति तर्जा नल, एक दिना किरही मुख पायो,
 एक दिना बन पांडव ने अरु, एक दिना क्षिति क्षत्र धरायो, १
 शोच प्रवीन फलू न करो, किरतार यहें विधि खेल बनायो
 मादरसें न छुपे गु विमाफर, छोनि छुपे न सरस्वर छाये,
 अजन अजित नेन छुपे नहि, मेन छुपे नहि मौन रहाये,
 निंदकसें न छुपे पर कीरति, साच छुपे नहि झूठ बताये,
 घूमहिसें गुदि आग छुपे नहि, भाग्य छुपे न ममूत छाये २

(व्यभिचार निषेध)

इंद्र चंद्र चंद्रघर नारद दुहिन जेसे,
 हार पाये मारहतें मुनि उर आनिये,
 ग्यानीको गुमायो ग्यान ध्यानीको छोरायो ध्यान,
 मान तग्यो मार आगे महा अभिमानीये,
 एक पतिव्रत और पतिव्रताव्रत धरे,
 एसें नर नारीनकु विश्वमें बखानिये,
 देह धरी वेह अत परीमत जीते मार,
 जगमें सो जन जगदीस जेसे जानिये १
 जेही पुरुषको पर प्रमदासें प्रेम लग्यो,
 पर पुरुषसें नेह लग्यो जेही नारीको,

नरक निवास त्रासदायक तोहिको होत,
जगतमें जश न रहत जारी करीको;
धिक अवतार ताको होत धरनी तलमें,
जिनही लजायो कुल तात महतारीको;
प्रवीन नहीं सो पुनि नहीं रस सागर सो,
झुल्लिमें चतुरपनो पर्यो व्यभिचारीको. २

(दोहा.)

तंत्री तुंव रु सारिका, सप्त सुरनसों लीन;
देव सभा सी देखिए, राय प्रवीन प्रवीन. १
सत्या राय प्रवीन जुत, सुरतरु सुर तरु गेह,
इन्द्रजीत तासों बंध्यो, केशव सदा सनेह. २
राय प्रवीन प्रवीन सों, परवीननको सुख;
अपरवीनके सब कहा, परवीनन मन दुःख. ३
रतनाकर लालित सदा, परमानंदहि लीन,
अमल कमल कमनीय कर, रमकी राय प्रवीन. ४
राय प्रवीनकि सारदा, सुचि रुचि राजत अंग;
विणा पुस्तक धारिनी, राजहंस सुत संग. ५
वृषभ वाहिनी अंग उर, वासुकि लसत नवीन,
सिव संग सोहत सर्वदा, सिवाकि राय प्रवीन. ६
युवन चलत तिय देहते, चटक चलत किहि हेतु,
मनमथ वारि मसालको, सैति सिहारो लेतु. ७
ऊंचे वहै सुर बस किए, सम वहै नर बस कीन,
अब पताल बस करनको, ढराकि पयानो कीन. ८
बिनती राय प्रवीनकी, सुनिए साह सुजान;
झूठी पातर भखत है, बारी बायस स्वान. ९

मोतीराम.

(चिरह-शृंगार.)

मूल मलयजको समूल जरि जैयो हाइ,
गुन गरि जैयो या सुगंध सरसाइको,

मिटि जैयो भूतलतें फेतकी कमल कुल,
हुजियो फतल अली कुल दुखदाइको,
मोतीराम मुफवि मनोज मालतीके हुजो,
पूजो मति आग विरही जन हसाइको,
राजहस यशनको घर निरवरा हुजो,
यरा मिटी जैयो या फलानिधि कसाइको
बुडकी छे उझकी पडो है केश आननपें,
मानों शशि ऊपरमें द्याम घटा फिरगौ,
फरण सवारि कै उधारि दीन्हो मोतीराम,
छोचन छोनाइ धैसी पाइ है न मिरगौ,
विप्रके बोलाये मुमुकाइ अधराननमें,
देनैं छगी दक्षिणा तनिक चीर चिरिगौ,
गातकी गोराइ देखि भूली सुधि पुरोहितकी,
छगी टकटकी टका गोमर्तमें गिरगौ

१

२

मौडजी.

(अमली पति)

कचहू ना नैननसों नैनको छगाइ करि,
सैनकी सजावटमें काम ना जगायो हे,
कचहू ना रतियामें रतिया बिनोद करि,
छतिया छगाइ नाहि अग छपटायो हे,
कचहू ना भर्दनके श्रमतें श्रमित बनि,
आनदकी निंदभर दिन ना उगायो है,
हाय भिन्यो पोरानी पतिसों अपशोपती हों,
मानो तन पाय धृया जनम गुमायो है
होती जो में विधवा तो सांख्यके सिद्धांतहीतें,
ध्यान घरि ईश्वरमें मनकों छगावती,
होती जो में सधवा तो रसके उदीपनतें,
प्रेम छपटाइ अति नाथकों रिझावती,
होती जो कुमारिका तो पेखती न अन्य नर,
योगतें अनूप महा मोक्षकों मिलावती,

१

हाय नांहि विधवा न सधवा कुमारिका न,
 अमली पतिसैं नांहि एको गति पावती. २
 व्योम सुरचाप जों विगारत गरज घन,
 कुद्रत इलाहिकी विगारत है रमली,
 निंद गफलत राह चलते अकल पथ,
 आइ पग तलकों विगारत है वमली,
 खूब महबूब नूर हूर परि पेकरसी,
 नाजनी नवीनको विगारत है गमली;
 फुंकत है धूंकत है थूंकत है झूंकत है,
 खास आमखासकों विगारत है अमली. ३

मंडन.

(शृंगार-सवैया)

खेलनको रस छांड़ि दियो, दिन द्वैकते रात कहां वसती हों,
 मंडन अंग समारनको, नित चदन केसरे ले घसती हों;
 छाति बिहारि निहारि कछू, अपनी अंगियाकि तनी कसती हों,
 तो तनको अचरा उधरो, कहो मोतन ताकि कहा हसती हों. १
 अलि हों तो गई जमुनाजलको, सु कहा कहों बीर विपत्ति परी,
 घहरायके कारि घटां उनई, इतनेहिर्म गागर सीस परी;
 रपटयो पग घाट चढयो न गयो, कवि मंडन व्हे के बिहाल गरी,
 चिरजीवहु नंदको बारो अरि, गहि बांह गरीबने ठाढ़ि करी. २

रघुराज.

(प्रभुसहाय याचना)

आपतो हैं नाथ में अनाथ सब भांतिनसों,
 आपतो हैं सत्य दीनके दयालु दानमें;
 स्वामी आप सांचे में तो सेवक हों सर्वदाको,
 आप दिव्य गुणनके सिंधु गुणि गानमें;
 भाखे रघुराज यदुराज करुणाके सिंधु,
 कीजे करुणाको क्रूर कठिन मलीन में;

- मैं तो अधमेश आप अधम उधारन हँ,
पावन प्रवीन आप पतित प्रवीनमें १
- दिव्य गुण दिव्य रूप दिव्य लीला दिव्य धाम,
दिव्य पारपद घृद दिव्य अस्त्र भाजे हे,
दिव्य शिर मोर दिव्य कुंडल कपोलनमें,
दिव्य वनमाल दिव्य कौस्तुभ विराजे हे,
दिव्य पट पीत दिव्य नूपुर चरण चारु,
दिव्य बाहु अंगद कटक कर छाजे हे,
दिव्य कृपा कोर जगदीशजूकी दीननपें,
भलके भरोस जासु दीन रघुराजे हे २
- कौरव सभाके मध्य पाइके सुयोधनको,
शासन दुरासन न धर्म फछु हेरी हे,
द्रुपदसुताको गहि केरु ल्यायो घरवरु,
न भार्या द्रोण भीष्म पांडुपुत्र धर्मविरी हे,
करत विगत पर ग्राता दूजो दीस्यो नाहि,
हा ! गोविंद द्रौपदी उठाई कर टेरी हे,
राख्यो रघुराज मरजाद धाम द्वारकातें,
सोई जगनाथ हाथ आज लाज मेरी हँ ३
- धर्म अवतार नेत्र्यो भूपति युधिष्ठिर,
सहस्र दशनाग ओर भीम गदाधारी हँ,
मुवन विजेता विजे यमहू अतुल बल,
देवव्रत द्रोण कृप धर्मको विचारी हे,
जात मरजाद आगसे नीकी न भार्या कोरु,
कहे रघुराज मुख टेरत विहारी हे,
रुक्मिणी विहाय मयो अबर अनूप रूप,
सोई जगदीश लाज राखेगो हमारी हे ४

(सवैया)

- कोन विराग विज्ञान कियो तप, कोन सुयोग समाधि ल्याई,
आपने हाथनसों फल तोरि, धर्यो मुम्ब चीखि परेखि मिटाई,
आपहित चलि के जगदीश, दयानिधि विश्व विख्यात बनारि,
श्री रघुराज सराहि लियो, राखरी फलको सब रीतिके स्तारि १

देखि परे नहि दूजो दयानिधि, कौनको दास हों जाई कहाउं,
माया विमोहित देव सबें, रघुराज कहो भ्रम कासों छुडाऊं,
कोन गरीबनेवाज गोविंद सो, जाहि गरीबि गोहारि सुनाऊं,
कोनके द्वारपें दौरि अडों, अस दीनको बधु द्विती नहि पाऊं. २

रघुनंदन.

(मूर्ख मित्र-वात चातुरी.)

सिंहनके वनमें बसियै, जलमें घुसिये करमें बिछु लीजै,
कानखजूरेकुं कानमें डारके, सापनके मुख आंगुरि दीजै;
भत पिशाचनमें बसियै अरु, शैरिकु घोल हलाहल पीजै,
जा जग चाहै जियो रघुनंदन, मूर्ख मित्र कवू नहि कीजै. १

(कवित्त.)

नख बिन कटा देखे, शीश भारि जटा देखे,
जोगी कन फटा देखे, धार लाए तनमें,
मौनी अबोला देखे, केते सद्गुनी देखे,
माया भरपूर देखे, फूल रहे धनमें;
आद अंत सुखी देखे, जनमके दुःखी देखे,
करत किलोल देखे, वनखंडी वनमें;
शूर और बीर देखे, अमित अमीर देखे,
ऐसे नहि देखे जिहे कामना न मनमें. १

बातनसें देवी अरु देवता प्रसन्न होत,
बातनसें सिद्ध और साधुपति आत है;
बातनसें खान सुल्तान ओ नरेश माने,
बातनसें मूढ लोक लाखन कमात हे,
बातनसें भूत ओर दूत सब ताबे होत,
बातनसें पुन्य ओर पाप होय जात हे;
बातनसें कीर्ति अपकीर्ति सब बातनसें,
मानवके आननमें वात करामात हे. ३

बातके कहनहार चित्तके लहनहार,
 अतरमें कोरे बने उपरते भोरे है,
 जानियो वैं नर थोरे दिनके रहनहार,
 देकर कुमति सामी सफटमें बोरे है,
 हमतो कबिराज अनित ना सहनहार,
 जस नीत कहनहार रघुराय भोरे है,
 राजाके चित्तके खुश करनहार घन,
 राजाके हितकी बात कहनहार थोर है ३
 'मरा-मरा' कहेसैं मुनीश बान्मीक भये,
 'सीता-राम' कहेसैं न जानि कोन पद हे,
 राम नाम कसो जीने रामजीको घाम पायो,
 प्रबल प्रताप सब पोथीभोमें गद हे,
 काशीजीमें मरते महेश उपदेश देत,
 सूझ न परत मोहे माया-मोह-मद हे,
 इतनां समझ सीता-राम नाम नहि भजे,
 कहे रघुनाथदास तासैं फिर हृद हैं ४
 ऊपरके लेख भति सुंदर बनावत हे,
 भीतर तो सीस लो शृंगार रस भरे हे,
 जप तप ध्यान पूजा करत दिस्वायवेको,
 चाहत बडाइ ऐसे अवगुन ना टरे हे,
 आपकुं न बोध सब जगत प्रयोधत हे,
 भास्वे परमारथको स्वारथेमें परे हे,
 इनसैं जो मिछे सो तो गये सनमारगमें,
 दूरसैं प्रनाम कवि रघुराय करे हे ५

रसखान.

(प्रेम महिमा)

शास्त्रन पद पंडित भये, कै मोलवी कुरान,
 जुपै प्रेम जान्यो नहिं, कहा कियो रसखान १

प्रेम प्रेम सब कोउ कहत, प्रेम न जानत कोय;

जोपै जानहि प्रेमतो, जग क्यों मरता रोय.

२

(भक्तिरस महिमा-सवैया.)

बेन वही उनको गुन गाइ औ, कान वही उन बैनसो सानी,
हाथ वही उन गात सेरे, अरु पाय वही जु वही अनुजानी;
जान वही उन प्रानके संग औ, मान वही जु करें मनमानी,
त्यों रसखानि वही रसखानि, जु है रसखानि सो है रसखानी. १

मानस हों तो वही रसखानि, वसों ब्रज गोकुल गांवके ग्वारन,
जो पशु हों तो कहा बस मेरो, चरों नित नंदकि धेनु मंझारन;
पाहन हों तो वही गिरिको, जों धर्यो कर छत्र पुरंदर धारन,
जो खग हों तो वसेरो करों, मिलि कालिंदि कृल कदंवकी डारन. २

ब्रह्ममें दुंदयो पुरानन गानन, वेद रिचा सुनि चोगुने चायन,
देख्यो सुन्यो कबहुं न कितुं, वह कैसे सरूप औ कैसे सुभायन;
टेरत हेरत हारि पर्यो, रसखानि बतायो न लोग लुगायन,
देखो दुर्यो वह कुंज कुटीरमें, बैठो पलेटत राधिका पायन. ३

शेष गनेश महेश दिनेश, सुरेशहु जाहि निरंतर गावे,
जाहि अनादि अनंत अखंड, अछेद अभेद सुवेद बतावे;
नारदसे सुक व्यास रटे, पचिहारे तऊ पुनि पार न पावे,
ताहि अहीरकी छेहरियां, छछियां भारि छाछपें नाच नचावे. ४

द्रौपदि औ गनिका गज गीध, अजामिलसों कियो सो न निहारो,
गौतम गेहिनी कैसि तरी, प्रह्लादको कैसे हर्यो दुःख भारो;
कोहेकों सोच करै रसखानि, कहा करि है रविनंद विचारो;
कौनकि संक परी है जु माखन, चाखनहारो सो राखनहारो. ५

ब्रह्मकी जब आंच लगी तनमै, तब जाय परी जमुना जलमें,
विरहा झलतै जल सूक गयो, मछली वेह छांड गई तरमें;
जब रेत फटी रु पताल गई, जब सेस जर्यो धरती तरमें,
रसखान कहै एहि आंच मिटे, जब आयके श्याम लगे गरमें. ६

रसनिधि.

(प्रेमपंथ विरलता)

रूपनगर बस मदन नृप, दग जासूस लगाइ,	
नेहिनि मनको भेद उन, छीने तुरत मंगाइ	१
छाल मालमें लसत हे, सुंदर बिंदी लाल,	
कियो तिलक अनुराग ज्यों, लसके रूप रसाल	२
रसनिधि बाको कहत हे, याहीतैं करतार,	
रहत निरंतर जगतको, वाहीके कर तार	३
साधक इक छूटत सहस, लगत अमित दग गात,	
अर्जुन सम बाणावली, तेरे दग करि जात	४
अरी निंद आवे चहें, जिहि दग बसत सुजान,	
देखी सुनी घरी कहु, दो असि एक मियान	५
एक दिनमें एक पल, सकैं न पल भर देख,	
विरह पार को पावतो, कैसे होय विशेष	६
अधियारी निश बिच नदी, तामें भवर अपार,	
पार जबैया दरद कब, लहै रहै या वार	७

रसरास.

(सुबोध-रासरस)

पंच तत्व संचित भचित मायाके पट,	
क्वचित क्वचित याद याको न किया करो,	
संचित सुचित करि भचित रचित गति,	
करिकें निरिधित सनेहसों दिया करो,	
रसरास परम प्रकाश पाय प्राण प्यारे,	
कंजसे कपोलनको अमृत पिया करो,	
अवर कहो में कहा कहत बने नां कछु,	
कातिल करेजेके तू कतरे किया करो	१
देखे देख ताली जहा नुपूर उताली भजे,	
सखी मतवाली जाय धाय छाल परसे,	

साली रंगवाली तन घाली हे मनोज पाली,
 कंज मुखवाली पग लाली मंही दरसे;
 रंग रंग बाली लति काली खटपट पाली,
 चंद कर पाली आय भूमिपर लरसे;
 तरसे हमारो जीय पीय परसन हेत,
 रसरस रासमें सरस रस बरसे.

२

रससिंधु.

(चाहना-लाल लीला ई० कवित्त.)

नैन ज्यों सलिल चाहै सलिल विमल चाहै,
 विमल कमल चाहै सीता जैसे रामको;
 पावस पपैया चाहै बहेन ज्युं भैया चाहै,
 राधा ज्युं कनैया चाहै प्रवासी ज्यों धामको;
 घन जैसे मोर चाहै चंद्र ज्युं चकोर चाहै,
 चकवी ज्युं भोर चाहै कामिनी ज्युं कामको;
 सुख जैसे तन चाहै शूर जैसे रन चाहै,
 वैसा मेरा मन चाहै प्यारे तेरे नामको.

१

लाल बनमाल लाल बेदी भाल लाल लाल,
 यौवनकी ज्यौति औ कपोल लाल लाल है;
 अंग लाल रंग लाल संगकी सहेली लाल,
 लाल पान बीरी मुख अधरहि लाल है;
 लाल चंद चांदनी प्रकाश लाल लाल लसै,
 लाल संग ग्वाल बाल लाल लाल लाल है;
 वृंदावन रास रच्यो लालही गोपाललाल,
 कुंज लाल लाल सब गोपी ग्वाल लाल है.
 माथेपे मुकुट देखि चंद्रिका चटक देखि,
 छर्बीकी लटक देखि रूप रस पीजिये;
 लोचन विशाल देखि गले गुंजमाल देखि,
 अधरको लाल देखि चित्त चोप कीजिये;

२

कुंदल हलन देखि अलकें खिलन देखि,
 पलकें चलन देखि रसवस कीजिये,
 पीतांबर धोर देखि मुरलीकी घोर देखि,
 सांवरेकी ओर देखि देखि वोही कीजिये ३
 छावत अफीम कोई घोय बेठ भांग छाने,
 गालवा चुवाने कोई पीप जल चंबु है,
 कहे रससिंधु कोई सुरती औ घूना मले,
 को जो घतुरा बीज बाधे वहां तंबु है,
 कोई पीवे मादक बीड़ी कोई चर्स गांजा ताजा,
 कोई खडो पीवे हुक्का साडी पेढ लंबु है,
 कोई बहनाग खाय कोई खाय सोमलको,
 पीवत शराब कोई चहु ओरें बुबु है ४

(झूलना-कवित्त)

अश्रु बिन दौर नहि, हुक्म बिन तौर नहि,
 न्याह बिन मोर नहि वहि जेब पारै,
 दया बिन दान नहि, द्रव्य बिन सान नहि,
 ताल बिन तान नहि, जात गारै,
 योग बिन युक्ति नहि, गुरु बिन भक्ति नहि,
 राम बिन मुक्ति नहि, बेद गारै,
 डोर बिन चंग नहि, तंग बिन जग नहि,
 अग बिन रंग नहि होत भारै १

(कर्कशा दर्शन-समस्या)

लक तो भैसकि छट लई गति, तो गवहीकि गुमानको गारै,
 आनि हुके कटिलों कुच झलिकै, नेक घरी अचरा न संवारै,
 यमसि जंघ नितं नगारेसे, पाव चुढेल ब्युं टेढेहि डारै,
 (भूतसि मौनमें ठाढ़ि रहे परमेश्वर पेंसिसा पानौ न पारै) १
 भातको माह करे नहि रांड, रु सौगुनि सांमर सागमें डारै,
 मूलके खांड छे डारत दालमें, हींग फुलायके स्त्रीर वधारै,
 चाकते रोटिहु मौटि करे अरु, काचिहि राखे के आरहि डारै,
 (भूतसि मौनमें ठाढ़ि रहे, परमेश्वर पेंसिसों पानौ न पारै) २

रसलीन.

(राधाअंग शृंगार.)

- नवला अमला कमल सी, चपला सी चल चारु;
चंद्रकला सी सीतकर, कमला सी सुकुमार. १
- हाव भाव प्रति अंग लखि, छविकी छलकन संग;
भूलत ज्ञान तरंग सब, ज्यों कुरछाल कुरंग. २
- अमी हलाहल मद भरे, श्वेत श्याम रतनार;
जियत मरत झुकि झुकि परत, जिहि चितवत इक वार. ३
- जडित आरसी कीर्तिका, सोहत अंगुठा साथ;
छले नखन जे अवरतें, छले बने है हाथ. ४
- देह दीप्ति छवि गेहकी, किहिं विधि वरनी जाय;
जा लखि चपला गगनतें छिति पटकत निज आय. ५
- अदभुतमय सब जगत यह, अदभुत जुगत निहार;
हार वाल गर परतहीं, पर्यो लाल गर हार. ६
- दंत कथा वा दसनकी, अवर कही नहि जात;
फूल झरीसी छुटत जव, हसि हसि बोलति वात. ७
- राधापद बाधा हरन, साधा करि रसलीन;
अंग अगाधा लखनकी, कीनी मुकुर नवीन. ८
- तन सुवरनके कसत यों, लसत पूतरी श्याम;
मनौ नगीना फटिकमें, जरी कसोटी काम. ९
- कोयन सर जिनके करे, सोयन राखे ठोर;
कोइन लोयन ना हनो, कोयन लोयन जोर. १०

(ब्रजभाषा प्रशंसा.)

- ब्रजवानी शीखन रची, यह रसलीन रसाल;
गुन सुवरन नग अरथ लहि, हिय धरियों ज्यों माल. १
- नाम सप्त सुर सिंधुकी, बचन मुक्तिकी सीप;
कै रसना सब रसनकी, पोथी गिरा समीप. २

श्रुतिकेश.

(महारजम लच्छन)

जू कहि बोले जयोचित सो अरु, तु कहि बोले न बोल कडो,
आसन देत बिठरत पास भौं, आवत जातहि होवैं खडो,
योग्य जितो जिहि आवर होत, तितो तिहि देत सदा उमडो,
औरकी राखे बडाइ भली विधि, सो जगमें रसिकेश बडो १

(कुसंग त्याग)

प्राप्त नसे घन घाम नसे, सुत घाम नसे सब काम कुठगू,
राज नसे सुख साज नसे, जग लाज नसे औ नसे वर अगू,
मान नसे तन प्राण नसे, गुण ज्ञान नसे दुख होय अमंगू,
यातें सु दूर रहो रसिकेश जू, मूछि कबों करियों न कुसंगू २

ऋषिनाथ.

(गंगधार-कवित्त)

ध्याया छत्र ँहै करि करत महिपालनको,
पालनको पूरो कैले रजत अपार हे,
मुकुट उदार ँहै लगत सुख श्रोननमें,
जगत जगत हंस हांसी हीर हार हे,
ऋषिनाथ सदानंद मुजरा बिलंब तम,
बुंदको हरैया चंव चंद्रिका सुदार हे,
हीतल हो शीतल करत घनसार ँहै,
महीतलको पावन करत गंगधार हे १

(श्रीराधाकृष्ण-बोहा)

श्रीनदलाल तमाल सो, श्यामल तन दर्शाय,
ता तन सुबरन बेलिसी, राधा रही समाय १

रणछोडजी.

(शिषकथा महिमा-कवित्त)

अही बिन मनी जैसें, मही बिन घनी जैसे,
कही बिन सुनी जैसे, मोती बिन पानी है,

राज विन गाम जैसे, लज विन वाम जैसे,
 दीप विन धाम जैसे, सुखमाकी हानी है;
 बच्छ विन धीर जैसे, वृच्छ विन नीर जैसे,
 लच्छ विन तीर जैसे, सत्य विन बानी है;
 राय रनद्योर कथा सर्वथा सुनी शंभुकी,
 और कथा वृथा जथा, बालकी कहानी है. १

(नाममहिमा सबैया.)

राम रहे न रहे घनश्याम न, कामकि लोक कहानि कहेरी;
 सुंभ निसुंभ गये जगसों, बलिराजको राज न कोऊ लहेरी;
 रावन लंक तजी सत भावन, गावनको अव गाथ गहेरी;
 दाम रहे नहि धाम रहे नहि, नाम सदा रनद्योर रहेरी. १

(श्रीसदाशिवस्तुति-भुजंगी)

नमो देव देवेश गौरीश जोगी, नमो चद्रचूडं अलंकार भोगी;
 नमो जग आदी अनादी अनंतं, विलासी नमो मानसी धाम संतं. १
 नमो भूतपालं धरैया कपालं, कलानाथ भालं गलै रुंडमालं;
 नमो गंगप्यारी नमो ब्रह्मचारी, नमो मारहारी नमो भस्मधारी. २
 प्रभो अंसुमाली नमो रूपसाली, नमो नैनज्वाली घृताहार काली;
 नमो स्वप्रकाशी नमो तेजरासी, नमो गोविलासी त्रिगुणतें उदासी. ३
 नमो चंद्रहासं करी चर्मवासं, वपू चंद्रभासं धरे नागपासं;
 नमो मुक्तिदाता नमो देवत्राता, नमो पित्रिधाता अमनं इजाता. ४
 नमो शूलपानी नमो ईशबानी, नमो अप्रमानी प्रमानी पुरानी;
 नमस्ते शिशूली नमस्ते अकूली, नमो चंद्रमौली वपूसिक्त धूली. ५

(प्रस्ताविक-दीहा.)

जहां दाता तहां मंगना, जहां कुसुम तहां भृंग;
 जहां भूप तहां सेन हे, जहां सेन तहां जंग. १
 नदी पूर आयुष्य दिन, डस्यो जाहिको काल;
 एतो फिर आवे नहीं, गयो जु नृप घरमाल. २
 रहे न दिनकर ढिग तिमिर, दारिद निकट उदार;
 पाप रहे नहि पुन्य ढिग, पतिव्रता ढिग जार. ३
 कायर रनतें भाजते, बनिया काढ दिवार;
 कुलटा जुवती जार संग, लजको रखे न भार. ४

रणमल्लसिंहजी.

(गोपीका धिरह)

गाउनमें गाउन मथारकी उमंग दर,
 साउन घटान बेग सफल समीरको,
 दादुरन बुद्ध बुद्ध परत प्रमोद हार,
 हार हरियाइ चारु करत अधीर को,
 रुचि रनमल्ल मोर धोखत पपीहननि,
 पीय पीय रटन छटन सर तीरको,
 बिन मनभावन मनोज सरसाउन यो,
 सावन न आयोरि नसावन शरीरको १
 कीनो रणमल्लजुसों रति रणमल्ल न सों,
 गल्लीनमें धोहरीन गलित धिरती हैं,
 गइ कहा बसन बिसार का प्रसन मई,
 बसन सतावे आन कसन बिरती हैं,
 बार बार अगते गिरत बार बार देखि,
 अमित अपार बार धरसी धिरती हैं,
 साथ गोपीनाथ गोपी चंदनसी छाग बात,
 गोपी पेसो गोपी कहों कोपी क्यों फिरती हैं २

(प्रभुप्रार्थना-बोद्धा)

मैं किनो प्रभु आपको, गुन्हो वारनिधि नीर,
 मिन्न मिन्न केती कहु, म्होत करी तकसीर १
 पाप कियो तो पा पकर, करी अरज म्हराज,
 पाप कियो गनयो नहिं, पा पकरनाकि छाज २

(छप्पय)

संवत पट वरा दोय, वरस रसदस त्रिसोई,
 असाविन शुद्ध बुधवार, विजयदशमी तयि होई,
 ता दिन रणमल्लसंघ, छस्ती पात्ती सुन लीजे,
 बरन मेव बिस्तार, बांछि उद्धार सुकृतिजे,

समजे हैं मोअ एतनि हरि, रहं खाय अरु सोयके;
तुमहीपें आन खडो प्रभू, हाथ पांवकुं धोयके.

१

रविराज.

(केसरीराज प्रशंसा-कवित्त.)
कोऊ कहै पारसमनी है भूप केसरीपै,
कोऊ कहै किमिया कमाल कर ताके है;
कोऊ कहै जानत महान लक्ष्मीको मंत्र,
कोऊ कहै जंत्र इंद्रजाल बस वाके है;
कहै रविराज कोऊ कहत उरध रेख,
ताहीतैं अशेष मोज साहिवा मजाके है;
बडे प्रभुताके गुन कर्नसे उदारताके,
गुनी लेत थाके पै न दान देत थाके है. १
दुडकी दुगामा और लंगाडी लंगुरिनमें,
छात्र कंधमाल तेज तेर पर वारे है;
चंचल चलंगी एक वाइ जोर जंत्री त्यों रु,
चाली चैल चंगी नव रंगी नोक धारे ह;
कहे रविराज नीके केसरी नृपाल ऐसे,
कै यो फिर फिरत निरतमें निहारे है;
सुरंग विमान कैसै दुरग प्रमान ऊंचे,
उरग अरीसे बेगी तुरग तिहारे है. २
सुरग सवेती लखी सौतक समन सोहे,
सबजे सुरख ओप मुशकी बनेलेमें;
जररे रु मानी मोवे गररे संजाबी और,
संदली सुनेरी सामकर्न सुसकेलेमें,
कहे रविराज भूप केसरी बिराजे रूप,
राजे रंग रंगके चलत गत गेलेमें;
विधिने रचेले खास गोरखके चेले जेने,
देखे अलबेले तुरी रावरे तबेलेमें. ३

(चारणज्ञाति विचार)

आदि जुग चारनमें पूज्य वर्ण चारनमें,
तैसे विशा चारनमें मानत महान हे,
कीरती ससारनमें पर उपचारनमें,
उत्तम अचारनमें विमल घखान हे,
कहे रविराज श्रेष्ठ काव्यके प्रचारनमें,
शुचि अमिचारनमें बुद्ध ज्ञानवान हे,
अच्छर उच्चारनमें विधाके विचारनमें,
चारनमें नाम सोई चारन प्रमान हे

१

(दोहा)

पवर्तको कहि पन्थ पुनि, प्रसांडको महमद,
शब्द बिगारे शब्द हमि, चारनिया तु चंड

१

रविराम (आदितराम)

(नादब्रह्म-भक्तिमीति)

पर पद प्रणव पुराण पुरुषोत्तमको,
परम प्रमान पूर पदत सुकंद है,
तहितें सुरेस सब देश सब देशनमें,
भाषा भेद भाषी भुव मनत कबिंद है,
आदित कहत अति आदित उद्योत होत,
आदि तत्व जगत प्रकाशित सुखद है,
सुध्दम सुध्द मन मदिर अनदमम,
नाद नद नंद हे अमद जग नद है
कर पद मुख बिना चले चले गहे ऐसे,
अविनासी एक ये अनूप जग स्वप्न हे,
रविराम अंतर ओ बाहिर रहत सदा,
सकल कल्यको कंद कारन अजस्र हे,
सेसहि सुरेस ओ महेस जाहि जपत है,
जगको जनेता नेता चेता आदि ब्रह्म है,

१

आनंदको कंद नाम अनाहत अनहद,
चित्तमें चतुर चाहि चारु नाद ब्रह्म है. २

नाम तो तिहरो हरि पावन पतित जोपे,
मोसों पतीत कोऊ नांहिन अवधारिये;
कहत अदितराम तारन तिहारो नाम,
जोतो निज दास हों तो त्राता वहै तारिये;
यातो जग फंद बंध कंधते उतारि डारी,
तीन लोकतेंहि मुंहि बाहिर उतारिये;
पापिनकी पंगतमें पातकी प्रबल पुरो,
ताहि पानि पकर प्रानपति पत पारिये. ३

गान तान मान जुत नाचे नट बेस धरे,
कामिनी बसीकरन देख्यो महा फंदमें;
करत विलास रास हास सुख संपतिसों,
जमुनाके तीर धीर न धरे अनंदमें;
कहत अदीतराम सूझत नां कछू काम,
धाम धनि धरा धन माने दुख दंदमें,
श्रीमदनमोहनकी माधुरी सुमूरतपे,
मोह्यो मन मेरो ज्यो मिलिंद मकरंदमें. ४

आसाकी इमारतपे एक टेक राखी बेढ्यो,
कियो नां कमाइको सुकाम कछु आजलों;
कहत अदितराम भजे नां ब्रजेश चर्न,
तारन तरन जग गाजत सुझाझलों,
दिन दिन दोरि दोरि दुनीके दुवारे जाय,
दीन दीन होय दुःख दाग कहे दाजलों;
पाखंड प्रपंच परिपूरन प्रकाश करि,
धूति धूति धनिनके धरे धन अकाजलों. ५

करि करि दुकृत सुकृतके न पास गयो,
भयो ना भलाइको ये काम मन आसतें;
मेरे धन मेरे माल मेरे ये दुपट्टा लाल,
साल ओ दुसाल मनि मालकी खवासतें;

तरुनी तनय और तन तजवीजनमें,
 बीजनमें गयो नाहि निकस अवासतें,
 कहत आदितराम भजे नां प्रवेशजूको,
 दया करि देहिनको दियो नां निकसतें
 राम राम रट रे तु रसना रसाल राजा,
 पर हित काज राज तनु जग जाये हे;
 दशरथजूके नद भक्तके आनदकद,
 जग चद सीता मन चद दरसाये हे,
 सुनिजन मनि मध माधुरी सुमूरत छे,
 महा मन मोद भरे पद पर सोये हे,
 आदित उदित एसें अवध उद्धार कियो,
 दियो पद आपुनो अनत लीला छाये हे
 नाहि न हे सासुरमें देवनको धाम कहू,
 नाहि गिरिकंदर जा अंदर सुहायगो,
 नाहि न कदम अब जबु जूय जोरे जहां,
 तहा दइ कोन बिध मोसों निहायगो,
 रविराम आजलें निभायो जोपें नेम प्रेम,
 सोइ अब यहाही रह्यो व्हाही नां बसायगो,
 पारवतिकेही पति पत राखि मेरी रहे,
 आयो पति छेवकोपें मेरो पत जायगो
 किते कर्म करे ताके कोंगरा कठोर चढे,
 करताकी कौतुक करतूतीको फिछा हे,
 जोरु ओ जमीन जर जोग जंग जुरे जामें,
 जोर जग्यो जात जीव जीवनको जिछा हे,
 आदित उदित एक राम रति भीते एक,
 रीते हाय हाय कहे हारनके हिछा हे,
 दुनि दुनि धामिनि ज्यों दमाके दिस्वात तेस,
 फूल्यो फूल्यो फूल्यो फूल्यो होत फना फिछा हे
 होसतें न हरिहीकी सेवा करि मादिरमें,
 तेसैं गिरिकंदर ना सप्यो तप जाईतें,

६

७

८

९

स्जोगुनि राजनकी आगते न व्याग बुझी,
 सुमतिके समगों ना सुगनि भगारिनें;
 रविगम आनंदके फंद मज्जनद्वंद्वी,
 अमर कथाकों नाहि गथागनि गारिनें;
 दियो नहि भ्वाय नां दियो परमाय्य यों,
 अकार्य अनमृती ऊपर गमारिनें.

१०

कथा कथा होत होउ निष्काय के नोउ,
 हरि नाम बिना कहु काज नां भगु ते,
 कहत अदीनगम वागनामों दियो काम,
 दियो दियो होत भित सेवा ना कहु ते;
 मन अमिमान जान गुनपद परमे तो,
 परमे परमे होत प्रेम नां भगु ते;
 जियो जियो होत नहि जाने परमाय्यकों,
 दियो दियो होत दान देहके लगु ते.

११

यह जग जाउमांहि मगन ग्यो तो नारी,
 देके सतसग भक्तजन भाव कीजिये;
 मनकी ये वामना बिसास नां कराओ कहु,
 होउ यह सुगनि सुगनि मत दीजिये,
 कहत अदीनगम मुनो यह मैरी आन,
 छोरी जमपाम साम दामपद दीजिये;
 एही ब्रजनाथ मोये कीजिये सनाथ भव-
 पाथ साथतेही नाथ हाथ गहि दीजिये.

१२

आप पाप कापये मुजान समग्र्य जानि,
 धाय आय पाय पर्यो प्रेमपय पारिये;
 आदित उदित अव शरनकी त्याज तोहि,
 मोहि नहि काज कहुं नेहसों निहारिये;
 स्वास कास सरितासों पूर पसयों हे पानि,
 देखत अथाह थाह कहा विध धारिये;
 व्याधिहीके वारिदमें बूढ्यो बह्यो जात ताहि,
 बांके ब्रजनाथ बेगि बांहि गहि तारिये.

१३

धन हित धाय धाय घाम घाम धंध क्रियो,
दियो नहि दान दु ख दागतिं दहानो हे,
फलमकी काती करि फटि केते केते काध,
आध अज्यो चेत भव बारिध नहानो हे,
स्वरूप्यो नां स्वायो नां खेर खुशी पायो ना,
गोविंद गुण गायो ना चलत चहानो हे,
आदित कहत आयो मृष्टि मजवूत बांधि,
पाछे पछतायके पसार पुनि जानो हे

१४

तन तरुनाइ आई जा दिनतें तक्यो भाई,
तरुनी तमासे ताई ओर तुफ तानमें,
कछु नां बिचार करे नेकह न धीर धरे,
भरे भव भोगि भाति भाति न अमानमें,
रविराम रसनातें राम रटे कस ना तें,
कपट कुटिलतातें काहूकी न कानमें,
येरे मन मेर महा मोह मांहि मत मांष्यो,
ममता मनाय मदमातो मेरे मानमें

१५

उत्तम जनम घरी करी नां कमाई कछु,
उम्मेर गमाई एती कोऊ काम नायगे,
चाई ओर माई भाई कोउ नां सहाई सब,
स्वारथके सगे लगे भगे सब जायगे,
रविराम पूरे म्हेल पूल करो पमारथ,
फाल बिकरायतेही सभे पछतायगे,
करिकें सु धूमधाम धधक धुसेगो तब,
धरा धन धाम सब धरे रह जायगे

१६

हरिहीकी प्रीतसोही ध्रुव राज पाये ध्रुव,
तेसैं प्रह्लादको उबार्यो सोई जान छे,
गजकोंही तार्यो स्यो अजामिठ उबार्यो तेसैं,
शकरको सकट निवार्यो प्रक पान छे,
कहत अदीतराम तारयेको नाव हरि,
काम पूरयेको एक कल्पतरु छन छे,

सुखके करनहार दुखके दरनहार,
अघके हरनहार हरिकों तु मान ले. १७

विद्या गुन कूप जल गायनको दूध ओर,
बाग ओ बगीचा फूल फलेई रहत हे,
नित नित लेत तारों देत दूनो दूनो करि,
जोऊ दुखात तोऊ सिरपें सहत हे;
संचयतें रंचयसो बढे ना बिनास होत,
तातें यह सांचि रविरामजू कहत है,
एरे धनवान सुनो खरचेंतें खैर खुशी,
खूबही खजाने खाने खासेई लहत है. १८

जहां सुर सती तहां सोतिनका दावा होत,
दाता देन दान देखि छयसों छिपे बहो,
आदित उदित सुरसीस कटे घटे शंका,
तापें तूं तरलता ले लाभ लखि वहां लहो;
नाहि खेहों नां खिवेहों नाहि देहों नां दिवेहों,
सुतन खियेहों छांडि जेहों नां कहूं अहो;
संपति श्यानी तेने सूमसों सगाइ सजि,
साचे सनमान सनी सुखसों सदा रहो. १९

सूमके संभावकों सराहि कहूं कोन आगे,
काहुके दियेको दान दिलमें दहेको हे,
भूमिमें रहे तो रहो एकतें अनेक साल,
राजतें गहे तो गहो नाहिन बसेको हे;
आदित उदित चोर चोरि कर जायो भले,
दैवीगत जान दुःख सिरपें सहेको हे,
दूने दुःख दिलकों दे दिये सुत तोही ताम,
स्वारथ विनाही कहूं देवे कोन एको है. २०

सज्जन सुजान जानि सुनो सबें सांची कहा,
नारी और नाली एक श्यानी बनी बाली हे;
देखतकी श्यानी पर मोतकी निशानी फेर,
करे धूरधानी जम जातनाकी ज्वाली हे,

आवतकी आधी फेर फूटतकी पाधी परे,
 रविराम माही तम ऊपर उजाली हे,
 एक नाली लगे गिरि गाढेसे गिरत जात,
 कोन गत होत जाकों छगत धनाही हे २१
 अयस तपित माज पयस पर्यापें पानि,
 नाम नां लखात तेसे बुद्धि बिसराइये,
 सोई जल नळिनीके पातनपें पसर्या सो,
 मानो मोती माल मिलि मन दरसाइये,
 रविराम सोई वारी सागर सुसीप मघ,
 स्वातितें भरेतें जातें मुक्ताफल लाइये,
 याहि विध दान देत पर उपकार काज,
 पात्र ओ कुपात्र तेंहि तेमो फल पाइये २२
 निज घर बाहिर जो पायकी घरनि मनु,
 धरें फनी सीसप ज्यों परत ससक हे
 वृषनके धन सोई दुर्लभ वचन ताको,
 तेसी ये मयकमुखी सुलप सुलंक हे,
 निज पति प्रेम पागी लाजकी जजीर लागी,
 सीलरूप जेसी तेसी मोहनकी थक हे,
 आदित कहत जाहि आन पुर्ष ऐसो लो,
 भावो सुद चौथ चव जा लखि फलंक हे २३

(सवैया)

स्वाधिन है घरकी धरनी, धरनी रविराम सुरूप सराहै,
 तोळ कुजात कुनारिको सग, करे सोई नीचमें नीच खराहे,
 ज्यों सर पूर भरे जलकों, तजि काक पिये पय कुम मराहे,
 झारिहि स्वात झपाटहि जात, पुनी फिर आत न लाज जरा हे १

रविदत्त.

(अनन्य भक्ति.)

नगर नरेश रुठे खान सुल्तान रुठे,
 मीर उमराव रुठे सफल सहाइये,

भाइबंद भृत्य रुठे काकाही कुटुंब रुठे,
 मातुल ससूर रुठे मनमें न लाइये;
 जननी जनक रुठे पुत्र पिता वाम रुठे,
 औरही परोसी रुठे नाहि परवाहिये;
 भक्त भवतार नहिं जगत उद्धार नहिं,
 सब जग रुठे पर तूं न रुठो चाहिये. १
 रुठे क्यों न राजा वार्ते कछु नाहि काजा एक,
 तुंही महाराजा और कौनकों सराहिये;
 रुठे क्यों न भाइ वार्ते कछु न बसाय एक,
 तुम है सहाइ और कौन पास जाइये;
 रुठे क्यों न शत्रु मित्र आठौ जाम रहे इकत्र,
 रावरे चरनहीके नेहकों निभाइये;
 सब जग रुठे पर तूँहे अनरुठे तव,
 चूंगे सो अंगूठे एक तूं न रुठो चाहिये. २
 रुठै क्यों न जन जाके मनमें विकार वसै,
 रुठे जाति पांति और रुठे दुखदाइयें;
 रुठे राव राना सवे जाना वाही ठौरहीमें,
 रुठे जो परोसी ताहि मनमें न ल्याइये;
 रुठे परिवार यार सारा संसार औ,
 कविंद रुठे पडित रविदत्त ना संकाइये;
 एते सब रुठे आइ चूमेगे अंगूठा मेरो,
 एहो रघुनाथ एक तुं न रुठो चाहिये. ३
 माता जो रिसाय तऊ मुस्तकर्पें मानि लीजे,
 पिता जो रिसाय तऊ बिघन न पाइये;
 जन जो रिसाय तऊ दूर कीजें ताहि धिन,
 सुत जो रिसाय तऊ मारिकें मनाइये;
 तिय जो रिसाय तऊ कीजे बस्य प्रेमहीतें,
 सब दुख देइ वाको एसेही मनाइये;
 रुठे रहे सर्व पर झूठे नहि होत कछु,
 सब जग रुठे नाथ तुं न रुठो चाहिये. ४

रहीम (खानखाना.)

(चेतावनी व वित्त)

एक सात खाली मत खोयले खलक बीच,
फीच रु कलक अक धोयले तो धोयले,
उर अधियार पाप पूरसों भर्या है तामें,
झानकी चिराग चित्त धोयले तो धोयले,
मनुषा जनम बार बार ना मिलेगो मूढ,
पूरण प्रभुसैं प्यारो होयले तो होयले,
देह क्षण भग यामें जनम सुधारिबोसो,
बीजके सबूके मोती पोयले तो पोयले

१

(रामरिद्धि)

मागत पपीहा मुह भेली है उरोजनके,
करिहाई दूबरो दुखी न कोऊ जानिये,
दह है यतीनके कुरगर्हाके बनभास,
मोरनकी अखिया सु नीके करि मानिये,
नाही एक नवल तियान मुख देखियत,
हाहा एक सुरत समोहि अनुमानिये,
पूछि देखी जाहि ताहि प्रेम पुज चाहि चाहि,
ये ते खानखाना जूको राज पहिचानिये

२

(चमत्कारिक दोहा)

“सुरत्रिय नरत्रिय नागत्रिय, कष्ट सहे सब कोय,”
गर्भ लिये हुलसी फिरे, सुत तुलसीसैं होय *
साधु सराहे साधुता, जती जोपिता जान,
रहिमन साचे शरको, बेरी कर बखान
रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून,
पानी गये न ऊबरे, मोती मानुष चून

३

* यह दोहाके प्रथम दो चरण महात्मा गुरुसदासजीने रहीम को भेजा, जिसकी पूर्ति रहीमने करी, इससे महात्माकी माताका नांव हुलसीबाद प्रतीत होता है

फरजी मीर न व्हे शके, गति टेढी तासीर;	
रहिमन सूधी चालसों, प्यादा होत वजीर.	४
जो रहीम छोटे बडे, बढत करत उत्पात,	
प्यादासैं फरजी पर्यो, तिरछो तिरछो जात.	५
सो बड सूधे मग चले, कुटिल गति मतिमद;	
लखी लेहु सेत्रंजमें, सूथर और गयंद.	६
जब रहीम घरघर फिरें, मांग मधुकरी खांय,	
यारो यारी छोड दो, अब रहीम वे नांय.+	७
रहिमन रहिवो वो भलो, जोलों शील समूच;	
शील ढील जब देखिये, तुरत कीजिये कूच.	८
जो पुरुषारथतें कहूं, संपति मिलति रहीम,	
पेट लागि वैराटघर, तपत रसोइ भीम.	९
नाद रीझि तन देत मृग, नरधन हेत समेत;	
ते रहीम पशुतें अधिक, रीझेहु कछू न देत.	१०
रहिमन मनहि लगायके, देखि लेहु किन कोय;	
नरको वश करिवो कहा, नारायण वश होय.	११
साज रु छत्रपती सुपति, दिल्लीपति जु प्रवीन;	
चकता आलशशाहसुत, कुतबुद्दिन पद लीन.	१२
रहिमन निज मनकी विथा, मनहीं राखो गोय.,	
सुनि अठि लैहें लोग सब, बाटि न लैहें कोय.	१३
धूर धरत निज शीशपर, कहि रहीम किहि काज;	
जिहि रज मुनि-पत्नी तरी, सो हुंदत गजराज.	१४
विगरी बात बने नहिं, लाख करो किन कोय;	
रहिमन विगडे दूधको, मथे न माखन होय.	१५
खैर-खून-खांसी-खुशी, बैर-प्रीत-मधुपान;	
रहिमन दाबे नां दबे, जानत सकल जहान.	१६
छोटनसों सोही बडे, कहि रहीम यह रेख;	
सहसनको हय बांधियत, लै दमरीकी मेख.	१७
टूटे सुजन मनाइये, जो टूटे सो बार;	
रहिमन फिर फिर प्रोइये, टूटे मुक्ताहार.	१८

यह रहीम निबन्ध ले, अमृत जगत न कोय, वैर-प्रीति-अभ्यास-यश, होत होतेही होय	१९
रहिमन वे नर मरि चुके, जे कहु मागन जाय, उनसे पहिले वे भुवे, जिन मुख निकसे नाय	२०
ये रहीम फीरे दुबौ, जानि महा सताप, ज्यों तिय कुच आपन गहे, आप बडाई आप	२१
रहिमन तीन प्रकारते, हित अनहित पहिचान, परवश परे परोसयश, परे मामिला जान	२२
रूप-कथा-पद-चार-पट, कचन-दोहा-छाल, ज्यों ज्यों निरन्वत सूक्ष्म गति, मोल रहीम विगाल	२३
ताको मन सचदा जगत, कवि अन्दुल रहिमान, कवि ईश्वर ईश्वर कियो, कियो ग्रथ अभिराम	२४
अघटितको सुघटित करे, सुघटितको अटकाय, अटपटि गति भगवन्की, जो मन नाहि समाय	२५
शीखे कहा नवाबजू, पेसी बेनी बेन, ज्यों ज्यों कर ऊंचे करो, त्यों त्यों नीचे नेन	२६
बेनहार कछु ओर हे, जो देते दिन रेन, लोक भरम हमपे करे, याते नीचे नेन	२७

राज.

(चिम्बपतिकी विचित्रता)

शिवको अर्धग शरीर कियो, सकलक सरूप सुधाकरको,
अवतार घरे हरजु वसही, जल खारो कियो जु जलागरको,
रतिनाथ अनग कियो जिनही, पुन पंगु भमे पति वासरको,
कवि राज कहे बलवत महा, परताप करम्म बहादरको

(कविस)

कबहु उत्तम अंग होत हे मतग घग,
कबहु पतंग भृग कीटक अकार जू,
कबहुक धनी निरधनी सुखी दुखी जावि,
कबहुक भेद विप्र कबहु चंडार जू,

जैसे घट एक भेष घटन अनेक घाट,
तैसे एक जीवके अनेक अवतार जू;
धन धन शालिभद्र थूलभद्र जंबुवज्र,
त्यागी जे संसारके अभयकुमार जू.

१

(नागरी स्वरूप.)

हंसगति गामिनी जु देह दुति दामिनि जु,
कामिनीसी कामिनी जु निरूपम नागरी;
नमिराजजुके प्यारी ऐसी धो हजार नारी,
रूपके संवारि एक एकहुंते आंगरी;
निवार्यो निदाध जोर चंदनकी कीनी खोर,
कंचनको सुन्यो सोर ऊपज्यो विरागरी;
भिथिलके राज छोरि मोहकेजु बंध तोरि,
नमें इंद्र कर जोरि ऐसे धर्म लागरी.

१

रामकिंकर.

(ब्रजबाला विरह.)

अहो घनश्याम धाम छांड दियो सखियनको,
होंगे बिहाल कंज गलियन गोहरावेंगे,
छाड़ेगे तात मात भ्राता परिवार सखा,
लजको जहाज त्यागि खाख को रमोंवेंगे;
किंकर करजोरके पुकारि कहै वार वार,
वइहै है वैरागिन में, प्रीत को दिखावेंगे;
छोड़ै देंगे साला ओ दुसाला सजे सारी सबै,
एते वृजबाला मृगछाला कहां पावेंगे.

१

(राग मालिका-सवैया.)

सारंग मेघ बिहाग धनाश्रि, बिभास झिझौटि पिछ सुरीना;
टोडि केदारा सुदीपक देश, तिछान रु धूपद रामकलीना;
ईमन कान्हर पर्ज अमेज, खमाइच भैरव मारु सोहीना;
रंगीले काढत राग भले, सखि आवत श्याम बजावत बीना. १

सोरठ मालव कोस विछावल, काफि सिंधु सहना रुं सुरीना,
गौरि असावरि देव गंधार रु, माधवि कौह कन्यान कहीना,
किंकर खेमटा ठूमरी टप्प, जिते अहै राग तितेंजु वै कीना,
ठीक सुरै सबके मिल गावत, आवत श्याम बजावत बीना २

रामचंद्र.

(अंधिकास्तुति-काव्यलच्छन)

सुचरन अरधमें मनोहर अलंकार,
सबद मधुर ताकी धुनि मनभाई है,
सहज सुभाष नीकी पदवी धरनि जाकी,
सरल सुगतिहीतें सरस सोहाई है,
मानत निगम जे बखानत विबुध अब,
तेरे पद बंदनकी बिदित निकाइ है,
जैसि छबि चढ़ै चित्त चरनारविंदनकी,
तैसि ये कविंदनकी बढै कवितार्ह है १
जावक प्रमुख तेरे पदके सिंगार ध्याये,
सरस सिंगारमाई बानी टमटति है,
भावना कियेतें सुचरन अलंकारनकी,
नीकी अलंकारनकी उपमा कढति है,
छाली तरवारनकी उजाली नख इंदुनकी,
अब जो कविंदनके चित्तमें चढति है,
जागत प्रताप बरननको प्रताप जग,
कीरति बरनिवेकी कीरति बढति है २
शात नख रुचिमें सिंगार है सिंगारनमें,
धुधुरू मुखन मूढ हास रस बरसै,
करुना भरे हैं प्रभु अवमुत्त एक जिनै,
बैरी बीर निराखि भयानकसें तरसै,
जामें जानि परत बिभत्सको अभाव जाको,
रुद्र चख रसिक सुभावनिमें परसै,

अंव तेरे चरनारविंदन कविंदनको,
शुद्ध नवो रसके उदाहरन दरसै.

३

गाधें चारि मुखतें चतुरमुख चाहि जाहि,
पावत विचारि सुर चारि फलदान है;

जाकी स्मृति सकल धरम सनमान धारि,
मानत प्रमान कारि आगम पुरान है;

जाके पद क्रमकी निकाई अनुपम अंव,
को कवि वरनिवेको सांमरथवान हे,

लीन रहे शंकर अधीन रहे तेरे पद,
मेरे जान तेरे पद निगम समान हे.

४

हाला सीलताई तरवानमें सहज जाकी.

चारू चिकनाइ हे समान घृतनिधिके;

झीरसे धवल नख नीरसी विमल द्युति,

कोमल प्रपदकी गुराइ समदधिके;

ईल्लु रसहृते हे सरस चरनामृत औ—

लवण समुद्र हे लेनाई निरवधिके;

लागे दिन रात तेरे पद जलजातमें ए,

वैभव दिखात मात सात उदधिके.

५

चौदह रतन वरनत कवि वामें यामें,

नित अगनित रतनावलि जगति है;

चंचल तरंगनकी शोभा लइ उहां इहां,

निश्चल तरंगनकी शोभा उमगति है;

वाकी सिरी चंद्र लखि उमगै निराखि याहि,

चंद्रमौलि मुख चंद्र सिरी उमगति है;

एरी त्रिपुरारि रानी तेरे वर चरनेतें,

कहां रतनाकरकी उपमा लगति है.

६

धन धनहीननके जीवन गरीबनके,

अधिक अधीननके मीननके रस हैं;

दीननके माय बाप जनके सहाय औ,

उपाय हैं ये तिनके जे परे परवस हैं;

आसरय पड़हे निरासर लोगनके,
 संकट परमें बधु जनतें सरस हैं,
 निरखलबनके पड़ अवलंब अग्र,
 तेरे पदको कन दे मेरे सरवस हैं ७
 लोभ शकभोरनतें मदन हलोरनतें,
 भारी अम भोरनतें कैसे बिर रहती,
 दुख धुम दारनतें पातक पहारनतें,
 कुमति करारनतें कैसेकै निवहती,
 बरा जंतु ओक निके चिंता जल ठोक निके,
 रोग सोक ठोक निके शोक कैसे सहती,
 होतो जो न अब तेरे चरन करनघार,
 मैया यह नैया मेरी कैसे पार लहती ८
 ग्यानतेंन गेय उपमेय ठपमानतेंन,
 ध्यानतेंन घेय अप्रेमय अनुमाने हैं,
 ज्ञाता को कहावे को प्रमाता ताहि पावे कौन,
 ध्याता ताहि ध्यावे जे विधाता उन जाने हैं,
 अव्यय अखंड कोटि कोटि ब्रह्मद जामें,
 मंडल मयूखके पियूष सरसाने हैं,
 ब्रह्मानंदमयतें अनामय अमय अब,
 तेरे पद मेरे अवलंब ठहराने हैं ९
 सम दम जप जोग साधन अनुक्रमतें,
 तन मन बतन अनेक बिन ठाने हैं,
 तंत्रनते आनि आनि जत्रनमें जानि जानि,
 मंत्रनमें मानिकें स्वतंत्र तिन जाने हैं,
 भासैं जे परोक्ष अपरोक्षमें प्रकाशें मोक्ष,
 कहि जे उपासैं वेद पुरुष पुराने हैं,
 ब्रह्मानंदमयते अनामय अमय अब,
 तेरे पद मेरे अवलंब ठहराने हैं
 जाकी ओर ठरैं अब रावरी मुदृष्टि फोर,
 चारलों दिशाके ताके जग उमगे रहें,

छीजि छीजि वैरिनिके गोत निरबीज होत,
 हितके उदोत नित जाहिर जगे रहें;
 मतिके उमंग तेरे कीरतिके अंग लीए,
 कविता तरंगनके रगन रंगे रहे;
 मंगल विनोद मोद महिमा मची रहे औ,
 सची मनूभावनसे दावन लगे रहे.

११

जापें ढरे अंव तेरे करुना नयन तापे,
 छपे ना प्रभाव जग दीसे परगटके;
 चल चतुरंग तुंग तुंगन तुरंगनकी,
 टापें सुनि कांपे देश पारावर तटके;
 कुस्ती गीर वीरनके पड़ेकी दमव देखि,
 खड़े परिजात दात वैरी भूप भटके,
 दुष्ट दुरजन चोर चुगुल चवाइ खल,
 खलभल रहें जाकी डरके दपटके.

१२

रामनाथ.

(रामनाम तीर्थ-कवित्त)

दुइ बेर द्वारिका त्रिवेणी जाय तीन बेर,
 चार बेर काशी गंग अंगहू नहायेते;
 पांच बेर गया जाय छौ बेर नीमपार,
 सात बेर पुष्करमें मज्जन करायेते;
 रामनाथ जगन्नाथ बदरी केदारनाथ,
 द्रोणाचल दश बेर जाय पग धायेते,
 जेते फल होत कोटि तीर्थके स्नान किये,
 तेते फल होत एक रामनाम गायेते.

१.

राजाराम.

(कामजागृति-कवित्त.)

सोरहो सिंगार साजि चली बाल लाल गृह,
 देखे चाल मय गर मरालहू लजायो है,

अगकी सुगध पाय छुकी भीर भौरनकी,
चत्रमुम्बी देखके चफोर धुव धायो है,
फेलभवन राजाराम सोयें सुख सेज प्यारे,
प्यारी दिग जाय पाय पायल बजायो है,
चौक चितै कहै फान्ह आय क्यों जगायो मोहि,
मैं नहीं जगायो तुम्है मैंनहि जमायो है

१

(बालराम प्रशंसा)

जनक जो ज्ञानीनमें जामवंत स्वापदमें,
ध्रुव जिमि ध्यानीनमें सुंदर विराज है,
पशुराम धीरनमें राम रणधीरनमें,
गंगाजल नीरनमें सिद्ध करत फाजा है
राजाराम कहे सदा धेद क्यों विधाननमें,
कुचेर धन माननमें दूसरो न ताना है,
उदित उदार महाराज बीर बालराव,
राजनमें राजा दुजराजनमें राजा है

२

रूपनारायण

(कविशिक्षा, दोरोवर्णन ६)

आनन स्वकीयाको निहार्यो सपनेहू नाहिं,
परि परकीयामें क्रमायो हे अजर क्यों,
गनिकाके भेदपें अपार स्नेह पायो सदा,
जानत सिंगार रचनाको सरबस क्यों,
हावभाव भूछे नहि तब तो अजान अब,
फठिन समस्या हेरि होत हे अलस क्यों,
वेशकी भलाई भला आई न जो तोहि मन,
नाहक बितार्ह कविताइमें घयस क्यों

१

फचुकी कसी सी कसी उरज उतगनपें,
जुनर सुसगकी बहार अंग गोरेमें,
मेहदी छछाहकी ललित छवि छाह सम,
तनकी निकाइ ना कहत बने गोरेमें,

सावन सुहावनमें पाय मनभावनको,
हँसी हँसी हेरि हेरि नेहके निहोरेमें;
मेन मदमाती मन मोहनी मुदित मन,
झुकि झुकि झुमि झुमि झलत हिंडोरेमें.

२

गारी दे अगारी आज न्यारी निज मडलते,
नाही सुरनारीसी विहारीको छलै गई;
धुंधरीमें धाय धसी धरी लिनो फेरि फिरि,
अंगनमें रंगकी तरंग भिजै गई;
वीर बलवीरपें अवीर वीर पारि इत,
अंजन ले आंगुरीन अंखियान दै गई;
होरीमें ठगोरी डारी गोरी चित चोरी करी,
झोरी लै गुलालकी सुलालै लालके गई.

३

लछीराम.

(सुबोधक झूलणा.)

कपटकी झपटमें फरे नर उतावला, मृगकी लार जु फरत सीता,
आपदा ब्होत हे धापता हे नहिं, अंतके तंत जुं चलहि रीता,
बिसर गइ वानगी लहत हेरानगी, अमर गुदरान करे सीर वीता,
साहबकी जिकर बिन फिकर भागे नहिं, अमीरस छोडके झहर पाता. १
कूच दर कूच तुं रहन पावे नहि, साथ बी नहि कोइ संग मीता,
सांकडी राह ज्हं भूख भारे लगे, खरच नहि ज्यांह खाली खलीता;
जमरानके जोरमें चोरसा हो रह्या, पकड सो पिंजरा तोड लीता,
कहे लछीराम मेरे धनीकुं शरम हे, समझ ले समझ ले राम सीता. २

लाल (पहिला.)

(छत्रसाल हाडा प्रशंसा.)

निकसत म्यानतें मयूखै प्रलै भानु कैसी,
फारे तम तोमसैं गयंदनके जालकों;

लागत छपटि फठ बेरिनके नागिनिसी,	
रुद्रहि रिधावे दै दै मुडनकी मालकों,	
लाठ धितिपाठ छत्रसाठ महा बाहुबली,	
फहालो बखान करौ तेरी करवायफों,	
प्रति भट फटफ फटीले केते फाटि फाटि,	
फालिकासी फिलफि फलेठ देति फालफो	१
दारा और औरग छरे हे दौठ दिछी बाळ,	
एफ भाजि गये णफ मारे गयं चालमें,	
चाजी फरी दगाघाजी जीवन न गखत है,	
जीवन बचाये एसें महा प्रछै फालमें,	
हाथितें उतरि हारा लट्ठो हथियार लेकें,	
फहे लाठ बीरता विगजै छत्रसाळमें,	
तन तरवारिनमें मन परमेभरमें,	
पन स्वामि फारजमें मायो हरमाळमें	२

लाल (दुसरा)

(नोतिषोष)

मत्र मैधुन औ औषधी, दान मान अपमान,	
गृह सपति अरु क्षिप्रता, प्रगट न लाठ बखान	१
नृत्य गीत अरु पदतमें, सभा युद्ध समुरारि,	
लाठ अहार व्यचहारम, लज्जा आठ निवारि	२
पोहरा बर्ष विवाह करि, द्वादश गृह विग्राम,	
बर्ष चतुर्दश घास बन, राज्य करत पुनि राम	३
आयन युगकी बात है, लाठ अयध बिस्तार,	
तेरह प्रेता द्वै गये, भये राम अवतार	४
बुधि जाके बल ताहिके, निर्बुधिके बल कौन,	
शराफ हन्यो निज बुद्धितें, सिंह महाबल जीन	५
जो उपजायतें होत है, बलतें क्यों कहि जात,	
फनफ सूत्रतें सापको, फबई फियो निपात	६

बसै बुराई जासु उर, ताहीको सनमान;
भलो भलो कहि त्यागिये, खोटे ग्रह जप दान.

७

(चंद्रोक्तिका.)

ऐरे मति मंद चंद धिक हे अनंद तेरो,
जापै विरहन मरी जात तेरे तापतै;
तूंतो है दुपाकर ओ धर्यां है कलंक सीस,
तापर अनंग सखा नंग सिर द्यापतै;
कहे कवि लाल हाल हाजर जहान वीच,
वारुणीको वासी त्रासी राहुके प्रतापतै;
वांध्यो गयो मध्यो गयो पीयो गयो खारो भयो,
वापुरो समुद्र ऐमे पृथहीके पापतै.

१

(मार्तंड तापोक्ति.)

अतल वितल आद सुतल रु तलातल,
भुलोक ओ भूरलोक सातों दपीयतु है,
होलिकाकी झाल सी कराल लुक पौन गौन,
ताकी तिग्मताइहूते अग्नी छपीयतु है;
कोविद कवियनके भ्रमायेतें एरी जग,
जेष्ट रितु ग्रीष्मसो व्रथा जापियतु है;
मृदुल मयंकमुखी तेरी सोंह तेरी चाह,
मारतंड पूरन पंचाग्नि तपीयतु है.

१

लाल (खड्गमल.)

(अवधेश स्वारी.)

सीता संग सुंदरी सुएक ओर हर्षित है,
हिलिमिलि मंगलादि गीत उचरति है;
एक ओर मांग मुकुतानते सँवारे कोउ,
काहू पद नाइ न महावर भरती है;
एक ओर लाल बहु बसन रसीले धारि,
नारि पुरवासी युथ युथ निसरति है,

कौशल्यादि कैकयी सुमित्रा मिलि एक ओर,
मणिगण रामपै निधावरि करति है

१

माचो देवलोकमें अनन्त खलबल लाल,
ब्रह्मा वेद मूले छूटे तारीहू महेशकी,
ढोले लागी पुहुमी समुद्र बहरान लागे,
मिलमिल होन लागी कीरन दिनेशकी,
दरकन लागी पीठ कोल अरु कूर्मकी,
करकन लागी सौं सहस फन रेश की,
सहित समाज आज अवधपुरीमें जब,
निकरी सवारी महाराज अवधेशकी

२

लोचन

(बंधु औ सुवर्ण)

रावणके कर बंधु विरोध, लखो निज संपति जान गवाई,
वालिने व्यर्थ सुकठको कष्ट दे, खोह सजीवन राज बडाई,
मूलसें भी न कमी करिये, निज माइयोसें इस हेतु लडाई,
काम हे आते विपत्तिके कालमें, गांठका कचन पीठका भाई १

विश्वनाथ.

(चिरंछि प्रति कटाक्ष-१)

कमलानिवासी वाक् मूढ मति गति दीनी,
प्रतापी उदार वाक् कोही नहि दीनी हे,
कामिनी कनक जैसी मूरखके पाले परी,
रखिनी अगोचर सो चतुरकुं दीनी हे,
समुद्र अगाध नीर खारो कर क्षीनो तेने,
स्वर्ग बगसें बनार्यो कहा गति कीनी हे,
कहे विश्वनाथ जगदीशके परू हु पाय,
चिरंछिने कहा कछु बिजियाको पीनी हे

२

दुष्ट रु अदुष्टको विचार छाड वसूमाति,
 जैसे सब जीवनको हियपें धरत है;
 कोकिल रु कागको विवेक सहकार बाधि,
 जैसे निज अंतरमें कवहू करत है;
 पावन अपावन जु ठोरको विचार सोई,
 बिनही विचारे मेघ बुंद ज्यों परत है;
 तैसेही जगत्मांही प्रभुके चरण लीन,
 भगत विचार भेदबुद्धिमें न रत है.

२

मानुष जनम करतार तोहि दीन्हो कूर,
 ताकी रे कृतघ्नि शरण तुं न पय्यो रहै;
 चौरासी भ्रम्यो है कहूं नेक न भ्रम्यो है भाजा,
 भाजयो भ्रम्यो है अघ ओघने भन्यो रहै;
 पाँचनसों मिलि खपरामें मगरूर बैठि,
 जो न करै काम जासों कारज सन्यो रहै;
 नामसों न भेटयो विश्वनाथ योही बूडि गयो,
 सुलेहे मध्य पीजरामें पारस धन्यो रहै.

३

वैजनाथ.

(रघुराज गुणगान-कवित्त.)

चारि फल जगके सफलके करनहार,
 जनम सफलके अफल अघ बनके;
 हर मन अमलमें अमल कमल दल,
 दलन समल तम तोम सत जनके;
 साखि रहे वेद गाथ भाखि रहे वैजनाथ,
 अखिर हे हरि साथ आखिरके पनके;
 जानि कैस मन डर आनकी न मन आश,
 जानकी अमन पद जानकी रमनके.
 नख मुनि जासी तल बानी यमुनासी आपु,
 महिमाकी राशी थल तीरथके नाथकी;

१

मक्ति मुक्तिस्वानि दास पूरण सुक्षेत्र आग,
 सुखद बिलास कैदि गीशनकी माथकी,
 शोक सरितारि धूरि आनद सुपूरी धूरि,
 धूरि जाकी जीवनकी धूरि वैजनाथकी,
 दृष्टि की निवास ब्रह्म सृष्टि की अरंभ भूमि,
 दृष्टि मन काम पद पुष्टि रघुनाथकी २
 फटि वेद अक्षरके रक्षिष प्रत्यक्ष चक्र,
 चक्री काम चक्र है कि रूप है दु चंदके,
 कक्ष पक्षमाके छोर छाजत छबिली घटा,
 घटा पट बोट भानु भासत अमरके,
 जगत आधार स्वम पृष्ट पुष्ट वैजनाथ,
 जगमग ज्योति जाल आनद सुफंदके,
 मोदकारि अंब मोह तमके हरनहार,
 करन सितमकी नितम्ब रामचंदके ३
 सज्जन कुशीलता सुशीलता कुसज्जनमें,
 कंजन फठोर वैजनाथ धूरि पाथकी,
 सुमनको धान जैसे मुगुधतिमान मान-
 विषयीके ज्ञान वस्तु बाजीगर हाथकी,
 कजनाल पंकही सगकर्मंगी औ निवास,
 समिता कलक मानि माग्यो मृगनाथकी,
 चारि कैसो अंक शक है कि वीरताके चित्त,
 वित्त है मुरक कीधौं एक रघुनाथकी ४
 केवढा करावमें न केतकी सुतावमें न,
 सुमन गुलाबमें न आबहू अमंदमें,
 पारिजात अगमें न माधवी लवगमें न,
 मृगमद सगमें न वैजनाथ चंदमें,
 जूहीमें न एलनमें चपन चंबेलनमें,
 सबती न बेलनमें मलयाहू मदमें,
 अंतर सबंदमें न नील अरविंदमें न,
 जैसी है सुगंध रामचंद मुख चंदमें ५

सुखमा विलास क्रीट भानुको निवास चारु,
 रसराज वासकर अजिर विशाल है;
 यौवन अगाररूप माधुरीको द्वार भक्ति-
 मुक्तिको भंडार भवभीतनको ढाल है;
 नाथनको नाथके अनाथनको नाथ जीव,
 करन सनाथ वैजनाथ प्रतिपाल है;
 कीरतीको शाल यश तरु आज वाल कैधौ,
 सोह रामलालको विशाल गोल भाल है. ६
 साधु यश नीति धर्म लाज भाग कीर्ति ज्ञान,
 आदिकी अकार वरजोर छोर लीनी है;
 सोई मढ काम क्रोध लोभ मान मोह द्रोह,
 चैर दोष दूषणके पूर्व युक्त कीनी है;
 हरि विधि लोक सुरलोकनके वैजनाथ,
 खोलिकै किंवार लै तिर्यके द्वार दीनी है;
 वीरवान मान गुरु दान दीन जननको,
 रामचंद्र राज्यमें अपूर्व रीति कीनी है. ७
 धर्म धुरधार आपु बैठे भद्र आसनपै,
 दासन सुखद धर्मवद्ध भो अथाहिये;
 पाप ताप तिमिर अधर्म कर्म नाश पाय,
 हरु सागरांवरा अनंत मुदिताहिये,
 नाग मुनि नाह दिग नाह लोक नाह नर,
 चाह सुरतावके पनाह बाह छाहिये;
 राज शिरताज रघुराज महाराज तव,
 समाज साज राज श्री सदैव राज चाहिये. ८

ब्रजराज.

(श्याम उपमा-हास्य.)

कविन सिंगारको सरूप करि मान्यो तुम्हें,
 सांवरे विचारि ताकी उपमा दियेके हों;

मादोंकी अंध्यारीमें जनमि अध राति आये,	
नदके अजिर यातें चोरिहू क्रियेके हों,	
सावरेके साथी सदा जाहिर जगत अरु,	
विषधर सावरेकी गोदमें लियेके हों,	
सांवरी करत औरे ऊपरके सांवरे हों,	
सांवरे सुजान तुम सावरे हियेके हों	१
जौ न वर चौ चंद बस्तायो कोविदन है,	
चवायनको तासों ना अग्य निसरत हे,	
ए हो ब्रजराज पद चौ चंदको भाव उते,	
नैनन निहारो चलि नीके निवरत हे,	
आरसी महलमें टहल रही चंद्रमुखी,	
मुख प्रतिबिंब चहुदिसिमें परत हे,	
मानो बाए दाहिने पिछोहे सोंहे चारो चंद,	
चारुता न पावें तातें चौ चंद करत हे	२

दृन्द.

(दृष्टांतिक-प्रस्ताविक बोद्धा)

नीकी पै फीकी लगे, बिन औसरकी बात,	
जैसे बर्णन जुद्धमें, रस सिंगार न सुहात	१
परधर कबहु न जाह्ये, गये घटत है जोति,	
रविमंडलमें जात शशि, छीन कला छवि होति	२
ब्रह्म बनाये बन रहे, ते फिर और बनै न,	
कान कहत नहि बैन ज्यों, जीम मुनत नहि बैन	३
निकट अबुध समुझै कहा, बुधजन बचन बिलास,	
कबहु भेक न जानही, कमल कमलकी बास	४
दोपहिकों उमहे गहै, गुण न गहै खल लोक,	
पिये रुधिर पय ना पिये, लगी पगोधर जोक	५
क्यों कीजे ऐसी जतन, जातें काज न होय,	
पर्वतमें खोदे कुम्भा, कैसे निकर्सें तोय	६

- उरे न काहु दुष्टसों, जाहि प्रेमकी वान;
भौर न छाडे केतकी, तीखे कंटक जान. ७
- धन बाढे मन बढ गयो, नाहिन मन घट होय;
ज्यों जलसंग बाढै जलज, जल घट घटे न सोय. ८
- अधिक चतुरकी चातुरी, होत चतुरके संग;
नग निर्मलकी डांकतें, बढत जोति छवि अंग. ९
- सुधरी विगरे बेगिही, विगरी फिर सुधरे न;
दूध फटे कांजी परे, सो फिर दूध बने न. १०
- वीर पराक्रम ना करे, तासों डरत न कोय;
चालकहूके चित्रको, बाध खिलौना होय. ११
- भली करत लागै विलंब, विलंब न बुरे विचार;
भवन बनावत दिन लगै, दाहत लगै न वार. १२
- सुख सज्जनके मिलनको, दुर्जन मिले जनाय;
जाने ऊख मिठास कौ, जब मुख निंब चवाय. १३
- जाहि मिले सुख होत है, तिहि बिल्युरै दुख होय;
सूर उदै फूले कमल, ता बिन सकुचै सोय. १४
- पंडित अरु वनिता लता, शोभित आश्रम पाय;
है मानिक बहु मोलको, हेम जटित छवि द्याय. १५
- कछु कहि नीच न छेडिये, भलौ न बाको संग;
पथर डारे कीचमें, उझरि विगारे अंग. १६
- सजन बचावत कष्टें, रहे निरंतर साथ;
नैन सहाई ज्यों पलक, देह सहाई हाथ. १७
- बुद्धिवान गंभीरकों, संगत लागे नाहि;
ज्यों चंदन ढिग अहि रहत, विष न होय तिहिमांहि. १८
- विरले नर पंडित गुनी, विरले बृहन्नहार;
दुखखंडन विरले पुरुष, विरले बुद्धि उदार. १९
- बचन पारखी होहु तूं, पहले आप न भाख;
अन पूछे नहि भाखिये, यही सीख जिय राख; २०
- नैन श्रवण मुख नासिका, सबहीके इक ठौर;
कहबौ सुनबौ देखबौ, चतुरनको कछु और. २१

मारे इक रक्खा करे, एकहि फलको होय,	
ज्यों कृपान करु कवचपे, एक छोहसों होय	२२
एक एक अष्टर पदे, जाने ग्रंथ विचार,	
पेह पेहइ चलत जों, पहुचे कोश हजार	२३
इक कामिनि करु कविवचन, दोऊ रसकी ठोर,	
वेधकको मन वेधई, वे कामिनि कवि ओर	२४
अति अनोति छहियै न धन, जो प्यारो मन होय,	
पाये सोनेकी छुरी, पेट न मारे कोय	२५
जैसो गुण दीनो दई, तैसो रूप निषध,	
ये दोऊ कहा पाइये, सोनो और सुगध	२६
एक भेस्के आसरे, जाति वरण छिप जात,	
ज्यों हाथीके पावमें, सबकों पाव समात	२७
श्रमहीसों सब मिलत है, विन श्रम मिलै न काहि,	
सीधी अगुरि धी जम्यो, क्योंह निकरे नाहि	२८
नरकी अरु नल नीरकी, एकै गति करि जोइ,	
जेतौ नीचो है चलै, तेतौ उंचौ होइ	२९
दिन दश आठर पायकै, कर ले आप बस्तान,	
ज्यों लगी काग सराध पख, तौही लौ सनमान	३०
सौति लरौ पियेपे गई, वटै रखो रिस पाग,	
घरकी दाधी बन गई, धनमें ऊठी आग	३१

(द्विअर्थी-कविस)

कवित्त जोरें तव मन मय आने अरु,	
सरजत आने आछे सुवर्णहीको धरने,	
सबद विचारे लघु वीरध निहारे छद,	
और धारे मद मद पद पद धरने,	
पावें गूढ अरथलों आवें आछे अलंकार,	
दोष देखेकों सावधान बुद्धि करने,	
छंद कवि लोकनके बचन बिलस देखो,	
चोर शत कवि दोठ एकहीसे बरने	१
कौरव समा समुद्र गहर विरोधवारी,	
फोप बडवानलकी ओप अगमर्ग है,	

योधा दुर्योधन कुमंत्रादि जलपत,
 वृन्द कहै लोभकी ल्हारि अगमगी है.
 कुबुद्धि बयारिते दुशामन तुफान उट्यो.
 चान्यो बादवान चीर भीत रगमगी है;
 प्रीति पतवार लेके हुजिये कग्नधार,
 अजु हरिनामकी जहाज डगमगी है.

२

शालिग्राम.

(समस्यापूर्तय.-सधैया.)

रावन नासन रामाके सासन, पाय हुतात्मनमें मिय झूठी,
 देहकि दूनि लगी यति दीपन, शालिग देखि सवै मति भूली,
 ताहि समै नभमंडलमें थित, देव विरचि शची पति शूली,
 दैन लगे उपमा इम मंजुल, [पावक पुंजपें कजसि फूली.] १

वासव एक समै नुर सयुत. व्योम धिमान ल्ये रस गसमै,
 भारति देववधून समेत, मुगानकि तानके मान बिलासमै;
 वीन छुटी करहते अचानक, देखि हसे त्रिदिवेश जु तासमै,
 [कच्छपि पच्छ विहीन प्रतच्छ, अहो यह अच्छ उडाति अकासमै.] २

अंग भभूत अनंग अरी, सिर गंग तरंग भुजगम कारे,
 भालमै बाल मयक लसै, गल मुंडन माल विशाल सँवारे;
 शालिग देखत इंदु गनेश, कभी अलका मध शंभु पधारे,
 [बांझकों पूत बजारके बीच, अमावस रैनकों चंद निहारे.] ३

अर्ध निशाके समै मृग दीन, मृगाङ्गकों टेरेत नैन मिलायक,
 हौ तुम गोत्रपती हमरे, तेहितै हम तोहि पुकारत धायके,
 व्याध हती मम प्राणप्रिया, तेहि देहु जिवाय मुधा वरपायके,
 [रोवत काहु कुरंगके श्रृंगतै, अश्रु परै धरनीपर आयके.] ४

कौशिकके कुलकों दुखदा, द्विजराजहुकी द्युति दूर करै,
 पाडव जे पुंडरीक खिलै, अरु कैरव ताहिकों देख जरै;
 चंड वृणी चलि जावत क्यों न, अजों असताचलहूके परै,
 शालिग यों सुखके हित जो, [येहि कारण हंस चकोर लरै.] ५

शीस गिरिशहुकै जु वसै पय, पावन शुभ्र सुधा सम चारी,
 चालत पथ सु शब्द करै, रजहूकों उडावत है तेहि वारी,

है अजकी तनया जु उमै नहि, भासत भेद न साहि छिगारी,
 शालिग सत्य कहै कविताहितैं [गग अनासम ता विधि सारी] ६
 रूपवती जु सरस्वतिकों, विरची विधियातैं भई दुहिता,
 मोहित है मकरध्वजतैं, पुनि चाहि तिनै अपनी यनिता,
 शालिग यों सय छोक पुरानमें, वात अतीष यहैं प्रथिता,
 तातैं पितामह भारतिको नित, [कथको कथ पिताको पिता] ७
 जे कुटली कपटी कलही, खल है अति अज्ञ अलाम उचगे,
 शालिग या कलिकालमें ऐसे, चह दिस चावत मालकों चगे,
 सज्जनके गनते अनहीन रु, बखविहीन फिरैं तन नगे,
 को अपराधतैं विद्व फिये हमै, [क्यों न किये प्रभु लुखे लफगे] ८
 (कलिधर्म)

निबल विचारेकी न चलन चलै न नेक,
 छल बल वारेकी है वार जो अवारकी,
 सकल विवेकिनकी नकल करैहैं खल,
 अकल सराहै कलिकालमें लवारकी,
 तात मातकी जो पुत्र पातकी न सेव करे,
 शालिग विस्वात बनी वात अविचारकी,
 कवि कविताकी फोड कवर करैं ना कहू,
 कवर करैं हैं नर कुल कलदारकी १
 पूरे बेवकूफ कूरे विपयी बुरे हैं तीउ,
 पैसा जोपै पास तो परेसता खुदाके है,
 पैसे विन विद्व ही विस्वात बेराहर जैसे,
 शालिग सवारभी न बैसे पाम आके है,
 पतनी पतीकी नाहि पती नाहि पतनीके,
 पिता नाहि पूतनके पूत न पिताके हैं,
 सफम सफाके फिरैं धरमाज्ञ फाके परै,
 पैसा नहि जाके ऐसे काके फिर काके है २

(तमाखू छोप)

आखूपैं बिडाल तैसे ताकत तमाखू पर,
 चाखत नां चोखे माल विपमै विलमके,
 सूखि जात साफी जय माफी माग जाचै जल,
 आगहित छागै जाय पाय वे इलमके,

ठठा ठोल रौलमै अंगार गिरि जात जबै,
जातै जरि जात गदी गदरा गिलमके,
चारि वर्णहूको थूक चाटनकों चेता चूक,
है गये उल्टक केते चाकर चिलमके.

१

नासका नही है घर नासका निसान यही,
कहै इम ताकों गाली बोलत बटाक दे,
करै मनवार कोउ और प्रति डब्बी खोल,
पोल देखि आप विचै ज्ञापत झटाक दे,
नाक है निकाम जाकों देखत उलाक होत,
नाकसुख खोय गिरै नरक गटाक दे,
चिमटी चटाक भरि सूंघत सटाक देर,
बेर बेर ढेर मुख छीकत छटाक दे.

२

शिवकुमार.

(वसुधा सुधा-पादपूर्ति.)

अमरी मुसकान धुनि ससकान, शशी मुख जोबन जाये सुधा,
फल फूल कपोल सुधा उलहे, छद नेन लताकपतापे सुधा,
सखि गात सुधा सरसों सरसे, वरसे रसना रस तापे सुधा,
सुगधा पिय माधव धापे सुधा, पिय हे कि नहिं वसुधापे सुधा. १

वसुधामें सुधामई विष्णुपदी, जसुधा सुतपाद सरोज सुधा,
सुधि जानत साधु सुजान तजे, मद मान भजे पद पान सुधा,
भरिगे निज भाजनमें जनमें, न मरे न सनातनमें ये सुधा,
मनके तनके तनके तममें, भ्रम हे कि नहि वसुधापे सुधा. २

शिवसिंह.

(पानीकी प्रबलता,-इत्यादि)

पानीसों मुकता बिकात रजधानी मोल,
पानीसों सिपाई जीत करे संगरामकी,
पानीसों तरवार तरवारे परे जात,
पानीसों चपल तुरी शोभा है तमामकी,

पानीसों जीवजत जीवत गरीब सब,
पानीसों बनाई माई मली भीत घामकी,
अरे नर ज्ञानी तु तो पानीको जतन कर,
पानीके गयेतैं जीदगानी कोन कामकी १

ध्रुवजीको पानी ग्रहलादहूको पानी रहो,
अजनीको पानी गजपानी पेज नामकी
कौरव समामें द्वीपक्षिको जो पानी रहो,
अमर अटवर छगि देखो गत श्यामकी,
नाथ ओर प्यारे धिमीखनको पानी रहो,
दीनी रघुराय रजधानी छक ठामकी,
जाको रहो पानी ताकी कीरत बखानी जात,
पानीके गयेतैं जीदगानी कोन कामकी २

पानी विन जवेरीहू मुक्ता खरीद नाहिं,
पानी विन सुघड शिरोई कोन कामकी,
पानी विन हयकू खुदाइमें खरीद नाहिं,
पानी विन दमकेसो दामिनी न कामकी,
पानी विन पुरुषको नामबी रहत नाहिं,
पानी विन किमत न हीरेकी थदामकी,
अरे नर ज्ञानी तु तो पानीको जतन कर,
पानीके गयेतैं जीदगानी कोन कामकी ३

(मन औ आकु)

पियो जय सुधा तन पीनेको कहा है और,
लियो शिवनाम तब लेहवो कहा रहो,
जान्यो निज रूप तब जानेको कहा है और,
त्यागी मन आशा तब त्यागिवो कहा रहो,
मनै शिवसिंह तुम मनमें बिचारि देखो,
पायो ज्ञान धन तब पाईवो कहा रहो,
भयो शिवमक्त तब ब्रह्मको कहा है और,
आयो मन हाथ तब आइवो कहा रहो ४
मजारी जो पीवे तो तो स्वानहूको प्राण लेवे,
सकरी जो पीवे तो तो मारे बनराजको,

मूरख जो पीवे तो तो अनहूकी चोट मारे,
गद्गा कबु पीवे तो तो मारे गजराजको;
चातुर जो पीवे तो तो सुंदरीकी सेज रमे,
सुंदरी जो पीवे तो तो चाहे कुछ राजको;
कवि शिवसिंह कहे आफुहुको रग एसो,
चिडिया जो पीवे तो तो मारे उड बाजको.

५

शिवनाथ.

(भावि प्रबलता.)

मेधा होत फूहर कल्पतरु थूहर,
परम हंस चूहरकी होत परिपाटीको;
भूपति मगैया होत ठाढ काम गैया होत,
गैवर चूवत मद चेरो होत चाटीको;
कहे शिवनाथ कवि पुन्य क्रिये पाप होत,
वैरी निज बाप होत साप होत सांठीको;
श्यार सुत शेर होत निर्धन कुवेर होत,
दिननको फेर होत सुमेरु होत माटीको.

१

चंदकी मरीचि कान तोरि विथराय दिन्हो,
कैधों हीरा फोरीके कनूका धरि धरि गये,
कैधों काम मंदिरकी झंझरी वनाई विधि,
कैधों सोनजुहीके पुहुप झरि झरि गये;
कामनि मनोरथ आल बाल शिवनाथ,
मैनके मतंग माते बेलि चरि चरि गये,
अमल कपोलनपै दाग नहि शीतलाके,
डीठि गडि गडि गई गाड परि परि गये.

२

शिवदासराय.

(विविध-दोहा)

हरि हिरदै द्वंद्वत फिरै, जल थल प्रतिमा बाम,
ज्यों कंधे लरिका लिये, देति द्वंद्वरा ग्राम.

१

धर्म कर्म कारक कछु, जरा जरत तन दाह,	
आग लगती शौपरी, जो निकसै सो लाह	२
वृद्ध तिया रक्षा तजे, रहे काम नहि देखि,	
ज्यो कुमार सोवै सुखी, चोर न मटिया लेहि	३
भवन सुन्यौ नैननि लख्यौ, यामैं ससै नाहिं,	
वृष जो खोदै आनही, परै आपु तेहिमाहिं	४
कर्म करि मागहि पाइये, सुख सपति धन धाम,	
ल्यायो कोउ न जमते, निज सग ज्वजा निसान	५

शिवप्रसन्न

(महाकाव्य लच्छन)

सहित विवाह शैल सुर सिंधु चद्र ग्राम,	
सुजल बिहार मधुपान त्याँ पयानको,	
खट रितु बन उपवन बाटिका समेत,	
सुरति वियोग पुत्र उत्पत्ति गानको,	
फेहे शिव कवि मंत्री मत्र उत्साह भूत,	
गायक समेत बर्न होत जहा दानको,	
आठ वरा महाकाव्य लच्छन बखाने हम,	
विधानाय मतिने सुपायके प्रमानको	१

शिवप्रसाद.

(कालवधता)

केते भये यावब सगर सुत केते भये,	
जातह न जाने ज्यो तरैया परमातकी,	
बलि बेणु अंबरीष मानघाता प्रह्लाद,	
कहालौ कहिये कथा रावण ययातकी,	
बेहु न बचन पाये काल कौतुकीके हाथ,	
माति माति सेना रची घने दुख घातकी,	

चार चार दिनाको चवाव सब कोउ करौ,
अंत छटि जैहै जैसे पूतरी बरातकी. १

(दोहा.)

इत गुलाम इत इलतमिस, इतहि महम्मदशाह;
इतहि सिकंदर सारिखे, बहुतेरे नर नाह. १
जे न समाये बाहु बल, अटक कटकके बीच,
तीनि हाथ धरनी तरे, मीचुकिये अव नीच. २

शीतल

(पाचन हास्यरस.)

उडद पचायवेकूं हींग और सुंठ सोहे,
केलाके पचायवेकूं घृत निर्धार हे,
गोरस पचायवेकूं सुहागा प्रभाव पुनि,
आमके पचायवेकूं निंबको अचार हे,
कहत शीतल कवि परधन पचायवेकूं,
कानन छुवाये कर कहिवो नकार हे,
इकते अधिक ऐसे ओपत उपाय देखो,
रीझके पचायवेकूं बाहवा डकार हे. १

(अटल कुटेव.)

प्याज कपूरहूके रस भीतर, वार पचासक धोइ मगाई,
केसरकी पुट दे कवि शीतल, चंदन वृक्षकि छांह सुकाई,
मोगरेमांहि लपेट धरी, पर ताहिकी बास कुवासहि आई,
ऐसेहि नीचकुं नीचकी संगत, कोटि उपाय कुटेव न जाई. १

शेखशादी.

(भांगवर्णन-भुजंगप्रयात)

सदा रग रातो जैसे पील हाती, बिना तेल बाती दीवासे जरे है;
पीवे ज्ञान ज्ञानी धरे ध्यान ध्यानी, जिन्हेने सजानी सो देखे डेरहै. १

पीवे शरमा जो करे खेत लोहा, कपटसँ सिरोही चो समुख खरे हैं,
कहे शेखशादी लो भांग प्यारी (जो) पीवे अनारी तो ख्वारी करे हैं २

(सुबोधक सबैया)

कहना उसपे जो करे कहना, न करे कहना तो कहा कहना,
रहना उसपे जो लखे गुनकों, गुनकों न लखे तो कहा रहना,
बहना उसपे हित होत जहा, हित होत नहि तो कहा बहना,
लहना अपना फैहि जात नही, जो छिलाट लिखे सो वही लहना १
महियारि चली महि बेचनकु, पयमाहि मिलाइ भई सफराणी,
लोभके लच्छन पाप करे जिव, जानत हे यक आतमज्ञानी,
जाइ बजारमें बेच दिया, तब दोनो भई मनमें हरपानी,
वानर न्याय कियो अति सुवर, दूषका दूष रु पानिको पानी २

शेहेरियार

(होनहार-कवित्त)

चादसँ चकोर टले, मेघसँ भी मोर टले,
चोरीसँ चोर टले, दिलसँ दिलदार जो,
रोगीहूतैं रोग टले, भोगीहूतैं भोग टले,
जोगीहूतैं जोग टले, कामीहूतैं नार जो,
पर्वतसँ मेरु टले, धनसँ कुबेर टले,
दिनका भी फेर टले, हो बुरा हजार जो,
लेकिन ये शेरियार, मानो ये ईतबार,
टले नहीं होनहार होवे होनहार जो १

शेष.

(धृंगाररस-कवित्त)

प्यारी परयंकपे निश्चक पर सोवतही,
कंचुकी दरकि नेक ऊपरकों सरकी,

अतर गुल्मव औ मुंगवकी महक पार,
 देखो उठि आवनि कहाके मधुकरकी;
 बेटो कुच बीच नीच उठिन सकत केह,
 रही अवगैय शेष दुनि तु पहरकी,
 मानहु समरमे नुंगारि धर मंदरको,
 गारि शंवरि फोंक गति गरि मरकी.

१

कैयो जा हिमानगमें गातही गद्ययो टन,
 कैयो दीन दान बलि विक्रमसों अयां है;
 कैयो जाट दारुकामें कान्तरकी सेवा करि,
 कैयो जाट रामराज गवनसों लयां है;
 कैयो कवि शेष भने अधमेव यत्न कीनो,
 तांत यह बगनि निकट आइ पया है;
 धुनत याहीतें शीश विहीन जग्यो हे याहि,
 बैसगिको मोती मानो कान पुन्य कयां है.

२

निरखी निवाह ते बे भोरी हैं किरी हम,
 चोरीहीमें चोह पत जगि कैसें पात है;
 शेख केह एक बेर कान्तरकी खोरि आये,
 टार रहे मानस कटोर अति गात हैं,
 मोहनीसैं बोलकारे तारनिकी टोल मिटि,
 टोल बोल टोल बट परे कैसे घात है;
 नेना देखि ध्याम केत वेना कैसे मुने भाइ,
 वेन सुने कैसें तिन्हें नेन देखे जात हैं.

३

मन मुधि आयें तन मुधि विनु होइ जाइ,
 तन मुधि आये मन होत पात पात है;
 शेख कहे सरद सहेली लवे गूढ गुन,
 मुरलीकी धुनिन रसाल गात गात है;
 तुम कहो मानो उपदेश हम कही नाही,
 जेसी करी नाही तेसी नाहीसे कसात है;
 प्रेमसो विरुधो जिनि हा हा हियो रुंधो जिनि,
 ऊधो लाख बातनकी सूधी एक बात है.

४

जासों मिले मन सुपनेह मिलि जेहे बलि,
 दिये मास हितू हे तो एती कहा हातेकी,
 रेश कहै प्रथम लगनि उरमनि मानो,
 तावीर भावरि जेसैं आवे मद मातेकी,
 जेसे तुम धीधे कान्ह तेसी ग्वारिनि न बीधे,
 कान्ह होंतो राखि फहों नाहि ठकुर सुहातेंकी,
 सेननेको मतो एँ जु बेननिमें पायो जात,
 कछुक मिताइ देखो नेन निफे नातेकी

५

श्यामदास

(आत्मज्ञान)

आत्म सत सुस्वरूप है, जग मिथ्या दुस्वरूप,	
एसैं सम्यक जानचो, सोइ विवेक स्वरूप	१
उभय लोकमें भोग जे, सक घनिता सुरथान,	
ताहि जिहासा चितविषे, सो वैराग्य पिछान	२
विषय दुराग त्यागके, जब होवे मन शाति,	
सम लच्छन सो जानिये, वेद कहत अस भाति	३
विषय वृत्तिके घेगर्ते, इन्द्रिय गन प्रतिहार,	
दम ताही गुनि कहत हें, पंडित परम उदार	४
वेद गुरुके वाक्यमें, अवधारन विभास,	
सो श्रद्धा उर आनिये, जातें ज्ञानप्रकाश	५
सदा सर्वदा बुद्धिको, धारन इष्ट जु माहि,	
समाधान मुनि कहत तिहि, चितको लालन नाहि	६
भोग कर्मयुत त्यागनो, सो कहियत उपराम,	
द्वंद्व धर्मकी सहनता, ताहि तितिक्षा नाम	७
अहंकारादिक बध जे, हान होनकी चाह,	
लच्छन यह मुमुक्षुता, भाखत गुनि मुनि नाह	८
प्रथी तीन प्रकारकी, चिद जड सशय कर्म,	
नसे नु आत्म बोधतें, श्रुति कहत अस मर्म	९

अहं आलबन सिद्ध जो, काकों होय परोक्ष;	
तदपि विचार विहीन नर, करि न शके अपरोक्ष.	१०
श्रुतिवाक्य सब एक पर, आतम सदा सुभास;	
तौ विनु गुरुप्रसाद विन, नहि अपरोक्षहि तास.	११
श्रोतिय अरु ब्रह्मनिष्ठ जो, ताहि कहत गुरु वेद;	
शरनागत निज शिष्यके, संशय करत विछेद.	१२
मानव तनू मुमुक्षुता, महा पुरुषको संग;	
दुर्लभ यह त्रय पाढ्ये, देवकृपाते अंग.	१३

श्यामसुंदर.

(दर्शन-ज्ञानदीप.)

आद अचल पद निरख, निरख भूधर भयभंजन,	
परत्रिय मुख मत निरख, निरख रघुपति अरिगंजन;	
नर परधन मत निरख, निरख मति आप गर्वधर,	
नर सपनो संसार, तास विधि निरख सत्य कर,	
भनत श्यामसुंदर वदन, जिन लेत नाम पातकहरन,	
नर करन मोच्छतारन तरन, निरख चतुरभुजके चरन.	१
चंद्र कलामय ज्योति, काति बहु भांति न वरसत,	
जार्यो अनंग पतंग, अंग विनु भयो जु परसत;	
महामोह अज्ञान, हृदयको तिमिर नसावन,	
अपनो आतमरूप, प्रकट करि ताहि दिखावन,	
द्युति द्विपति अखंडित एकरस, अदभुत अतुलित अधिक वर,	
जगमगत संत चित सदनमें, ज्ञानदीप जय जगतिकर.	२

श्यामलाल.

(विषय राजन.)

राजा राव राने बादशाह जे जहान जाने,
हुकुम न माने हुकुमत तर आने हे;

शुरवीर सगनमें सुघर प्रसगनमें,
रीति रस रगनमें अतिही बखाने हे,
स्यामलाल मुकवि जहानमें न तोसें भूप,
खोज हारे पात पात आजके जमाने हे,
हम मरदाने जानि बिरद बखाने पर,
द्वारे चोपदार फंदे साहेब जनाने हे

१

सकल.

(जन परीक्षा)

दातातें दुनीमें सूम काजे जानियत,
कायरको जानिये समरमाहि शूरतें,
पापीतें प्रगट पुण्य जानिये दुस्खित सुखी,
निधनीकों जानिये सु धनी धन कूरतें,
माखत सकल जाने भूपतें मिखारी चोर,
शाहतें पिछाने औ चतुर चित्त कूरतें,
रातदिन सूरतें यों कचन कचूर नर,
जान्यो जात या विधि शहर बेगहरतें
ऐसी मोज कीनी यदुनाय नाभने अनाथ,
लखि लीने हाथ चामर पठाये द्विजी भामाके,
भासत सकल कांय्यो सेवग सुमेर और,
कुबेरके कुबेर गात कम्पै अभिरामाके,
जरी नग छाल और लरी मुकुता प्रवाल,
चरी चर चामी चर चामीकर भामाके,
अम्बरलौं वरपै भर्तंग मदधार देखौ,
अम्बरलौं लागे मेघदम्बर सुदामाके

१

२

सन्नम.

(प्रेमप्रसंग-बोद्धा)

तन मन जोबन जाड़िकैं, मस्म करी सब देह,
सन्नम ऐसा धीरहा, अजु टंटोरत खेह

१

अनभावन नियरे बसै, मनभावन परदेश;	
इन देखै उन दरस बिन, द्वै दुख बढत हमेश.	२
जड काटे फल नीपजे, फल काटे जड जाय;	
सन्नम ओ फल कोनसा, जल सींचे कुमलाय.	३
कच्चे फल सोहामणा, गदरे बोत मिठास;	
सन्नम ओ फल कोनसा, पक्केमें कडवास.	४

सीखी.

(श्रीकृष्ण प्रेम-कवित्त.)

सिंहपै खवावो चाहो जलमें डुबावो चाहो,	
शूरीपै चढावो, घोरी गरल पीयाइबी,	
बिच्छुसों डसावो, चाहो सांपपै लिटावो,	
हाथी आगे डरवावो येती भीति उपजाइबी;	
आगिमें जरावो चाहो भूमिमें गडावो तीखी,	
अनीबे घवावो मोहिं दुख नहिं पाइबी;	
ब्रजजन प्यारे कान्ह कान्ह यह बात कहौ,	
तुमसों विमुख ताको मुख न दिखाइबी.	१

सीताराम.

(सर्व देव प्रार्थना.)

विधिको विवेकसों बनाउब विधान करि,	
केशव कलेश नाश कर रणधीर है,	
रुद्ररूप संसृति सहार सुरेश आदि,	
तपन तपत सीत शीत कर वीर है;	
विघ्नको विदारण विनायकके वाट परो,	
सीताराम शरण सदाशिव समीर है;	
धारिबो धराको जैसे धीर है धरीश जीको,	
तारिबो तरंगिनी तुम्हारी तदबीर ह.	१

सूरदास.*

(विविध कविष्वर प्रशंसा)

(दोहा)

सुंदर पद कवि गगनके, उपमाको बलवीर,	
केशव अर्थ गभीरको, सूरति निर्गुण तीर	१
विधिना यह जिय जानिके, शेषन छिन्हे रान,	
धरा मेरु सब डोलते, तानसेनको तान	२
तन समुद्र भव शूरको, सीप मये चख छाल,	
हरि मुक्ता हल परतही, मुदि गयो ततकाल	३

सेन.

(वियोग-कवित्त)

जवते गुपाल मधुवनको सिघारे आली,	
मधुवन मयो मधुदावन विपमसों,	
सेन कहै शारिका शिखडी खजरीट शुक्,	
मिलिके कलेश कीनो फालिन्दी कदमसों,	
यामिनी बरण यह यामिनीर्म याम याम,	
वधिकको युगति जनावै देरि तमसों,	
वेह करै करन करेबो लियो चाहति है,	
काग भई कोयल कनायो करै हमसों	१

* सूरदासादि कवियोंके विषयमें कहते हैं कि—

(दोहा)

जबक मये हैं नानका ऊघो सूर करीर	
कवि वास्मिक तुलसी मये, शुक्देव मये कबीर	१
सूरदास सुगुण कये, निर्गुण कये कबीर,	
रामरत्न तुलसी कये, अय अय थी खसीर	२

सेनापति.

(अविरल भक्ति)

धातु सिलदारु प्रतिमाको निरधारु सार,
 सो न करतार हे विचार विचगे हरे;
 राखि दीठि अंतर जहां न कछु अंतर हे,
 जीभको निरंतर जपावत हरे हरे;
 अंजन विमल सेनापति मन रंजन दै,
 जपिके निरंजन परमपद लेह रे;
 करी न संदेह रे वही हे मन देहरे,
 कहा हे बीच देहरे कहा हे बीच दे हरे. १

कुपथ चलाओ सुधि आपनी भुलावो मोहि,
 मोहमें मिलावो तो न कोउ रखवारो हे;
 जनम सुधारो भवसिधुते उत्तारो आप,
 उर पाउं धारो तो न वरजनवारो हे;
 सेनापति मोमें मेरो कछु न कृपानिधान,
 जात प्रान तन मन रामजु तिहारो हे,
 हों तो हों विचारो जिय आपही विचारो तुम,
 देह देहु चारो कहों मेरो कहा चारो हे. २

आधितें सरस वीति गई हे वरस अब,
 दुज्जन दरस बीच रस न बढाइये;
 केतो करो कोई पैये करम लिखोइ तातें,
 दूसरी न होइ फिर सोइ ठहराइये,
 चिंता अनुचित धरुं धीरज उचित सेना-
 पति है सुचित रघुपति गुन गाइये;
 चारि वरदान तजी पाइ कमलेच्छनके,
 पाइक मलेच्छनके काहेको कहाइये. ३

तुम करतार जग रच्छाके करनहार,
 पूजवनहार मनोरथ चित चाहके,

यह जिय जानी सेनापति हे शरन आयो,
 हजिये शरन महा पाप ताप बहकेँ,
 जो कहु कहोकि तरे कर्मनते एसे हम,
 गाहक हे मुकुत भगति रस लाहेके,
 अपने करम करी हों हो निबहोंगो अय,
 होंहि कर तार करतार तुम काहेके ४
 ताही भांति घाउ सेनापति जेसे पाउ तन,
 कया पहिराउ करों साधन जतीनके,
 भसम चढाउ सीस जटा में बढाउं,
 नाम बाहिको पढाउं दु खहरन दुखीनके,
 सबे बिसराउ उर तासों उरझाउं कुंज
 बन बन घाउ तीर भूधर नदीनके,
 मन बहिराउं मन मनहीं रिझाउं बीन
 लैके कर गाउं गुन बाही परबीनके ५
 देखी चरनारविंद भदन कर्यो बनाइ,
 उरको विलोकि विधि फीनी आलिंगनकी,
 चैनके परम एन राखे करी नेन नेक,
 निरखी निफाई इंदु सुंदर भदनफी,
 मानो एक पति नीके व्रतकी पतिव्रतकी,
 सेनापति सीमा तन मन अरपनकी,
 सीय रघुराइजुको माल पहिराई लेन-
 राई करि वारी सुंदराई त्रिभुवनकी ६

(सुम-कुशुद स्वरूप)

सब अग थोरे थोरे बहुधा रतन जोरे,
 राखे सुख ऊपर हूजे न इतवार हे,
 नान्हे बोल बोले सबे देखत न पट खोले,
 राजवन राखिबेको पाये अवतार हे,
 जमते काहू जे भरमते मागे जाते,
 सतहीन सदा आगे राखत नकार हे,

कामहि न आवे सेनापतिको न भावे दोऊ,
 खोजा अरु सूम सम किन्हे करतार हे. १
 गीतही सुनावे तिलकन झलकावे भुज-
 मूलनि छुपावे द्वार काहुके पयान हे;
 वेश नव वेश भगतनकी कमाई खात,
 साहिबे न सेवे हरि साचुक निदान हे;
 देखिके लिबास नीच लोगनिकी बारी होति,
 मोहिके विकच करे तन मन ध्यान हे,
 सेनापति वचनकी रचना विचारी देखो,
 कलिके गुसांइ अरु मागता समान हे. २

(विरह-प्रेम-शृंगार.)

विरह हुताशन बरत उर ताके रहे,
 बालमही पर परी भूपन गहति हे,
 सेवती कुसुमहूते कोमल सकल अंग,
 सूने सेज रति काम केलिको करति हे;
 प्राणपति हेत गेह अंगन सुधारे जाके,
 धरी हे वासारि तन मन सरसति हे;
 देखो चतुराई सेनापति कवितार्इकी जू,
 भोगिनीकी सरिकी वियोगिनी लहती हे. १
 फूलनिसों बालकी बनाइ गुही बेनी लाल,
 भाल दीनी बेंदी मृगमदकी असित हे;
 अंग अंग भूषन बनाई ब्रजभूषनजू,
 वीरी निज करसों खवाई करि हित हे;
 व्हैके रसबस जब दीबेको महा वरके,
 सेनापति श्याम गह्यो चरन छलित हे;
 चूमि हाथ नाथके लगाइ रही आंखिनसों,
 कही प्राणपति होति अति अनुचित हे. २

(कविता-कान्ता समानता.)

तुकन सहित भले फलको धरत सूधे,
 दूरिके चलत जे हे धीर जिय ज्यारिके;

लागत विविध पक्ष सोहत हे गन मग,
 भवन मिलत मूठ कीरति उज्यारिके,
 सोइ शीश धुने जाके ऊरमें चुमत नीके,
 वेगि विद जात मन मोहे नरनारिके,
 सेनापति कविके कवित्त विलसति भति,
 मेरे जान चान हे अचूक चापधारिके
 राखती न ठोपे पोपे पिंगलके छप्पनको,
 बुध कविके जो उपकट्ही बसति हे,
 जोपे पद मनको हरप उपजावती हे,
 तजे कोक नर मे जो छद सरसति हे,
 अछर हे विसद करत ऊपे आप सम,
 जाते जगतीकी जडताऊ बिनसती हे,
 मानो छवी ताफी उदबत सविताकि सेना-
 पति कविताफी कविताई बिलसती हे

१

२

सोहन

(काया माया वर्मगति)

अफच्वर जेसे भये जच्वर घरामें धींग,
 पाडे अरि रिंग सुनि डींग जस नामकी,
 विक्रमसें बका जाका बाजत मुजरा डका,
 लफापतिहकी माया भई बिन स्वामकी,
 के ते राव राना खानखाना मरदाना एह,
 घरामें घराना भई स्वाक दाम चामकी,
 सोहन कहत यातें असमें विचार यार,
 काया और माया भई काहुके न कामकी
 महावीर देवको दिये हे कष्ट सगमने,
 वनमें बिनास पाये कृष्ण बिन चारी हे,
 राजा हरिचंद गेह भगीके भर्या हे नीर,
 आदिनाथ वर्ष एक भूखही निकारी हे,

१

चोथे चक्रवर्तके शरीरमें भये हे रोग,
 सहे है वियोग रामचंद्र विन नारी हे;
 सोहन कहत ऐसे ऐसेही लहेहे दुःख,
 ताते नर मूढ तेरी कोनसी चिकारी हे. २

सीताको हरन भयो लंकाको जरन भयो,
 रावन मरन भयो सतीके सरापतें;
 पांडव वरन भयो द्रुपद सुताको सत्य,
 भामाको डरन भयो नारद मिलापतें;
 राम वनवास भयो सीता अविश्रान्त भयो,
 द्वारिका विनास भयो योगिके दुरापतें,
 बडे बडे राना केते संकट सहाना नेक,
 सोहन बखाना एक कर्मके प्रतापतें. ३

ओपत सुरूप इंद्रपुरीसो अनूप तामें,
 सत्य शील कूप अति शीतल स्वभाव हे;
 प्रेमवती पति साथ औरकी न करे बात,
 विनय विवेकहूमें राखे चित चाव हे;
 ऊठकें प्रभात नित्यनेम घर काज साज,
 पतिको जिमात नित्य करी हावभाव हे;
 एसी पुण्यवती सती मिले जग बीच जाकुं,
 सोहन कहत ताके पुण्यको प्रभाव हे. ४

(काम प्रभाव.)

ईश गिरिजाका वश विकल विशेष भये,
 सीता वश रावन गयो हे परलोकमें,
 कृष्ण राधिकाके वश नाच भांति भांति नचे,
 ब्रह्मा निज पुत्रीतें भये हे रस कोकमें,
 द्रुपदसुताके काज कीचक नरक गयो,
 भयो रहनेम राजमतीवश जोखमें;
 सोहन कहत नामी नामी बदनाम भये,
 एसो कामदेवको अफंड तीन लोकमें. १

(ओंकार सार)

ओंकार सार हे उदार अविकार मत्र,
सतत स्वतंत्र तत्र यत्रतें महाचली,
राग दोष तिमिरके विनाशवे प्रचढ मान,
जाहिर जिहान जाफी गुजत गुणावली,
दाता अपवर्ग स्वर्ग सुखको विशिष्ट इष्ट,
येष्ट भवसागरकी भेटत चढाचली,
सोहन अनत गुणवत उपरात मत,
सफल सिधात जाकी कहे बिरदावली

१

सुदर (पहिला.)

(शाहजहां वंशपर्यन्त)

प्रथम मीर तैमूर, लियो साहिव किरान पद,
ताको मीरासाहि, बहुरि सुल्तान महमद,
अबु सैद पुनि उमर, रोख बाबर जु हमाऊ,
साहि अकबर साहि, जहांगिरही जु गिनाऊ,
तीहि वंश अश कविराय भनि, शाहजहा बरूम बखत,
धरि छत्र सुवेद्यो अटल भुवि, पादशाहि दिल्ली तखत

१

(स्वकिया लच्छन)

(दोहा)

पतिकी अति सेवा करै, सील सुघाई लाज,
ये लच्छन स्वकिया निके, बर्नत है कविराज

१

(सबैया)

देखत नैनके कोननि लौं अधरानहीमें मुसुक्यानको थानी,
बोलति बोल सुकठहिमें, चलतें पगपें न कहु अहटानी,
सुदर कोप नहीं सुपने, अरु जो भयो तो मनहिमें बिलानी,
में बसुधा बसुधाई सबें, पर याकि सुधाई सुधाई हे जानी

१

(नघोटा सुरतांत लच्छन)

गौनेकि रातके मोरहि कोनमें, बेठि रही दुल्ही अनवोले,
हाथसों छाति छिपायके सुदर, नारि नवाइ दुराई कपोले,

देखनिको जुरि आइ सबें तिय, नंद जिठानि करे युं कलोले,
एक हसे इक बांह गहे, इक अंचर खेंचके धुंघट खोले. १

(कवित्त)

कंचनसी कायाही सु कुंदनसी व्है गइपें,
सुंदर सिथिल अंग सम्हारे न द्रगतें,
आलस बचन चल विचल हे आभूषन,
सकुचती मनमें न सुरतको तिगतें;
मेरे चित्त छाड़ रही छाबिलीकी यही छबी,
छिन भर छूटती न अजहूंलो द्रगतें;
रगमगी अंखियनी सब लगी अंलकनी,
डगमगी डगानि डिगरी चली डिगतें. १

(प्रिया वचन माधुर्य)

मुक्तासैं झरे मुखतें मुसक्यात, जहां कछु अच्छर ऊच्चरिये,
कहि सुंदर एसो सवाद सुनेतें, सुधा मनो श्रोननिमें भरिये;
जितने जु कछू कहिये सुकवित्त, कहा कहिकें उपमा धरिये,
फुनि बात कहें सुख लागत यों, कहिवोइ करें सुनिवो करिये. १

(विभ्रम हाव लच्छन.)

छिनकमें भूषण मगाइ फिरि धरवाय,
छिनकमें पहिरी उतारिकें धरति है;
छिनकमें उठिके बहार्त जाइ उहां वेठि,
छिनकमें रस छिनो रोसमें भरति है,
कोउ आली आपतें जो बोलें तो बरजी राखे,
ओरहिसों बोलि बर बातिनी ठरति है.
देखिरी नवेली वह सुंदर सहेलीनिमें,
जोबन गहेली जैसैं तमासे करति है. १

(ललित हाव लच्छन.)

सुंदर हे बेनमेंहि कामकी कमान एन,
खंजनसैं नेन लघु अंजननि दिये हे;
बेसरिकी लर जानि मोतिनकी थहरानि,
मुरि मुसक्यानि कान्हजुको बस किये हे;

सोनेकीसी ढार अति धनी ठनी सुकुमार,
बड़े बड़े वार हार मनिनीके हिये हे,
विधाता सुघारे सुघ सुघाहीसों भरे जानि,
राधिकाके सबे अग माधुरीही लिये है

१

(चतुर्विध मारी लच्छम)

कमलके फूलकोसो वास अंग सुकुमार,
कमलसी जोनि जहा जल्ये न लहिये,
चदसो बदन तन चंपकसो कुदनसो,
बनी ठनी सबे ठोर जेसी जहा चाहिये,
भावे देवपूजा श्रेत बसनसों रुचि हिये,
लिये लाज मानों गति हंसकीसी गहिये,
थोगे स्वाय पीक बेनी बिचिच्छन मृगनेनी,
जामें गुन सुंदर ए पभिनी सु कहिये
छीन कटी पीन कुच मीनसें चपल नेन,
गजगौनी कारे बार मोरकीसी बानी है,
मधुकोसो गध जाके सुरतके जलको है,
लायी है न ठिगानी न पातरी न स्थानी हे,
सुंदर सलोम सुकुमार जोनी जिहि बीचि,
सेवुफूल बटुरासे तहा भर्या पानी है,
रतिसों न रति उपभोगहिसो रति चित्र,
सगीतसों भावरी यों चित्रिनी बखानी है
मोटी लंबी नसों देह छीन ऊची मोटी कटी,
टेढी चितवनी कुच छोटे खोटो मन है,
जोनीमें बिगध काम जल धनो धनें बार,
उत्ताइली चालें बोलें गाजतो ज्यों धन है,
रातो पटु भावें नख सुरतमें लखे चारु,
तातो गात दयाहीन रोषहीसों पन है,
दीरघ हे दात पाइ थोरो न बहुत स्वाह,
एसे जाके चिह्न सोइ सखिनीको तन है

१

२

३

मोटी देह मोटे होठ भुरे वार गौरी आप,
थोरी लाज पेट भारे खाति हे अधाइके,
टेडे पाइ पाइनकी अंगुरी हे टेडी सब,
ठींगनीसी कूरी फुनि वेलें घहराइ हे,
कामजलही हे गंध मदके गयंदकीसी,
सुरत न क्रियो जाइ जासों सुख पाइके,
चले मंद गति गहें कांधे जाके नेन रहे,
हस्तिनिके लच्छन ए दिये हें दिखाइ के.

४

(सात्विकभाव उदाहरन.)

लोचन सजल चल विचल वचन मुख,
चरन जुगल नेकु टरत न टोरे हे;
पीरि परि आई कहि सुंदर कपोलनिमें.
कापत अधर जानों सुधासों सुधारे हे,
पसिनासों भीज्यो तन फुले रोम हरपन,
लीन व्हैके रख्यो मन ए गुन तुम्हारे हे,
धिनुहीमें व्हे गइ हों आन हाथ आन पाइ,
जानति हों कहुं कान्ह कुंवर निहारे हें.

१

(दोहा)

स्वेद कंप सुरभंग ए, स्तंभ विवर्ण बनाव,
रोम हर्ष आसु प्रलय, आठों सात्विक भाव.

१

(अष्टाभिधान नायिका)

प्रोषितपतिका खंडिता, कलहातरिता नाम,
विप्रलब्ध उत्कंठिता, वासकसज्जा वाम.

१

स्वाधिनपतिका नायिका, अभिसारिका गिनाय,
आठ प्रकार जु भेद यों, वरने हे कविराय.

२

(चंद्राभिसारिका-कवित्त.)

फूलनिसों गुंथी मंग, चंदन चढाए अंग,
उमगि हे मनो गंग, सरदके नीरकी;
सोहत हे सब तन, मोतिनके आभूषन,
मोतिनकी ज्योतिसां मिली हे ज्योति चीरकी,

मुसिकयाति आछी अति, दातनिकी दीपे दुति,
तेसीई गुराई कहि सुंदर शरीरकी,
चादनिभी बाल मिली, चादनीमें एसी चली,
जेसें धीर सिंधुमें चले तरंग धीरकी

१

(उत्तम लच्छम-बोहा)

पिय तियसों अनादित करे, तिय न तजे पिय प्रीति,
यह सो उत्तम नायिका, हैं जानो यह रीति
(सवैया)

१

पकरे करसों कर और तिया-कों, लिये फिर जो घन दामिनिकों,
इहि भातिनि सुंदर कान्ह लिखें, फुनि कोप नहिं कहु कामिनिको,
युग लोचन लाल हे लालनके, चहु जामिनि जाग्यो हे यामिनिकों,
अपराध भर्या अति आवतु या गति, भावे तउ पति भामिनिको

१

(सयोग शृंगार)

एक समे मंदिरमें रमनीसें श्याम रमे,
देखतमें मैनहूके मन सरसत है,
एकनीकों भेटी एक छेत हे लपेट पुनि,
एकनी चपेट कुच ओठ परसत है,
छिटके गुलाबसों गुपालजु गुपालकानि,
सुंदर सुवह रूप एसें दरसत है,
मेरे जान फुली फली ललित लतानि पर,
मद मद बुंदनिसों मेह बरसत है

१

(धन्या सुरसात वर्णन)

दपति करत रति सुंदर सरस अति,
बारों रतिपति रतिके यों सह हसकों,
लालकी भुजानि परि ललनाकि लसत,
जानु गाढ़े मही मीव पीवे अघर रसकों,
ता समे पियाके पाय पियकी कटिपे आह,
रहि हे उचाह एसें अंगुरीन दशकों,
मेरे जाने पंच वान पंच पंच वाननिसों,
बाधि चढयो कुहू और कुहू तरफससों

१

(सवैया)

बाल उठी रति केलि किये, कवि सुंदर सोहत अंग रसों हे,
 आरासिमें मुख देखि सकोचति, सोचति लोचन होत लजो हे;
 लाल हसैं इह बीच रही, ललना पियकों तकिंके तिरछोहे,
 पौछि कपोलि अंगोछति ओठ, अभैठनि आंखिनी एठति भोहें. १

(प्रौढा लच्छन.)

कान्ह आलिंगन आसन चुंवन, किन्ह अनेक सु कौन गिनावे,
 यों रति मानि तियाकों तऊं पति, की छतियां छिनुं छोरि न भावे;
 भोर भयो पिय जाने न जैसे, इतें पर ए चतुराइ चलावे,
 अंचरुसों ढकि मोतिकि मालकि, सुंदर सीतलताइ दुरावे. १

सुंदर (दूसरा.)

(पातिव्रत-ज्ञान-विवेक.)

पतिहीसुं प्रेम होइ पतिहीसुं नेम होइ,
 पतिहीसुं क्षेम होइ पतिहीसुं रत है;
 पतिहीसुं यज्ञयोग पतिही है रसभोग,
 पतिहीसुं मिटै सोग पतिहीको यत है;
 पतिही है ज्ञानध्यान पतिही है पुन्यदान,
 पतिही है तीर्थस्नान पतिहीको मत है;
 पति विनु पत नांही पति विनु गत नांहि,
 सुंदर सकल विधि एक पतिव्रत है. १
 जलको सनेही मीन बिछुरत तजै प्रान,
 मनि विनु अहि जैसे जीवत न लहिये;
 स्वांत बिंदुको सनेही प्रगट जगतमाहि,
 एक सीप दूसरा सु चातकहु कहिये,
 रविको सनेही पुनि कमल सरोवरमें,
 शशीको सनेहीहु चकोर जैसे रहिये,
 तैसेही सुंदर एक प्रभुसूं सनेह जोर,
 और कछु देखि काहु वोर नहि वहिये. २
 यौवनको गयो राज ओर सब भयो काज,
 आपनी दुहाइ फेरी दमामो बजायो रे;

लकुटी हथ्यार लिये नेन कर ढाल दिये,
 भेत बार भये ताके तबुको तनायो रे,
 दशन गये सु मानो दरवान दूर किये,
 जो घरी घरी सो आनि बिद्योना बिद्यायो हे,
 शीश कर कंपत सु सुदर निकार्यो रिपु,
 देखतही देखत बुढापो ढोर आयो हे

३

काक अरु रासभ उल्लस सम बोलत हे,
 तिनके तो वचन सुहात कहो कौनकु,
 कोकिल रु सारी पुनि सुवा जय बोलत हे,
 सब कोउ फान दे मुनत रव रौनकु,
 ताहिते सुवचन विवेक करि बोलियेजु,
 बुहि आक्काक बकि तोरिये न पौनकु,
 सुदर समुझि एसे वचन उचार करो,
 नहितो समुझि करि घेठो गहि मौनकु

४

(सदयोध-सवैया)

देखनके नर दीसत हे, परि लच्छन तो पशुके सवही हे,
 बोलत चालत पीवत खात सु, वे घर वे घर जात सही हे,
 प्रात गये रजनी फिर आवत, सुदर यों निज भार वही हे,
 ओर तो लच्छन आइ मिले सब, एक कमी शिर शृंग नहि हे

१

तैं दिन चार विराम कियो शठ, तोर कहे कछु न्हे गइ तेरी,
 जेसेहि बाप वढा गये धाडि सु, तेसेहि तु तजि हे पल फेरी,
 मारहि काल चपेट अचानक, होइ घरीकमें राखकि देरी,
 सुदर छे न चले कछु ये सग, भूलि कहैं नर मेरोहि मेरी

२

तु कछु ओर बिचारत हे नर, तोर बिचार धर्योहि रहेगो,
 फोटि उपाय करे धनके हित, भाग लिख्यो तितनोहि लहेगो,
 भोरकि साझ घरी पल माझ, सु काल अचानक आइ गहेगो,
 राम भयो न कियो कछु सुकृत, सुदर यों पछिताइ रहेगो

३

वे श्रवना रसना मुख वेसहि, वेसहि नासिका वेसहि आँखी,
 वे फर वे पग वे सब द्वार सो, वे नख शीशहि रोम असखी,
 वेसहि देह परी पुनि दीसत, एक बिना सब लागत खखी,
 सुदर कोउ न जानि शके यह, बोलत हो सु कहाँ गयो पंखी

४

बोलत चालत पीवत खावत, सिचत हे द्रुमकुं जस माली,
 लेतहु देतहु देखत रीझत, तोरत तान वजावत ताळी;
 जा महीं कर्म विकर्म किये सब, हे यह देह परी अब ठाली,
 सुंदर सो कितहू नहि दीसत, खेल गया इक खेल सुख्याली. ५

श्वान कहुं कि सियार कहुं, कि बिलाड कहु मनकी मति तेसी,
 देढ कहुं किधों डोम कहुं, किधों भांड कहुं किधों भंडइ जेसी;
 चोर कहुं बटपार कहुं टग, जार कहुं उपमा कहुं केसी,
 सुंदर ओर कहा कहिये अब, या मनकी गति दीसत एसी. ६

कोउक जात प्रयाग बनारस, कोउ गया जगनाथहि धावे,
 कोउ मथुरा बदरी हरिद्वार सु, कोउ गंगा कुरुक्षेत्र नहावे;
 कोउक पुष्कर व्है पंच तीरथ, देरिहि दोरि जु द्वारिका आवे,
 सुंदर वित्त गड्यो घरमाहि सु, वाहर हंडत क्यों करि पावे. ७

आपहि चेतन ब्रह्म अखंडित, सो भ्रमते कुछ अन्य परेखे,
 दृढत ताहि फिरे जितही तित, साधन योग बनावत भेखे;
 औरत कष्ट करे अतिशय करि, प्रत्यक आत्म तत्व न परेखे,
 सुंदर भूलि गयो निज रूपहि, हे कर कंकण दर्पण देखे. ८

(पेट-प्रपंच.)

पाजी पेट काज कोटवालके अधीन होइ,
 कोटवाल सो तो शिकदार आगे दीन है;
 शिकदार दिवानके पीछे लग्यो डोलै पुनि,
 दिवानहु जाय बादशाह आगे लीन है;
 बादशाह कहै या खोदाय मुझे और देइ,
 पेटही पसारे वही पेट वश कीन है,
 सुंदर कहत प्रभु क्युही नहि भरै पेट,
 एक पेट काज एक एकके अधीन है. १

पेट सो न बली जाके आगे सब हारि चले,
 राव अरु रंक एक पेट जीति लिये है;
 कोउ बाघ मारत बिदारत है कुंजरकुं,
 ऐसे शूरवीर पेटकाज प्राण दिये है;
 यत्र मंत्र साधत आराधत मसान जाइ,
 पेट आगे डरत निडर ऐसे हिये है;

देवता असुर मृत प्रेत तिनु लोक पुनि, सुंदर कहत प्रभु पेट जेर किये है	२
प्रातही उठत जब पेटहीकी चिंता तब, सब कोउ जात आपु आपुके अहारकू, कोउ अन्न खात पुनि आमिष भखत कोउ, कोउ घास चरत चरत कोउ दारकू, कोउ मोती फल कोउ वासरस पय पान, कोउ पौन पीवत भरत पेट भारकू, सुंदर कहत प्रभु पेटही भमाये सब, पेट तुम दियो है जगत होन ख्वारकू	३
पेटहीके वश रक पेटहीके वश राव, पेटहीके वश और खान सुल्तान है, पेटहीके वश जोगी जगम सन्यासी सेख, पेटहीके वश बनवासी खात पान है, पेटहीके वश ऋषि मुनि तपधारी सब, पेटहीके वश सिद्ध साधक सुजान है, सुंदर कहत नहि काहूको गुमान है, पेटहीके वश प्रभु सकल जहान है	४

संग

(चातुरी-कवित्त)

जगनमें मंगनमें सुसरेके अगनमें, रेन त्रिया रंगनमें रस बरसाहिये, गावन बजावनमें रीझही रिझावनमें, पढ़न पढ़ावनमें धन दरसाहिये, दान मान देवेमें सत्य बात केवेमें, समयके साधवेमें ततवर कहाहिये, अहारमें विहारमें बिचार कवि संग कहे, एते ठोर चातुरकु लज्जाह न चाहिये	१
---	---

संगमदास.

(स्त्रीचरित्र.)

समेको न जाने शीख, काहूँकि न माने रारि,
 कठिनको ठाने सो अजाने भई जाति हे,
 पीछे पछिते है घात एसी नहि पैहे टेक,
 तेरी रहि जैहे कहा ठेढी भई जाति हे;
 संगम मनावे तोहि हितकी शिखावे शीख,
 जा बिन न भावे भौन ताहिसों रिसाती हे;
 मोसों अठिलाति बिन कामको हठाति प्यारी,
 तुं तो इतराति इत राति वीति जाती हे.

१

संतदास.

(भूषण अंग.)

नरपति मंडन नीति, पुरुष मंडन मन धीरज,
 पंडित मंडन विनय, ताल रसमंडन नीरज;
 कुल तिय मंडन लाज, वचन मंडन प्रसन्न मुख,
 मति मंडन कवि कर्म, साधु मंडन समाधि सुख;
 पुनि भुव बल मंडन हे क्षमा, गृहपति मंडन विपुल धन,
 मन मंडन शूचिता संत कहि, काया मंडन बल्लन घन.

१

(दाम महिमा)

पैसेहीके मात तात पैसेके वहीन भ्रात,
 पैसेहीके हितु जात पैसेकी लुगैयां है;
 पैसेतें आदर सनमान होत पचनमें,
 पैसेतें चलात पय राशिनमें नैयां है;
 पैसेहीतें जंगलमें मंदिर तयार होत,
 पैसे बिन मूल काहूँ बात ना पुछैयां है,
 संत कहे साधू तुम मनमें बिचार देखो,
 दैयाने बनाये ऐसैं जगमें रुपैया है.

१

(भक्ति-दोहा.)

भरम रोग तबहीं मिटा, रटया निरंजन राय;
 तब जमका कागज फट्या, कट्या करम तब जाय.

१

स्वरूपदास.

(पतिता निषेध-सर्ग्या)*

सब घोस रहै गृहमायके सो, सखियांको बोलायके फैल सिखावै,
सासरे जायकै पीहर आनकै, भैरव देविको दोष दिखावै,
पति सासको निंदत फद अनेकह, छद अनेक अनद घटावै,
दुकदास सरूप बिचारिकै देखिये, और पतीत क्या डोल बजावै १
कनह कुच कचुकीमें कसिकै, चसिकै सखियान जो हाथ लगावै,
मसकै फिर हाथ हितैं ससकै, हसकै सखिके गर बाहि बनावै,
दिगंत कोउ जात तो गेल भगे, बिय देखिकै छैल वै फैल बतावै,
दुकदास सरूप बिचारिकै देखिये, और पतीत क्या डोल बजावै २
घर देहरीपै नित बैठक है, चख घाटके छेलनकों बहकावै,
कछु काम बिना उठि घाम लखे, नर वामसों वामके मेदकों पावे,
सब काम हरामकी यात मुनै, अजकी त्रियकों तनही जफ आवै,
दुकदास सरूप बिचारिकै देखिये, और पतीत क्या डोल बजावै ३
पगभूपनके दिखरायवेको, लहंगो अति धेरको उंचो बनावै,
मगमें बहती पगकों ठटुकै, अरु पेट उघारिकै नाभि बतावै,
सखिया तजिकै सजकै नखरो, फिरि पिछी वा यारकों सैन चितावै,
दुकदास सरूप बिचारिकै देखिये, और पतीत क्या डोल बजावै ४
बिन काजही दांत दिखावत है, जब सोन कहा सब अग दिखावै,
अब लाज जहानकों कामके सिंधु, डबोइ दर्द फिरि खोज न पावै,
बिपयी कहा पामर जीव बचै, जिनके दिग साधुहुकी पति जावै,
दुकदास सरूप बिचारिकै देखिये, और पतीत क्या डोल बजावै ५
उसकै झझकै लखि जाह जु आपनी, पापनी सैननमें लखि पावै,
अतिहि अलवेली चले अजकी, पगहीके अगुठि अनौट बनावै,

* इस तराहको गुजर भाषाके “ छिनाल पक्षीपक्षी ” नामक एक
ग्रंथ जैन साधु छालचदने बनाया है—

पग पछाडे पानी मोडे, कुवा कांठे अबोडो छोडे
छेडो काडी वा उराडे, छिनाल ते छु डोल बगाडे १
आगे हीडे पीछे देखे, जमने हाथका फगन पसारे
हाथ पसारके पीठ देखाडे, छिनाल ते छु डोल बगाडे २

छिन ढांकत है छतियां छिन खोलत,—के रसिया विन मौल विकारै;
 टुकदास सरूप विचारिकै देखिये, और पतीत क्या ढोल बजावै. ६
 नित फैलके गोले गुडायो करै, अति पाडोसीके चित सोच लगावै;
 जल बीच सतावत आगि जलायके, डुंगर आखिके कोने छिपावै;
 कछु सिंहको मारत जेज करै, नहि उंदरतै नितही उझकावै;
 टुकदास सरूप विचारिकै देखिये, और पतित क्या ढोल बजावै. ७
 ठिक खाटपे आपके यार लग्यो, शिर खावंदके धरि नाच नचावै;
 दुध पायके आपके ताप नहिं, सुतकों पतिकों झट मारि नसावै;
 वह गायको सिंह रु गाडरको, गज जेवरीको करि साप बतावै;
 टुकदास सरूप विचारिकै देखिये, आर पतीत क्या ढोल बजावै. ८

शिरताज.

(हिंदुत्व भक्ति-कवित्त.)
 सुनो दिलजानी मेरे दिलकी कहानी,
 तुम हस्तही विकानी बदनामी भी सहेंगी में;
 देवपूजा ठानी में निमाजहू भुलानी,
 तजे कलमा कुरान सारे गुनन गहेंगी में;
 श्यामला सलोना शिरताज शिर कुले दिये,
 तेरे नेह दागमें निदाग हो दहेंगी में;
 नंदके कुमार कुरवान तोरी सूरतपें,
 तोड नाल प्यारे हिंदुवानी हो रहेंगी में. १

शिवसिंह.

(श्रीकृष्णमूर्ति-धनाक्षरी.)
 रसिक शिरोमणि पीत पटवारे श्याम,
 नैननके तारे हे दुलारे मम प्यारे लाल;
 सुन्दर सलोने मन मोहन कुंवर कान्ह,
 आनन्दके कन्द ब्रजमोहन मुकुन्दलाल;
 मोर मुकुटवारे शिव गले माल धारे,
 यशुदाके प्राणप्यारे सांवरे गोपाललाल;

- मेरे वनमाली निकुंजनमें कदवतर,
 बासुरी बजाओ नटनागर गोविन्दलाल १
 राजत अनेक रंग सुन्दर देखाई देत,
 नन्दलाल सैनन मरोरि मटकत है,
 आटी वनमालीको अनोखी मुसफान देखु,
 चार वार नाचत महान नटखट हैं,
 चारत अनेक काम सुन्दर विशाल रूप,
 चीर आज मोहन अपार धिरकत है,
 डारत हियेमें शूल शिवजू निहारि यह,
 मद मद पेखत मुरारि नटवर है २
 शिलातट बैठिके बिहाग गावत वो आली,
 नन्दको लाल मम चित्तको चुराय लेय,
 वहा चख देखु चीर कुजनमें घूम मची,
 मीठी मीठी ताननसों मनको लुमाय लेय,
 चचल चपल बम्ह अहीरवालो धोहरा,
 रस बर्पाय देय तपन बुझाय देय,
 द्रगन झसाये देय शिवजू रिझाय देय,
 मनको हिराय देय आनन्द मचाय देय ३

श्रीपति.

(विविध विषय-कवित्त)

- जहां अबुजासन खगासन वृषासन ओ,
 सासन न लांघिजा सिंहासन तरे रहे,
 तापर अनत रूप सेज प्रहरूप नीके,
 चद है वितानी छाह सीसपे फरे रहे,
 श्रीपति कहत ज्याके चरन शरन ताके,
 चाकरसें बारहु विमाकर खरे रहे,
 मंदरमें धनाधीश द्वारमें कलदरसे,
 वदरसे बहार पुरंदर परे रहे १
 दारिद दिछीते आयो दिग जानि दुदाहार,
 राजाराम बारो राज देख कब्यो हरिकैं,

आयो मरुधरसो नां आन दिन्हो जसवंत,
 धायो तब खारी आपगापै* दाव धरिकै,
 एतो मेदपाटके महीप श्री सज्जन वारे,
 चालत अदीठ दीठ चक्र थरहारिकै;
 खांचकै लंगोटा करि काख विच घोंटा गेंद,
 कूद गयो दोटा देन कोटा कोटा करिकै.

२

(ऋतु वर्णन.)

फूले आसपास कास विमल अकास भयो,
 रही नां निशानी कहूं महिमें गरदकी;
 गुंजत कमल दल ऊपर मधुप मैन,
 छापसी दिखाई आनि विरह फरदकी;
 श्रीपति रसिक लाल आली वनमाली विन,
 कछू न उपाय मेरे दिलके दरदकी,
 हरद समान तन जरद भयो है अव,
 गरद करत मोहि चांदनी शरदकी.

१

जल भरे घुमें मानों भूमै परशत आय,
 दशहुं दिशान घूमै दामिनी लये लये,
 धूरधार धूसरीत धूमसैं धूधारे कारे,
 धारे धुरवान धावै छविसों छये छये;
 श्रीपति सुजान कहै घरी घरी बहरात,
 तावत अतन तन तापसों तये तये,
 लाल विन कैसे लाज चादर रहेगी अव,
 कादर करत मोहि बादर नये नये.

२

(प्रिया स्वरूप)

कंचन कलसपर पद्मकुमार राजे,
 आछी आरसीमें रूप मुक्ता नचतु हे,
 बिंबपर कीर कीर ऊपर कमल तामें,
 मनमथ धनु हावभावको सचतु हे;
 द्विजराज श्रीपति परम आचरज यह,
 मुनिहूको मन प्रेम बेलि विचरतु हे,

घनपर बिज्जु बिज्जु ऊपर सरद चद,
चदपर चाहु तापें सूरज नचतु हे १
घादर रसालपर दामिनीको ल्याल फिधों,
चंपककी मालसी लसत वाल लालपें,
रतिके मुकुरपें मुवगिनी लसत फीधों,
फारी फारी छर छटवत गोरे गालपें,
द्विजराज श्रीपति रसिकमनि शीशफूल,
रुचुकि रुचुकिके परत आखे मालपें,
मेरी जान नम्वत समेत रवि नटवर,
धारी हाथ भरि नाची कालीके कपालपें २

हनुमान

(शुगार रस)

कचनके घट नट घटह युगुल मठ,
कमठ कठोर अरु सुभट मनोजके,
शुक प्रिय श्रीफल लगूर कोक संपूट ल्यों,
उलटे नगारे ज्यों मजीरफेत चोटके,
तंबु कंबु शबु फर कुमरूप छत्रपति,
कवि हनुमान कहै शिखर सरोजके,
बीज भरे मौज भरे रोज सुखदायी श्याम,
येतो उपमा अधीन सुंदरि उरोजके १
कैधों पिये कालकूट बैठे शमु जटाजूट,
निशिके नलिनपै अलिन बास छीन्हो है,
चामीकर कुमनपै मर्कत कठोर घरे,
रति रनबीर युग टोप शिर दीन्हो है,
प्यारी कुच श्याम ताकी डीठि गद्दी श्यामताकी,
कहै हनुमान इन काहूको न चीन्हो है,
तपिनके तप जीते जपिनके जप जीते,
ताते चतुरानन बदन फारो कीन्हो है २

कलपलताके पता कोटि सुरकीसी क्रांति,
 पूर्ण चंद्रमाकी धुति दीपती निदान है;
 दर्पणमाहि कलु दर्पण देखियतु क्षिति,
 रुचिकी ज्यों छटा छवि छाजत महान है;
 हनुमान प्रीतिकी सों कंज शुभ रेखायुत,
 अदभुत होरे हरि शारदा समान है;
 प्यारी तेरे पानकी बटाई गाइं वेद चारि,
 सोते परी पाई कान जोरे खडा पान है. ३
 गोरी गोरी अंगुली है अंगना तिहागी प्यारी,
 लघु मध दीरघ मुच्यम थूट करकी,
 नखनकी धुति कवि जीव सो उदित शोभा,
 हनुमान कैथों है मयूषे कलाधरकी,
 दश चक्र चिन्ह दश दिश जित्यो बीसोबीस,
 कली कशमीर कीधों फली चामीकरकी;
 शक्ति पंच देवनकी भारती है लेखनीकी,
 पंच पंचगासी है प्रपची पंच शरकी. ४

हमीर.

(सरदार कथन)

गुनी गुन गैयो देश देशको फिरैयो हो में,
 अच्छरको लैयो स्वच्छ करता विचारी हौं;
 तीरको चलैयो तरवैयो नीरहूको तीव्र,
 बाजी फिरवैयो शूर शखनको धारी हौं;
 कहव हमीर सत्य बानी परमानी उर,
 ताल स्वर ख्याल ताको शरोता अपारी हौं,
 कोउ सरदार धार करहिं उदार मोपै,
 ताको तत्काल मै रिझायवैको त्यारी हौं. १

(देहो.)

हाहुलि राय हमीर कहे, सुण पंगानी वत्त,
 इकडले असि लख्खासों, (इसा)सों भड किम भाजत. १

हरजीवन.

(भाषि प्रायश्य-कुंडलिया)

अपनी भावी मुक्तिये, राम मुक्ति बनवास,
 परसुराम मुक्ति सही, कियो क्षत्रिको नास,
 कियो क्षत्रिको नास, वामन बलिहार पघारे,
 नरहरि मुक्ति खरी, जिनु हरनाकस मारे,
 हरजी मुक्ति बराह, धरनिकों दाढ धरावी,
 ओर न मुक्ते कोय, मुक्तिये अपनी भावी १
 अपनी भावी भोगवी, भारथ भीष्मपिताय,
 ग भावीके जोगमें, भारथ सवें बडाय,
 भारथ सवें बडाय, कोन कोऊ कित माया,
 जिनको निमित्त जहां, तदा तिन प्रान पक्षार्या,
 हरजी कृष्ण कहा करे, फनु ना मिटै जु थावी,
 भारथ भीष्मपिताय, भोगवी अपनी भावी २
 अपनी भावी भोगवी, सगर कृष्ण रावन,
 गांधारी गैली भई, सत सुतके कारन,
 सत सुतके कारन, मुखे मारि भई दिवानी,
 कहा न मान्या काहु, अवफल स्वाया छानी,
 एते सुत एके न, तोय कयों कहा आवी,
 सगर कृष्ण रावन, भोगवी अपनी भावी ३

हरदास.

(मृदंग और गणिका कथन)

प्रभु पक्षमें द्रव्य जो भाति लगे, धन हे धन हे तिनके धनकू,
 हरिनाम बिसारिके नाच नचे, जव प्रेम कथा न रुचे उनकू,
 मरदंग कहे धिक हे धिक हे, तब ताल कहे किनकु किनकू,
 जव हाथ पसारि कहे गणिका, इनकू इनकू इनकू इनकू १

हरदान.

(रामगुन ३०,-कवित्त.)

घनकी घटासैं अति मयूर अनंद होत,
 कोकिल अनंद होत अंबफल आयेतें;
 मधुप अनंद होत कुंजरस मिलवेतें,
 दाताको अनंद होत गुनी दरसायेतें,
 शूरको अनंद होत अति रन अंगनमें,
 विप्रको अनंद होत मोढक खिलयेतें;
 कहे हरदान सत्य सुनियो सुजान कवि,
 ज्ञानीको अनंद होत रामगुन गायेतें. १
 एक नर टेक विना सदा रहे आलममें,
 एक नर उद्यमी अडोल बोल अंगमें;
 एक नर कायम सशंक रन अंगनमें,
 एक नर झुझत अशंक रहि जंगमें,
 एक नर व्यसनी त्यों एक निर्व्यसनी हे,
 एक इंद्रजीत एक रसिक अनंगमें;
 देखे विन सब हे समान हरदान कहे,
 सत्य पहचान परे काजके प्रसंगमें. २

(लक्ष्मी ऊमा संवाद,-इ.)

श्री कहे उमाको तेरो कंत समझ्यान बसे,
 उमा कहे तेरो कंत परतीयके उरमें,
 स्वामी तिहारो करे भूतनको सदा संग,
 हाल तेरो कंत बसे दासीकी हजुरमें;
 नगन तिहारो नाथ द्रगनमें लाल ज्वाल,
 करे पटचोरी नैन कायम कसुरमें;
 भोलो कंत तेरो सब जानत अकामी क्रोधी,
 कपटी कृष्ण कामी यामें क्या तुं मगरु हे. १

हरिकेश

(मोहिनी स्वरूप-कविस)

छटकी छरफपर, भौहकी फरफपर,
 नैनकी दरफपर, भारे भारे डारिये,
 हरिकेश अमल, कपोल गिहसनपर,
 छाती उकसनपर, निसफ पसारिये,
 गहरौही गतिपर, गहरौही नाभिपर,
 हँ न हरकती प्यारे नैसुफ निहारिये,
 एक प्राणप्यारीजूकी कटी लचकीली पर,
 दीली दीली नजर समारे लाल डारिये १

हरिचरणदास

(श्रीराधाकृष्ण भक्ति-शृंगार)

मो हिय राधा कान्हको, निगदिन बसो बिहार,
 जिहिं सुमिरत प्रन्यूहके, बिनसत जूह अपार १
 श्रीराधा बाई तरफ, तुलसि फज पदमाह,
 कूळ फलिंदीके लसत, कहू कदमकी छाह २

(सवैया)

तुलसीदल माल तमालसों व्याम, अनगते सुंदर रूप सोहाही,
 श्रुति कुडरुके मनिकी झलके, मुखमडलपै वरनी नहि जाही,
 सखि देखि पियूप मयूपहुतें, सुखमा अति आननकी सरसाही,
 बिहरे हरि गोपसुता सग कान्ह, निसि यितिमें बन बीथिनिमाही १

(कविस)

मूरतिको भेद अरु सूरतिको भेद नाहिं,
 मोहनसो भेद मत वेदनिके ग्रामको,
 नेह परिपूर धृषभानु-नादिनीको नूर,
 देखि जात रूपको गरूर काम-धामको,
 आनन अनूप वारिजातको हे भूप किर्घो,
 भासे न समान उपमान सुधाधामको,

करुना अगाधा हरे संतनकी बाधा एसो,
कहे विन राधा फल आधा कृष्ण नामको. १

आवति रमन साथ कुंजतें भवन प्रात,
मुखपें मयूखें फेली कंचन किनारीकी;
अरसाने गात रससानी कहे बात चाहि,
चाह भरि आखें लखि जाति नगवारीकी;
शोभातें सुधारी किधों चंदतें निकारी विधि,
जाके न समान छवि कामहूकी प्यारीकी,
राजे रूप भारी नेन निदकी खुमारी तुल,—
सची न उमारी वृषभानकी कुमारीकी. २

(उर्वशी उपमा.)

प्यो उर वसीसी औ सखी उरवसीसी छबी,
देखे उरवसीसी मन सराकि सराकि जात;
कंचुकी कसीसी बहु उपमा लसीसी रूप,
सुंदर धसीसी परयंकपे थिराकि जात,
कहे हरिचर्ण रही चमक वतीसी प्यारी,
जामें लगी मीसी हिय सौतिन दरकि जात,
भुजमें कसीसी सिंधु गग ज्यों धँसीसी जाके,
सी सी करिबेमें सुधा सीसी सी ढरकि जात. १

(श्रीराम स्तुति.)

परम उदार दशरथको कुमार सब,
अंग सुकुमार कामरूप मदको हरे,
करुण निकेत करें दीननसों हेत सुख-
मांग्यो सुख देत जाको सेवन रमा करे;
उदधि बधाय लरि लंकहि छिनाय लीनी,
दीनी हे विभीषणको अवरज को धरे,
विधि पूजें पाय एसो चाहे रघुराय केती,
लंकन बनाय रोज रंकनको बितरे. १

हरिचंद.

(मधैया)

काज कमाल कराल करानन, साठ निहालन चाउ चली है,
 हाउ बिहालन ताउ कमाल, प्रवाय्के बालक लाउ छली है,
 गेज बिलोमन छेउ अमोल्क, लाउ कपोल्क छेउ फली है,
 बोग्न बोल कपोन्न डोल, गत्रेउ गनोउ रखेउ गली है १

हरिदत्त.

(रमा-पार्यतो प्रभ्रात्तर)

मिथुफ तिहारो कहा ' बलि मस्त्रशाला जहा,
 मर्पनफा सगी कह ' है हे भीरसागरमें,
 एरी बहुरंगी बल्वाओ कहा नाचत है '
 किन्हे तिरभगी कहीं है हे ग्या गनमें,
 चाजर चबैया कह ' होय है सुदामा पास,
 बिपको अहारी कहां ' पूतनाके घरमें,
 मिथुसुता आन मिली, तर्कमें तितर्क करी,
 गिरिजा मुम्फात जात झारी लिये करमें १

(हरिनाम मदिमा)

चारोंहि वेद पुगण अटारह, चौंसठ तत्रके मत्र विचारे,
 तीन सौ साठ महाव्रत मंथम, भगल ब्रह्म करी पुर धारे,
 योग वियोग प्रयोग उपासन, में हरिदत्त मभी निरधारे,
 तिनेहि छोकनर्म सगरे फल, मैं हरि नामके ऊपर धारे १

हरिदास (पहिला.)

(ज्ञान वियेक)

चंचउ इंद्रपुरी सुम्ब पायके, अतकी बेग महादुख पाऊ,
 जो सुखसें दुख चोगण होत है, सो सुखकेहु नजीक न जाऊ,
 दाना चुंगायके पंख मरोडत, एसें चुगे पर मैं न रिमाऊ,
 फटे हरिदास सुनो सब सज्जन, नां गुढ खाउं ना कान विधाउ १

चोकति वीति इकोतरही, तब इंद्रकि आयुष होत पुरारी,
 इंद्र चतुर्दश जो चलि जातहिं, ब्रह्माको वासर एक भयारी;
 ए सबकुं डर कालको लागत, क्यों हरिदास तुं सोवे सुखारी,
 तुच्छसी आयुष पाय चढ्यो मद, जीवनहिं डर राखे अनारी. २
 जो कोउ काहुकी नीकि त्रिया तकि, लेत आलिंगन कामके मारे,
 ताकों आलिंगन धर्म लेवावत, लोहके थंभ तपायके मारे,
 आखिनमें कटु कांटे चुवावत, जो परनारिकुं दृष्ट निहारे,
 यों हरिदास कह्यो ऋषि नारद, किजीए कर्म बिचारिके प्यारे. ३
 हरि आप सबें अवतार धन्यो, जगभूमिका भार उतारनकुं,
 गुरुरूप बनी सब बोधत हो, जग जीवकुं आप उधारनकुं;
 यहि नाम नारायण नाव सही, भवसागर पार लगावनकुं,
 हरिदास गुरु हरि म्हेर करो, निज आनंदसागर धावनकुं. ४

हरिदास (दुसरा.)

(जीवन सुधार.)

गायो न गोपाल मन लायके निवारि लाज,
 पायो न प्रसाद साधु मंडलीन जायके;
 धायो न धमकि वृन्दा बिपिनके कुंजनमें,
 रह्यो न शरण जाई विह्वलेश रायके;
 नाथजू न देखि छक्यो क्षणहू छबीली छबि,
 सिंह पौरि पन्यो नाहि शीशहू नवायकै,
 कहै हरिदास ताहि लाजहू न आवे जिय,
 जनम गँवायो न कमायो कलु आयकै. १
 ठग कैसे लडुवा ज्युं चाखतहि मीठा होत,
 एसेहिं संसार भोग पीछे पछतायो हे;
 खाजकों खसोटि जैसे मूरखही मोद माने,
 ऐसे नहि जाने दुःख सौ गुनो उपायो हे,
 कसाइको बकरो ज्युं बकरीसुं प्रीत करे,
 जानत नहि काल मुजे दृष्टिमें चढायो हे;
 तातें हरिदास कहै कालको पशु हे जीव,
 कहा भयो चार दिन आछो घास खायो हे. २

फलाने वरस हम फलानो नरेश देख्यो,
 फलानेके ब्याह हम गयेते उतावरे,
 फलानेकी नार एसी फलानेको एसो धन,
 फलानेकी वस्तु हम पाई मन भावरे,
 एसी एसी कथा करी जनम गमाइ देत,
 बोल बात कीनी तामे ताकू कहा बावरे,
 कहे हरिदास हरि नामकुं बिसारी देत,
 ताहितें परेगो जमकिंकरके गावरे

३

(अस्तोदय)

को दिन जात हे पुत्र खेलावत, को दिन जात हे बात बनाये,
 को दिन जात हे स्वावत सोवत, को दिन जात हे क्रोध चढाये,
 को दिन जात हे नारिकु चितत, को दिन जात हे पेट उपाये,
 यों हरिदास महा नर मूरख, रत्न मिलो तन देत गुमाये

१

(हरिनाम हथियार)

राम नाम तलवार, कमर किरतार कटारी,
 शिव समरथको टोप, जुरे जुगदीश बिहारी,
 होठ हिले हर नाम, बदनपर जुलम जुटारी,
 धनुष बाधि सद्धर्म, कर्मकी फोज बिडारी,
 हरि राम नामके चेत नर, कृष्ण नाम बढूक भर,
 सट मार टार जम फोजकू, हर हर यह हथियार धर

१

(पुष्पराशिमें परमात्मा)

केतकीमें वसे आप केशव कृपानिधान,
 कुंजमें कल्याण सो तो कदममें हरि हे,
 मोगरामें माधव मुकुव मालतीके मध,
 चबेलीमें चिदानंद चित् सुगध भरि हे,
 गुलाबमें गोपाललाल जाइमें जगतपुरुष,
 परमेश परब्रह्म परम उपकारी हे,
 चपेमें चतुर्भुज चारो चित् रूपी रहे,
 सेवतीमें श्यामसुंदर सदा सुखकारी हे

१

(वसंतागमन-सवैया.)

कोमल कंजनकी कलिका, काहे न चित्त तहां तु रमायो,
 मंजरि मंजु रसालनकी, तिनकौ रस क्यों नहि तो मन भायो,
 फूलति और अनेक लता, हरिदास जु आयो वसंत सुहाया,
 छोडि गुलावनको वन तुं कढ, सेरुवापै किहि कारण आयो. ?

(शृंगार सौन्दर्य-दोहा.)

सुधर सुहागिनि बट विटप, पूजति भरी उद्याहि,
 परति पावरी प्रेमसों, भरत भांवरी नाहि. १

खग मृग गण चित्रित जिते, निरखति तिते सोहत;
 पै न स्वयवर चित्रपें, चित्रमुखी चित देत. २

चंचल चखनि चितौनिकी, जघ युगल द्युति देख,
 कदली बदली शीश जे, कदली बदली बेप. ३

गुड मीठो सरिता गहरि, तंत उभय समतूल,
 चाहत द्वै द्वै चोवटी, सो तो वने न मूल. ४

हरिसिंह.

(ज्ञानकटारी.)

लोह कटारि सवें कोउ बाधत, ज्ञान कटारि सुदुर्लभ भाई,
 लोह कटारि जु खाइ मेरे जन, सो अवतार धरे भव भाई;
 ज्ञानकटारिकुं खावत है सैंत, ब्रह्मस्वरूप अखंड हो जोई,
 फेर कबू जनमे न मेरे, हरिसंग संताप कछू न रहाई. १

(कवित्त.)

ज्ञानको प्रकाश सो तो हीरा मणि रत्न जेसो,
 ताको अंधकार केत पामर ठेराइके,
 ऐसोहि अन्याय करें ताहिसें चोरासि फिरें,
 बेर बेर कहा कहों तोहि समुजाइके;
 धिक्क तेरो जीवन हे मिथ्या नरदंह धारि,
 मेरे क्यौ न मूढ तुं कटारि पेट खाइके;
 हूंतो हरिसंग सुख दुःखहूतें न्यारो खाइ,
 ज्ञानकी कटारि सतगुरु गम पाइके. १

हीरा मणि रत्न सो तो जडहि प्रकाश आपु,
 आपको न जाने तामु जानो एषदेरी हे,
 ज्ञान तो स्वयंप्रकाश आपकु विजाने पुनि,
 चिदघन एक रस शुद्ध सर्वदेरी हे,
 जान तु ग्रन्थ तेगे अग्नि भाति प्रिय ऐसो,
 तु ग्रन्थ मानि रगो तेगे मति केशी हे,
 फेत हरिमिह मिथ्या देहक तु माने मूढ़,
 मेरो फगो माने तो फटारि स्वाय जेसी हे
 भक्तिमो न जाने प्रभु न्यारो फरि माने तासैं,
 होत हे हरिको द्रोहि फेर चित्त चाइके,
 भक्ति अरु ज्ञान इक भिन्नहि न जानो फोड,
 पक्ता है भक्ति वृष्ण कहि गीता गाइके,
 लोफतु रिताये राधे वृष्णको विहार गावे,
 निंदामें स्तुति का माने मनमें सराइके,
 फेत हरिमिह मिथ्या देहम अव्यास करी,
 मरै क्यों न मूढ़ तु फटारि पेट खाइके

हारश्चन्द्र.*

(कान्दप्रानकी पक्ता)

पहिले ही जाय मिले गुनम श्रवण फेर,
 रूप सुधा मधि फीनो नैनह पयान है,
 हसनि नटनि चितवनि मुसुकानि सुध-
 राई रासिकाई मिलि मति पय पान है,

* उहुक संघमें फोड कथिने कहा ह कि,—

(दोहा)

बन्द टरै सूरज टरै, टरै जगत व्यवहार,
 पं हठ धी हरि चन्दको, टरै न सय विचार
 जो गुन रूप हारिबन्दमें जगाहित सुनियत कान
 सो सब कवि हारिबन्दमें, लखहु पसच्छ सुजान

मोहि मोहि मोहन मईरी मन मेरो भयो,
हरिचंद भेद ना परत कछु जान है;
कान्ह भए प्रानमय प्रान भये कान्हमय,
हियमै न जानौ परै कान्ह है कि प्रान है.

१

जियपै जु होइ अधिकार तो बिचार कीजै,
लोकलाज भलो बुरो भले निर्धारिये,
नैन श्रोन कर पग सबै परवश भये,
उतै चलि जात इन्है कैसे कै सम्हारिये,
हरिचंद भई सब भातिसों पराई हम,
इन्है ज्ञान कहि कहो कैसे कै निवारिये;
मनमै रहै जो ताहि दीजिये बिसारि मन,
आप बसै जामै ताहि कैसे कै बिसारिये.

२

(चातुरी)

काहु एक ललना जवाहिर खरीदवेको,
आई हुती सुगम सुहाय हाटवारेकी;
करमें लीएतें भयो मुक्ता प्रवाल पुनि,
गुजासो देखायो डीठ परी द्रग तारेकी,
भनि हरिचंद मोतीचूरसो देखायो फेर,
हास्यके परेतें मोल लोल नंग भारेकी;
बीजक नफाकी औ खरीदकी विचारे कौन,
खबरी भुलानी योंही जोंहरी बिचारेकी.

१

(लज्जित नवपरिणिता-धनाक्षरी)

आई केली मदिरमै प्रथम नवेली बाल,
जोराजोरी पिय मन मानिक छुडाए लेति;
सौ सौ बार पूछे एक उत्तर मरुके देती,
धुंधटके ओट जोति मुखकी दुराए लेति,
चूमन न देति हरिचंदै भरी लाज अति,
सुकुचि सुकुचि गोरे अंगहि चुराए लेति;
गहतहि हाथ नैन नीचे किए आचरमै,
छविसों छबिली छोटी छातिन छिपाये लेति.

१

हरिराम.

(संधि-विग्रह)

मिट्टि मिलै द्वै मित्त, मित्त सेवक जय जानहु,
 मित्त उदासी मिलत, मिलत कछु लक्षि न मानहु,
 मिलै मित्र अरु शत्रु, बहुत पीडा उपजावहिं,
 दास मित्रके मिलत, काज सिधिको नर पावहि.
 है सकल नाश द्वै दास जहँ, हानि दास सबके मिले,
 हरिराम भनै द्वै हारि सहि, दास रु अरि जौ कहँ मिले १

हरिलाल.

(याचना विचार)

मागत देह दर्याचि दह, यनि आइ भली तिनहूपै विदाई,
 पावन द्वार गये बलि केशव, भूमि दर्ई अरु पाँठि न पाई,
 हरिलाल कथा हरिचदहकि, मुनि सर्वस दिन यात चलाई,
 राखिबो तो कठिनाइ नहिं, रस राखि बिदा करिबो कठिनाई १

हाफिज़

(शुणमहत्त्व वियोग, ३)

फूल बिन बाग जैसे वाणी बिन राग जैसे,
 पानि बिन सर जसे रूप बिन रग है,
 धन बिन साज जैसे सोचे बिन काज जैसे,
 राजा बिन राज जैसे नदी बिन तरंग है,
 एक अंगी प्रीत जैसे बेस्या बिन रीत जैसे,
 प्रेम बिन मीन जैसे शोभा बिन रग है,
 प्यारी बिन रैन जैसे हाफिज़ बिचारी देखो,
 शील बिन नैन अरु साधु बिन सग है १
 नर नीको शीलवान घर नीको धनवान,
 कर नीको दानयुत कहत जहान है,
 रूपवान नारि नीकी द्वारे चार गारि नीकी,
 शीतल वयारि नीकी तेज जब मान है,

विष बुझो तीर भोंडो वैद बीना पीर भोंडो,
 ताल बिन नीर और मौनी विदवान् है;
 रागी भोंडो तानु बिन तलवार भोंडि म्यानु बिन,
 हाफिज अधिक भोंडो मित्रको पयान है. २
 प्यारेजी वियोगमें तिहारे चित चैन गयो,
 भूले खानपान सब मुरझाई छाई है;
 घूमि घूमि प्रेमसों निहारिबेकी गौन समें,
 तेरे हाय एक पल सुधि नहि जाई है,
 पंखहू न दीने राम कैसें उडि मिलौ जाय,
 हाफिज चलत अब कोऊ ना उपाई है,
 मिलिबो बिछुरी और मिलिकें बिछुरी जैवो,
 विधनाके वश हो तासों का बिसाई है. ३

(वर्षा में विरह.)

चातक मोर करै अति शोर, उठी घनघोर है शाम घटा,
 चमकै बिजुरी अति जोर भरी, अरु लागि झरी लिये ठाट ठटा;
 शोक भरी पंखताय खडी, विरहागी जरी शीर खोलै लटा,
 कराहिये हाय कर पछिताय वह, हाफिज देखिके सूनी घटा. १

(प्रेम.)

हाफिज प्रेमके रोगकी, औषधि लागत नाहि;
 ससकि ससकि मरि मरि जिये, उठै कराहि कराहि. १

हिरालाल.

(पात्र कुपात्र)

चंचल लबारी चोर चुगल हरामखोर,
 कुडेही कुपात्र ऐसे तेसेकुं न धारिये,
 गीताही पुरान श्रुति निंदाही करत रहे,
 ऐसेही अधमहूको संगहूते हारिये;
 पुत्री अरु भगिनी पर दुष्ट जो कुदृष्टि करे,
 दोस्तीमें दगा वचन चूके वो निवारिये,
 हिरालाल कहे वीरो चातुरकुं शीख देनी,
 ऐसेही मनुष्य वाकुं जूता दो दो मारिये. १

आधिको धृक्को जो पथरसें मारे तोड़ी,
देता है अमृत फल अवगुन न आने है,
पृथ्वीको पेट फोड़ी पानीकु निकासत सो,
जगत जिवायत तो ममता न माने है,
केतो दुख सहत कपास जग मुख काज,
बख बिन कैसी लाज रैयत जहाने है,
कनक पराये काज ताडन औ जाडन सहे,
एसे उपकारी दुखहीको सुख माने है

२

हेम

(दाम मदिमा)

दामहीसों आठो जाम बुद्धिको प्रकाज होत,
दामहीसों सब ठोर होत बडो नाम है,
दामहीसों भैया बधु आय मन रुजु होत,
दामहीसों वनहम है त सब काम है,
दामहीसों समामाहि आदरको पावत है,
दामहीसों घरमाहि होत बिसराम है,
कहे कवि हेम यह नीकै कै विचारी देख्यो,
मेरे भाये बिसो बिस्या दामहीमें राम है
दामहीसों पितापर पुत्रहुको हेत होत,
दामहीसों पुत्रपर हेत स्वामोस्वाम है,
दामहीसों गयो काम हाथ फिरि आयत है,
दामहीसों सुयश पसार्या धामोधाम है,
दामहीसों साहिवको सेवकहु आय मिले,
दामहीसों राग द्वेष मितत जुखाम है,
कहे कवि हेम यह नीकै कै विचारी देख्यो,
मेरे भाये बिसो बिस्या दामहीमें राम है
दामहीसों देवता विमान बैठे सोहत है,
दामहीसों लोकपाल करे धन काम है,
दामहीसों पांडु सेतु यन और दीने दान,
दामहीसों धर्म अर्थ काम मोक्ष धाम है,

८

७

कहे कवि हेम यह नीके कै विचारी देख्यो,
मेरे भाये बिसो बिस्वा दामहीमें राम है

*

*

*

३

दामहीसों अश्व अरु हाथीपर बैठत है,
दामहीसों हिये सोहे मोतिनके दाम है,
दामहीसों भूषण अमोल नाना भांतिनके,
निशीदन मागिवेको चाहत सवाम है,
दामहीसों दान देत याचक औ विप्रनको,
दामहीसों बंदी यश बोले ठामे ठाम है;
कहे कवि हेम यह नीके कै विचारी देख्यो,
मेरे भाये बिसों बिस्वा दामहीमें राम है.

४

दामहीसों बने रंग शीश औ हवा महेल,
दामहीसों ठोर ठोर मोतिनकी झाम है,
दामहीसो नृप होय बैठत है सभा बिच,
दामहीसों तेज बढ़यो मानों जैस काम है,
दामहीसों नटुवा नृत्य करत नाना भाति,
दामहीसों गुणिकाहु करती सलाम है,
कहे कवि हेम यह नीके कै विचारी देख्यो,
मेरे भाये बिसो बिस्वा दामहीमें राम है.

५

दामहीसों दक्षिणमें मंदिरहु खूब बने,
किल्ला चितोड रन भौर एक ठाम है,
आगरा प्रयाग मदराज कलकत्ता कोटा,
बुंदी और जूनागढ चरनाट गाम है,
जलमे बनी है चारु संगत अमरसर,
जैपुर बडोदा जाओ ग्वालियर नाम है,
कहे कवि हेम हय नीके कै विचारी देख्यो,
मेरे भाये बिसो बिस्वा दामहीमें राम है.

६

जाकी दो अधेली च्यार पावली रही है पैठ,
आठक दुअनी आना सोलैको दिखात है,
वत्तीस अधनी ताकी चोसठ पवनी होत,
एकसो अठाइस अधेलाहीकों गात है;

दोय सत छप्पन छदाम जाके देखियत,
दमड़ी सु पाच सत बारह टखात है,
कटिनसो भैया लगे मनको हरैया ऐसो,
रुपेको रुपैया भैया कापें दियो जात है

७

(जञ्जरसना-कवित्त)

जोर परे जोर जात, भार परे भूमि जात,
झुमि जात यौवन अनंग रग रस है,
कहै हेमनाथ मुख सपति विपति जात,
जात दुख दारिद्र्य समूह सरवस है,
गढ गिरि जात गरुआइ औ गरब जात,
जात सुख साहिबी समूह सरवस है,
चाग फटि जात जुवा ताळ पटि जात,
नदी नद घटि जात पै न जात जग जश है

१

एक रसनामें जांम जपत हों रामें तामें,
तेरो यश जोरि कामें कबहू बिसारि हों,
कहै हेमनाथ नरनाथनके आगे जाय,
तेरो जश जाहिर जवाहिर पसारि हों,
कौन देहै मोल मोहिं केहरी कन्यानसाहि,
नामसों नगीना कहि याके कान डारि हों,
सापिनि सुमाढ गुण गारुड निहागे पदि,
सुम उर विवरमों गहर करि डारि हौ

२

क्षेम.

(नीतिकी वरकति)

ऊचो कर करै ताहि ऊचो करतार करै,
ऊनी मन आनै दूनी होति हरकति है,
ज्यों ज्यों धन धरे सचे त्यों त्यों विधि सरो सैच,
लाख भाति धरै कोटि भाति सरकति है,
दौलति दुनीमें थिर काहूकी न रही क्षेम,
पाछे नेकनामी बढनामी सटकति है,
राजा होइ राइ होइ साह उमराइ होइ,
जैसी होति नेती तैसी होती वरकति है

१

(वसंत-शृंगार वर्णन)

फूले कचनार सहकार औ अपार वन,
 शीतल सुगंध मंद मारुत कंपायोरी;
 चंदनके गार और सुमन सुगंध सार,
 हार मुक्तानके वितान तन तायोरी,
 क्षेम कवि चंचरीके गुंजै और कुंजै पिक,
 आछे सेज असन वसन भोन भायोरी;
 आयो मधुमास मोहि करै उपहास मधु,
 मधुपुर माधव वसंतहू न आयोरी.

१

पल्लव पील पालकी नगारे कूक कोयलकी,
 सुमन सिपाही सैन्य साजीकै सिधायो है;
 मधुवन नकीव वोलै वोलै वायु चोपदार,
 तोपदार तरुवर तैयारी करि ताये है;
 क्षेम करण चादनी चमूकी चाव देतो है,
 लेतो है अंकोर नाहि हरवल शशि आयो है;
 बैरीआ वसंत वरजोरी ब्रजराज विन,
 मदन महीप मतवारो उठि धायो है.

२

सेवती निवार सेत हीरनकी हार जूही,
 यूथ औ अनार मोती विद्रुम लसंत भो,
 पन्ना पुखराज पत्र चंपक समाज फाल,
 मानिक गुलाब नील इंदीवर गंत भो,
 माधवी नमूनो गडमेद कल सूनो दूनो,
 औध वाटिका बजार पूनो विलसंत भो;
 यतन जल्लस जोर रतन रसाल रंग,
 अतन अनंद हेत जौहरी बसंत भो.

३



❧ प्रकीर्ण पद्यसंग्रह. ❧

(अक्षरका समय *)

तान हूँ मिया तानसेन, हूँ बुद्धिबल वीर,
शाह हूँ रा अक्षरा, टोडरमल वजीर

(गंग-वीरबल भेट)

आगु मुदामा वृष्ण थे, गंग वीरबल फेर,
ता दिनमें तादुल हते, यह दिनमें वेर

(संस्कृत-भाषा महत्त्व)

संस्कृत स्वकिया स्नेहमुख, अचल शीचकर शात,
प्राकृत परकिय प्रीति पुनि, अचर सोचकर शात

स्वकिया मुख शशिपुर्न सम, शुक्लशि परकिय प्रीत,
श्लोक पलकसी तनु तनक, कुसाव्य फाल अनित्य

भाषा शास्त्रा हे सही, संस्कृत सोई मूल,
मूल रहत हे घुलमें, शास्त्रामें फलफूल

का भाषा का संस्कृत, विमल चाहिये साच,
काम जो आवे कामरी, का ई करिय कामच

(कवि-काव्य महत्त्व)

पाया हीरा लासका, आया बेचन काज,
धिना लिया छकड़ लगा, शीरि दगाहि बाज

जो पूछो सच बात तो, सोचमें कहा शोर,
सुनिये शाह मुल्तान तुम, आपहि मेरा चोर

श्रीराम हीरा हिरा, कविका हिरा कवन,
तरुनि हीरा तन अरु, पद्मिनि मन पारवन

गौरी ग्राहक रत्नकी, गुन ग्राहक राजान,
कविता ग्राहकको रसिक, मूपति भोज समान

* यह दो दोहामें अक्षरका समय सूचित किया गया है
वीरबल ग्राहण और शीरि मशकरा वीरबल और गंग एकी गुरुके उधर
पड़े थे जब वीरबलको प्रधानपद मिला तब गंगने यह दोहा और
अपने मकानकी पास बेरका झाड़ था, उसका बेर वीरबलकुं भेजा था.

हिरा गिराकी गंठडी, गँवारमें मत खोल;	
झौरी बिन कौरि न मिले, कौस्तुभकाभी मोल.	५
हथ्थी हीरा काव्य है, दे जाके दरबार;	
मा कर मूल ममूलका, मूल न मिले बजार.	६
तन संदुक गुन रतन चुप, ताही दीजे ताल,	
ग्राहक बिना न खोलिये, कुंची बचन रसाल.	७
रहत न घर सुत वाम घन, तरवर सरवर कृप,	
जश शरीर जगमें अमर, भव्य काव्य भवरूप	८
कामधेनु सो काव्य हे, शब्दारथसो दूध.	
सुख माखन भोगत सु धी, बचन मुधानिधि शुद्ध.	९

(प्रेम प्रशंसा)

प्रेम तत्व सत्ता सकल, फैल रही संसार,	
प्रेम संधे सोइ लहे, परम ज्योतिको पार.	१
पशु पक्षी सब प्रेम बस, तजत आपको प्रान;	
धिक तिहि विछुरे ना मरै, तजी देह यह जान.	२
मित्र दृष्टिको परखिये, उच्च नीच सम हेत	
जाहीकौ जैसी लगन, सो तैसो फल देत	३
खेल सेलके वास पर. बरत धार तलवार,	
मन नटवा साची सुरत, चढे सो उतरे पार	४
प्रेम कुंड पावक भर्यो, मनो सु यह अनुमान;	
पर पर कव्यो प्रवीन ज्युं, पर पर समज्यो प्रान.	५
वेदरदी जरदी समर, ताको लगे न तीर,	
दरदी घट पट हे नहीं, कैसे बचे शरीर.	६
सीत धाम जलमें सदा तपे जपे मुख नाम,	
चले जु याही रीतसें, मिले प्रेमको धाम.	७
बन बिचार मन मानसर, भर्यो प्रेम बहु बार;	
सुख सुगता हंसा बिरह, निश दिन चुगत किनार.	८
दारा और सिकंदरहि, फूलपना महमद;	
बहराम रु मजनू कियो, प्रेम सु हृद बेहद.	९
प्रेम पियाला जिन पिया, ताको शुद्ध न बुद्ध,	
बानासुर तनया छकी, लखी छबी अनिरुद्ध.	१०

- जैसे निर्मल होत है, कमल अनलके संग,
 जैसे प्रेमी विरह बल, चढ़े सुरतको रंग ११
- और रंग उतरे सों, क्यों दिन बीतत जाय,
 विरह प्रेम चूटा रचे, दिन दिन बढ़त सवाय १२
- प्रेम टपल ईश्वर करे, ईश्वर उपल समान,
 फोऊ प्रेम प्रतीत बिन, लह न पद निरवान १३
- निश दिन दग बरसत रह, सरमत रहे सनेह,
 तन परगत तगसत रहे, मानहु चातुक मेह १४
- केसर जायक मलय धन, मजन भिटे अ्यु नाग,
 मिटन बिना नाहिन भिटे, भिल बिचुरनको दाग १५
- स्मित कमल मूक्त हरफ, यही प्रेमका मूल,
 प्रेम गये सूके नहीं, बाँके मुम्बपर घुट १६
- पाम न ऊभो पारधी, अग न टगो बान,
 भे तुज पल्लु हे सखी, किस विध गये दो प्रान १७
- जट थोटे नेहा घनो, गगे प्रेमके बान,
 तु पी तु पी कर रहे, इम विध गये दो प्रान १८
- (पतिव्रता प्रशंसा)
- पतिव्रताको पीयसों, अतरगतिनो स्नेह,
 प्रीतिम अपने मुग्न यकी, अय नाम नहि छेह १
- पतिव्रता गति दुमरी, कारी कुचिल कल्प,
 बारी डों बापें, अमरनगरके भूप २
- रूप राशि त्रिलोककी, पतिव्रताके अग,
 ताँफें पर छाटे नहीं, रसिक मुहाणी सग ३
- पतिव्रताकी पात बिन, नाहिन भक्त उधार,
 कान फट। बिन हो सुनी, फोऊ उतरो पार ४
- पतिव्रताके सगते, पावत प्रेम प्रकाश,
 तन मन धन अर्पों तहा, तजी सचनकी आश ५
- पतिव्रता रस लाडली, जाके बस हे पीउ,
 सोड कृपा चित्तमें रखे, नाही न डगमग बीउ ६
- (पतिव्रता वृद्धता)
- सज्जन मेरे एक तु, अवर न दूजो होय,
 जो सज्जन दूजो करु, तो कुल ऊधल होय १

- तुं सज्जन तुं भित्त तुं, तुं प्रीतम तुं प्राण;
हियडा भीतर तुं रमे, भावे जाण न जाण. २
- मनरंजन सब जगतमें, तुम सब सूख निधान;
मेर मन तुमही वसों, साहेबजीकी आन. ३
- मेरे मन इच्छा हती, निमप न छोड़ुं पाय;
बिलुरन अंक विधना लख्यो, सो कहा किणभि चलाय. ४
- बहुत कहाहिव हित लिखुं, संभारजो सदैव,
थोडा अक्षर जाणजो, तुम समीप मुज जीव. ५
- तुं मत जाणे सज्जन, परी न घडि मुज चित्त,
मरुं तोय समरत मरुं, जिवुं तो समरुं नीत. ६
- जो कमल रवि वीसरे, पाणीमज थयांह;
पपियाहू घन वीसरे, तुं मुज द्वादियामाह. ७
- (परस्त्री संग निषेध.)
- परनारी परतख बुरी, रखे लगावो अंग;
राणो रावण खपि गयो, परनारीके संग. १
- परनारीकी प्रीतडी, साहिव मत दे संग;
वाचा चूके तन दहे, देही नावे रंग. २
- जिणने शनीसर वारमो, परनारीखुं नेह;
आंख्या उंघ न जीव सुख, पल पल दाझे देह. ३
- आपो धूल मिलाइओ, सयण दीधी छार;
पग पग माथा ढांकणो, जिण जोई परदार.
- (प्रस्ताविक प्रबोध.)
- कूट-क्रोधि-शिशु-मुकुर-प्रिया, सजन-निशा-दुख-फाग,
होत शियाने ब्हावरे, नवे ठोर चित्त लग. १
- पान पुराना घी नया, अरु कुलवंती नार;
चोथी पीठ तुरंगकी, सरग निशानी चार. २
- गुण जोवन झगरत चले, राजनके दरबार;
गुणको तो आदर मिला, चला रूप झख मार. ३
- जोवन था जब रूप था, जोवत थे सब लोक,
जोवन रूप गंवाइके, बात न पूछे कोय. ४
- मन भागो चित्त ऊत्यों, फोगट करवी आल;
जे फल तूटा तरवरा, ते किम लगो डाल. ५

विद्याहुदो एक गुण, विण भारे महार,	
श्रोताको मन रीझवे, आत्मको आधार	६
आया आदर बेसणो, वल्लि श्लाघा जीकार,	
मिलिया हस कर वोल्गो, ए उत्तम आचार	७
केरी मिसरी सारस्त्री, ए जाणे इक मूख,	
अति चाखी अवगुण करे, थाडी चाखे सूख	८
गन चचल मन चपल है, मन राजा मन रक,	
पहिले मन जु समर्पिये, तो प्रभु मिले निशक	९
पिय दर्शन आनदसें, गयो सकल दुख द्व,	
नेन नेनमें सुख रहे, फूलो हे मकरद	१०
इशक मशक खासी खसक, खेर खून मधुपान,	
इते छुपाये ना छुपे, होते प्रगट निदान	११
काहे पर निंदा करे, बांधी बात न छेर,	
तुझे पराह क्या पढी, तु आपणी नवेर	१२
निंदरा कवण न छेतर्या, जोवन किण न विगुत,	
घण ओ भील हरीविहं, प्रीतम सुवे निश्चित	१३
लिख पहिलो तन घन दुजो, विषा पंचम स्थान,	
यौ उपदेशहि देत जो, जगती गतिके जान	१४
अरि नारी अरु मित्रके, घर हे हारोहार,	
जोतसि इत्थै क्या कहा, जानत सब ससार	१५
मतांगिनी लोहितागसी, राखिनि रानी निशक,	
चित्रिनि चितहर शुक्र सम, पद्मिनि पूर्ण मयक	१६
जन तु अपने जन्मदिन, करले उच्छव आप,	
मरने दिनतौ सबहि मिल, छडु स्वागो बाप	१७
आया कुष्ठ लाया नहि, गया गया जगरोग,	
एसे जनके मरन दिन, बिन कहा सुमरन जोग	१८
उच्छव सबके मरन दिन, निज घरमेंही होय,	
जगमें उच्छव जन्मदिन, एसा विरला कोय	१९
अहो रात जागृत खडे, मम रक्षक महाराज,	
यो कह सुख सोवे सदा, बालक मातासक	२०
कुलदीपक होना कठिन, देशविपक दुर्लभ,	
जगदीपक जगदीशको, अश मनुष्य अलभ्य	२१

तुं सज्जन तुं मित तुं, तुं प्रीतम तुं प्राण;
 हियडा भीतर तुं रमे, भावे जाण न जाण. २
 मनरंजन सब जगतमें, तुम सब सूख निधान;
 मेर मन तुमही वसों, साहेबजीकी आन. ३
 मेरे मन इच्छा हती, निमष न छोड़ुं पाय;
 बिलुरन अंक विधना लख्यो, सो कहा किणभि चलाय. ४
 बहुत कहाहिव हित लिखु, संभारजो सदैव;
 थोडा अक्षर जाणजो, तुम समीप मुज जीव. ५
 तुं मत जाणे सज्जना, परी न घडि मुज चित्त,
 मरुं तोय समरत मरुं, जिवुं तो समरुं नीत. ६
 जो कमल रवि वीसरे, पाणीमज थयांह;
 पपियाहू घन वीसरे, तु मुज हृदियामाह. ७

(परछी संग निषेध.)

परनारी परतख बुरी, रखे लगावो अंग;
 राणो रावण खपि गयो, परनारीके संग. १
 परनारीकी प्रीतडी, साहिव मत दे संग;
 वाचा चूके तन दहे, देही नावे रग. २
 जिणने शनीसर बारमो, परनारीसुं नेह;
 आंख्या उंव न जीव सुख, पल पल दाशे देह. ३
 आपो धूल मिलाइओ, सयणा दीधी द्वार,
 पग पग माथा ढांकणो, जिण जोई परदार.

(प्रस्ताविक प्रबोध.)

कूट-क्रोधि-शिशु-मुकुर-प्रिया, सजन-निशा-दुख-फाग;
 होत शियाने ब्हावरे, नेवे ठोर चित्त लग. १
 पान पुराना धी नया, अरु कुलवंती नार;
 चौथी पीठ तुरंगकी, सरग निशानी चार. २
 गुण जोबन झगरत चले, राजनके दरबार;
 गुणको तो आदर मिला, चला रूप झख मार. ३
 जोबन था जब रूप था, जोवत थे सब लोक;
 जोबन रूप गंवाइके, बात न पूछे कोय. ४
 मन भागो चित्त ऊतरीयो, फोगट करवी आल;
 जे फल तूटा तरुवरा, ते किम लगो डाल. ५

विद्याहुदो एक गुण, विण भारे भडार,	
श्रोताको मन रीझवे, आत्मको आघार	६
आया आदर बेसणो, वळि शक्ता जीकार,	
मिलियां हस कर धोळणो, ए उत्तम आचार	७
केरी मिसरी सारसी, ए जाणे इक मूस,	
अति चाखी अवगुण करे, थाढी चाखे सूख	८
गन चचल मन चपल है, मन राजा मन रक,	
पहिले मन जु समर्पिये, तो प्रमु मिले निराक	९
पिय दर्शन आनदसें, गयो सकल दुख द्रव,	
नेन नेनमें सुख रहे, फूलो हे मकरद	१०
दशक मशक खासी खसक, खेर खून मधुपान,	
इते छुपाये ना छुपे, होते प्रगट निदान	११
काहे पर निंदा करे, बाधी बात न छेर,	
तुझे पराई क्या पढी, तु आपणी नवेर	१२
निंदरा कवण न छेतया, जोवन किण न विगुंत,	
घण ओ भील हरीदिई, प्रीतम सुवे निश्चित	१३
लिख पहिलो तन धन दुजो, विद्या पचम स्थान,	
यौ उपदेशहि देत जो, जगती गतिके जान	१४
अरि नारी अरु मित्रके, घर हे हारोहार,	
जोतसि इसै क्या कहा, जानत सब ससार	१५
मतागिनी लोहितागसी, शंखिनि शनी निराक,	
चित्रिनि चितहर शुक्र सम, पद्मिनि पूर्ण मयक	१६
जन तु अपने जन्मदिन, करले उच्छ्व आप,	
मरने दिनतौं सवहि मिल, लड्डु खायगे बाप	१७
आया कुछ छाया नहि, गया गया जगरोग,	
एसे जनके मरन दिन, बिन कहा सुमरन जोग	१८
उच्छ्व सबके मरन दिन, निज घरमेंही होय,	
जगमें उच्छ्व ज मखिन, एसा विरला कोय	१९
अहो रात जागृत खडे, मम रक्षक महाशक्त,	
यो कह सुख सोवे सदा, बालक मातासक्त	२०
कुलदीपक होना कठिन, देशदिपक दुर्लभ,	
जगदीपक जगदीशको, अंश मनुष्य अलभ्य	२१

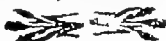
✧ मनोरंजक मुकरियां. ✧

—३३३६६६—

(सखीकी २७ समस्याओं.)

अर्ध निशा वह आयो भोन, सुंदरता वरने कहि कोन;
 निरखतही मन भयो अनंद, क्यों सखि सज्जन ना सखि चंद.
 खुल गइ गांठ खुले नहि खोले, जहा तहा मेरे संग डोले;
 हिये विराजत होय न भार, क्यों सखि सज्जन ना सखि हार.
 दासीतैं में मोल मंगायो, अंग अंग सब खोल दिखायो,
 वासों मेरो भयो जु मेल, क्यों सखी सज्जन ना सखि तेल.
 शोभा सदा बढावनहारा, आंखिनतैं छिन होत न न्यारा;
 आठ पहर मेरो मन रंजन, क्यों सखि सज्जन ना सखि अंजन.
 सिगारि रेन वह मो संग जाग्यो, भोर भयो तो बिछुरन लाग्यो;
 वाके बिछुरत फाटे हिया, क्यों सखि सज्जन ना सखि दिया.
 छठे छ मासे मम घर आवे, आप हिले अरु मोहि हिलावे;
 नाम लेत मोहि आवे शंका, क्यों सखि सज्जन ना सखि पंखा.
 निशदिन मेरे उपर रहे, दोऊ कुच लै गाढे गहे,
 उतरत चढत करत झकझोली, क्यों सखि सज्जन ना सखि चोली.
 समधनकों हाथीको भावे, छोटो मोटो नांहि सुहावे,
 ढुंढ ढाढके लाई पूरा, क्यों सखि सज्जन ना सखि चूरा.
 सिगरी रेन छातिर्प राखा, उसका रसकस मेंने चाखा,
 भोर भयो तब दियो उतार, क्यों सखि सज्जन ना सखि हार.
 घमक चढे सुधबुध बिसरावे, दाबत जांघ बहुत सुख पावे;
 अति बलवंत दीननको थोरा, क्यों सखि सज्जन ना सखि घोरा.
 जाय छातपें पलंग बिछायो, वो निगोडा भो ढिग आयो;
 मेरो वाको पड गयो फंदा, क्यों सखि सज्जन ना सखि चंदा.
 आठ पहर मेरे ढिग रहे, मीठी प्यारी बातें कहे;
 श्याम वरन अरु राते नेना, क्यों सखि सज्जन ना सखि मेना.
 अति सुरंग हे रंग रंगीलो, हे गुणवंत बहुत चटकीलो;
 रामभजन विन कभी न सोता, क्यों सखि सज्जन ना सखि तोता.

रात समय मेरे घर आवे, भोर भये वह उठ कर जावे,
यह अचरज हे सबसे न्यारा, बर्यो सखि सज्जन ना सखि तारा
जब मेरे मंदिरमें आवे, सेते मुझको आन जगावे,
पढ़त फिरत वह बिरहके अश्रु, क्यों सखि० ना सखि मच्छर.
जा विनु नेन रहे नहि नीके, रूप रंग सग सग ताहिके,
नेह चीकने अति मनरजन, सखि कोइ सज्जन ना सखि अजन
कनक तनक जाके हे आगें, नेह भरी वतियन निशि जागें,
शीश डुलाई हरे जो हियो, सखि कोइ सज्जन ना सखि दीयो
जीवन सब जग जासों कहे, वा विनु नेरु न धीरज रहे,
हरे दिनकम हियकी पीर, सखि कोई सज्जन ना सखि नीर.
वाट चलनम पगजु पाया, खोटा खरा किसे न दिखाया,
अब गिरि गया करोंगी फसा, सखि क्या सज्जन ना सखि पैसा
कैसी रचिर चद्रिका सोहे, बरन सावरा मनका मोहे,
मधुर बोलन बितको चोर, सखि कोइ सज्जन ना सखि मोर.
अति निर्मल मुदर मुखदायक, तनकी तपन बुझावन लायक,
निशिको पति आनदको कद, सखि कोइ सज्जन ना सखि चद.
विनु आये सबही सुख भूले, आयेतें अग अग सब फूले,
सीरी भई लगावत छाती, सखि कोइ सज्जन ना सखि पाती.
निशदिन रहे जु बाको ध्यान, जो कहु आवत सुनिये कान,
हियो हुलसि अरु उमगत छाती, सखि कोई सज्जन ना सखि पाती.
सुंदर सबही विधि करि नीको, सबही भातिन प्यारो जीको,
वा विन सब लागत हे फिको, सखि कोई सज्जन ना सखि टीको.
जवतें भनक पगी मो कान, तवतें भूले सुधिवुधि ज्ञान,
लाग्यो चितमें बाको ध्यान, सखि कोइ सज्जन ना सखि तान.
देखी रूप मन अतिही हरसो, शोभा ताकीही को करसो,
लखि चित विन किनो में अर्पन, सखि कोई सज्जन ना सखि दर्पन
रसनाको रस अति उपजावे, छिनमें तनके ताप बुझावे,
देखतही सबही सुधि बिसरी, सखि कोइ सज्जन ना सखि मिसरी.



✦ प्रश्नोत्तर—(पहेलियां.) ✦

—३३३३३३—

आधा भक्तन मुख वसे, आधा गुनियन साथ;
 बाहि पसारी देत हे, पुडी बांधिके हाथ.—हर-ताल.
 हाथीहाथ हथनियां काधे, चल जात हे वकुचा बाधे गज-गजी.
 इक तरुवर अरु आधौ नाम, अर्थ करो कि छांटो गाम.—नीम.
 सोनेकी वह नारि कहावे, ढाल चावलके मोल विकावे.—कंचनी.
 पानीमें निशदिन रहे, जाके हाड न मास;
 काम करे तलवारको, फिर पानीमें वास.—कुंभारका डोरा.
 जलमें रहे जूठ नहि भाखे, वसे सु नगर मझार;
 मच्छ कच्छ दादुर नहिं, पंडित करो विचार.—बडी.
 शीश जटा पोथी गहे, सेत वसन गल्महि;
 जोगी जंगम हे नहि, ब्राह्मन पंडित नाहि.—लहमुन.
 करे बोले करही सुने, श्रवण सुने नहि ताहि;
 कहे पहेली वीरवर, सुनिये अकबरशाली.—नाडी.
 फाटयो पेट दरिद्री नाम, उत्तम घरमें बाको ठाम;
 श्रीको अनुज विष्णुको सारो, पंडित हो तो अर्थ विचारो—शंख.
 आदि कटेतें सबको पारे, मध्य कटेतें सबको मारे;
 अंतर कटेत सबको मीठा, सो खुशरो में आंखन दीठा—काजल.
 देखी एक अनोखी नारी, गुन उसमें एक सबसैं भारी;
 पढी नहि अरु अचरज आवे, मरनां जीनां तुरत बतावे.—नाडी.
 इक गुनीने यह गुन कीना, हरियल पिजरमें दे दीना,
 देखो जादुगरका हाल, डारे हरा निकाले लाल.—पान.
 इक नारी औ पुरुष हे ढेर, सबसैं मिले एकही वेर,
 दिनां चारका अंतर होय, लपटें पुरुष छुडावे कोय.—कंधी.

(शमश्या.)

कद्रुसुत छवि छाजत बेणी, माग सुधारत दधिसुत श्रेणी;
 भुवन तिय सुत रेख संवारे, श्रीपतिपुरको नाम सुधारे.



❀ कवि-परिचय ❀

—७२२८८८—

अकबर—दिन्हीके मोगल सम्राट, इसकी समझें गग, नर-हरि, जगन्नाथ, बीरबल, योद्धमल्ल, रोख, फैजी, खानखानान, अबुल-फजल इत्यादि अच्छे अच्छे कवि-पंडित रहते थे ये खुदाई कवि थे इनका जन्म ता १४-१०-१५४२ और मृत्यु ता १३-१०-१६०५

अज्ञान—शाहबाद जीछे डुमराँव गावके रहनेवाले, जातिके ब्राह्मण थे उनका नाम “नफथेदी तिवारी” था मनोज्ञमञ्जरी, भडौआमग्रह, कविकीर्ति-फलानिधि,—आदि ग्रंथ उन्होंने किये थे सवत् १९६३ श्रावण मासमें स्वर्गस्थ हुए

अनंत—सवत् १६९२ में विद्यमान थे उन्होंने नायिकामेदका “अनतानंद” नामक ग्रंथ बनाया है

अनन्य—जातिके कायस्थ, बिकानेरके राजा रायसिंहजीके छोटे भ्राता गृधिरराजके पास रहते थे उन्होंने अनन्ययोग, विज्ञान-बोध, सुदरीचरित्र, शक्तिपद्मीणी,—आदि ग्रंथ बनाये हैं

अयोध्याप्रसाद—सातनपुर जीछे रायबरेलीके रहनेवाले सस्कृत और भाषाके अच्छे पंडित थे छदानंद पिगल, साहित्य-मुधासागर, और रामकवितावलि आदि ग्रंथ उन्होंने बनाये हैं अयोध्याके महंत बाबा रघुनाथदासके पास और चदापुरमें राजा जगमोहनसिंहके इहा रहा करते थे स १९३४ तक विद्यमान थे

अहमद—जातिके मुसलमान स १६७० तक विद्यमान थे

आलम—प्रथम सनादय ब्राह्मण इनका जन्म सं १७१२ में हुआ था ये औरंगजेब पादशाहके पुत्र मुआज्जमके पास रहते थे एक समय आलमने शेख नामक रंगरेजिनको अपनी पगड़ी रंगनेको दी, मूलके एक कागजका टुकड़ा जिसमें आलमने आधा दोहा लिखकर फिर किसी समय पूरा करनेके लिये बाधा था, बधाही रह

गया. पगड़ी धोते समय शेखने उस कागजके टुकड़ेको खोलके पढ़ा;
‘समें लिखा था कि,—

कनक छुरीसी कामिनी, कहिको कटि छैन,

(शेखने नीचे लिखके बाध दिया कि,—)

कटिको कचन काटि विधि, कुचन मध्य धरि दीन.

जब आलमको वह पगड़ी मिली और दोहेकी पूर्ति हुई देखी तब आप शेखके घर गये और एक हजार रुपिये इनाम दिये, और पिछे यहां तक प्रेम बढ़ाकि आपने मुसलमानी धर्म ग्रहण कर शेखसे शादी करलिया ! “जहान” नामका उसको एक पुत्र हुवा,

इंदु—उनका पूरा नाम बालमुकुंदलालजी, मथुरामें रहते थे और सं. १७७६ में विद्यमान थे.

उद्धव—ओचड—लखतर—काठियावाडके औदित्य ब्राह्मण, इन्होंने लखतर दरवार कर्णसिंहजीके नामसे “कर्णजक्तमणी” और दंभी कवियोंके खंडनार्थ “कुक्कवि कुठार” ग्रंथ बनाया है.

उदयभाण—मथानिया—मारवाडके चारन. अपनी कृतिमें “भाण” नाम रखते थे.

ऊमरदान—जोधपुर—मारवाडके आसपास रहते थे. जातिके चारन. पैसेकी प्रशंसामें “कलदार अष्टक” और रामस्नेही साधुओंकी निद्रामें एक ग्रंथ उन्होंने बनाया है. सं. १९६० तक विद्यमान थे.

अंविकादत्त—यह पंडितजीका जन्म सं. १९१५ चैत्र शुद्ध अष्टमीको जयपुरमें हुवा. ये सुप्रसिद्ध कवि “दत्त” (दुर्गादत्तजी) के पुत्र थे. दश वर्षकी वयमें ये कविता करने लगे थे. हिंदी, संस्कृत, इंग्लिश आदि भाषा पढ़े थे और “वैष्णवपात्रिका” मासिक निकालते थे. उन्हुका देह त्याग काशीमें हुवा, सं. १९५७.

करनेश—असनी—फतेहपुरके रहनेवाले, नरसिंह बशीय ब्रह्म-भट्ट. उन्होंने कर्णाभरण, श्रुतिभूषण, और भूपभूषण ग्रंथ बनाये हैं.

कहान—(पहिला)—दीनदर्वेशके समकालिन थे.

कवीर—ये धर्मप्रवर्तक महामा कवि काशीनिवासी थे “ कवीर कसोटी ” में इनका जन्म १४५१ और मृत्यु स १५५० लिखा है

कमाल—कवीरके पुत्र पिताकी साथ रहकर साधुसेवा और भजनम समय निर्गमन करते थे

करण—जातिके ब्रह्मभट्ट इन्होंने ‘ सूर्यप्रकाश ’ ग्रंथ राजा अमरसिंह राठोडकी आज्ञानुसार बनाया है

करणासिंहजी—उत्तर काठियावाड़के राजा कवियोंका सत्कार अच्छा करते थे ‘ करणचक्रमणी ’ ग्रंथ इन्होके नामसे प्रसिद्ध है सवत् १९८० तक विद्यमान थे

कल्याण—ठाकोरके साधु कवि स १८११ तक विद्यमान थे ‘ छदभास्वर ’ और “ रमचन्द्र ” ग्रंथ आदि उन्होंने बनाये हैं

कविन्द्र—ये नामके बहोतस कवि हो गये हैं इस ग्रंथमें आइ हुई कविता बनपुरानिवासी कालिदास कविके पुत्र उदयनाथ त्रिवेदीकी है अमेठीनरेशने इनको “ कविन्द्र ” पदवी दी थी “ रसचन्द्रोदय ” नामक बड़ा ग्रंथ इन्होंने बनाया है

कविराज—जातिके ब्रह्मभट्ट उत्तर हिंदुस्थान रहनेवाले, इधरउधर रजवाडोंमें घुमते थे

कालिदास—बनपुरा—कान्हापुरके रहोस जातिके कान्यकुब्ज ब्राह्मण इसका जन्म स १७१० म कहा जाता है बघूविनोद कालिदासका हजारा, जजिरादि ग्रंथके कर्ता

काशीराम—रुतियाणा—काठियावाड़के निवासी जातिके ब्रह्मभट्ट स १९२८ तक विद्यमान थे कविता रचना अच्छी है, परंतु कोई ग्रंथ मालूम नहीं पड़ता

कादर—सैयद इब्राहीम पिरानीवाले (रसखानि कवि)के शिष्य, जाति मुसलमान परंतु भाषा—कान्य बहुत शुद्ध है

किसन—लोकागच्छक जैनी साधु अपनी बहोत रतनवाईके अवसानका वैराग्य होनेसे “ किसनवावनी ” ग्रंथ बनाया सो सवत् १७६७ में संपूर्ण किया

किसोर—पूरा नाम “ राजा युगलकिसोर. ” दिन्हीपति मह-
मदशाहके दरबारमें सं. १८०० तक विद्यमान् थे. अपना पुस्तकमें
इन्होंने परिचय दिया है कि,—(दोहा)

ब्रह्मभट्ट हों जातिके, निपट अर्धन निशान;

राजा पद मोकों दियो, महमदशाह सुजान.

कुंदन—मव्य हिंदके ब्रह्मभट्ट, समय सं. १७५२.

केवल—अहमदाबादके नागर ब्राह्मण, केशवरामके पुत्र. जुना-
गढ नवाबकी प्रशंसामें “ बाबीविलास ” ग्रंथ बनाया. सं. १७५६
में जन्मे थे और ८० वर्षकी वयमें संन्यास ले के अहमदाबादमें
देह त्याग दिया.

केशवदास—सनाढ्य ब्राह्मण, काशीनाथके पुत्र, जन्म सं.
१६१२ के समयमें हुआ था और औडच्या नरेश रामसिंहके भ्राता
इंद्रजितसिंह इनका विशेष आदर करते थे. महाराजा वीरवलने इनको
केवल एक छंदपर छः लाख रुपिया इनाम दियेथे ! ये संस्कृतमें समर्थ
पंडित थे और भाषाके आचार्योंमें गिने जाते हैं. इनके रचे हुवे
ग्रंथ—रसिकप्रिया, कविप्रिया, श्रीरामचंद्रचंद्रिका, विज्ञानगीता,
वीरसिंहदेवचरित्र, जहांगीरचंद्रिका, नख-शीख और रत्नवावनी.
उनमेंसे प्रथमके चार सुप्रसिद्ध हैं.

केशवलाल—जातिके ब्रह्मभट्ट. जामनगर निवासी विद्यमान् हैं.
उनके पिता श्यामजी जयसिंह भाषाकाव्यके अच्छे कवि थे. केशव-
लालके “केशवकाव्य” ग्रंथ प्रसिद्ध है और रैयासतके राजकवि हैं.

केसरी—केसरीसिंह—ध्रोल (काठियावाड)के राजकुमार. इस
ग्रंथमें यह नामके दो कवि अलग बताये हे, परंतु वास्तविकमें एकही हैं.

कृष्ण—मथुराके बिहारी कविके पुत्र, इन्होंने “बिहारी सतसई”—
की टीका कुडलिया छंदोंमें बनाई है. दुसरे कृष्णकवि असनी—
फतेहपुरवाले नरहरि ब्रह्मभट्ट कविके वंशज थे.

कृष्णदास—यह साधु कविने “ज्ञानप्रकाश” ग्रंथ बनाया है.

खूबचद—इहं नरेश गभीरसिंहका काव्य उन्हे रचा है

गद्द—संवत् १७७० सालमें राजपूतानामें हो गये

गदाधर—ये नामके चार पाच भक्त कवि हो गये है

गिरिधर (पहिला)—स १८८० तक विद्यमान थे ज्ञाति ब्रह्मभट्ट जयपुर महाराजा सवाई जयसिंहने उन्हुको “कविराय” पद दिया था

गिरिधर (दूसरा)—पंजाबी, शिख संप्रदायके साधु

गुलाब—गुलाबसिंह—बुंदीनरेश रघुवीरसिंहजीके रायकवि, राजपुत हितकारिणी सभाके सभासद, संस्कृत और भाषाके प्रतिभाशाली कवि और ये राग्यमान्य पुरुषका जन्म स १८८७ में हुआ ज्ञाति ब्रह्मभट्ट, महाराजाने उन्हीको दो गाम जल्दोने और बाक्यो इनाम दिये है इन्होंने ३४ ग्रंथकी रचना की है

गोप—ब्रह्मभट्ट, राव जगदेवके पुत्र कच्छ भुज पाठशालामें बहुत समय शिक्षक था उन्हुके बनाये ग्रंथ “हमीरशतक” और “काव्यप्रभाकर” प्रसिद्ध है

गोविंद—(३)—चोहाण रजपूत (ग्ववास) स १९८२ में गत हुवे सिहोरके रहते थे उन्हे “गोविंद ग्रंथमाला” दि ग्रंथ बनाये है

गग—इटावा जीले एकनौर गांवके निवासी, जातिके ब्रह्मभट्ट पूरा नाम गगाधर, अक्षरका राग्यकवि

गंगाराम—ब्रह्मभट्ट स १७४४ में “समाविलस” और “रसिकविलास” नामक दूसरा नायका भेदका ग्रंथ बनाया हुआ सुना जाता है

गुमानको—गुमानभिथ भी कहते है इन्होंने स १८०१ में “नैपथकाव्य”का भाषापदमें अनुवाद किया है

ग्वाल—पिताका नाम सेवकराम, जन्म स १८४८ और मृत्यु १९२८ जुगदबोके उपासक ब्रह्मभट्ट थे इन्होंने ६०—७० ग्रंथ छोटे बड़े बनाये हैं, जिसमेंसे १५ प्रकाशित हो गये है

घनानंद—ज्ञाति फायस्थ और निर्वार्क संप्रदायके वैष्णव दिल्लीमें रहते थे और महमदशाहके मुनशी थे संगीत औ काव्य-कृत्यमें कुशल थे नागरीदास कविका परम मित्र होनेसे वृद्धावनमें

दोहोका सत्संग हुआ करते थे. उन्हका जन्म सं. १७४६ के लग-
भग माना जाता है और देहांत जब नादीरशाहने मथुरा छटा तब
मारे जानेसे सं. १७९६ में भया.

घनःशाम—असनीके नरहरवशीय ब्रह्मभट्ट. बाधवगढके महाराजा
समीप रहते थे. सं. १६३५ के आसपास विद्यमान् थे.

घासीराम—कानपुरके कानकुब्जके ब्राह्मण. कविता रचना रूंगार
रसमें अच्छी करतें थे. सं. १६८० तक विद्यमान् थे.

चंद—(चंद वरदाय) बडे वीर और स्वामीभक्त, पृथ्वीराज चोहाणके
राजकवि, सामंत और सेनापति इनका बनाया हुआ “पृथ्वीराज रायसा”
ग्रंथ बृहद् और सर्वत्र प्रसिद्ध हैं. जन्म सं. १२०० मृत्यु सं. १२४८.

चंद्रकला—बुंदीवासी कविराज रावजी गुलावसिहकी दासीपुत्री;
यह अच्छी कवियनने चार ग्रंथ रचे हैं.

जसुराम—ज्ञाति चारण. आमोद-भरुचके रहनेवाले. उन्हे
उदयसिंह सोलंकीके आश्रयमें रहकर “जसुराम राजनीति” बनाइ
सो प्रसिद्ध हैं और “जसुरामकृत पङ्क्तु” ग्रंथ बनाये सो अप्रकाशित
है. कविता रचना ब्रजभाषा मिश्रित हिंदी है.

जीवन—(जीवाभक्त) भावनगरके रहनेवाले रजपूत ३५ व-
र्षकी वयसे परमहंस होके नर्मदाकी चारो ओर अवतक फिरते होते.

जुगलकिशोर—पजावी राव (ब्रह्मभट्ट) काठियावाडी राजस्था-
नोमें आते जाते थे.

जेष्ठलाल—विजापुर-गुजरात निवासी. सुंथ तालुकाके राणा श्री
प्रतापसिंहजीने तलोदरा गाम इन्हे इनाममें दियाथा.

टोडरमल्ल—लाहोरके खतरी अकबरके दिवान थे.

ठाकुर—(ठाकुरप्रसाद) असनी-फतेहपुरके नरहरिवंशी. इनके
पिता ऋषिनाथभी अच्छे कवि थे. इन्हुकी कवितामें प्रेम-गुण विशेष
है. सं. १७९२ से १८५२ तक विद्यमान् थे.

तानसेन—प्रथम गोड ब्राह्मण थे और गोसाइश्री स्वामी हरि-
दासजीके पास गानविद्या पढे, बाद ग्वालियरनिवासी शेख महमद

गौस पास गये, वहा शेखजीने इनकी जीभर्स जीभ लगादी तबसे मुसल्मान हो गये । और अकबरके वहा रहने लगे

त्रिकम—बीरमगामके बारोट बडे घनाढ्य थे प्रागधराके कवि प्रमुगमको बुलायके “त्रिकमप्रकाश” ग्रंथ बनवाया मृत्यु स १९१५

तुलसीदास—सरवरिया ब्राह्मण, इनके जन्मस्थानमें मतभेद है बहुतेका मत है कि राजापुर—प्रयागमें रहेते थे इन्होंने रामायण, विनयपत्रिका, श्रीकृष्णगीतावली आदि २० ग्रंथ बडे अद्भुत बनाये है जन्म संवत् १५८८ और देहात स १६८० काशीमें हुआ

तोप—(तोपनिधि) सिंगरौर इलाहाबादके रहनेवाले, चतुर्भुज शुरुके पुत्र इन्होंने “मुधानिधि” नामक नायिका भेदका ग्रंथ स. १७९१ में बनाया है

दादु—स १६०१ में उन्हुका जन्म अहमदाबादमें होनेका कहा जाता है उन्हुने एक पथ चलाया जो “दादुपथ” सुप्रसिद्ध है प्रकृति बडी दयालु होनेसे लोक इन्हुको “दादु दयाल” कहते है

दीनदरवेश—पहिले पार्थनपुरके लोहार परंतु कोइ फकीरकी सोबतसे मुसल्मान हो गये

दीनदयालगिरि—काशीके गुसाईं सत्सुत औ मापाके अच्छे पंडित थे “अन्योक्ति कल्पद्रुम” और “अनुराग बाग” ग्रंथ बनाये थे स १९१२ तक विद्यमान थे

दुर्गादत्त—गौड ब्राह्मण, पहिले जयपुरमें और पीछे काशीमें रहते थे “हरिप्रिया विलास” और राधाकृष्णके विहारका ग्रंथ उन्हुने काशीमें बनाये

दूलह—कविद्वकविके पुत्र जन्म अनुमान स १७६१ उन्हुने “कवि कठाभरण” ग्रंथ बनाया है

देवकीर्नदन—इस नामके पांच सात कवि हो गये है

देवदत्त—इटावाके ब्राह्मण, हितहरिवंशजीके शिष्य, मापा-काव्यके आचार्य गिने जाते है उन्हुने ७२ ग्रंथ बनाये है

देवीदास—सनाढ्य ब्राह्मण, संस्कृतके पंडित थे. मेरठ तरफसे आकर करौली राज्यके भैया रत्नपालके नामसे “प्रेमरत्नाकर” ग्रंथ बनाकर बहुत सन्मान पाया और सबइगदमें कुछ जमीन मिलनेसे वहां निवासस्थान किया.

नथुराम—वाकानेर, काठियावाड निवासी औदित्य ब्राह्मण, सं. १९७९ तक विद्यमान थे. हिंदी, गुजराती भाषाके अच्छे कवि और नाटककार थे.

नरहर—फतेहपुर—असनी निवासी. सं. १५६२ में जन्मे और १०५ वर्ष जीवित रहे. इनका अकबरके दरबारमां सन्मान था. इनके प्रयत्नसे समग्र भारतमें गोवध बंध हुआ था.

नरसिंगदास भाणजी—कुंतियाणा—काठियावाडके कनोजीआ ब्रह्मभट्ट. जन्म सं. १९४० में हुआ. श्रीगिरिराज भूषण, निर्वाणतत्त्व, पतिव्रताप्रभाव, सूरदासचरित्र, दाणलीला, महा रास, ब्रजमडल, ब्रह्मभट्टदर्पण, बंद्रावन, विरदावली आदि ग्रंथोंके कर्त्ता. गुजराती कवि विद्यमान है.

नरोत्तमदास—सीतापुरके सत्पात्र ब्राह्मण. उन्होंने “सुदामा—चरित्र” ग्रंथ रसिक भाषामें बनाये है. सं. १६०२ तक विद्यमान थे.

नवनीत—मथुराजीके चोवे. भाषा औ संस्कृत पढे थे. उन्हें श्यामांगवयव भूषण—(नख—शिख), स्नेहशतक, कुब्जापचीशी, रसिकरत्नावली, निकुंज निवास, मूर्खशतक, मनोरथमंजरी आदि ग्रंथ बनाये है.

नागर—(नागरीदासजी) ब्रज भाषामें ये नामके चार कवि हुये है. (१) बल्लभाचार्यके शिष्य. (२) स्वामी हरिदासकी शिष्य—परंपरामें थे. (३) हित हरिवंशीय शिष्य और (४) किसनगढ़के महाराजा सामतसिंहजी नामी कवि हो गये. इस पुस्तकमें वे नागरीदासकी कविता है, उन्होंने ७५ ग्रंथ बनाये हे वे “नागर समुच्चय” नामसे प्रसिद्ध हे. सं. १७५६ से. १८८१ तक विद्यमान थे.

नाथ—ये नामके बहुत कवि हो गये है. जैसे—उदयनाथ,

काशीनाथ, शिवनाथ, रामनाथ, हरिनाथ इत्यादि सब अपनी कृतिमें “नाथ” नाम रखते थे इस प्रथमें “नाथ” नामसे न्यारे न्यारे नाथ कवियोंकी कविता है

निपटानिरजन—यह स्वामीजी स १६५० तक काशीमें विद्यमान् थे “शात सरसा” और “निरजन समूह” ग्रंथ इन्होंने बनाये हैं

नंददास—“अष्टछाप” अर्थात् ब्रजभाषाके महान् आठ कवियोंमें इनकी गणना थी ये महात्मा कवि छातिके ब्राह्मण और गुसाइथी विठ्ठलनाथजीके शिष्य थे रासपचाध्यायी, दानलीला, नाममाला, अनेकार्थ मजरी, भ्रमरगीत आदि ग्रंथ रचे हैं इन्हुका “भ्रमरगीत” हिदीया “गीतगोविन्द” है कहेनावत है कि—“और सब घडिया, नंददास जडिया ”

नेवाज—ये नामके दो तीन कवि पाये जाते हैं एक छत्रसाल बुंदेलाके वहां थे इन्होंने शकुंतला नाटक रचा है, वह ब्राह्मण थे दुसरे बीलप्रामके जुलहे और तीसरे गाजीपुरके भगवतराय स्त्रीचीके इहा थे

पजनेस—जन्म स १८७२ स्थान पन्ना इनका काव्यसमूह “पजनेस प्रकाश” काशीमें प्रसिद्ध हुवे हैं फारसी, संस्कृतके ज्ञाता और शृंगारी कवि थे

पद्माकर—वादानिवासी मोहनलाल भट्टके पुत्र बड़े प्रतिभाशाली भाग्यवान् कवि थे स १८९० में ८० वर्षकी आयु भोग स्वर्गवासी भये उन्होंने जगतविनोद, पद्माभरण, प्रबोधपंचासा, गगालहरी, वाग्मिकिरामायण, और आलीजहाप्रकाश ग्रंथ बनाये हैं संस्कृत, फारसी, प्राकृतादि भाषाके पंडित होनेसे और कवितासे टास्काका द्रव्य प्राप्त किया ।

परमेश—सताबाके भाट, स १८९९ तक विद्यमान् थे

पिंगलसिंह—जातिके चारन, राज्यकवि अब विद्यमान् हैं जन्म स्थान सिहोर स १९१२ गुजराती, हिंदी और चारण्ण भाषामें विद्वान् हैं उन्हें पिंगलकाव्य, भावभूषण, तद्वत्प्रकाश, चित्त-

चेतावनी, आदि ९ ग्रंथ बनाये हैं और “हरिसैं” की टीका की है.

प्रियादास—शिवपुर—चोबेपुरके गुरु, “वजरस रत्नावली” के कर्त्ता, आधुनिक कवि.

पृथ्वीराज—विकानेर नरेश राजसिंहके भ्राता; बड़े रसज्ञ कवि अकबरके दरबारमें रहते थे. इन्होंने प्रतापी महाराणा प्रतापको कवितामें एक पत्र लिखा था. इस पुस्तकमें पृष्ठ ३२६ में “पृथ्वीदास” नाम भूलसे छप गया है और चोथा दोहा भी उनका नहीं है. “वेली किसन रुकमणीरी” नामके एक अद्भुत ग्रंथ चारणी भाषामें इन्हें बनाया सो स. १६३७ में संपूर्ण हुआ. इनके पर संस्कृतमें टीकाभी हुई है.

प्रधान—रीवानरेश विघ्ननाथसिंहके मुसाहिव रामनाथ, वह अपनी कृतिमें “प्रधान” संज्ञा रखते थे.

वनवारी—सं. १६९० के लगभग हुए. अमरसिंह राठोडकी प्रशंसामें वीररस काव्य और नायिका भेदादि काव्य उन्हे रचे हैं.

वलदेव—ये नामके पांच छ अछे नामी कवि हुए हैं.

वलभद्र—ओड्डाके सनाढ्य ब्राह्मण. जन्म सं. १६०० लगभग सुप्रसिद्ध केशव कविके ज्येष्ठ बंधु. इन्होंने नखशखि, भागवत-भाष्य, वलभद्री व्याकरण, हनुमन् नाटककी टीका, गोवर्धन सतसङ्की टीका और दूषण विचारादि ग्रंथ रचे हैं.

वाजिंद—वलख-बुखार तरफके कोई बादशाह जाटे. उन्होंने लश्करमें मरा हुआ उंट देख कर वैराग्य होनेसे फकीरी ली और भजनमें आयु बिताई !

वालकृष्ण—इस नामके तीन कवि हो गये हैं—एक ‘रस-चंद्रिका’ पिंगलके कर्त्ता, दूसरा “परतीत परीक्षा” के कर्त्ता और तिसरा फुटकर कविताके कर्त्ता. उन्हुकी कविताओंका निर्गम्य नहीं हो सकता.

विहारी—(पहिला) ये महा कविका जन्म सं. १९६० लगभग बसुवा—गोविंदपुरमें हुआ था बहुतसे विद्वान् उन्हुकी जाति माथुर

चोब बताते हैं, काशीनिवासी बाबु राधाकृष्णदासजीने लिखा है कि ये सनाढ्य ब्राह्मण और सुप्रसिद्ध केशवदास कविके पुत्र थे और गो-स्वामीश्री राधाचरणजीने उनको ब्रह्मभट्ट सिद्ध किया है इनकी "सत सैया" स १७१९ में समाप्त हुई और सतसई पर गद्य-पद्यात्मक बहोतसी टीका हो चुकी है

विहारी—(दुसरा) बुदेयखड्के रहनेवाले स १८०६ तक विद्यमान थे

वीरवल—(ब्रह्म) अकबरके मुसाहिव, सेनाधिपति, सलाहकार, काव्यमें अपना " ब्रह्म " नाम रखते थे उपमा काव्यमें अद्वितीय होनेमें कहा है कि,—“ उपमामें बरवीर ” सो यथार्थ है

वेनी—ये नामके तीन कवि हो गये हैं एक असनीवाले बदायिन (ब्रह्मभट्ट) उन्हुका जन्म स १६९० लगभग दुसरा, रायचरेलीमें बेती-गामके, उनका समय स १८४४ और तीसरे छत्तनउके, वे अपनी कवितामें " वेनी प्रवीन " नाम रखते थे

वेताल—महाराज विक्रमसिंह बुदेलाके राजकवि जन्म सवत् १७३४, मृत्यु स १७९६

बोधा—(बुद्धसेन) सरवरिया ब्राह्मण कोई इनके स्थान बादा-राजापुर औ कोई फिरोजाबाद बतलते है, परन्तु फिरोजाबादी बोधा एक भिन्न कवि हुए ये पन्ना दरबारमें रहेते थे परन्तु वह शुमान नामकी नायकापर आशक होनेसे देशसे निकाले गये उन्हुके बिरहके "कामकदला"—“ माधवानन्द ”की कथाका ग्रन्थ और वियोग-काव्य बनाया है

ब्रह्मानन्द—पहिले आबु तरहटीमें खानगावमें रहेते थे जातिके चारन जन्म नाव लखु बारोट परन्तु पिछेसे जब सहजानन्दस्वामीके शिष्य हुवे तब " श्रीरंग " नाम रख्खा, और साधु होने बाद "ब्रह्मानन्द" नाम धारण किया स १८८८ तक विद्यमान थे ब्रह्मविलास, सुमतिप्रकाश और धर्मप्रकाश विदुरनीति ग्रन्थ इन्होंने बनाये हैं

भाण—गिरनारा ब्राह्मण, कच्छ-मांडवीमें रहते थे. पिताका नाम मोनजी. उन्होंने भाणविलास, भाणबावनी ग्रंथ बनाये थे.

भावनादास—ये नामके दो साधुमें एक निरंजनी स्मृताराम था और दूसरा जोधपुरके रामसनेही; जिसने अमरकोशके आधारपर “भावनीमाला” और “सदुपदेशमंजरी” ग्रंथ बनाये हैं.

भिखारीदास—द्वोंगा-प्रतापगढमें रहते थे. जन्म सं. १७५५ लगभग. जातिके कायस्थ. काव्यमें अपना नाम “दास” रखते थे. काव्यनिर्णय, रस सारांश, विष्णुपुराण, नामप्रकाश, चंद्रार्णव पिण्ड और शृंगार निर्णय ग्रंथ बनाये हैं.

भूधर—जैनी कवि सं. सत्तरसौ और अठारसोंके बीचमें हुये हैं.

भूषण—(भूखण) निवासस्थान तिकवांपुर-कान्हपुर. पिताका नाम रत्नाकर त्रिपाठी. ज्ञाति कनोजिये ब्राह्मण कहते हैं परंतु कोई ये विषयसे विरुद्ध है. महाराजाश्री शिवाजीका समीप रह कर हिंदु धर्म और जातिकी बड़ी सेवा की है. जन्म सं. १६७० और मृत्यु सं. १७७२, इन्होंने शिवराजभूषण, भूषण हजारा, भूषण उल्लास और दूषणउल्लास आदि ग्रंथ बनाये हैं. पन्तानरेश छत्रसिंह बुंदेल्याने, भूषणकी पालखी अपने कंधेपर उठाई थी ऐसी लोकोक्ति है.

भैया—ग्वालियरनरेश महाराजा सिंदेके भैयासाहेब बलवतराव; ये अपनी कृतिमें “भैया” नाम रखते थे और “दशमस्कंध” भाषा बनाया है.

भोजराज—ज्ञातिके ब्रह्मभट्ट सं. १९०१ में महाराजा रत्नासिंह बुंदेला चखवारीके इहां थे. उन्हें भोजभूषण और रसविलास ग्रंथ बनाया है.

भौन—बेती-राय-बरेलीके रहनेवाले. नरहरवंशी ब्रह्मभट्ट. सं. १८८१ में विद्यमान थे. इन्होंने “शृंगार रत्नाकर” ग्रंथ बनाया है. इनके पुत्र दयालभी कवितामें कुशल थे.

मतिराम—भूषण कविके ये भ्राता कहे जाते हैं, परंतु साप्रत साक्षरोमें मतभेद है. जन्म सं. १६७४ और मृत्यु सं. १७७३

लामग हुआ बुंदीपति राव भाउके यहा रहते थे और एल्लिल्लाम, रसराज, छंदसार पिंगल और साहित्यसार ग्रंथ इन्होंने बनाये हैं

मयाराम—“प्राचीन रत्नावलि अलंकार” के कर्ता

मनियार—काशीनिवासी क्षत्री जन्म सं १८१५ माना जाता है क्योंकि महिम्नको भाषा उल्था सं १८४१ में किया है इनके बनाये ग्रंथ हनुमानधन्वीसी और भाषा सौंदर्यलहरी प्रसिद्ध हैं

महेशदत्त—कान्यकुब्ज नासण, कनौज नजीक मीरांसराइमें रहनेवाले और अयोध्याके महाराजा सरमानासिंहजी बहादुर कायमजग-के इहा रहते थे ज्योतिषमें प्रवीण थे सं १९२० में रामशरण भये

महमद—पूरा नाम “मलेक मुहम्मद जायसी” इन्हे दो पद्य पुस्तक बनाये पद्मावत और अस्तरावट पद्मावतका रचना साल हीजरी सन ०२७ (सं १५८४) लिया है

मान (खुमान)—चरसारी—बुंदेलखंड निवासी, जन्माध होनेसे कुछ पदे टीसे नहि, परंतु कोई सन्यासी महात्माकी कृपासे कवि-शक्ति प्राप्त होनेसे कमडल पच्चीसी, हनुमान नखशीख और छंदमण-शतक ग्रंथ बनाये अनुमान सं १८४० इन्होका जन्म माना जाता है

मानासिंहजी—जन्म सं १८९३ मृत्यु सं १९५६ ये उर्दू, फारसी, संस्कृत और गुजराती भाषाके ज्ञाता थे सुनते हैं कि “रसिक-कवितासंग्रह” और “ज्ञानसागर” ग्रंथ इन्हे बनाये हैं

मीराबाई—जोधपुर—मेडताके राठोड रतनसिंहकी पुत्री इनका जन्म कुड्डीगावमें सं १५५५ के आसपास हुआ था औ विवाह उदयपुरके महाराणा सागाजीके कुम्भ भोजगज साथ सं १५७३ में हुआ था भोजका देहात पिताकी हस्तीमें हुआ था मि टांडने मीराबाईको कुमाराणाकी राणी लीख कर बड़ा भ्रम पैदा किया है और यही विषयकी परवर्ति अन्य लेखकोने कि है अनुमान सं १६२०-३० में मीराबाईने द्वागिकमें देह छोडा

मुवारक वेल्लामी—वे सैयदजीका जन्म सं १६४०में हुआ ये अरबी फारसी और संस्कृतके अच्छे विद्वान् थे “अलंकशतक” और

“तिलकशतक” इनका रचा प्रकाशित हुआ है; सुनते हैं कि औरभी कई शतक इन्होंने बनाये थे.

मुक्तानंद—गढडा—काठियावाड़के स्वामीनारायणी साधु. उन्हें “विवेक चितामणी” और “सत्संग शिरोमणी” ग्रंथ रचे हैं, वे सं. १८८० तक विद्यमान थे.

मुरारिदान—जोधपुरके चारन जागीरदार, महाराजा जशवंत-सिंहजीके नामसे “जशवंत जशोभूषण” नामक अलंकारका ग्रंथ बनाया. महाराजाने ग्रंथ श्रवणकर लक्ष पसाव करके “कविराजा” की पदवी दी.

मेरामण—राजकोटके ठाकुरसाहेब, इन्होंने अपने सप्त मित्रोंकी मददसे “प्रविणसागर” नामक बृहद् ग्रंथ बनाया है. सं. १९३८

मोतीराम—भरतपुर नरेश बलवंतसिंहके नामसे उन्हें “वर्जेंद्र-विनोद” नामक नायिका भेद ग्रंथ बनाया है. सं. १८८५.

मौडजी—मालीआ—काठियावाड़के ठाकुर सं. १९६३ में गत हुं. इन्हें “पोस्तपच्चीसी” नामक अफीम निषेधक लघु ग्रंथ बनाया है.

मंडन—बुदेलखंड निवासी. इन्हें रसरत्नावली, नयन पचासा, रसाविलास ये तीन ग्रंथ बनाये हैं.

रघुराज—रिवां महाराजा रघुराजसिंहके सत् कवि. जन्म सं. १९८० और अवसान सं. १९३६. इन्होंने ग्रंथ.—सुंदरशतक, विनयपत्रिका, रुक्मिणीपरिणय, भक्तमाल, आनदाबुनिवि, भक्ति-विलास, रहस्यपवाध्यायी, रामस्वयंवर, यदुराजविलास, विनयमाला, रामरसिकावली, चित्रकूटमाहात्म्य, मृगयाशतक, रघुराजविलास, विनयप्रकाश, भागवतमाहात्म्य, रघुपतिशतक, गंगाशतक, धर्मविड्यास, शंभुशतक, भ्रमरगीत, राजरंजन, हनुमतचरित्र, परमप्रबोध,—इत्यादि. ये परम रामभक्त थे. कवितामें कहीं कहीं तुलसीदासजीकी छाया ली है.

रघुनंदन—स्वामीनारायणी आधुनिक साधु कवि.

रसखान—दिल्लीके पठान. अपनेको बादशाही खानदान लिखा है. कुछ लोक सैयद इब्राहीम पिहानीवालेकोही रसखान समजते हैं परंतु खुद रसखानने तो अपनी बनाई “प्रेम वाटिका” में लिखा है कि—

दोखे गदर हित साहिबी, दिल्ली नगर मसान;

छिनहि बादशा वसकी ठसरु छोडि रसखान

इन्होंने “सुजानरसखान” और “प्रेमवाटिका” ग्रंथ बनाये कठी धारकर घुदावनमें रहते थे जन्म स १६४० मृत्यु काल स १६८५

रसनिधि—जन्म नाव पृथ्वीसिंह दलिया राज्यके अतर्गत जा-
गीरदार समय १७६० इनका “रतनहजारा” दि ग्रंथ प्रसिद्ध है, इस-
में दोहेही दोहे हैं

रसरास—जन्म नाव “गमनारायण ” जातिके कायस्थ, सं
१७०५ तक विद्यमान थे

रससिंधु—ये नामके दो कवि हुये हैं जाति तैलंग ब्राह्मण

रसलीन—सैयद गुलामनबी बिलग्रामी, उपनाम रसलीन जन्म
समय स १७४६ लगभग उन्हें “अगदर्पण ” ग्रंथ स १७९४
में और “रसप्रबोध” सं १७९८ में संपूर्ण किया मुसलमान होकर
भी उनकी कविता, शुद्ध व्रजभाषामें और बड़ी रसीली है

रणछोडजी—जुनागढके नागर, नवाबके दिवान, गुजराती
होकर फारसी, उर्दू, हिंदी और संस्कृत अच्छी जानते थे परम शिव-
भक्त थे शिवरहस्य, भाषा शिवपुराण, सदाशिवविवाह, कामदहन,
आदि हिंदी ग्रंथों और तवारीखे सोरठ, सोरठके इतिहास ग्रंथ
फारसीमें लिखा है जन्म स १८२४ मृत्यु स १८९७

रविराज—मूली-काठियावाडके चारन “नर्मदा लहरी” ग्रंथ
बनाया है स १९५१ में देह छोड़ी

रविराम—(आदितराम) जामनगरनिवासी प्रश्नोरा ब्राह्मण,
गानविद्यामें कुशल थे “सगीतादित्य” ग्रंथ बनाया है कवितामें रवि-
राम और आदितराम दोनों नाम रखते थे

रहीम—(अब्दुलरहीम खानखाना) बेरमखाके पुत्र, अकबरके
उदार कोशाध्यक्ष मुसलमान होकर व्रज और संस्कृतमें अच्छी फारसी
की है, और “रहामने विलास”में उन्हींकी कृति एकत्र की गई है जन्म
स १६१० कहते हैं कि इन्होंने कवि गगनको एक छप्पय सुनकर
धृतीस लाख रुपये इनाम दिये थे !!!

राज—ये कविके नामपर पृष्ठ ४५३ में तीन छंद दिये गये हैं वे तीनों अलग अलग कविके हैं.

रामचंद्र—बनारसी ब्राह्मण सं. १८३० तक विद्यमान थे. “चरणचंद्रिका” इन्हे ग्रंथ बनाया है.

रूपनारायण—जन्म लखनऊमें सं. १९४१ में हुआ. कानकुब्ज ब्राह्मण. विविध भाषाके ज्ञाता थे. इन्होंने छोटे बड़े ६३ ग्रंथ बनाये हैं.

लछीराम—अयोध्या-अमोढागांवके रहेनवाले. जन्म सं. १८९८, मृत्यु सं. १९६१ बहुतसे राजाओंके नामपर इन्होंने ग्रंथ रचना की और उन्होंने गाव इनाममें दियाथा. वस्ती नरेशके नामपर “प्रेमरत्नाकर”, दरभंगा महाराजके लिये “लक्ष्मीवररत्नाकर”, मल्ला-पुरनरेशके नामपर “मुनीश्वर कल्पतरु”, तीकमगढ महाराजके नामपर “महेंद्रभूषण” और रामपुर नरेशके नामपर “महेश्वरविलास” है. सिवाय रघुवीरविलास, कमलानंद कल्पतरु, मानसिंह जंगाष्टक, हनुमंतशतक, रामचंद्रभूषण, सरजुलहरी, रामरत्नाकर, इ. ग्रंथ रचे हैं. इस ग्रंथमें दिये हुये झुलणा उक्त नामके दुसरे कविके हैं.

लाल (पहिला) पूरा नाम गोरेलाल पुरोहित, जन्म सं. १७१४ लगभग. महाराजा छत्रसालके दरबारमें रहा करते थे और उन्होकी साथ लडाइमें मारे गये ! छत्रप्रकाश, विष्णुविलास और राजविनोद ग्रंथ बनाये हैं.

लाल (दुसरा)—कनौज निवासी, उन्होने चाणाक्य राजनीतिका भाषामें अनुवाद किया है.

विश्वनाथ—वाधवगढके बंधेले क्षत्री महाराजा, कवियोंके कल्पतरु थे. इन्होंने संस्कृतमें सर्व संग्रह ग्रंथ कवीरके बीजक और विनय-पत्रिकाके तिलक बनाया है. सं. १८९१ में विद्यमान् थे.

वैजनाथ—डेहवा निकट मानपुरके कूर्मवशी भक्तराज, नंबरदार और उर्दू, फारसीमें निष्णात थे. सटीक काव्य कल्पद्रुम, नखशिख, कवित्त-रामायण, कुंडलियारामायण, बरवेरामायण, तुलसीरामायण, विनय-पत्रिका, गीतावली, छदावली, दोहावली, आदि ग्रंथकी विस्तृत टीका बनाई है ये बड़े रामभक्त और उदारचित्त थे

हृद—जन्म सं १७३० जीरगनेवके दरबारी कवि औरगका पुत्र अनीमुशान अन्धे कवि और कवियोंका जाग्रददाता थे, उसने हृदको अपने पितासे माग लिया था वह बगाल, बिहार और उड़ीसका नुवेदार था जीर काकामें अपने साथ हृदको रखा करते थे हृदने “भाष पंताशिका” — “सत्तगर्ह” — “हृदमिनोद सत्तसई” और रचे हैं उनमें अंतमें लिख है कि,

धनत गति रस धरि नो धर्मक गुरि गतिपार
साते राधा गहरमें उपगते नो विनाद

कादरी के बापूगणालनी उन्हीं जानि गाँड ब्राह्मण बताते हैं जब दूसर “सेवक” जाति कहते हैं माप्रतम इसके बरुपर क्लिप्तगमन रहते हैं

शालिग्राम रामनेही सागु भावनादासजीके शिष्य, जोधपर नियासी उन्हे पोण्ड राजाग, जीर सग्याभृत सरित इत्यादि ग्रंथ रचे हैं

शिवमिंद—उनाय—का गके निवासी, गणनीतामिह जमीनदारके पुत्र का सं १८०८ थे पोण्डि इन्फण्टर में शिवपुराण, ब्रह्मात्तर-खडका गधानुवाद और “शिवमिहसरोज” नामक सग्रह ग्रंथ रचे हैं

शिवनाथ—पतानगेण पाम रहते थे नायका भेदमें “रम रजन” ग्रंथ बनाया है सं १७६० तक विद्यमान थे

शिवदासराय—गनपुतानामें सं १७५४ तक विद्यमान थे उन्हे “रसागिण” और “ईशोक्ति रम्यमोक्ष” ग्रंथ बनाया है

शिवप्रसाद—मुंशिदावाणके रहनेवाले गद्य भाषाके आचार्य मने जाते हैं बापुतस गेंगोका कथा है कि बगला, मरुत आदि ग्यारह भाषाके लिखने पढ़नेका ग्याम रखत थे सरकारी नोकर थे और हिन्दी, जपेनी, उदुम बहुतसी पुरतक लिखि है सरकारने “सतारे हिंद” का इन्काज दिया है और अबी “राजा शिवप्रसाद सतारे हिंद” कहे जाते हैं

शीतल—तीर्थमापुरके कनोत्रिया ब्राह्मण सं १८९१ तक विद्यमान थे

शेख—इनका हाट कवि आलमके साथ देखो

सन्नम—मठावा—हरदोदके ब्राह्मण सं १८३४ तक विद्यमान थे

सुंदर—(पहिला) ग्वालियरके ब्राह्मण. आगरा नरेश शाहजहां बादशाहने कवित्व शक्तिपर मुग्ध होकर इनको कविराय और महाकवि-रायकी पदवी देकर मालामाल कर दिया. इन्हे एक ग्रंथ “ सुंदर शृंगार ” नामक नायका भेदका बनाया, स. १६८८.

सुंदर—(दूसरा) दादुदयाल महान्माके शिष्य, सं. १७१० तक विद्यमान थे. उन्हे सुंदरविद्यास और ज्ञानसमुद्र आदि वेदांत-वैराग्य ग्रंथ बनाये है.

स्वरूपदास—पूर्वाश्रममें चारन, पीछे साधु बन गये. रतलाममें इन्हे ‘पांडव यशोचंद्रिका’ ग्रंथ बनाया, स. १८९२.

शिरताज—“ ताज ” नामक मुगल महिला, स. १५८० में मथुरामंडलमें हो गई. ये विष्टलनाथजी गोसाइजीकी शिष्या और वैष्णव थी, इनकी वार्ता “ वसोवावन वैष्णव ” में है.

श्रीपति—काशीके कानकुब्ज ब्राह्मण. इन्हे सं. १७७७ में “ काव्यसरोज ” ग्रंथ बनाया. सिवाय “ विक्रमविलास ”—“ कविकल्पद्रुम ”—“ सरोजकलिका ”—“अलंकारमंगा ” आदि इनके रचे कहे जाते हैं.

सूरदास—ज्ञाति ब्रह्मभट्ट, जन्म नाम गोपालाचार्य, इनके पिता रामदास गोपाल “प्राचीन ग्वालियर” में रहते थे और बल्लभाचार्यके शिष्य थे. इनकी गणना “अष्ट व्यास” अर्थात् ब्रजके आठ महा कविराजमें है. ये चंद बरदायके वंशज जन्मका सं. १५३१ और अवसान सं. १६४० “ सूरसागर ”—“ सूरलहरी ”—“ साहित्यलहरी ”—“ सूररामायण ” आदि ग्रंथके कर्ता.

हनुमान—जातिके ब्रह्मभट्ट ये नामके दो प्राचीन कवि थे. इनकी काव्य शृंगार रसमें ब्योत है.

हमीर—आधुनिक चारन. इस ग्रंथमें कवित्तके नीचे जो दोहा है सो पृथुराजके संबंधका है परंतु उन्हुका नहि.

हरजीवन—पोरबंदरके ब्रह्मनिष्ठ ब्राह्मण.

हरिदास (पहिला)—रामानुज साधु. खदडपुर-काठियावाड-निवासी. “हरिविलास”का कर्ता. सं. १८५१ में स्वर्गवासी भये.

हरिदास (दुसरा)—गोकुलवासी वैष्णव, असलमें काठियावाड़ी इनके गुजराती घेल-पद मशहूर है इनकी काव्य दुसरा कोइकी हो-नेका मुने जाते है

हरदान—भावनगर महाराजा कृष्णकुमारजीके कवि हिंदी, सस्कृत, अंग्रेजी, गुजराती और चारनी भाषाका ज्ञाता चारन पंडित “श्रेयस” — “विवेकातवल्लरी” के कर्ता अब विद्यमान है

हरिकेश—जहागिरावादके वतनी ज्ञाति ब्रह्मभट्ट राजा छत्रसाल बुंदेलाके पन्नामें रहते थे इनके काव्य ललित है वि सं १७६०में विद्यमान थे

हरिचरणदास—“ग्रहंत कवि वल्लभ” नामक भाषा-साहित्य ग्रंथके अपूर्व अद्भुत ग्रंथकर्ता

हरिचंद—बरसाना-ब्रजके निवासी जातिके बदिजन (ब्रह्म-भाट) “छन्दस्वरूपिणी” पिगलके कर्ता दुसरे हरिचंद, राजा छत्रसाल चखरीवालेके इहा रहते थे

हरिसिंह—आधुनिक काठियावाड़ी क्षत्री, “ज्ञानकटारी” के कर्ता

हरिश्चंद्र—काशीनिवासी बाबु गोपालचंद उपनाम गिरिधर कविके पुत्र, जातिके अग्रवाल वैश्य, प्रसिद्ध श्रीमत अमीचंदके वंशज बगाली, सस्कृत, इंग्लिशदि द्वादश भाषाके ज्ञाता थे इनका जन्म काशीमें हुआ, स १९०७ ये रसिक वैष्णवने हिंदी भाषाकी गद्य शैलीका सुधार किया, “साहित्यसभा” और औपचाल्यादि परोपकारी कार्याको उत्तेजन दिया काशीके पंडितोंने इनको “भारतेंदु” का इल्काव दिया, जबसे ये “भारतेंदु हरिश्चंद्र बाबु” लिखे जाते है इन्होंने छोटे बड़े १७५ ग्रंथ बनाये है

हरिराम—दतिया निवासी जातिके ब्रह्मभाट. स १७०८ तक विद्यमान थे इन्होंने एक पिगल ग्रंथ बनाया है

हाफिज—हरदोइ-बनापुरकी मदेसामें मोहमेदन अप्यापक ये प्राचीन कवियोंके हजारों कवित्त-सवैया इकठे कर “हजारा” के नामसे दो हिस्सेमें छपवाये और दुसरा ग्रंथ “नविनसमूह” भी प्रसिद्ध किये है



अरसिकेषु कवित्व निवेदनम् ।

शिरषि मा लिख मा लिख मा लिख ॥



(गीति.)

सुजनो ! साहित्य सुधा,

बुधाधिपोष्ये समुद्र शास्त्र भूमी;

कूटी कान्य कुणशर्मा,

नाभी राभी यियो विना श्रमशी. १



Published by Kahanji Dharmasinh, Rajkot.

Printed by Chimanlal Ishwerlal Mehta, at
the 'Vasant' P. Press, Ghi Kanta, -Ahmedabad.

❧ સુવોધક ગ્રંથસંગ્રહ ❧

સાહિત્ય-રત્નાકર.

આ પુસ્તકમાં એકેશ્વરની ભક્તિ શીરામભદ્રિમા, શીરાધાકૃષ્ણ
ગુણકથન તથા શ્રીશિવ-શક્તિની ભક્તિ ઉપાસના ઉપરાંત વિવિધ
સતુવર્ણન, સન્ન્યસન દુર્ગન વિચાર દામભદ્રિમા, પ્રીતિ-મૈત્રિ, શમાર
સાર્થ, નારી વિચાર, નાવિકા ભેદ તથા કાવ્ય અમતકૃતિ વગેરે
નવગ્રંથ યુક્ત વિષયો ઉપર કવિશ્રી આદ્યર, અનન્ય અનંત, અહ-
મદ આશમ, ઉદય, કબીર કમાલ, કદાન, દિસોર, કેશવ, કિમ્બન,
દાશીરામ, દુભેર, કૃષ્ણદાસ કુદન, ગદ, ગગ, ગોવિંદ, ગોપ, ગોપાલ,
માનધર, ગ્વાડ, ધાસીગમ, ચંદ, ચંદ્રકલા, ચૌરામલ, જમાલ, જમ્મુ,
જવન જુમલ જ્યેષ્ઠ, ઠાકુર, દિજરામ, દયારામ, દાદુ, દીનદેવેશ,
દુર્માન્ત દેવકીનંદન દેવીનાસ, તાનસેન તુલસી, નરસિંહ નરોત્તમ
નવનીત, નામર, નાય, નીલકંઠ નિપટનિરજન, પમ્મનેસ, પદ્માકર,
ખનારસી, ખલ્લદેવ, ખલભદ્ર, ખાજુલ, ખેતી, ખેતાલ, ખિહારી,
ખીરનલ, ભુધસેન, બલ્લાનંદ, ભરમિ, બુધર, બુખલુ, મતિરામ,
મણિધાર, માન, માનસિંહ, મીરાંત્રાધ મુક્તાનંદ, મુરારિદાન, રઘુ
રાગ, રઘુનંદન રસખાન, રસસિંધુ, રસલીન, રણુછોડજી, રૂદ,
વલ્લભ ચાલિગ્રામ, શિવપ્રસાદ સેવ શિવદાસ હરિચરણ, હગિચંદ,
રૂપનારાયણ, રણુમલ, ગવિન્દ રવિરામ, રસીમ (રસખાન) લાલ,
રામચંદ્ર-આદિ ૩૦૦ નામાંકિત કવિઓની કવિતાઓનો કવિ-પરિચય
સહ સમાવેશ કરવામાં આવ્યો છે કામળ જગા એક મોટા કદનાં
૫૪ ૧૦૦ પુકુ પાકુ ત્રણ સોનેરી નામરાણુ મૂલ્ય રૂ ૪૫ ટપાલ રૂ ૦૧૧

ત્રેમ-રૂગાર દોહાવલી

એમાં પગ્માત્ર ત્રેમપ્રથસા પ્રમરસ પ્રવાહ પ્રીતમ પત્રિકા,
પ્રાણુપતિની પ્રાર્થના, ત્રીતરીત સ્તુતિ, સન્ન્યસન વિયોગ, મનભાવન
વિયોગ, સખીની સમસ્યાઓ ઇત્યાદિનો સમાવેશ કરવામાં આવ્યો
છે દિ રૂ. ૦૧ ટપાલ ૦/-

ચૌરાશી આસન.

આ ગ્રંથમાં શ્રી હઠયોગનાં સિદ્ધાસન સિદ્ધાસન, દ્વાસન,
પદ્માસન, વીરાસન તથા ધીરાસનાદિ ૮૪ આસનોના અર્વાતર
(પેટા) ભેદ મળી ૬૮ આસનોના ચિત્રો મત્ર પ્રક્રિયા સાથે આપ્યાં
છે સિવાય નેતિ, વોતિ જમ્તી તથા બલદાતણાદિનાં ચિત્રો પણ
લાખલ ક્યાં છે ઉપરાંત બલદાતણાદિનાં લક્ષણ વગેરે વિષયોનો કરેલો
વધારો જગાસુઓને ખાસ અભ્યાસ કરવા યોગ્ય છે મૂલ્ય રૂ ૧૧

કુચ્છદેશની જૂની વાર્તાઓ.

પ્રાચીન ધર્મશાસ્ત્ર સાથે સંબંધ ધરાવતી સંખ્યાબધ ઇતિહાસિક છતાં ચમત્કારિક વાર્તાઓનું આ દળદાર પુસ્તક અનેક ફારસી, ગુજરાતી અને મિધી ગ્રંથોને આધારે એક અનુભવી કચ્છી લેખકની કસાએલી કલમે લખાએલું છે, અને તેમાં આનંદ આપનારી અસલ ખેતો તથા ઉપયુક્ત બાબતોનો સમાવેશ કરવામાં આવ્યો છે. પુરાણ પ્રસિદ્ધ યાન્વ વશથી માંડી, હાલના રાજકર્તા શ્રીમન્ મિરજા મહારાવ સુધીનો આ ઇતિહાસિક ગ્રંથ કેટલો ઉપયુક્ત છે તે કહેવાની વધુ અગત્ય નથી. પૃષ્ઠ ૧૮૬ કિ. રૂ. ૧૧૧. પોસ્ટેજ ૦) =

કાઠ્યાવાડી સાહિત્ય-ભાગ પહેલો.

આ પુસ્તકમાં રાહ ખેગાર ને રાણકહેવાના, રાહ મડળિય ને નાગખાઇના, રાહ કવાટ ને ઉગાવાળાના, રાહ દયાસ ને નોંધણના નાગમતી ને નાગવાળાના, ઉજળી ને મેહ જોવાના, ચલાડ ને સોઢા પરમારના શેણી ને વેળણદના, કુવર ને રાણાના, સોન કમારી ને બાબરિયા વિગેરેના ઇતિહાસપ્રસિદ્ધ દુહા, સોરઠા ઉપરાંત મસ્ત-રામ, ભલુતગર વગેરે સંત પુરોહીની જ્ઞાનબોધક વાણીનો સમાવેશ કર્યો છે, એટલુંજ નહીં પણ ક્ષત્રીવટ, નાતજાત, જ્નેતિપ, વૈદક, ધાન્યમહિમા, તથા ઉખાણાદિ કવિતાઓ એટલી રસિક છે કે તે પૂરી વાંચ્યાવગર પુસ્તક હાથમાંથી મુકવું ગમતું નથી. રૂ. ૧૧. પોસ્ટેજ ૦) =

શિવભજનાવળી.

શ્રી શિવભક્તિની ભક્તિ ઉપાસનાનું આ રસિક અને બોધદાયક પુસ્તક જુદા જુદા પ્રાચીન કવિઓએ રચેલું છે, અને તેમાં અનેક સંગીત, પદ, છંદ, ગરબા, ગીત, ઇત્યાદિનો સમાવેશ કરવામાં આવ્યો છે. મોટા કદના પૃષ્ઠ ૨૦૦ પૃષ્ઠ સોનેરી ત્રણ નામવાળું. રૂ. ૨.

ચમત્કારિક દષ્ટાંતમાલા.

જગત ઝવેરી ચમત્કારને નમસ્કાર કરે છે, તેથી ચિત્ર વિચિત્ર મુદ્ધિ ચાતુર્યનાં ૧૦૮ દષ્ટાંતો ચુંટી કાઢી, આ સુબોધક કથામાળા તૈયાર કરી છે. એમાં ત્રણ જન્મનું જ્ઞાન, ચમરાજનું રાજનામું, દત્તાત્રય ને ગોરખ, સુવરી ને નારદ, ભટ્ટકરી ને ગોપીચંદ, જ્ઞાતીનો દર્શનલાલ, સંન્યાસીની જ્ઞાનગંગા, મોતીની હવેલી, સોનાની ચાર પુતળી, સતીનું કયાશ્રવણ, શ્રીપ્રભુ પદ્મમાં ચાહે સો કરે, શ્રી કાશીક્ષેત્ર નિરૂપણ વિગેરે વિષયો અને કાવ્યો એટલા મનોરંજક છે કે પુસ્તક ફરી ફરી વાંચવાને ચિત્ત આકર્ષાય છે. મોટા કદનાં પૃષ્ઠ ૩૦૦. પૃષ્ઠ કપડાનું પાકું સોનેરી ત્રણ નામવાળું મૂલ્ય રૂ. અઢી, પોસ્ટેજ રૂ. અરધો.

કાઠિયાવાડી સાહિત્ય-ભાગ બીજો

આ પુસ્તકમાં રાજ્યા નેગડા, મોનિયા સામળા, સામતા, ગદેમાન, જવણ, વીગમ વગેરેના રચેલા સેઠડો સુમેધક સોગડાઓ ઉપરાંત એકત્રીસ ઈતિહાસિક અને રસિક વાર્તાઓના સાર સાથે જે દુહાઓ દાખલ કર્યા છે તેમાં નામાજણ નામરીના નામદે માધાના, ચપા ને પદમણીના, ખખાતણ ખીમરાના મુળાદે ખાનરાના કુવર ને લાખાના, વિકાલ ને કમાના, ઢોલરા ને દેવરાના, માડ ને ઢોલાના, તથા હોયલ, દાદવા, વીઝરા પેરસા, કાચબા ઇત્યાદિના ચપ્પે ખાસ ચાનકે આપનારા છે સિવાય સતીના મંદેશ, નાત જાતનો મદિમા ગુરૂ ચેલાનો સવાદ, કાઠિયાવાડનું પ્રાચીન સિદ્ધિ સાહિત્ય, વ્યવહારિક ઉપાયા અને કહેવતોનો ગ્રંથદ્ર અગ્રહો ઉપયોગી છે કે સસારમાં પદે પદે તેનો અનુભવ થતાં નીતિશાસ્ત્રની અમલ પૂરી પાડે છે આ મથો વિષે નામામ્તિ નર નારીઓએ એકે અવાજે સ્તુતિ કરી છે તે વિદ્વાન પત્રકારોએ પ્રસસા કરી છે ગન્ય રૂ એક.

મુખરૂપ-શ્રી-મ સાર

આ પુસ્તકમાં ઇશ્વરપ્રાપ્તિ, સતી પાર્વતીનું ચરિત્ર, મદાત્મા વિદુરનો પુત્ર પ્રતિ ઉપદેશ, સતી મદાલસાએ પોતાના પુત્રાને આપેલો બોધ શ્રી સપ્તમહેવનાં સિદ્ધા વચન ગુરૂમાદમા, શ્રીકૃષ્ણનો ઉદ્ભવ પ્રતિ ઉપદેશ, શ્રી રામચંદ્ર ચરિત્ર, શ્રીજાતિનું જોરવ, આં કર્તવ્ય, શ્રી ઉન્નતિની માધના, રામ મદિમા, દયા-ધર્મ, સોળ મંત્રકારનો સાર અને દામ્પત્ય ધર્મ ઇત્યાદિ સર્વ ગ્રંથોનો ખાસ બોધક બામનોનો ગ્રંથદ્ર આપ્યો છે કર્તા કે વા. સૌ માણેખાધ, ચિત્ર સહિત પુકુ તણ સોનેરી નામવાણુ પૃષ્ઠ ૨ ૫ મધ્ય રૂ બે.

સતીગુણચાન્દ્રકા

એમાં વાર્તારૂપે આપેલાં મયુક્તા, કુમરિની, મીરાંબાઈ રૂપમતિ, અદલ્યાબાઈ, કૃષ્ણકુમારી તુલસીબાઈ ઝાસીની રાણી લક્ષ્મીબાઈ, કળાવતી મીનજહેવી સરદારબા, સુંદરબા વીગમતી ચત્તસુંતરી રૂપસુંતરી અમુમતિ, લાલબા રાણી બવાની, સોનરાણી રાણકેરા સતી મોન સત્યવતી, પદ્માવતી, મૃગનથની, તારાબાઈ કુર્માવતી, નિધિબાઈ, જૈજીબાઈ, ગુનોરની રાણી, ચંદા રાણી, સૌતીરની રાણી, મેવાડની પાનબાઈ, ઝવેરબાઈ, વીરકળા, ગજરાજ, હેમતકુમારી, કલ્પવતી, કળાવતી, ચંદ્રપ્રભા કાન્તા વીરા તાલબાઈ, ચનવા મચ્ચી, મીરાંબાઈ, હમણાદેરી, સુકા, ઉમાબાઈ, જોરીબાઈ, જસમા રાણુલા, ઇત્યાદિનાં ચરિત્રો ખાસ વાંચવા યોગ્ય છે પાકુ પુકુ તણ સોનેરી નામવાણુ મધ્ય રૂ બે દપાલ ખર્ચ રૂ ૦૮.

શ્રીકૃષ્ણમ દયા.

એમાં સ્નાન શબ્દ, ત્રિકાળનું આદિક, અષ્ટાક્ષરીમંત્ર, શ્રીકૃષ્ણ સરજાટક, યમુનાવિગમિ, ઇત્યાદિ અમ સહિત આપેલ છે મલ્ય રૂ ૦જી

મહિલાસંસાર.

શ્રીમતી રૂપમાયાઘ્યે તેમજ સ્ત્રીસુખોદિની સભાના વ્યવસ્થાપક સ્વ. સૌ. માણિક્યાઘ્યે લખેલા અનુભવયુક્ત સગસ લેખો એમાં છે:-એકત્ર કુટુંબથી થતી દુર્દશા, ઝોઝઝ-પડદાનો અત્યાચાર, સ્ત્રીકર્તવ્ય, સ્ત્રીજાતિપર અન્યાય, દેવાશી સુંદરીઓ, રાજ જનક ને રાણી સુનીતિ, શુભ વ્રતમાં અશુભ વર્તન, માતૃભક્ત રામકૃષ્ણ ઇત્યાદિ ઉપરાંત રાસક ગીત, ગરબા, છંદ, આરતી ખાસ મુખપાઠ કરવા યોગ્ય છે. મૃદ્ય રૂ. ૦૧.

સદ્બોધદિપક.

શ્રીમદ્ શંકરાચાર્ય આદિ મહાત્માઓનાં રચેલા સદાચાર સ્તોત્ર-ભાષાંતર, ગુરુમહિમા, સુભાષિતરત્નાવળી, પોડપચાણુક્ય, ચિત્ર રૂ. ૦૧૧.

ભક્તિહરપદ્મ

ભક્તિ-જ્ઞાન-વેદાત વિષે પ્રાચીન પુરૂષોઘ્યે રચેલા ગદ્યપદ્ધાત્મક પાંચ પુસ્તકો:-શૈલસુતાસ્તોત્ર, સદ્ગુપદેશ મંજરી, રામરસ, અનુભવ-પ્રકાશ તથા મતોપશતક ચિત્ર ચરિત્ર સાથે કિં. રૂ. ૦૧ પોસ્ટેજ ૦) =

વર્ણીકરણવિદ્યા.

ખાસ સ્ત્રીઓને માટે, મોહિની મત્ર, હાસ્ય વિનોદ, રતિસમય ઇત્યાદિ સાથે ૦) =.

પરાશર ધર્મશાસ્ત્ર.

સ્ત્રી પુરૂષના વ્રતાચરણ, ચારે વર્ણના આચાર વિચાર, ગૃહ સ્થના ધર્મો, અગમ્યગમનાદિ પ્રાયશ્ચિતના વિધિ, અભક્ષ્ય ભક્ષણાદિની શુદ્ધિ, લવધવા-વિવાહ વિચાર, વગેરે બાબતો સાથે પૃષ્ઠ ૧૮૪ રૂ. એક.

અધ્યાત્મપ્રકાશ.

એમાં વૈરાગ્ય લક્ષણ, બ્રહ્મવર્ણન. વિવિધ શાસ્ત્રસિદ્ધાંત, ગીતા તથા ન્યાય વૈશેષિકને આધારે અધ્યાત્મ જ્ઞાનનો અગમ્ય અનુભવ બતાવ્યો છે. પૃષ્ઠ ૧૪૦ પુઠ્ઠ પાકું સોનેરી નામવાળું. રૂ. એક.

શ્રીમાનનું ચરિત્ર.

મુખ્ય નિવાસી હાલાઈ ભાટિયા જ્ઞાતિના મુખ્ય અગ્રેસર, મીત્ર મહેક અને પગેપકારી શેઠ ગોવિંદજી ઠાકરસી મળજીના આ જીવન ચરિત્રમાં ચદુવ શની ઉત્પત્તિ, વ્યવહાર જ્ઞાન, ધર્મ-વિચાર, સ્ત્રીધર્મ નિરૂપણ, દાનમહિમા, બુદ્ધિબળ તથા ગુણ લક્ષણનો સમાવેશ કરવામાં આવ્યો છે મોટા કદનાં પૃષ્ઠ ૨૬૦ સચિત્ર પુકું પાકું ત્રણ સોનેરી નામવાળું. રૂ. ૧૧

કવિ કહાનજી ધર્મસિંહ—

